



# राजस्थानी गौरव ग्रन्थमाला

( २ )

सपादक

नरोत्तमदास स्वामी, अेम अे  
मनोहर शर्मा, अेम अे , पी-अेच डी  
लक्ष्मी कमल अम अे , पी-अेच डी



# राजस्थानी गद्य विकास और प्रकाश

[ राजस्थानी भाषा के प्राचीन और अर्वाचीन गद्य का  
प्रतिनिधि-सङ्कलन ]

भाग १—विकास

संपादक

डा नरेन्द्र भानावत, एम. ए., पी-एच. डी.  
प्रवक्ता, राजस्थान विश्वविद्यालय  
तथा मानद निदेशक,

शाखाय श्री विनयचन्द्र ज्ञानभण्डार घोष प्रतिष्ठान  
अथ

डा लक्ष्मी कमल, एम. ए., पी-एच. डी.  
प्रवक्ता, वनस्थली विद्यापीठ

श्रीराम मेहरा एण्ड कम्पनी, आगरा



## आमुख

राजस्थानी पद्य की भाँति राजस्थानी गद्य भी प्राचीन समृद्ध आरवविध्य पूरा है। अपनी रूपगत एवं शलीगत विशेषताओं के कारण वह समूचे भारतीय गद्य-साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। उसका अधिकांश प्राचीन अथवा हस्तलिखित पाठियाँ के रूप में राजस्थान और गुजरात प्रदेश के विभिन्न भागों में उपलब्ध है। मुद्रित रूप में उसका बहुत धर्म अथवा ही प्रकाश में आया है।

स्नातकोत्तर कक्षाओं को राजस्थानी साहित्य का अध्ययन अध्यापन कराते समय मूल राजस्थानी गद्य के एक ऐसे प्रतिनिधि सङ्कलन की आवश्यकता अनभव हुई जिसमें ऐतिहासिक धर्म से प्राचीन एवं अर्वाचीन राजस्थानी गद्य विद्याओं के विविध अथवा आर रूप सङ्कलित हों। राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के नत्वालीन अध्यक्ष डा. सत्यद्वारा ने मुझे इस कार्य के लिए प्रेरित किया। राजस्थानी गद्य विकास और प्रकाश उमी भावना और प्रेरणा का मूल रूप है।

प्रस्तुत कृति में चौदहवाँ शती से लेकर आज तक के राजस्थानी गद्य के विविध रूपों का सा खण्ड में सङ्कलित किया गया है। प्राचीन खण्ड में २१ गद्यांश हैं जो धार्मिक तत्त्व धर्म कथा वणनात्मक गद्यवाच्य ऐतिहासिक कवचनिका ऐतिहासिक जीवनी व्यात के अतगत वात पत्र राजनीति मन्वधी निवध, लाक-कथा पौराणिक गद्य ऐतिहासिक वात शिलालेख सस्मरण व्यात, ऐतिहासिक गद्य और शृंगारिक कवचनिका के रूप और शिल्प के परिचायक हैं। अर्वाचीन खण्ड में २८ गद्यांश हैं जो आधुनिक युग की—उपयाम, नाटक गद्यवाच्य निवध रखाचित्त सस्मरण, यात्रावृत्त कहानी एकाकी रडिया रूपन आदि—विविध गद्य विद्याओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रत्येक पाठ के आरम्भ में लेखक के सम्बन्धित जीवन परिचय के साथ उसकी गद्य शली की विशेषता और सङ्कलित अथवा मूलभाव को स्पष्ट करने वाली टिप्पणियाँ दी गयी हैं। प्राचीन खण्ड में सङ्कलित पाठों का हिन्दी अनुवाद उसी पृष्ठ पर पाद टिप्पणी के रूप में शब्द क्रमानुसार दिया गया है। अर्वाचीन खण्ड में सङ्कलित पाठों का हिन्दी अनुवाद न केवल उनमें जाये हुए विशिष्ट राजस्थानी शब्दों के अथवा उसी पृष्ठ पर पाद टिप्पणी के रूप में दिया गया है। इनके अध्ययन

वेदन से पाठ्य विषय समझने में अध्ययन को विशेष महत्ता मिलेगी। पुस्तक के प्रारम्भ में राजस्थानी गद्य की विशेष-बधा पर एक विस्तृत वना लिखने की याचना थी पर समय की कमी तथा अन्य बाधों में व्यस्त के कारण उस डम पुस्तक के साथ प्रकाशित करना सम्भव नहीं हो सका। उस अलग से प्रकाशित किया जा रहा है।

पुस्तक का मूल रूप देने में मुझे श्रद्धय गुरुवर श्री नरोत्तमनाथ स्वामी, यान विश्वविद्यालय जयपुर के हिन्दी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष परनाममिह शर्मा जाचार्य डा सत्यन्द्र एवं राजस्थानी साहित्य के प्रसिद्ध के विद्वान श्री अग्रचन्द नाहटा से सतत प्रेरणा और भाग-दशन मिलता है। इन सब विद्वानों के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ। पुस्तक की सह-संपादिका डा लक्ष्मी कमल का सामग्री-सकलन टिप्पणी-लेखन में मुझे विशेष सहयोग मिला है। श्रीराम महरा एण्ड नी आगरा ने इस महत्त्वपूर्ण व्यय-माध्य वृत्ति के प्रकाशन का भार उठा करे काय का बहुत सरल बना दिया इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

पुस्तक में संकलित पाठों के लेखकों एवं प्रकाशकों के प्रति भी मैं हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ। उनके कारण ही यह सकलन अभीष्ट रूप में प्रस्तुत हो जा सका है।

मुझे विश्वास है कि राजस्थानी गद्य के विकासात्मक अध्ययन में यह एक लाभदायक सिद्ध होगा और राजस्थानी के अध्ययन क्रम में पाठ्य-ग्रन्थ रूप में इसका समुचित उपयोग हो सकेगा।

—नरेन्द्र भानावत

# सूचिका

## प्राचीन खंड

१	अनात तत्त्व विचार	( धार्मिक गद्य )	१
२	तरणप्रभ सूरि द्वितीय व्रत सत्य पर कथा	( धर्म-कथा )	५
३	सोमसुन्दर सूरि गुरु महिमा पर कथा	( धर्म-कथा )	१४
४	माणिक्य सुन्दर सूरि बाग विलास	( वणनात्मक गद्यकाव्य )	१७
५	गाढण गिन्नदास वचनिका खीची अचळदास री	( अतिहासिक वचनिका )	२५
६	मेरुसुन्दर अमरसेन-धरसेन-कथा	( धर्म-कथा )	३१
७	अज्ञात बळपत विलास	( अतिहासिक जीवनी )	४०
८	मुहणोत नणसी हाड सूरिजमल री वात	( रूपात के अन्तगत वात )	४६
९	लिडिया जगो वचनिका राठोड रतन री	( अतिहासिक वचनिका )	५८
१०	दुर्गादास राठोड बुराददास री बागद	( पत्र )	६३
११	मुहणोत सभामसिध अदालती थय	( राजनीति-संबधी निबध )	६५
१२	अनात धरसा वणन	( वणनात्मक गद्य-काव्य )	७९
१३	सकलित डोकरी री वात	( लोक कथा )	



लित		
गय दातळी री वात	( लाव-कथा )	८५
गत		
गुप भग	( पौराणिक गद्य )	६४
सियो दात्रीगास		
व मालदे	( अतिहासिक वात संग्रह )	१०२
रहित		
सठमर र पटलां रो सघ	( शिना-लेख )	११२
रामी भावणजी (अयाचाय)		
लेखणजी रा सस्मरण	( सस्मरण )	११६
रत्नायच दयालदास		
हाराजा दळपतसिध	( ख्यात )	१२८
सिध सरजमन		
रज्जणी रो जुद्ध	( अतिहासिक गद्य )	१३६
रास वसतावर		
रुतळ प्रसंग	( शृंगारिक वचनिका )	१४८
न गद्य		
शिवचंद्र भरनिया		
रुनक सुंदर	( उप याम )	१
भगवतीप्रसाद दाटवा		
दळती फिरती घाया	( नाटक )	१०
रजलान वियाणी		
मोगरा-कळी	( गद्य-काव्य )	१६
मल्ल-वचना		
धनलाना की लक्ष्मी	( विचारात्मक निबंध )	२१
अननदाल काठारी		
समाजो-नति को झूठमत्र	( विचारात्मक निबंध )	२४
गिरधरलान यास		
प्रताप और नामाशाह	( नाटक )	२७
मुरळीधर व्यास		
कावनी नसीदहीन	( रेखाचित्र-सस्मरण )	३१

८	विद्याधर गास्त्री नागरपान	( गद्य-काव्य )	३६
९	ठाकुर रामसिंह प्रेमाश्रम	( भावात्मक निबन्ध )	३८
१०	नरोत्तमदास स्वामी साहित्य रो प्रयोजन	( साहित्यिक निबन्ध )	४३
११	अगरचन्द्र नाहुटा राजस्थानी साहित्य और जन विद्वान	( साहित्यिक निबन्ध )	४७
१२	भवरलाल नाहुटा सामू बाबो	( मस्मरण )	५१
१३	चन्द्रसिंह सीप	( गद्य काव्य )	५५
१४	मनोहर शर्मा पाणिवाद	( ललित निबन्ध )	५८
१५	रानी लक्ष्मीकुमारी चूडाव्रत म्हारी जपान यात्रा	( यात्रा वणन )	६३
१६	राव्रत सागरव्रत यो मे वाच श्रेष्ठा जिघासति	( उद्बोधनात्मक निबन्ध )	७४
१७	कन्हैयालाल सेठिया गळगच्चिया	( गद्य-काव्य )	७७
१८	श्रीलाल नयमल जोशी फरामल	( रेखाचित्र )	८२
१९	अजनाथ पन्नार गात्र रा मास्टरजी	( कहानी )	८८
२०	पूरणमल गोयनका कृष्ण जीत्यो ?	( अंकाकी )	१०१
२१	नृसिंह राजपुरोहित भीमजी ठाकर	( कहानी )	१०७
२२	गोवधन शर्मा साहित्य	( साहित्यिक निबन्ध )	१२०
२३	विजयदान देधा नकटा देव न सुरडा पुजारी	( निबन्ध )	१२४

नगोपाल शर्मा नखजमारो	( ललित निबन्ध )	१३३
नदयाल ओझा नकुसरी	( रेडियो-ओकाकी )	१४४
दवेन्द्र शर्मा चन्द्र र री पडो	( उपन्यास )	१५०
कालिस्टर ( सप्रहकार ) गलजी 'र हीरजी-की क्हाणी	( श्लोक कथा )	१५५
दमी कमल ( सप्रह-कर्त्री ) रज भगवान-री बात	( व्रत-कथा )	१६५

प्राचीन खड



## तत्त्व-विचार

( चौद्वी गताब्दी )

[ सकलित जग एक प्राचीन हस्तलिखित गुटक से लिया गया है। वह चाण्डवी गताब्दी के राजस्थानी गय का श्रुत उदाहरण उपस्थित करता है। उसमें मानव जन्म की दुलभता और धर्म की महिमा बताकर धर्म के दो बड़ विभाग किये गये हैं—यति अर्थात् साधु का धर्म और श्रावक अर्थात् गृहस्थ का धर्म और तदनंतर श्रावक धर्म क द्वाला धर्म नाम से प्रसिद्ध ब्राह्म भेदों का परिचय दिया गया है। ]

अथ सप्तार अमारु खण भगुर अणाइ चउ-मइउ जणारु अपार सप्तार अणेग जणादि कम सयोगि सुभागुभ कम अवष्टित परिवर्णिविया पुणु नरक गति, पुणु तियच-गति पुणु मनुष्य गति पुणु देव-गति इम परि परिभमता जीव जाति कुलादि गुण-सपूण दुलभु भाणुवउ जनमु मव ही भन्न मद्धि महा प्रधानु मन चिन्ताय-सपादवु कथमपि दस तणइ यागि पात्रियइ (? पात्रइ) तत जति दुलभ परमस्वर-सवजावु धमु

यह सप्तार अ-सार दण भगुर, जनाति और चतुगतिक (=चार गतियों वाला) (है)। (चार गतियाँ=नरक गति तियच-गति मनुष्य-गति और देव गति) अमीम या अनाला(?) (गौर) अपार (है) सप्तार। अनक अनादि कमों के सयोग से गुभ-अगुभ कम से आवष्टित परिवर्णित। फिर नरक-गति फिर तियच (=पुन-पुनो, गति फिर मनुष्य-गति (और) फिर देव-गति—एक प्रकार भटकते हुअे जीव। जाति कुल आदि गुणों से सपूण। (और) दुलभ। मनुष्य-जन्म (मानसउ=मनुष्यत्व)। (जा) मभी जन्मा क मध्य जति श्रुत (है), (जा) मन म साचे हुअे अथ (=बाप या इच्छा) का साधक (है)। किसी प्रकार। देव क योग से। पाते हैं। (फिर) उससे अतीव दुलभ परम ईश्वर सवण (=जिन भगवान्) का बहा हुआ (=उपदेश लिया हुआ) धर्म (सिद्ध होता है)।

## राजस्थानी गद्य विकास और प्रकाश

सोउ धमु किसउ भणियइ ? दुगनि पडता प्राणिया घरइ मु धमु भणियइ  
 कति विधु होइ ? दु विधु—प्रथमु यति धमु बीजउ थावक धमु  
 यति किसा भणियइ ? व्रतिया चारिप्रिया अठार महस्र-मीलाग धारक,  
 महाव्रत-पाळक

थावक किमा हाहि ? थवतीति थावक व्रतिया पामि धमु साभळहि दानु  
 त्रन्तु थवहि अे थावक भणिजहि

साह तणउ धमु केत भेदे ? वार भेदे—पाच अणु-व्रत, निनि गुण-व्रत चारि  
 भा व्रत

पाच अणु-व्रत किसा ? जाव निरपराध मनि वचनि कायइ न हणउ न  
 गावउ आरभु सापराधु माकळउ—अउ पहिलउ अणु-व्रतु जटा न वोलिउ  
 ना गा भूमि विषय तासापहाए न करउ कूनी साखि न देउ—अउ बीजउ  
 णु-व्रतु राज निग्रह-कारकु अदस्तु परायउ वस्तु न तेउ—अउ तीजउ अणु-व्रतु

वह धम कौन-सा कहा जाता है ? दुगनि म पन्त हुअे प्राणियो को जो  
 कारण करना है (=आधार देना है) वह धम कहा जाता है। वह कितने प्रकार  
 का होता है ? का प्रकार का—पन्ना यति धम और दूसरा थावक धम।

यति कौन कह जाते हैं ? व्रत धारी वाग्मिथ्य धारी अठारह हजार तीन  
 अंग का धारण करने वाले पाच महाव्रता को पालने वाले।

थावक कौन होत है ? जो श्रवण करना है वह थावक होता है। व्रतधारी  
 के पाम धम को सुनते हैं निन् तर दान का प्रवाह म्हाते हैं ये (=वे) थावक  
 कहे जात हैं।

उनके धम के कितने भन् होत है ? वारह भन्—पाच अणुव्रत तीन गुण  
 व्रत (और) चार शिक्षा व्रत।

पाच अणु व्रत कौन म (है) ?—(१) मन म वचन म काया स निरपराध  
 जीवा का न मारना (और) न मरवाना अपराध-भुक्त उत्पोग (=काय के  
 अ रभ) को को त्याग देना—यह (स्थूल प्राणातिपात विरमण या स्थूल अहिंसा  
 नामक) पन्ना अणव्रत (है)। (२) कया (आनि मनुष्य) गाव आनि पणु  
 भूमि (जादि मपति) के विषय म भूठ नही वालना (अपने पाम रखी हुइ)  
 घराहर का अपहरण नही करना भठी माया (गवाही) न देना—यह स्थूल  
 मृपा वाद विरमण अथवा स्थूल सत्य नामक) दूसरा अणु-व्रत (है)। (३) जिमके  
 लेन से राय द्वारा निग्रह हा (=राय मे दड भागना पडे) असी बिना दीं हुई  
 वस्तु को न लेना—यह (स्थूल अदत्तापान विरमण या स्थूल अस्तय नामक)

स्त्री पर-भुरिस-परिहार, पुरुष हुता स्व-दार-सतोपु पर-दार वजनु—अंउ  
चउत्थउ अणु-व्रतु धनु, धायु खेतु, वत्यु, रूपउ, सोनउ, डिपहु, चतुप्पहु,  
कुप्पु—अन्न विध-परिग्रह-परिमाणु—अंउ पाचमउ अणु-व्रतु

(तिनि गुण-व्रत विमा ?) (दिमि-व्रतु)—दम दिसि—व्यारि दिसि च्यारि  
विन्सि, अंउ अघ, अंउ ऊघ्य—इह गमण-परिमाणु कीजइ—अंउ पहिलउ  
गुण-व्रतु

भोग-परिभोग-व्रतु—भोगु जु अंउ वार भागवियइ—आहार, तवाळु फूलु  
विलेपनु परिभोगु जु पुणु-पुणु भागवियइ—भवन विलया आभरण वस्त्रादिनु  
सवहि परिभोग निपेधु कीजइ—अंउ वीजउ गुण व्रतु

अनथ-दड-व्रतु चतुर्विधु—अपघ्यानाचरितु प्रमादाचरितु, हिंस्र प्रदानु  
पापोपदेशु— —अंउ तीजउ गुण व्रतु

(चारि शिक्षा-व्रत विमा ?)—नामाइहु—ममइ भावि मावज्ज जोगु परि

तीमरा जणुव्रत (है) । (४) स्त्री का पर-पुरुष का परिहार (और) पुरुष का अपनी  
पत्नी से सतुष्ट रहना (तथा) पर-स्त्री का वजन करना—यह (स्थूल मधुन  
विरमण अथवा स्थूल ब्रह्मचय नामक) चौथा अणु व्रत (है) । (५) धन, धान,  
खेत, वास्तु (=मकान) चानी माना जाय (=जास जासी आदि), चौपाय  
(और) कुप्य (=कम मूल्य वाली धातुओं अर्थात् माघारण वातुआ क  
वतन-चामन आदि) इन नव प्रकार के परिग्रह की सामा रचना—यह (स्थूल  
परिग्रह विरमण अथवा स्थूल अपरिग्रह नामक) पाचवा अणु-व्रत (है) ।

(तीन गुण-व्रत कौन-से है ?)—(१) त्रिणा परिमाण व्रत—दस त्रिणाअं  
(है)—चार त्रिणाअं, चार विदिगाअ अंउ नीच, (और) अंउ ऊपर—इन  
दिगाआ से जाने की सीमा का जाय (=कम से कम दूरी तक जाया  
जाय)—यह पहला गुण व्रत है । (२) भाग-परिभोग (परिमाण)-व्रत—भोग  
जा अंउ (है) वार भोगा जाय जैसे भाजन गावल पुप्य (सुगंध)विनपन  
(और) परिभोग जो बारबार भागा जाय जम भवन स्त्री जाभूषण वस्त्र जादि  
—सभी परिभोगा का निषेध किया जाय—यह दूसरा गुण-व्रत (है) । (३)  
जनय दड विरमण व्रत—यह चार प्रकार का (हाता है)—अपघ्यानाचरित  
(=बुरा ध्यान या चिंतन करना) प्रमादाचरित (=प्रमादपूर्ण काय करना)  
हिंस्र प्रदान (=हिंसा या पाप के साधना का प्रदान करना), (और) (पापोपदेश  
(=दुष्ट उपदेश देना)—(इन चारा में त्रिरति)—यह तीसरा गुण-व्रत (है) ।

चार शिक्षा-व्रत कौन-से है ?—(१) सामायिक—मम भाव से सदाप कायोंका



## राजस्थानी गद्य विकास और प्रकार

त्रेउ पहिलउ मिग्या व्रतु देमात्रगामिउ—पूव-गृहीत सव हि व्रत-वउ  
 10—अउ बीजउ गिभा-व्रतु पोमह-व्रतु—आहार, देह-मक्कार, (अ)  
 तार निवृत्ति बीजइ सुभाभात पामियहि—त्रेउ तीगउ गिधा-व्रतु  
 विभाग व्रतु—तिथि-पर्वोत्सवर्जि परिहरिया ताह फामू ऐपणीउ दानु  
 अउ चउत्यउ गिभा-व्रतु  
 बारह विधु श्रावक धमु हो धमु सम्यक्त्र मूठु

10 उ किया जाय—यह पहला शिक्षा-व्रत (है) । (2) देगावकागिक—यहल  
 य दुअे सभी व्रता का मक्षप किया जाय (=उनका मर्यादा या सीमा  
 कम कर दी जाय)—यह दूसरा शिक्षाव्रत (है) । (3) पौषध व्रत—  
 देह-मत्कार और अग्रहचक्र के व्यापार स निवृत्ति तथा शुभ भावो का  
 किया जाय—यह तायरा शिक्षा व्रत (है) । (4) अतिथि-सविभाग व्रत—  
 । और पर्वो के उमव जिनन छाउ थिये उनको (=उन साधुआ को)  
 ऐपणीय दान किया जाय—यह चौथा शिक्षा-व्रत (है) ।  
 ह बारह प्रकार का श्रावक धम है । धम सम्यक्त्व मून बाला (होता है)  
 धम का मून सम्यक्त्व हाता है ।

## द्वितीय व्रत सत्य पर कथा

( पद्महवी शताब्दी—पूवाध )

[ तरुणप्रभ सूरि ]

[ तरुणप्रभ सूरि स्वस्तरगच्छ क आचार्य जिनचंद्र सूरि के गिण्य थे । स० १३६८ म भीमपल्ली (पालनपुर) म इहोने प्रव्रज्या ग्रहण की । राजेन्द्रचंद्र सूरि तथा जिनकुशल सूरि के पास इहाने विविध शास्त्रा का अध्ययन किया । इनकी विद्वत्ता एव योग्यता से प्रभावित होकर श्री जिनकुशल सूरि न स० १३८८ म इहे आचार्य पद प्रदान किया ।

ये राजस्थानी के मन्वप्रथम प्रौढ गद्य लेखक हैं । इहाने लडखटाल हुए राजस्थानी गद्य को वह शक्ति प्रदान की कि वह उठकर चलने म ममथ हो गया । ये सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश राजस्थानी क अच्छे ज्ञाता और विद्वान थे । इनकी अधिकांश रचनाएँ स्तवना क रूप मे है । इनकी सभसे महत्त्वपूर्ण कृति पडावश्यक बालावबाध है जिनकी रचना स० १४११ म हुई । पडावश्यक जन माधना के प्रतिदिन करने के छह आवश्यक कर्म हैं—सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव वचना प्रतिभ्रमण, कायोत्सग और प्रत्याख्यान । इनका विवेचन पडावश्यक सूत्र मे हुआ है । तरुणप्रभ ने इस पर बालावबाध नामक सरल भाषाटीका लिखी जिसके साथ दृष्टान्त रूप म कथाएँ भी दी गयी हैं । य कथाए ही ग्रथ का मुख्य भाग हैं ।

यद्यपि जेक दो बालावबाध इसक पूर्व भी लिखे जा चुके थे पर इन गली को बल तरुणप्रभ ने ही मिला । आगे चलकर जनक विद्वाना न तरुणप्रभ के अनुकरण म बालावबाधा की रचना की ।

सकलित जग पद्महवी शताब्दी के प्रथम चरण के राजस्थानी गद्य का उगहरण है । इसमे बारह व्रता म द्वितीय व्रत सत्य की महत्ता म सवधिन कथा ना गयी है । राजा हस वाययात्रा के लिए जाने समय एमी परिस्थितियो म पड जाना है जिनमे व्रत की रक्षा करना कठिन हा जाना है पर वह बुद्धिमत्ता-पूर्वक व्रत की रक्षा भा करता है और मग मुनिया तथा चागे के प्राण भी रक्षात है । अत म सत्य के प्रभाव से वह अपन स्वयं हुए राज्य का प्राप्त करता है और देह-त्याग करन पर स्वग जाना है । ]

## राजस्थानी गद्य विकास और प्रकाश

—अउ पहिलउ गिण्या-अनु दनाप्रगामिउ—सूख-गृहीत गव हि अत-अउ  
 अउ अउ गिण्या-अनु पागह-अनु—आहार, देह-गववार (अ)  
 गपार निवृत्ति बीजइ मुभाभात्र पामिर्षाहि—अउ तीजउ गिण्या-अनु  
 सविभाग-अनु—निधि-अर्कोत्मत्र जहि परि-रिया ताह फामू अपणीउ दानु  
 —अउ अउत्यउ गि ता-अनु  
 उ वारह विपु श्रावक धमू हां धमू सम्यक्त्र मूल

छाड दिया जाय—यह पहला गिण्या-अनु (है) । (२) देगाववागिब—पहन  
 किय हुआ मभा अता का म ता किया जाय (=उनका मर्यादा या सीमा  
 भी कम कर दी जाय)—यह दूसरा गिण्या-अनु (है) । (३) पौपध-अनु—  
 ६, देह-अत्वार और अन्नरूपचय क व्यापार स निवृत्ति तथा शुभ भावा का  
 किया जाय—यह तीसरा गिण्या-अनु (है) । (४) अनिधि-सविभाग-अनु—  
 रा और पर्वों क उत्सव जिनन छाड दिये उनका (=उन साधुओं का)  
 एषणीय दान किया जाय—यह चौथा गिण्या-अनु (है) ।  
 यह वारह प्रकार का श्रावक धम है । धम सम्यक्त्व मूल वाला (होता है)  
 । धम का मूल सम्यक्त्र हाता है ।

## द्वितीय व्रत सत्य पर कथा

( पद्महरी शताब्दी—पूवाध )

[ तरुणप्रभ सूरि ]

[ तरुणप्रभ सूरि खरतरगच्छ के आचार्य जिनचन्द्र सूरि के शिष्य थे । म० १३६८ म भीमपल्ली (पालनपुर) में इन्होंने प्रव्रज्या ग्रहण की । रावेन्द्रचन्द्र सूरि तथा जिनकुशल सूरि के पास इन्होंने त्रिविध शास्त्रों का अध्ययन किया । इनकी विद्वत्ता एवं योग्यता से प्रभावित होकर श्री जिनकुशल सूरि ने म० १३८८ म इन्हें आचार्य पद प्रदान किया ।

ये राजस्थानों के सबसे प्रथम प्रौढ गद्य रसक हैं । इन्होंने लडखडात हुए राजस्थानी गद्य को वह शक्ति प्रदान की कि वह उठकर चलने में समर्थ हो गया । ये संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी के अच्छे ज्ञाता और विद्वान थे । इनकी अधिकांश रचनाएँ स्तवना के रूप में हैं । इनकी सबसे महत्वपूर्ण कृति पडावश्यक बालावबोध है जिसकी रचना स० १४११ म हुई । पडावश्यक जन माधना के प्रतिनिधि करने के उद्देश्य से रचित है—सामायिक चतुर्विंशतिस्तव, बतना प्रतिक्रमण कायात्मग जोर प्रत्याख्यान । इनका विवेचन पडावश्यक सूत्र म हुआ है । तरुणप्रभ ने इस पर बालावबोध नामक मरल भाषाणिका लिखी जिसके साथ दृष्टान्त रूप में कथाएँ भी दी गयी हैं । ये कथाएँ ही ग्रंथ का मुख्य भाग हैं ।

यद्यपि एक दो बालावबोध इसके पूर्व भी लिखे जा चुके थे परन्तु शरी को बल तरुणप्रभ से ही मिला । आगे चलकर जनर विद्वानों ने तरुणप्रभ के अनुकरण में बालावबोधों की रचना की ।

सकल अश पद्महरी शताब्दी के प्रथम चरण के राजस्थानी गद्य का उदाहरण है । इसमें बारह व्रतों में द्वितीय व्रत सत्य की महत्ता से संबंधित कथा भी गयी है । राजा हम तीव्रयात्रा के लिए जाते समय ऐसी परिस्थितियों में पड़े जाता है जिनमें व्रत की रक्षा करना कठिन हो जाता है पर वह बुद्धिमत्ता-पूर्वक व्रत की रक्षा भी करता है और मग मुनिया तथा चोरो के प्राण भी बचाता है । अंत में सत्य के प्रभाव से वह अपने सोय हुए राज्य को प्राप्त करता है जोर देह-त्याग करने पर स्वयं जाता है । ]

राजपुरी नामि पुरी हम नामि राजा, सम्यक्त्व मूस-श्रावक धम धुरा  
अनेरइ दिवसि मास घस लघ्य मार्गि रत्नशृ गगिरि पूवज-कारिति  
भदेव दवष्टि तीथ-यात्रा करिवा सकल-लोक-सहितु सत्य-वचन महितु  
हितु हूनउ चालिउ

अथ मार्गि सधि गयइ हूतइ पाछा हूनउ चर अंकु आविउ राजद्र रइ  
इ—महाराज ! तुम्ह चालिया पाछइ, दसमइ दिवसि, अजुन नामि  
छउ पुरी लेवा आविउ तुम्हे जिक् रक्षपाळ मेळिया हूता ति सर्वे तिणि  
राजपुरी आपणी करि बढठउ, भय भान लाकु वेसानी करा तुम्हारइ  
मनि उपविष्टु वत्त अनरा नइ धरि नाठउ छ सुमित्र नामि मत्री, निणि  
तुम्ह कहइ माकळिउ अणि कारण जु काइ युक्तु हूयइ सु कीजउ

( ५ )

राजपुरी नाम से (=नाम की) नगरा (था) । इस नाम से (=नाम का)  
। (था) । सम्यक्त्व मूस वाले श्रावक धम की घुरी को धारण करता हुआ  
धारण करने वाला) । (सम्यक्त्व=सत्य सत्य पर श्रद्धा सम्यक् दशन  
क धम=जन सद्गहस्य धम)

अथ त्ति (=एक त्ति) । माम घस-त्तघनीय=अक माम के त्तिना म  
तीम त्तिना मे) पार करन योग्य (या त्तिना और महीनो मे पार करने  
य) । मार्ग म । रत्नशृ ग पवत पर । पूवजा के बराये हुआ । श्री ऋषभदेव  
मन्दि म । तीथयात्रा करन का । सब लोगो क साथ । सत्य वचन स  
वत । गव स रहित । होना हुआ=होकर । चना ।

जाधे मार्ग तक । मघ के जान पर । पीछे स । चर दूत । अंक । आया ।  
ह) । राजद्र का (=राजा से) । विनता करता है । महाराज ।  
पके चन पाछे रवाना होने क बाद । तमवे त्ति । अजुन नामक सामा  
यन राजा । नगरी (का) इन के लिअ आया । जापा जो रखवाल ।  
व थ । उन सब का उसने जीत लिया (संजित प्रा० जित) ।  
जपुरी की । अपनी बनाकर अधिकार म करके । बढ गया (है) । भयभीत  
गा का । विवस्त करक भरामा दकर । आपक सिंहासन पर बठा हुआ  
। डूमरो के घर पर भाग गया (?) । सुमित्र नामक (जा) मत्री (है) उसने  
ये आपक पाम भेजा है । इस कारण । जो बुद्ध उचित हो सो कीजिये ।

तदा-वालि समीप-गत जि छत्र सुभट तेहे कहिउ—महाराज! हसडा पाछा वळियइ, अम्ह हूता कउण ताहरइ पुरि विस्फुरइ तीह आगइ राजा कहइ—पुण्य प्राप्ति निवधनु यात्रा करणु मल्ही करी पुण्य-लाभ राज्य तणइ कारण पाछउ वळनु युक्तउ नही, तथा मव नासिहिं यात्रा ज-करी हउ वळउ नही

इमउ भणी करि हमु राजा आघउ चालिउ परिवारु क्रमि क्रमि सगळउ पाछउ वळिउ अेकु छत्र घर आपणपा पानि दखी करी वस्त्रालकार-नुरगमानि वस्तु समस्तु दे करी पाछउ माकळिउ लाक पाछउ गपउ तउ तीर्थाभिमुख अेकलउ पाद चारिहिं जि चालिउ

—२—

कही-अेक जटवी माहि महीपति रहइ देगताई जि हूता मग अेक परा हूतउ नाठउ आवा करी लता वितान माहि पइठउ तह नइ पगि लागउ भील जेक धनुष्कि चडाविइ मरि साधिइ आविउ राजेद्र क'हा पूछउ—महापुरुम ! इणि

उम समय । निकट स्थित । जो । हं । सुभट वीर याथा । उनन । कहा । महाराज । जब (जघुता) । पीछे वापिन । लौटा जाय । हम—(हमार) । होते दूत्रे । कौन । तुम्हारे । नगर म । प्रकाशित हाता है तपता है अधिकार कर सक्ता है । उनके आग उनके प्रति । राजा कहता है । पुण्यो की प्राप्ति का कारण । यात्रा करना । छोक्कर । पुण्या सं मिलन वाल । राज्य के । कारण लिये । पीछे लौटना । युक्त उचित । नहा । और सब नाग होन पर भी । यात्रा न करके यात्रा विना किय । मैं लौटगा नही । अमा कहकर । इस राजा । आग चला । साथ के लाग धीरे धीरे वापिस लौट गये । अेक छत्रधारक (का) । अपने-आप के पास (पावें) । देखकर । वस्त्र और जाभूषण । घोड आदि । वस्तुएँ । ममस्त सारी । दकर । वापिस लौटा दिया । लाग वापिस गय ता (राजा) तीर्थ की आर अकता पदल हा चला (स० चल प्रा० चत्तल) ।

( २ )

किमी अेक जगन म । राजा के देखते हुअे ही । अक मृग । दूर से । भागा हुआ = भागता हुआ (म० नश = भागना मे नष्ट प्रा० नष्ट) । जाकर । लताआ क मडप म प्रविष्ट हा गया । उनके परा लगा (पर देखकर पीछा करता हुआ (close on heels) । अेक भील । धनुष (स० धनुष्क) चढाये हुए । बाण माध हुअे । आया । राजद्र क पान (= राजद्र से) । पूछता है । ह महापुरुष । इस पत्ता से छाये हुअे वन म । मृग का पर (= पंगे का चित्त) ।

न वनि मग तण पगु दोमइ नही सु पुणि मृगु माहरउ भभ्यु विहा

उ पाउइ राजा विनि चिनवद—माच कन्दि मृगु विनामु ह्यद वूइ  
। द्वितीय व्रत भगु ह्यइ तिणि कारणि बुद्धि करी अउ वि प्रनारिवउ  
वीतव्री करा राजा भणइ—अहो ! माहरउ स्वप्पु पूइइ ? भाग भ्रष्टु  
ग जात्रिउ भीनु भणइ—मूइ ! नाठउ मगु विहा गयउ ? राजा भणइ  
। सु हम नामि पुरुमु आहंहा गाइ स्वरि कहइ—मग-नउ मागु मूख !  
इ कहि राजा भणइ—राजपुरी माहरउ थानवु

आहंहा कापि चडिउ भण जू तू रहइ वधिरता-याधि माउ छ मू  
उ हाइजिउ इमउ भणी करी भोल जनर मागि गयउ मृग रहइ मनि  
ग छोडव्री करी जापणउ मनु जलीक-वचन-परिहार-नभणु जयटु प्रतिपाळइ

-३-

तिहा हूतउ आधउ चालिउ मामुहा जावता मुनि रहइ वाता करी मागु  
। करी आधउ चानिउ यम विकर मरीथा भीन त्रि कापाण-साचन

गयी नहीं इना (म० दृश्यन) । फिर वह मग भभ्य मृग । कहा गया ।  
तव । पीत्रे इम पर । राजा साचना है । मत्यक न्ने से मृग नाग होता है ।  
(म० कूट) कहन से । दुमग व्रत भग होता है । इम कारण (= व्मलिअे) ।  
से । इम को । प्रतागित करना चाहिजे धोखा नेना चाहिजे । अमा  
व कर । राजा कहता है । अर ! मरा स्वल्प (= में कौन हू यह) पछले  
? माग भ्रष्ट हुआ (= माग भूतकर) में (म० अहम) यहा जा गया हू ।  
ल कहता है । हे मृग ! भागा हुआ मृग कहा गया । राजा कन्ता है । वह  
हम नामक पुण्य है । शिकारी गाउ (= कठार) स्वर म कहता है । मृग का  
गने का) माग । हे मूख ! मुझे वना । राजा कहता है । राजपुरी मग  
गन है । शिकारी काध चना हुआ (= काध म भरकर) कहता है । वि  
(० यत जप० जउ) । तर । बहरपन रा रोग गन्रा है । वह । जीर गहरा  
= पहल से अदिक गहरा) । पूजा हा जाय । अमा कहकर भीन इमरे माग  
गया । मग का बुद्धि व प्रयाग द्वारा । छुट्वा कर वचाकर । अपना व्रत ।  
ग्या वचन-परिचाग रूपी लक्षण वाता । अखड रूप से । पालना है  
= पाला) ।

( ३ )

वहा म जाग चना । सामन जात हुआ । मुनियो की । वदना करके ।

घणुहि चडाविइ मरि साधिइ आत्री करी राजेद्र आगइ कहइ—चिर-काळ तणउ चौय निमित्तु मूरु नामि प ली-पति नीमरिउ दूरइ तउ जेह वन माहि मुड पाखडिक अक रहइ देखी करी 'अ शकुनु जेउ इणि वारणि तेह माराविवा कारणि अम्ह माकळिया सु पाखडिकु जद तउ दीठउ तउ अम्ह आगइ कहि

तउ राउ मनि चीतवइ—जउ हउ मानु करि गहिमु अथवा व्याज वचन भणिमु तउ भील सरळइ मागि जायना हूता मुनि रहइ विनास हेतु होइमि, निणि कारणि माप्रतु अमत्यु जद कहियइ तउ सत्य कहा अदिक पुण्य-वारकु हुयइ इति गच्छलइ तउ मत्यु असत्यु राजा कहइ—जिणि मागि तुम्हे जाउ उउ तेह माग हतउ नु वामउ मागु निणि मागि महात्मा जाइ छद

विश्व जनु ज्ञान रनिणि करी दक्षिणु मुनि तणउ दक्षिणु माग मेल्ही करी वामइ मकन जीव विघात भावि करी वामइ मागि जिम पूर्वाहि ति भील

माग टोड करके । आग चला । यमदूत जमे (म० गहग) । दा भील । नाप से ताल नेशा वाले । धनुष चढाये । बाण साधे । आकर । गजेद्र के । आगे = प्रति । कहत हैं ।

चिरकाल की बहुत समय की । चारी क लिये । सूर नामक । पल्लीपति (पल्ली = भीला की वस्ती पति = राजा) । निकना (म० निम्मर) । इस वन म । दूर से । मुडित मिर वान । अक पाखडिक (साधु विशेष) को । देखकर । यह अ शकुन (हुआ) उस कारण । उसको भरवान के लिये । हम भेजे गये (= हमको भेजा है) । वह पाखडिक । यदि तू न देखा हो (म० दृष्ट) । ता । हमारे आगे कह = हम मे कह, हम बता ।

तव । गजा । मन म सोचना है । यदि । मैं । मौन (धारण) करके रहूगा । जयवा । बहान के वचन कहूगा । ता । (व वचन) । भीलो के मोधे माग म गाते हुजे (= जान मे) । मुनि के नाग के कारण हाग (मैं नहीं बताऊंगा तो भील मोधे माग स जायग जिम पर मुनि गये हैं इससे मुनि उनको मिल जायग और वे मुनि को मार डालेंग) । उस कारण । इस समय । अमत्य यदि कहा जाय । ता (वह) मत्य की अपत्या अदिक पुण्यवारक हा (गा) । अमा (विचार कर) । गजा के छल से । तव । असत्य मत्य नूठा मच । राजा कहुता हैं । जिम माग पर तुम जा रह हा । उस माग मे जा बाया माग है (उम माग की बायी ओर जो माग है) । उम माग पर महामा जा रह हैं ।

समस्त जीवा के समूह के रक्षण म दक्षिण (हितकर) जैम मुनि के दक्षिण (दाहिनी ओर जाने वाले) माग का छोडकर । वे भीन । सब जावा क विनाग



। तिमहि जि गया मुनि कुशलि धेमि पहुतउ ति भीन बिहु  
। ज भागि गया राजा वचन-मुधा मेक-समुत्तामित-कीति-वन्पलता-  
। लाधउ चालिउ

-४-

ममइ महा द्रुम अक अवाभागि वासि रहिउ सधि समुद्रि धनवलि  
मि पडिसिया धन मलिल माहि चित्तिया दरिद्रध भूलि उतारिमिया  
न बरना बनातरिउ चार राजदि तिहा जाणिया किसी परि जे  
स्थान कारक नहा हुइइ— जतळहि मन माहि राजद्रु इमी परि  
रळ दीपिका आपितागावकाग उतामुध महायाध तिहा आविया  
। भणइ—तउ कउणु? कद-अेक चार सध विधान कारक हरकइ अम्ह  
कहिया छइ जइ तउ जाणइ तउ कहि जिम ति चार मारी करी

म (प्रतिकूल अहितकर) अस वाम (बाय) भाग पर । जम पहल व  
हे थ वम ही । चने गय । मुनि । कुशलि धेम से । (जपन स्थान पर) ।  
(म० प्र+भू म प्रभूत जप० पन्त) । व भीन । (भौतिक और  
क) दाना प्रकारो म । कुमाग म गय । राजा । वचा रूपी अमृत क  
। जिमका कानि रूपा कपतता का धितान समुत्तामित (प्रफुलित)  
अमृत अस वचन क सिचन स प्रफुलित कीति रूपी कपतता क  
। हाता हुआ=हाकर । जाग चला ।

(४)

।। के समय । जेक विमान वृक्ष के नीच क भाग म (=नीच) । निवाम  
(तावयात्रिया क) मय रूपा धनगाली समुद्र पर । चौध दिन । पहेंग  
करेंग । धन रूपा जन म जानद करये । दरिद्रता रूपी धून को (मन का)  
। जमी बात करते । वनम छिपे हुज । चार चारो का । राजद्रु न । वहा ।  
मभा रूपा । किय प्रकार । थ चार । सध का नाशकारी न हो=सध का  
हर सर्वे । जितन=जब । मन म । राजा । इम प्रकार । साचना है । उत्तन  
। दापिकाथा (मंगला) म आवाग का प्रवाणित करन वाले । गम्प्र  
अ । बट याधा । वन आय । (व) राजा क प्रति । कहत है । तू कौन  
रई-अक चार । सध के नाग करन वाले । हेरक न खबर दन वाल  
।। भाग=इम का । यना । कट है चताय है । यदि । तू जानता है  
न्य है । ता यता । ज्यो=ता वि । उन चारा का मारकर । सध की

सध रक्षा करी यश अनइ पुण्यु बि वस्तु उपाजा, जिणि कारणि श्रीपुर नगर-  
नायकि श्रीगाधि-नामकि जिन शासन तीह चोरह मारिवा निमित्तु अम्हे  
मोकळिया छा राजा पुनरपि चित्ति चीतव—साचइ भणिइ चार घात-पातकु  
लागइ कूडइ भणिइ सध-लूटणु दूमणु लागइ इसउ चीतव्री करी राउ भणइ—  
तुम्ह मधि जावउ तिहा गया हुता तुम्ह रहइ मध रक्षा पुण्यु अनइ यशु व बाल  
हामिइ ति पुम्प राजा-नइ वचनि करी रजिया सध माहि गया

लता वितानि हुता चोर नीसरिया राजेद्र न पग आवी करी पडिया  
इमउ वीनवइ—अहो ! महापुरुष ! तइ अम्हे इहा छता जाणिया पुण अम्हारी  
दया करी तइ न कहिया तिणि कारणि तउ अम्ह रहइ जीवत-य-दाता  
परोपकारी पिता इसउ भणी प्रणमी करी बळी गया

—५—

प्रभाति राजा आघउ चालिउ केतळा काळ गया हुता ऊतावळा असवा  
के जेक गय रहइ मिलिया राय आगइ कहइ—जिणि अम्हारउ ठाकर दडिउ

रक्षा करके । यश और पुण्य । दा (स० द्वि०) । वस्तु (ज) । उपाजन कर  
प्राप्त करे । जिसके लिये । श्रीपुर नगर के स्वामी । श्री गाधि नामक न । जिन  
धम (?) । उन चारों को मारने के लिये । हमका । भेजा है ।

राजा । फिर भी—फिर । मन मे विचारता है । सत्य कहन पर । चारो  
की हत्या का पाप लगता है । भूठ कहन पर मध के लूटन का पाप  
लगता है । जसा विचार कर । राजा कहता है । तुम सध म । जाओ ।  
वहा । गय हुअे—जान पर । तुमका सध की रक्षा का पुण्य । और (स०  
अ-यत) । यग । दो (नो) । वातें । (प्राप्त) हागी । व पुरप । राजा के कहन  
से । प्रसन हुअे—प्रसन होकर । सध मे गय ।

(तब) । लता के मडप से । चार । (बाहर) निकल । आकर राजा के  
पर म पडे । अम निवेदन करते है (=विनय के साथ कहत हैं) । जहो महा  
पुम्प । तुमन । हम । यहा होने हुअे—यहा विदधमान । जान लिय । पर ।  
हमारी दया से । तुमने नही बताय । दम कारण । तुम हमारे जीवन  
दाता परोपकारा पिता (हा) । जसा कहकर प्रणाम करके लौट गय ।

( ५ )

सबरे । राजा । आग चला । कितनी दूर कुछ दूर । गय हुअे जान पर ।  
उतावने । सवार । कई-अेक । मिले । (वे) । राजा क प्रति । कहत है ।  
जिसन हमार मालिक को दड दिया । उम हम का यहा कही दखा

ग किहा ई लीठउ ? अउ लीठउ तउ कठि जिमि सू मारी करी आपणा गउ वैन मोघउ

उ माभठा करी राजा मन माहि चीनवइ—आपणा जीदितय तणइ कउणु विचक्षणू कूडउ बानद ? एमउ चातवी राउ भणउ—इउ सु हम पायुध न करी आगइ ऊभउ हुयउ

अक गम<sup>१</sup> अनेकि जश्राविरु<sup>२</sup> प्री<sup>३</sup> मुभट, वीज<sup>४</sup> गमइ अकु हमु उ पाइइ धम प्रभाव<sup>५</sup>तउ युद्ध करतउ राजा घणेई अमवारे पाछउ करी । किनु पच परमण्डि महामत्र ममरण-परमाणु तऊ जु जेकु सर्वे निर्जिणी ।।म भूमि पीठि रहिउ

यवान्नि ! जय अयति वा<sup>६</sup> पूवक देव श्रु<sup>७</sup>भि ना<sup>८</sup>-करण-समगा<sup>९</sup> कुसुम नो वृष्टि राजेद्र नइ मस्तकि करतउ तेह वन तणउ अयक्षु ।।मि यशु प्रयशु जागिनद गमइ हूयउ—रत्नशृ<sup>१०</sup> गाभिधानि गिरि जिणि तना हुय<sup>११</sup> आजु मु त्रिमु तिणि कारणि षणि विमानि माहरइ घडि, वटाइ जि तिहा जा<sup>१२</sup>यद

पट) । (क्या) । यदि देखा । तो बता । ताकि । उसे मारकर । अपने का वर गाधन करें (उर का बदला लें) ।

ह मुनकर राजा मन मे विचारता है । अपने जीवन व । कारण कौन । चतुर समझार नानी । भू<sup>१</sup> । बोने (गा) । यह विचारकर । कहता है । मैं वह राजा हम (हू) । (फिर) शस्त्र उकर । नामने ग गया । (ऊभउ < स० ऊव प्रा० उभ) ।

त्र । जेक जोर । अनक । घाड़ों पर चढ़े हुए । प्री<sup>३</sup> शक्तिगता । याधा । जा<sup>६</sup> । अक अकता । राजा हम । तव पीछे । धम के प्रभाव स । युद्ध । हुआ । राजा । बहुत स । मवारा स भी । पीछा पचात्प पराजिन । किया जा सका । पर तु । पच परभाठी नामक महामत्र का स्मरण करता । जकेला । उन सभी को । जीतकर । (स निर्जि प्रा० निर्जिण गण) । युद्ध भूमि की पीठ पर युद्ध व मगान पर । (वटा) रहा ।

१ मत्ववाण । जय ही जय ही—अस वचना व साथ देवताओ के नगाटो टा<sup>६</sup> करन व साथ ही । पाच रगा व फूला की वर्षा राजा के मिर पर पा टा<sup>६</sup> । उम धन का अध्यय । य<sup>७</sup> नामक यक्ष । आग की जा<sup>८</sup> मामन) । प्रत्यक्ष हुआ । (और उमन कहा—) रत्नशृ<sup>१०</sup> नामक पधत की त्रि<sup>११</sup> यात्रा ज्ञानी है वह त्रि<sup>१२</sup> आज है । शर्मलजे मरे इम निमान पर चढो ।

तउ राजा विमानि चडिउ गुह्य कनइ अर्धामिनि समामीनु हूतउ हस दव-  
गृहि आविउ दिव्य कुसुम गधमार घनसार कस्तूरिका अगुए वारह करी जिन  
बिबह रहइ महा-पूज करी यात्रा सपूण करइ

विमानाधिरूढु राजपुरी परिसरोद्यानि आविउ यभि अजुन रिपु बाधी करा  
पग आणि घानिउ हमु राजा राजपुरी माहि आवि राजि वइठउ यक्षु आपणइ  
धानकि पट्टतउ हमु राज-द्रु राजपुरा-जन रहइ महा हपु ऊपजावतउ मत्य-  
प्रभावि पुरन्दर जिम प्राज्यु राज्यु प्रतिपाली करा देवलोकि गयउ

ताकि अभी (इसी समय) वहा जाया जाय ।

तव राजा विमान पर चला । यक्ष के पाम आधे आसन पर बठा हुआ ।  
हम । देवगृह म, मंदिर म । आया । दिव्य पुष्प । गधसार । घनसार । कस्तूरी ।  
अगर । स । जिन बिब की जिन प्रतिमा की । महापूजा करके । यात्रा  
सपूण करता है (=पूरी की) ।

(फिर) । विमान पर चला हुआ । राजपुरीके निकट क उजदान म । आया ।  
यक्ष ने । अजुन नामक गधु का बाधकर । लाकर पर म (=परा पर) डाला ।  
(फिर) राजा हस । राजपुरी म आकर । राज्य पर बठा । यक्ष अपन स्थान का  
पट्टचा (=भया) । राजा हस । राजपुरी के लागी का महान हप । उपजाता  
हुआ उत्पन्न करता हुआ । सत्य के प्रभाव स । इन्द्र के समान । श्रेष्ठ राज्य  
की प्रतिपालना करके । देव लोक का गया ।

## गुरु-महिमा पर कथा

( पद्महवा गताली—उत्तराध )

[ सोमसुन्दर सूरि ]

सोमसुन्दर सूरि तपागच्छ के प्रभावशाली आचार्य थे। इनका जन्म स० ० में प्रह्लादनपुर (पारहणपुर) में हुआ। इनके पिता का नाम मञ्जन श्रुष्टि माता का नाम मास्तृणदेवी था। स १४२७ में सूरिने जयानन्द सूरि के प्रश्रयार्थ ग्रहण की। स १४४० में वाचक पद पर तथा स १४५७ में सूरि पर प्रतिष्ठित हुए।

साहित्य के क्षेत्र में सोमसुन्दर सूरि की सेवाएँ बहुमूल्य हैं। इन्होंने स्वयं त परिमाण में साहित्य रचा जोर दूसरों का भी इसके लिए प्रेरित किया। वे गिण्य मडली बहुत बड़ी थी जिसमें संस्कृत प्राकृत राजस्थानी के अनेक स्वपूण रचके हुए। इन्होंने तादृश पर लिखा हुआ अनेक प्राचीन कृतियों का संस्कार किया जोर नवीन प्रतिलिपियाँ तयार करवाकर उनकी सुरक्षा की रक्षा करवायी। स्वभात के प्रसिद्ध प्राचीन पुस्तक भंडारों की रक्षा एवं रक्षा में सूरि की मूल प्रेरणा थी।

य सस्कृत प्राकृत राजस्थानी के अनेक विद्वान् थे। संस्कृत के अतिरिक्त स्थानीय गद्य-पद्य में इन्होंने अनेक रचनाएँ लिखीं। रगमागर नमि फागु इनकी स्वपूण पद्य-कृति है। राजस्थानी गद्य में लिखे गये इनके आठ बालावबाध प्राप्त हैं। उनके नाम इन प्रकार हैं—१ उपसर्गमात्रा बालावबाध (स १४८१) २ पठितानक बालावबाध (स १४९६) ३ योगशास्त्र बालावबाध ४ भक्तानामर ५ बालावबाध ६ नवतत्त्व बालावबाध ७ पयताराधना-आराधनापताका बालावबाध ८ पडावश्यक बालावबाध ९ विचार प्रथ बालावबाध।

संस्कृत अथ पद्महवा गताली के उत्तराध के गद्य का नमूना है। इसके प्रथम अंश में राजा शणिक और चांडाल की कथा के माध्यम से ध्वनित किया गया कि धन्य के बिना विद्या की प्राप्ति नहीं हो सकती। दूसरे अंश में त्रिदशै उदाहरण देकर व्यञ्जित किया गया है कि गुण का अपलाप करने से प्राप्त रक्षा भी नष्ट हो जाती है। ]

-१-

राजगृह नगरि श्रेणिक राजा, चित्तलणा पट्ट रानी तेह-हइ अक-स्तभ  
आवाम-नु डोहलु ऊपनु ते अभयकुमारि देवता ओन्नराधी तेह पाहि सबतु वन  
सहित अक स्तभ-आवास करासी पूरिउ

इसि अक मातग-नइ कळत्र हइ अकालि आवाम-नु डोहलु ऊपनु तीणइ  
मातगि अवनामिनी विद्या-नइ बलि सबतु वन ना आवाम नी डाळ नमाडी आवाम  
तेई डोहलु पूरिउ

ते आवाम-नु चार अभयकुमारि वृहत-कुमारो नी क्या कही वृद्धि-नइ बलि  
प्रगट कीधु तेह हइ श्रेणिक राइ कहिउ—जइ विद्या णिइ तु भूकउ  
तीणइ मानिउ

श्रेणिक मिहामणि वइठउ विद्या पढइ षणी वारि मातगि विद्या कही, पुण  
आवइ नही अभयकुमारि कहिउ—मातग हइ मिहासनि वइमारि विद्या निओ

( १ )

राजगृह नगर म । श्रेणिक (नाम का) राजा । (था) । चेतनणा (नाम की)  
पटरानी । (थी) । उसके । जेक थभे बाल घर का । दोहद । उत्पन्न हुआ ।  
उम (राजा) न । अभयकुमार के द्वारा । देवता का आराध कर देवता की  
आराधना करव । उमक पास से, उमके द्वारा उमस । सब ऋतुआ के वन स  
युक्त । अक थभे बाना घर । कगकर बनवाकर । दोहद पूरा किया ।

जसे म दान म तभी । जक चाडाल की भार्या के । अकाल म, बिना मीमम  
के । आम का दाहद । उत्पन्न हुआ । उस चाडाल न । अवनामिनी (भुक्कान  
वाली) विद्या क वन से । सब ऋतुआ वाले वन के आम्रवृक्ष की डाली के ।  
भुक्कान (नम धातु म) । (और) । जाम लेकर । दोहद पूरा किया ।

उम आम के चार को । अभयकुमार न । वृहत् कुमारी की क्या कहकर ।  
वृद्धि के बल से । प्रकट कर दिया । उसको उम चाडाल से । श्रेणिक राजा ने  
कहा । जो विद्या(मुझे) दे (=मिन्वावे) । तो । मुक्त करू छोड दू । उमने ।  
{इस बात को} माना स्वीकार किया ।

राजा श्रेणिक । मिहामन पर बैठा हुआ । विद्या पढता है । बहुत बार  
चाडाल ने विद्या कही । पर (राजा का) आती नहीं । अभयकुमार ने कहा ।  
चाडाल को मिहासन पर बिठाकर विद्या लो तो आवे(गी) । पीछे (< पश्च) ।  
चाडाल को मिहामन पर बिठाकर । दोनो हाथ जोडकर । महाराजा श्रेणिक ।

पछद्द मातंग सिंहासनि बइमारी ब हाथ जाडी श्रेणिक महा राम आगळि  
द्या विद् अक वार-ना पत्ता न विद्या आवा इम अनर-ऊ विद्या लत  
रिवु

(२)

नापित विद्या नइ त्रिडि आपणउ छरपनु जाकाग मडळि राखइ ते  
नकद त्रिडि त विद्या नीधी त्रिदडिउ विदगिइ जइ तीणि विद्या  
त्रिडि आकाश मडळि राखइ ते देखा विस्मय हूतु लोक तह हइ पूजा  
कर

क वार लाक पूछिउ—अ विद्या-नउ तुम्हारइ गुरु कुण ? तीणइ लाअनइ  
न कहिउ इम कहिउ—हिमवत-वासी माहूर विद्या नु गुरु तीणइ गुरु  
लविपद करी त्रिदड खडखडाट करतउ भुइ पडिउ लोक सहजे हसिउ  
ह भणी वाज (?बीजे ऊ) गुरु-नउ निह्लव न करिवु

पडा हुआ (उभ < ऊध्व) । विद्या । लता है पत्ता है । एक वार की पत्ता  
= एक वार पडन स ही) । वह विद्या । जायी (= आ गयी) । या इम  
। हमरा को भी । विद्या लत हुआ विद्या पत्ते समय । विनय नग्रता ।  
ण) करना चाहिये ।

(२)

एक नाइ । विद्या के वन स । अपनी रखानी । आकाश मडल म । रखता  
उसके पास म । जेक त्रिडि (मयामी) न । वह विद्या । ती सीखी ।  
न । परण म जाकर । उस विद्या (क बल) म । अपने त्रिदड का ।  
ग मडन म रखता है । यह देखकर विस्मय म होना हुआ जन-समूह ।  
ती पूजा भक्ति करता है (= नाम उमकी पूजा और भक्ति करने लग) ।

एक वार लोगो न पूछा । इस विद्या का तुम्हारे गुरु कौन ? उसन लज्जन  
हूजे लज्जा क मार । नाइ को नहा कहा (नाई का नाम नहीं लिया) । यों  
। (कि) । हिमाचल निवासी । मेरा विद्या-गुरु (विद्या देने वाला गुरु) ।  
। उमक । गुरु को द्विपान के कारण (आलविउ < अपलाप) । त्रिदड ।  
खड गड करत हुआ । (पृथ्वी पर) गिरा गिर पत्ता । सब लोगो से  
। गया (= सब लोग हम पडे, सब लोगो न उसकी हमी उडायी) ।

इम कारण हमरो को भा (?) गुरु का निह्लव नहीं करना चाहिये  
ह का नाम छिपाना नहीं चाहिये) ।

## वाग-विलास

( पद्महवी गतांगी—उत्तराध )

[ माणिक्यसुंदर सूरि ]

[ श्री माणिक्यसुंदर सूरि का सम्बन्ध आचलगच्छ से था । य जाचाय श्री मेस्तुग के गिप्य थ । श्री जयगेवर सूरि (म १४०० १४६२) इनक गुफ भाई थ । इनकी उल्लेखनीय रचनाआ म 'गुणवर्मा चरित्र सत्तरभेदी पूजा कथा' 'चतु पर्वी कथा , 'गुकराज कथा , 'मलयसुंदरी कथा 'सविभाग व्रत कथा' पृथ्वीचंद्र चरित जाति के नाम गिनाय जा सकते है । इनम पृथ्वीचंद्र चरित सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रचना है । इसका निर्माण म १४७८ मे पाच उल्लासा म हुआ । 'वागविलास' इसका दूसरा नाम है । राजस्थानी कलात्मक गद्य का यह सबप्रथम उदाहरण है । पृथ्वीचंद्र चरित म महाराष्ट्र क पइठाणपुर पट्टण के राजा पृथ्वीचंद्र तथा जयोध्या क राजा सामदेव की पुत्री रत्नमजरी की प्रणय कथा है । वस्तुवर्णन इस रचना की महत्त्वपूर्ण विशेषता है । का समय शली के कारण कथा म जत तक रोचकता का निवाह हुआ है ।

सकलित अशो म से प्रथम म सवन्ध की महत्ता का वर्णन है दूसरे अश म बताया गया है कि किस वस्तु का किममे नाग होता है तीसरे मे पुण्य की महिमा का कथन किया गया है चौथे म बताया गया है कि कौन वस्तु किसस युक्त हान पर थोष्ठ गिनी जाता है पाचवें म महाराष्ट्र देश का छठ म वमन ऋतु का और सातवें म वर्षा ऋतु का वर्णन है । य वर्णन वर्णक सचक प्रथा म दिय गय वर्णनो के प्रकार के हैं । आंतरिक तुक, अनुप्रासमया भ्रकार शली भाषागत प्रवाह और घरेरूपन क कारण य वर्णन बने सुंदर बन पड है । ]

-१-

अहो महाभाग ! हीया न लाचने जागउ जेतळू अतर राणी अइ दासि,  
जेतळू अतर दही नइ छासि जेतळू अतर मधुर ध्वनि नइ धासि, जेतळू अतर

( १ )

हे महाभागो ! हृदय की आरा से जागो । जितना अतर (=पक्) रानी और धामी म । दही और छाद मे । मीठी जावाज और खासी (घासवाले वचन ?)



पढ़इ मानग सिंहासनि वदसारा व हाय जाडी थैणिक महा राय आगळि  
या निद अेक वार-ना पत्ता न विद्या आषी इम अनर ऊ विद्या लत  
रिवु

(२)

ए नापिन विद्या-नद वळि जापणउ छरपलु जाकाश मडळि राखद त  
एक त्रिदडिड ते विद्या नीधी त्रिदडिड विदशिइ जद तीणि विद्याइ  
त्रिदड आकाश मडळि राखइ त दखी विस्मय हूतु लोक तह हइ पूजा  
करद

ए वार लाक पूछिउ—अे विद्या-नउ तुम्हारद गुरु कुण ? तीणइ लाजत  
न बहिउ इम कळिउ—हिमवत वासी माट्ट विद्या नु गुर तीणइ गुरु  
लविन्नद करी निदड खल्लडाट करतउ भुद पडिउ लाक महुअे ह्मिउ  
ह भणा बीज (?बीज ऊ) गुर नउ निह्लव न करिवु

पढा हुआ (उभ < ऊध्व) । विद्या । लता है पत्ता है । एक वार की पत्ता  
= एक वार पत्तन से ही) । वह विद्या । जायी (=जा गयी) । या इम  
। हमरा का भी । विद्या लत हुआे विद्या पन्ते समय । विनय नम्रना ।  
ण) करना चाहिये ।

(२)

अेक नाइ । विद्या क वन स । अपनी रक्षानी । जाकाग मडल म । रखता  
उसके पास स । जेक त्रिदडी (सन्यामी) न । कए विद्या । ली सीसा ।  
नी । परतण म जाकर । उस विद्या (के बल) म । अपने त्रिदड का ।  
एग मडन म रखता है । यह दखकर विस्मय म होला हुआ जन-समूह ।  
ए पूजा भक्ति करता है (=नाग उमकी पूजा और भक्ति करने लग) ।

एक वार लागी न पूछा । इम विद्या का तुम्हार गुरु कौन ? उसन लज्जित  
हुआ नजा क मार । नाद को नहा कहा (नाई का नाम नहीं लिया) । यो  
।। (त्रि) । हिमालय निवासी । मेरा विद्या गुरु (विद्या नन धाना गुरु) ।

। उमक । गुरु को त्रिपाने क कारण (आनविउ < अपलाप) । त्रिदड ।  
वह गए करता हुआ । (पृथ्वी पर) गिरा गिर पडा । सब सागा स  
। गया (=सब लाग हम पडे सय लोगो न उमका हमी उठायी) ।

इम कारण हमरा को भा (?) गुरु का निह्लव नहीं करना चाहिये  
र का नाम छिपाना नहीं चाहिये) ।

## वाग-विलास

( पद्महवी गताब्दी—उत्तराध )

[ माणिक्यसुंदर सूरि ]

[ श्री माणिक्यसुंदर सूरि का सम्बन्ध आचलगच्छ में था। य आचार्य श्री मरुतुग के शिष्य थे। श्री जयशेखर सूरि (स १४००-१४६२) इनके गुरु भाई थे। इनकी उल्लेखनीय रचनाओं में 'गुणवर्मा चरित्र मत्तरभेनी पूजा कथा' 'चतुर्पर्वी कथा', 'गुकराज कथा', 'मलयसुंदरी कथा', 'सविभाग व्रत कथा' 'पृथ्वीचंद्र चरित' आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। इनमें 'पृथ्वीचंद्र चरित' सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रचना है। इसका निर्माण स १४७८ में पाच उल्लासा में हुआ। 'वागविलास' इसका दूसरा नाम है। राजस्थानी कलात्मक गद्य का यह सर्वप्रथम उदाहरण है। पृथ्वीचंद्र चरित में महाराष्ट्र के पड़ठाणपुर पट्टण के राजा पृथ्वीचंद्र तथा अयोध्या के राजा सोमदेव की पुत्री रत्नमञ्जरी की प्रणय कथा है। वस्तुवर्णन इस रचना की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। काव्यमय गद्य के कारण कथा में अन्त तक रोचकता का निर्वाह हुआ है।

संज्ञित अंगों में से प्रथम में सर्वजदव की महत्ता का वर्णन है, दूसरे अंग में बताया गया है कि किम वस्तु का किमसे नाग होता है, तीसरे में पुण्य की महिमा का कथन किया गया है चौथे में बताया गया है कि कौन वस्तु किमसे युक्त होने पर ध्येष्ठ गिनी जाती है, पाचवें में महाराष्ट्र देश का, छठ में वसंत ऋतु का और सातवें में वषा ऋतु का वर्णन है। ये वर्णन 'वर्णक' संज्ञक श्रया में लिये गये वर्णनों के प्रकार के हैं। जातिरिक्त तुल्य अनुप्रासमयी भङ्गार गली भाषागत प्रवाह और घरेलूपन के कारण ये वर्णन बड़े सुंदर बन पड़े हैं। ]

-१-

अहो महाभाग ! हीमान लखन जागड जेतळ अतर गणी अनइ दासि  
जेटळ अतर दहो नइ छासि जेतळ अतर मधुग वनि नइ धामि जेतळ अतर

( १ )

ह महाभाग ! हृदय की आत्मा से जागा। जितना अतर (=फक) रानी  
और दामा में। दही और छाछ में। मीठी आवाज और खामी (धीमवाते वचन ?)

१. कूया जेतळू अतर मानइया नइ रुया जेतळू अतर वाप नइ फूया  
 तर नरेश्वर नइ आहीर जेतळू अतर रुपा नइ कथीर जेतळू अतर  
 इ माटी जनळू अतर बाहू भाति नइ चाटी, जेतळू अतर पटखेळा  
 नी जेतळू अतर पडसून तइ मूतळी, जेतळू अतर जीवता माणस नइ  
 जेतळू अतर खग नइ छुरी जेतळू अतर तदुळ नइ बुरी जेतळू अतर  
 २. तारा, जेतळू अतर माकर नइ खारा, जेतळू अतर माह नइ सीआळ  
 अतर प्रभात नइ विआळ जेतळू अतर रूगा नइ राग जेतळू अतर  
 नइ साग जेतळू अतर अळसळा नइ नाग जेतळू अतर हस नइ बाग  
 नूण नइ कपूर जेतळू खजूया नइ मूर जेतळू डाकिली नइ तूर  
 खाळ नइ गगा पूर जेतळू साधु नइ चोर जेतळू हार नइ दोर  
 गजेंद्र नइ सगा जेतळू गुरुड नइ ममा जेतळू कोडि नइ मवा  
 जेतळू फाविला घाट नइ गाहीम जेतळू माटा वक्ष नइ राहीस  
 ३. यवसाय नइ कु ठाकुर सेव तेतळू अतर अपर दवत अनइ श्रीसवन-नेत्र

-२-

जम विलव विणसइ काज कु ठाकुरि विणसइ राज, माजारि प्रचारि

।मुं और कुव म । माने क मिक्क और रूपव (=चादो क सिक्के) म । पिता  
 रूफा म । राजा और अहीर म । चादी और रागे म । मान और मिट्टी म ।  
 की भीन और टाटी म । पडसून (=रगमी बम्ब) और छाटी (=कडी  
 का बस्त्र) म । प्रतिसूत्र (=भगलसूत्र) और मुतनी म । जीते हुअे मनुष्य  
 पुतली म । खग और छुरी म । चावल और बूर म । मूय और तार म ।  
 र और तार (नमक) म । मिह और मियार म (गगान) । प्रभात और माभ  
 (रात) । रू गा और राग म । छामी (गिम्बी)(?) और साग म । अळमळे  
 नाग म । हम और कौव म । नमक और कपूर म । खचात (जुगनू) और  
 म । डाकिली और तुरही म । गडहे और गगा क प्रवाह म । साधु और  
 म । हार और डोर म । गजराज और खगोण म । गरड और मच्छर म  
 (ब) । करोड और मवा बीम (विन्व?) म । कपिता घाट और गोहीस (?)  
 माटे वृक्ष और राहीडा वृक्ष (राही?) म । व्यवसाय और बुरे स्वामी की मवा  
 उतना (ही) अतर हुमर दवताआ और श्री सवन देव (=भगवान जिन) म (है)।

( २ )

जम । देरी से । नष्ट हाता है विगन्ता है । नाम । दुष्ट ठाकुर (=राजा)

विणसइ छात्र, अणबोलिइ विणसइ व्याज, पडपि विणसइ दान, कुसगति  
विणसइ सतान, स्वर पाखइ विणमइ गान, लूइ विणसइ मइ पान, व्याधिइ  
विणसइ वान, कुमरणि विणसइ अन्नमान, बुपडिन विणसइ छात्र, क्षयणि  
विणसइ मात्र पीपळि विणसइ प्रासाद, सिंदूरि विणमइ साद आक-दूधि  
विणसइ नेत्र, सीडे विणसइ नीपनु क्षेत्र, चाभडी विणसइ कणक-नु बाक,  
विणसइ प्रयोगि विणसइ रसवती तणउ पाक, वरमाळइ विणमइ गस्त्र लयरी  
विणसइ वस्त्र, जिम कुयसनि विणसइ मत्कम निम जीवहिंसा विणसइ धम

-३-

पुण्य लगइ पृथ्वी-पीठि प्रसिद्धि, पुण्य लगइ मनवाछित सिद्धि, पुण्य लगइ  
निमल बुद्धि, पुण्य लगइ घरि ऋद्धि वद्धि, पुण्य लगइ शरीर नीराग  
पुण्य लगइ अभगुर भोग, पुण्य लगइ कुटुब-परिवार तणा मयाग, पुण्य लगइ  
पलाणीयइ सुरग, पुण्य लगइ नव-नवा रग पुण्य लगइ घरि गज घटी चातता

से नष्ट हाता है राज्य ।

। बिना वाले नष्ट होता है याज । प्रशसा

मे (?) नष्ट होना है दान । बुरी मगति से नष्ट होती है सतान । स्वर के  
बिना नष्ट हाता है गान । लू से नष्ट हाता है पान (?) । बीमारी से  
नष्ट होता है रग (वण वण्ण) । बुरे मरण से नष्ट हाता है अन्न । बुरे पडित  
(=गुरु) से नष्ट होता है विद्यार्थी । क्षय मे (?) नष्ट हाता है शरीर । पीपल  
(के उग जान) से नष्ट हाता है महल । सिंदूर से नष्ट होता है स्वर आक क  
दूध से नष्ट होत है नेत्र । टिट्टी (=ममूह) क नष्ट होता है निष्पन्न (=निपजा  
हुआ फसल युक्त) वेत । छिंदरमुई से नष्ट हाता है कणक का तज । विप के  
प्रयाग से नष्ट हाता है रसोई का पाक । वपाकाल से नष्ट होता है (लोहे का)  
हथियार । कीट (?) से नष्ट होता है कणक । जस बुर चमन से नष्ट हाता  
है अच्छा कम । बस जीव हिंसा से नष्ट होता है धम ।

( ३ )

पुण्य से पृथ्वीतल पर श्वाति (होती है) । पुण्य से मनचाही सिद्धि  
(=संपत्ति) । पुण्य से निम्न बुद्धि । पुण्य से घर में संपत्ति की समृद्धि  
(या संपत्ति और बढ़ती) । पुण्य से देह रोग रक्षित । पुण्य से नाग न हाने  
वात भाग (प्राप्त होते हैं) । पुण्य से कुटुब और परिवार के सम्मिलन । पुण्य से  
पानान जाते हैं घाडे (=घोडों पर जीन कैसे जात हैं घोडों की सवारी प्राप्त  
होती है) । पुण्य से नय नय रग (=जान-दोस्तव) । पुण्य से घर में हाथियो

न छटा, पुण्य सगइ निरूपम रूप अनन्य स्वरूप पुण्य लगइ वसिवा  
वास, तुरगम-तणी सास पूजइ मन चीतनी आस, पुण्य सगइ आन  
रिति अद्भुत स्फूर्ति पुण्य लगइ भला जाहार अद्भुत शृंगार पुण्य  
न बहुमान धणू किस्सू कहियइ, पामियइ बचनान

-४-

त वणवाइ जे वक्षवत नरी त जे नारत्तत कटक त ज वीरवत  
त ज कमळवत मद्य त ज समावन महात्मा ते ज क्षमावत प्रामाद  
इजावत वाट त ज यूयवत हाट जे वस्तुवन भाट ते ज वचनवन  
। मुनिवत गढ ते जे अभगवन दन त ज अरागवत गुरु त जे त्रियावन  
। जे सत्यवत शिष्य त जे विनयवत मनुष्य ते ज धमवत तुरगम ते ज

। चलन हुआ (=चलन समय) दी जाती है चदन का छटा। पुण्य स  
सुंदर आकार। जलदय स्वरूप। पुण्य में रहने को प्रधान (=धैर्य)  
घाडा की घुडसाल। पूजना है (=पूरी होती है) मन में विचारा  
जागा इच्छा। पुण्य स जानद दनवाली मूर्ति (=रूप शरीर)।  
फुर्ती। पुण्य में जड़ भोजन। अद्भुत शृंगार (के पदाथ)। पुण्य  
जगहा में बहुत ममान। अधिक क्या कहा जाय। पाया जाता है  
मलना है) (पाम < प्राप)। कवल्य ज्ञान।

( ४ )

इन वट्ट बखाना जाता है (या बखानना चाहिये) जो पेडा में युक्त  
। नदी वह जा पानी में युक्त। स य वह जा धीरो से युक्त। सरावर वह  
मला से युक्त। वादन वह जा समय वाला = मुकाल करने वाला या समय  
रमन वाला (?)। महात्मा वह जा क्षमा युक्त। महन वह जा ध्वजा युक्त।  
वट्ट जा (पधिको के) समूह से युक्त (वाट < वरम वट्ट)। दुवान वह जा  
री का) वस्तुजा से युक्त। घाट = शरीर का गठन (?) वह जो मुग्ध  
सुंदर वण) से युक्त। भाट वह जा वचनो वाला (=बाबदूक या काय  
वाना)। मठ वह जा मुनिया में युक्त। टुग वह जो पराजित न हान वान  
। स युक्त (अभग = अपराजय)। देवता वह जा राग से युक्त नहीं। गुरु  
जो क्रिया जानने वाला (कार सिद्धांत का उपदेश करने वाला नहीं किंतु  
ग या शिक्षा का कायरूप में परिणत करके निम्नानवाना)। वचन वह जो  
। स युक्त। शिष्य वह जो विनय से युक्त। मनुष्य वह जा धम से युक्त।

तत्रवत्, हस्ती ते जे भद्रजातिवत्, प्रधान ते जे बुद्धिवत्, कर ते जे चायवत् राय  
त जे चायवत्, व्यवहारिया ते जे मयावत्, धर्मा ते जे दयावत्

-५-

तीह माहि बलाणीयइ मरहटठनेस जोणइ दसि ग्राम, अत्यंत अभिराम  
भना नगर, जिहा न मागायइ कर दुग, जिस्या हुइ स्वग धाय न नीपजइ  
सामाय आगर सोना रूपा-तणा सागर जेह नस माहि नदी बहइ नोक मुखइ  
निबहइ इमिउ देग, पुण्यतणउ निवेग, गरउउ प्रदेश

तीणि नसि पट्टाणपुर पाटण वतइ जिहा जयाय न वतइ जीणइ  
नगरि कजमोसे करा सदाकार, पाखळि पोडउ प्राकार, उदार प्रतौळी-द्वार  
पाताळ भणी घाई, महाकाय खार्द ममुद्र जेह-नु भाई जे त्रिइ वैलाम-पवत  
सिउ वाद, दस्या सवनत्व तणा प्रासाद करइ उरलास लभेचरी कोटी-वज  
तणा जावास जानइ मन, गरुड राज भवन ऊपरि अबड, सुवणमय दउ,

घोडा वह जो तेज मे युक्त । हाथी वह जो भद्र जाति का । मन्त्री वह जो बुद्धि  
से युक्त । हाथ वह जो त्याग से युक्त । राजा वह जो चापशील । व्यापारी वह  
जो ब्रह्म (?) से युक्त । धर्मात्मा वह जो दया से युक्त ।

( ५ )

उनके अंदर, उनमें । बसाना जाता है (स व्याख्यान, या वक्त्राण से) ।  
महाराष्ट्र देश (वर्णव्यत्यय) । जिस देश में । गाव (है) बहुत-ही सुंदर ।  
(जहा है) अच्छे नगर, जहा नहीं भाग जात राज्यकर । दुग (=किने) असे (है)  
कि असे हा स्वग । (बड़ा) धान मामूली नहीं पदा होता । खाने सोने चादी की  
सागर (हैं) । जिम देश म उदिया बहती है । लाक सुख से निर्वाह करते हैं ।  
असा देश (है) । जो पुण्य का निधान । गौरवशाली प्रदेश । (है) ।

उम देश म पठनपुर (प्रतिष्ठानपुर) नामक नगर है । जहा जयाय नहीं  
होता । जिस नगर म कगुरों से श्रेष्ठ आकार वाला (कासीम = कपिशीप, कगुरा,  
बुज) । चारा आर । पोड़ा (श्रीड पुष्ट मजबूत) । परकोटा, चहारलीवारी (है) ।  
बड़ा पौरा का दरवाजा (है) । पाताल की जोर दौडी (=दौटती हुई पट्टवनी  
हुई) विशाल काया वाली (=बहुत बड़ी) खार्द (है) । समुद्र जिमका भाई  
(है) । जो बलास पवत से वाद लेते हैं (=प्रतिद्विदिता करते हैं) असे सवन  
दवता के (=भगवान जिन के) मन्त्रि (है) । करते हैं आनंद, लक्षपतिया  
(जोर) करोटपतिया के भवन । आनंदित करता है मन को बडा (<गुरुक) राज

## राजस्थाना गद्य विकास और प्रवाह

रगइ धाराधर पाणी तणा प्रवाह सटहळइ, वाडि ऊपरि येनां बळ, धालनां गवट सगळइ, सावनणा मन धम-ऊपरि बळइ नशी मशापूरि पृथ्वी-शीरि प्नातइ नप्रां विमळय गटगहइ, यत्नी विनान सहसहइ लोव भावइ, महात्मा बंठा पुस्तक वाचइ पवन-तउ नीभरण भगिया गरोत्तर पूटइ

---

जवन है। गुजर धाराधर धाम ( = धरमत ) है। पानी क प्रवाह गत है (समस्त धाम करत हुअे बहत है)। वाड के ऊपर बने फरती चम म चवन हुअे गां सगिता हात है। सागा क मन धम की ओर है (प्रवृत्ति हात है)। नशिया बने प्रमां म आनी है। पृथ्वी क तन विन करनी है। नय विनाय गटगहात है। बंठा क मध्य सहस्राने ।। कुटुबी लोव मग्न हाते है (?)। महात्मा साग बठ पुस्तक वाचन जना म भरन छूत है। भरे हुअ गगवर पूट चाने है।

## वचनिका खोची अचलदास-री

( पद्महवी गतानी—उत्तराध )

[ गाडण शिवदास ]

[ शिवनाम गाडण गाखा के चारण थे । गागरोगण (कोटा मडल के अतगत) के राजा अचलदास खीची इनके आश्रयगता थे । मानवे (माङ्ग) के सुवतान आनमशाह गोरी (हाशगगाह नाम भी मिनता है) ने म० १४८५ के आमपास गागरोगण पर चढाई की तब वहा जौहर हुआ और अचलदास लडने हुए वीर गति का प्राप्त हुए । कहा जाता है कि शिवदास चारण भी युद्ध के म्यान मे उपस्थित थे पर राजकुमारा की सुरक्षा के लिए वे जौहर मे शामिल नहीं हुए । उहाने सम्पूर्ण युद्ध को अपनी आखा से देखा तथा अपने आश्रयदाता को अमर करन के लिए प्रस्तुत वचनिका की रचना की ।

यह वचनिका वीर रस की श्रेष्ठ कृति है । इसमे गद्य और पद्य दानो का सफन प्रयोग हुआ है । यद्यपि पद्य की तुलना मे गद्य कम प्रयुक्त हुआ है तथापि वह प्रौढ और परिमार्जित है । गद्य वचनिका शली (तुकात युक्त गद्य शली) मे लिखा गया है ।

सकनित अंग मे आलमशाह गोरी के सय समूह और उसके आक्रमण का वणन करन हुए उमके विरुद्ध खडग उठान वाले अचलदास खीची के वीर व्यक्तित्व की यजना की गयी है । ]

-१-

इसी परि त्या खउदाळम गोरी राजा बारह लाख माळना रउ चवरवरती  
तइ रइ तेवाणू लाख माळवा रा कटक-बंध तइ कटक-बंध रउ आरभ पारभ

( १ )

इस भाति (का) वह लाख का भार उठान वाला (=भारणम) गोरी-  
वगीय राजा । बारह लाख (अर्थात् बारह लाख की आय वाले) मानवा खड



।न गडावरउ

इ कटक बधि माहि तउ कहइ दिताळउ महाधर तउ कवण-कवण ?  
वान फतेखान गजनीखान उमरखान हइवतिखान खान तउ मुगीस सारिखा  
हइ राजा कवण-कवण ? सकळ ही सक-बधी सकळ-कळा-मपूरण,  
नरसिध सारीखा तइ नरसिधदाम-का कटक बध चालिता सातरि आगलइ  
पाणी पाछिनइ दळि कात्म तइ कादम कइ ठाहि खेह उडता जाइ  
विषमाईत

दूहा

अकइ बनि वमतडा अकड अतर वाइ ।

सोह कवडडी नह सहइ गइअर लबिख विवा ।।

अवर्ती (है) ।<sup>१</sup> उसके तिरानवे लाख मानवा का सना समूह (है) । उम  
समूह का आरंभ प्रारंभ बलपन (है) ।

उस सना समूह में (जो योधा है उनका) तो ककर (=वणन करवे)  
जाता हू । महाधर (बड़े स्तंभ) तो कौन कौन ? उममाखान फतेखान  
सिखान उमरखान हैवनखान । खान तो मुगीसखान मरीचे ।<sup>२</sup>

हिंदू राजा कौन कौन । सारे ही शकबधी (=साका बाधन वान  
पुन प्रवतक पराक्रम करने वाल) । सारी कलाआ स परिपूण । राजा  
मिहदास मरीचे । उम नरसिहदाम क मय समूह क चलत हुआ (=चनने  
प) । अगल मय को (=मय के अग्रभाग का) पानी (मिलता है ता) ।  
व मय का (=पिछले भाग का) कौचड (कात्म < कदम) । उस कौचड  
स्थान में (?) धूल उडती जाती है । (वह) दूमरा विजमान्तिय है ।

दोहा

(दाना) एक ही वन में रहने वान है फिर इतना फक क्या ? सिंह (ता)  
नी भा नहा सता (=पाता) जखान सिंह का माल तो कौनी भी नही  
लता (जइ नि) हाथी लाख में विकता है (=उमका मोल अंक लाख रुपय  
लता है) ।

वादगाह का नाम हाशगगाह था और वह गारा बशाय था । अनपला  
साहि जानम या आनमगाह उसके दूसरे नाम थे ।

मुनाखला होशगगाह का पुत्ररा भाई था गजनीखा उममाखा फतहखा  
हैरतखा उसका पुत्र थे ।

कुडळिया

गद्वर गळइ गळत्थियउ, जह खचइ तह जाइ ।  
 सीह गळत्थण जइ सहइ तउ दह लखि विनाय ॥  
 तउ दह लखि विनाइ, मोल जाणवि मुहगरा ।  
 कडवा कारण कथिन कोपि खउदाळिम करा ॥  
 वड कीध पडियार, निहमि कट्टारउ दुहु करि ।  
 राइ न प्रहउ नरमिध गळइ गळहथ जउ गइवरि ॥

त राजा नरसिंहदाम सारीखा वत्तीम सहम साहण रिण खेति मेन्हि  
 चाल्यउ मदानमत्त हस्ती मेल्हि चाल्मउ आपण जाइ समदद घाल्यउ समद जाइ  
 खाडउ पन्नाळ्यउ अनक राइ मद गळित कर मेल्हचा

ते राजा नरसिंहदाम सारीखा ते राजा नरसिंहदाम का कुवर तउ  
 चादजी खेमजी सारीखा मातगपुरी का चनवती लखमराव सारीखा दबीमाह

कुडळिया

हाथा के गल म गलवधन है, उसे जहा खीचते है (वह) वही चला जाता  
 है । सिंह यन्ति गल-वधन का सह सके तो एक नही दम नास म बिके । तो  
 (वह) दम नास म बिक । उमका मूल्य महगा समभा । (मुहगेरा=मुहगा  
 < महाघ + अंरा स्वाधिक प्रलय) । बादशाह के कडवे कथन के कारण कोप  
 करके पडिहार (नरसिंहदास) न युद्ध किया । दोना हाथा से कटार (=तलवार)  
 पकडा (?) । राजा नरसिंहदास का नही पकटा । हाथी की भाति गल  
 म गलवधन (डालकर) ।

उम राजा नरसिंहदाम<sup>३</sup> सरीखे । वत्तीस हजार घोडे ( >स० साधन)  
 रणक्षेत्र म रखकर चला । मदानमत्त हाथी रखकर चला । स्वय जाकर  
 (कटक का) समुद्र म (=तक) पहुचा दिया । समुद्र म जाकर खड्ग धाया  
 (स० प्रस्वल अप० पक्वान) । जनक राजा गलितमत्त कर डाले (=अनक  
 राजाओ का गव उवार दिया) ।

व राजा नरसिंहदाम सरीखे (स० सदक्ष) । व राजा नरसिंहदाम के कुमार  
 ता चादजी खेमजी सरीखे । मातगपुरी के चनवती लखमराव (लक्षमराज)  
 सरीखे । दवागाह सरीखे । वूदी व चक्रपति (चक्रवर्ती) जीर देखडा सरीखे

३ मालवा क्षेत्र का अक प्रसिद्ध राजा ।

## राजस्थानी गद्य विकास और प्रकाश

बूदी का चक्रवर्ती अथर देवडा हिंदू राट बदि छोड दूसरा मालदे  
ह मारिया

। तउ कउण कउण ? मतियामी नमियाड, जुग मानघाता, आसेरि,  
मिलारपुर नगर-का कटक्वध मभ दम तउ माडव धार उजीण,  
, खड-खड का नगर नगर-का खान मीर अमराव चतुरग दळ चदि  
पातमाह आपुणपउ घात्या

-२-

मउ हिंदू राजा उपकठि कउण छइ जिक्इ मनि पातिसाह-की रीस  
कउण का माथा तइ खिसा ? कउण हइ दई हठउ ? कउण की माई  
। जू सामउ रह् अणी-पाणी ? आजु तउ माम मातल काह्दे नही,  
उपरि गहिन-उत नही, मीहउरि रउळु नही हठ कउ राउ हमीर आथम्यउ

राजाभा को वणीखान मे छुलाने वाल । दूसर मालदेव जीर ममरमिह  
।<sup>४</sup>

ग तो कौन कौन । (कउण < म० क पुन अप० कउणु) । मतियामी  
। उग युग माघाता आसेरि दुगपुर सितारपुर तक के कमर बाधन वाले ।  
। ग ता माडवग धार उज्जन मीहौर । खड-खड के (खड = प्रदेश,  
।) । नगर नगर क । खान जमोर । चतुरगिणी सना के समूह (हाथी घोडे  
पत्त य सेना के धार अग हैं) । चक्कर चन । बाग्गाह मे स्वय  
। (?) ।

( २ )

जमा हिंदू राजा निकट मे कौन है जिसने मन मे बाग्गाह की बराबरी  
ने का बात) बसा । किमके मिर मे (मदबुद्धि) खिमक गयी (किमका मिर  
गया) । किस मे भाग्य रुठ गया (< र्ण) । किमकी माना ने (जसा)  
जना (विवाणा = प्रमूता हुई) । कि । मामन रहे मुकाबले मे ठहर ।  
ता । माम मातल और काह्दव (तान चौहान-वणीय वीर जा अला  
ने से लडे थे) नहा । निक्कछपर मे ता गुहिनान नहा । सीहार  
उळ नहा । हठ का (= हठ वाला) राजा हम्मीर (रणभोर का प्रसिद्ध  
। न-वगाय राजा जिमने अनाउहीन मे युद्ध किया था) अस्त हो गया (जस्त  
बुबा है) ।

जानोर के प्रसिद्ध चौहान वगाय राजा ।

अउर पातिमाह हुत्रा आला आगिलेरा, अर भला भनरा त्या तउ चउ रामी द्रुग लिया था दिहाडइ पाडइ यउ नउ सुरताण दूसरउ अलाउदीन जिणि चउरासी द्रुग लिया था अेकइ दिहाडइ

तणि पातिमाहिं जाया मातरि कुण महइ ? कुणइ महिजइ ? कुण-की जुवनी ? कुण की प्राप्ती ? कुण-की माइ वियाणी, जू सामउ रहइ अणी पाणी ?

यउ तउ पातिमाह उत्तर ँक्वण पूरव-पच्छिम वउ जइतगार इ-का पुस्कारय प्रवाडा नाहि पार धन धन हा राजा अचळेमर ! धारउ जियउ जिणि पातिसाह-मउ खाडउ त्रियउ

तणि पातिमाह आया मातरि मन छाडइ नही, खत्र खाडइ नही दोण न भावइ, पागार लघित न हायइ त राजा अचळेमर मारिखा जचळ नइ अचळेम-ही हायइ

अचळेमर तउ किमउ ? उत्तर ँक्वण-पूरव-पच्छिम-वउ भड किंवाड,

और (दूमर) वादगाह हुअे । आना (=प्रथम वाटि वे) । (और) जाग वाले अग्रणी श्रेष्ठ (अगला+अेरा =स्वाधिक प्रत्यय) । आर । भल भनर (=भन भन) (भनरा=भन+अेरा) । उहोने तो चौरासी दुग त्रिय थ दिन । यह मुरतान ता दूमरा अनाउदीन (है) जिसने चौरामी दुग लिये ५ अक्ही त्रिन मे ।

उम वादगाह वे । जाय जाने पर । कौन भार महता है । किमस सहा जाता है । किमकी युक्ति । किमकी प्राप्ति । किमकी माना न पुत्र जना जा मामने ठहरे । यह तो वादगाह उत्तर दक्षिण पूव पश्चिम का जीतन वाना (है) । ँमके पुस्पाथ (पराक्रम) के वीर कार्यो का पार नही । धय धय हे राजा अचलेश्वर ! तेरा जा । जिसने वादगाह से खडग लिया (=युद्ध म सामना किया) । (खाडा<खडक अेक प्रकार का खडग) ।

उस वाग्गाह के आय (=आन पर) सत्र को नही छाडता । क्षत्रियत्व को खडित नही करता । दीन (वचन) नही बोवता । परकोटा लघित नही हाता, (=दुग को छाडकर भागता नही) । अह राजा अचलेश्वर सरीखा अचल अचलसह ही है (=हो सक्ता है) ।

अचलेश्वर तो कसा । उत्तर दक्षिण, पूव पश्चिम का भड किंवाड (=शत्रु का किंवाड के समान बाहर ही रोक देने वाला वीर) ।

म अजयपाल । अहकार म रावण (क समान) । दूमरा धारु (अेक चौहान वीर) । तीसरा सिघण (अेक और चौहान वीर) । छह दशन (=छह

द्व संह नो भार्या विजयादेवो कृषिइ पुत्र ऊपना अमरसेन वइरसेन  
नामिइ वत्रइ हूया त्रमि त्रमि यौवनाअस्था पामी सकळ कळा नइ विखइ  
हूया जन नइ प्रीय गुण-ना जेक थानक जेहवा ते वि-हइ पुत्र देखी  
माता मन माहि चीतन्नइ—जा अे वेवइ जीवइ ता माहरा पुत्र नइ राज  
इ पळइ माया लगा राजा नइ कहिवा लागी—राजन् ! अे ताहरा पुत्र  
शील जनइ रागाध थकाइ ज त्विस तोनू (?) कटक चालिउ हुतउ ते दिन  
माहरी प्राथना अनेके प्रकारे करता पणि मइ मोटइ कट्टिइ करी शील नी  
कीधी त्विइ ज काई ताहरा बुळ नइ उचित हुन्नइ ते करि इत्यादि  
माभळी जजाणतइ परमाथ अणविमामिइ ग्राम नउ मूळगु मातग तेडी  
। दीधउ ज बिहु पुत्र ना मस्तक लेइ आवि  
पछइ मातग आदेश पामी जिहा अमरमेन छइ तिहा जानी राजा-नु आदेश  
। जु मुक्त नइ राजाइ अेहवु आदेश दीधउ छइ पछइ वेत्रइ पुत्र कहिवा  
—अम्हारा मस्तक लइ राजा-नु जातेम प्रमाण करि पछइ मातग चीतन्नइ  
जा नु जादम माचउ हुउ किम करउ जे तु महापुरुष पछइ कुमार नइ

अब उमकी पत्ना विजयादेवी की कोख से । पुत्र उत्पन्न हुआ । अमरसन  
वयरसन अस नामा से दोना (प्रसिद्ध) हुआ । धार धार युवावस्था पायी ।  
कलाआ क विषय म (=कलाओ म) निपुण हुआ । जनता के प्रिय गुणो  
कमात्र स्थान अब उन दोना पुत्रा का दायकर । सौतना माता (मौव=  
) मन म विचारती है । जहा तक=जब तक । ये दोना पुत्र जीत हैं ।  
। तक=तब तक । मेरे पुत्र का राज्य नहीं (प्राप्त) हागा । पीछे माया से  
बपट से) राजा का (=राजा से) कहने लगी । हे राजा ! ये तेरे पुत्र दु गीन  
चागी और राग से अध हुआ । जिस दिन । तुम्हारी सेना चली थी उम दिन  
भरी प्राथना (=अभिनाया) । अनक प्रकारा से करते रह । पर मैंने बड  
ट से शील की (=आचार की धम की) रक्षा की । जब जो कुछ तुम्हारे  
। क उचित हा वह कगे । श्यानि वचन सुनकर राजा ने वास्तविक बात  
न जानत हुआ बिना माये विचारे (स० विमग) गाव के प्रधान चाडाल का  
। कर जासा दी कि दाना पुत्रो के सिर (स० मस्तक) (काटकर) ल आ ।  
पात्र चाडाल न आज्ञा पाकर जहा अमरमेन है (=था) वहा आकर राजा  
आज्ञा कही कि राजा ने मुझे असी आना दी है । पीछे दाना पुत्र कहने लग—  
। तर सिर ल राजा की आना मत्य (माय) कर । पीछे चाडाल सोचता है ।  
जा की जाना सत्य हुई । क्या करू ? य तो महापुरुष (हैं) । पीछे कुमार

कहिवा लागउ—अहेन्द्र कम हू किम करू ? पणि तुम्ह मया करी देशातरि पढुचउ हू चित्रकार पाहइ ते माथा करानी चीतरानी राजा-नइ देखाडसु इसिउ साभळी वन्नइ बाघन्न दशातर भणी चाल्या पद्यइ मातगि माथा तिम करी राजा-नइ देखाडघा जिम राजाइ जाणी न सक्या हिन ते वात साभळी मात्रई माता हरली

-२-

हिन अमरसेन-वयरसेन माता मात्रेई-नू विळमित जाणी आचय जावा-नइ काजि देगातर भणी चाल्या इसिइ सध्या-नइ काळि अक अटनी माहि गया रात्रइ वृक्षअ तळइ सूता अटनी माहि भय जाणी अमरसेन सूतउ वइरसेन पुहरइ वदठु

अतळइ प्रस्तात्रि मूडी भूमिका स्थित मूडा नइ कहिवा लागी—भा स्त्रामिन् ! अं वेन्नइ महापुरप आव्या छइ, वृत्ता तळइ सूता छइ तेह नइ काईक उपगार कीजइ सूडइ कहिउ—आपण पक्षी अहे नइ केहउ उपकार कीनइ ? तिमइ

को कहने लगा । असा काम में कस करू ? पर तुम दया करके देशातर (=परदेश) पहुँचा (=चले जाओ) । मैं चित्रकार के काम से व (=वस) सिर बनवाकर राजा को दिखा दूंगा ।

असा (=यह) सुनकर दोनो भाई परदश का चले । पीछे चाडाल ने सिर इस प्रकार बनवाकर राजा का दिखाया जिस प्रकार कि (=जैसे कि) राजा न जान न जा सके (राजा नहीं जान सका) । अब यह बात सुनकर सौतेला माता प्रसन्न हुई ।

( २ ) •

अब । अमरसेन और वयरसेन । सौतेली माता का जानकर । आश्चर्यों का देखने के लिये । परन्तु की ओर चले । जस म । सध्या के समय । अक वन म । गया (=पहुँचे) । रात म वृक्ष के तले सोये (स० सुप्त) । जगल म भय समझकर । अमरसेन मो गया । (और) वयरसेन पहरे पर बठा (=पहरा देने लगा) ।

अस समय सुग्गी भूमि पर बठ सुग्गे का कहन लगी । हे स्वामी ! ये दो महापुरप आय हैं । वृक्ष के तले साये है । उनको (=उनका) कुछ उपकार कीजिय (=किया जाय=करना चाहिये) । सुग्गे ने कहा । अपन (=हम) पक्षी

हिउ—स्वामी ! माभळ मुकूण न पवत तिहा विद्याधर आपणा विद्या  
 या भगी विद्या अभिमति वि आग वाध्या छद्, तेह माहि वडा अंधा  
 जिना गा तह नद गान तिन माति राज हुद अन लघु भ्राया-ना  
 नक्षिणि प्रभाति बुरडा करणा पाच मह नानार मुग हुता पदद  
 वहा वदद पगी उडा जावा-ना फळ वि आणी वयरसन-नद उत्तमि  
 पण वयरसन राज अणवाद्यतद प्रभात विण वहिद बहु फ अमरसन  
 प तपु पळ जाणपद माधू

छी बीजद तिन अवाकी वग्ना तळादि जद बुरडा करिवा लागउ  
 पाच मह नानार मु हुता पत्निया नि वार पछी तीणद द्रव्यद भाजन  
 क लई मुन भागवता अकणि नगरि जाता मुग विग्मता वयरसन  
 माहि वग्ना नद पति जई रहिउ जमरसन नगरी-ना परिगारि

अतः नगर-नु राजा मू पाच दिव्य अधिवाग्या अमरमेन पाचननगर  
 /दान-वनि वृ । मूळि मूनउ देगी पाच तिन राजि वगारिउ

। नवा (=नवा) वमा (=वधा) उपकार किया जाय ? तब मुगी ने  
 । ह स्वामी ! मुना । मुकूण गल (नामक) पवत (है) । वहाँ विद्याधर ने  
 ने विद्या की परीक्षा क त्रिअ मयित कर ता आम राय हैं । उनम व जा  
 न जो गाव उगवा मान तिन क भीतर राय (प्राप्त) हो । और छाटे आम  
 न क भरण म मजरे क न करत हुअ (=करत समय) पाच मी दीनार मह  
 र । जमा कृवर । नाना पत्निया न । उडर । आम क दा फल लाकर ।  
 मन की गा म छा त्रिअ (=दान त्रिअ) (म० मुक्त प्रा० मुक्त म) ।  
 वयरसन ने राज्य की च्छा न करत हुअ बडा फल विना प्रभाव बनाये  
 रसन का लिया और छात फ न स्वय दिया ।

पाछे दूम (म० द्वितीय) तिन । अकारी (=अकरा अंका त म) बैठकर ।  
 ताब पर जाकर । बु न करन रगा । तभी पाच मी दीनार मुख से गिरे ।  
 समय क पश्चात् । उम द्य म । भोजन वस्त्र जाति लेकर । मुख भोगन लगा ।  
 अेक नगरी म जानर मुख भोगना हुआ । वयरमेन । पुरी म वेश्या के घर  
 क रहा । जमरसन पुरी क पडौस म रहा ।

तन म नगर का राजा मर गया (म० मृत) । पाच दिव्य अधिवागित  
 ये गय । अमरसन को काञ्चननगर के उद्यान वन म वृष के मूल म सोया  
 (० मुप्त) देखकर । पाच दिया से । उसे राज्य पर बिठा दिया ।

-३-

वयरमेन कौतुकी हूतु वेस्या-नइ धरि रहिउ भाइइ जायाविउ पणि लाघउ नही अ-यदा मागधिकी कुट्टिनी वयरमन व्यापार रहित धन-व्यय करतु त्री पृच्छिउ—ज प्रियतम ! व्यापार विण अत्रडउ खरिचिवउ किम पहुचइ छइ मुग्ध-भ्रभाविइ आबानु भक्षण कहिउ जू आम्र ना भक्षण लगी पाच सइ दीनार-नी प्राप्ति

तिस्यइ वेस्यात्रे जीभाडो वमना (?) जाखध तई आम्र फळ-नी गुठिनी पाछी वमावी पछ् वयरसेन नि द्रव्य जाणी घर हूतु काडिउ फळ वेस्याइ लीघउ तिस्य वयरसन नार छाडी उद्यान-यनि आविउ, त्रिनक्ष्य हूतइ (?) हूतउ) ।

इमिइ रात्रिइ त्रिणिण वस्तु चारी च्यार चोर भाग-नइ कीध कळह करिवा नागा पणि जे त्रिणिण वस्तु अनइ च्यारि चोर, त भाग मेलि किम-ही न पडइ तमिइ वयरमन चार थई माहि मिलिउ कळह-स्वप्न पूछिवा लागउ ते कहिवा नागा—अह च्यारि चार अनइ कथा तकुट पादुका अे वस्तु त्रिणिह विहचो

( ३ )

वयरमन कौतुकी हाता हुआ (=कौतुक के कारण) कथा क घर म ग्हा (=रहने लगा) । भाई न दुदवाया पर मिला नही । जेक त्रि मागधिकी कुट्टिनी न वयरमन का बिना व्यापार क धन खच करता हुआ देखकर पूछा कि ह प्रियतम ! व्यापार के बिना इतना खच करना कस पहुचना है (पूरा पडता है) । (वयरमेन न) भात स्वभाव के कारण आम का खाना कहा (=आम खान की बात बतायी) कि आम क खान स पाच सौ दीनार की प्राप्ति (हाली है) ।

अंस म (=तब) वेस्या न (उमका) जिमाकर (=भाजन कराकर) वमन की जीपधि दकर गुठली वापिस वमन करवा ला । पीछे वयरसेन का द्रव्यहीन जानकर घर से निकाल दिया । फन वेस्या न न गया । तब वयरसेन नग को छाडकर उदाम हाता हुआ उद्यान वन म आ गया ।

असे म रात म तीन(स०त्रीणि) वस्तुए चुराकर चार चार भाग(=वटवाग) के लिअे (आपस म) बतह करन गये । क्यकि वे तीन वस्तुएँ जीर चार चार । उनके बँटवारे का मेल किसा प्रकार नही बँटना था) ।

इतने म वयरसेन चोर बनकर (उन) चार चार म (आ) मिला । कतह का रूप पूछन लगा । व कहन लग । हम चार चार (हैं) । जीर अेक कथा



रका वयरसन कहिउ—कउण प्रभाव वस्तु-नु ते कहिवा लागी—अक इ-मुफ्त तिणि छ मास ताई देवता-नू आराधन कीधू तिणि तूठइ दसताइ श्रिणि वस्तु जापी तेह-नू अे प्रभाव—कथा भाटकियइ अनइ पाच सइ दीनार लकुट-ना प्रभाव-नु सस्त्र न लागद पाळ्या-नइ प्रभात्रि जिम आकाश रनी विद्याइ आकासि उडीइ (उडियइ) तिम अे पाळ्या-नइ प्रभात्रि उडीइ डयइ) अहवउ प्रभाव साभळी कुमार कहिउ—मइ पुरा-पूर्वि अ योगा-नू पहिरिउ नथी तेह भणी अेक वार कहउ तउ पहिरी जोत्रउ तीअे कहिउ— वार पहिरि पछद कुमारि कथा पहिरी लकुट हाथि कीधउ, पाळ्या पगि या अनइ आकासि ऊडिउ कुमार चोर घच्या रूता यथा-स्थानकि पडूता

- 6 -

यथा वयरसेन वळी त्रिणि वस्तु-नइ प्रभात्रि नगर माहि भोग भागदद ले दिने तिणि कुट्टिनीइ त वयरसेन भाग भागवतु दखी वळी प्रपच करि णइ घरि आप्यउ वेतळइ काळि व्यापार रहित धन-व्यय करतु कुमार

थी) अक लाठी (अक) पादुका य तीन वस्तुअें (है) । तीना बाट नही सरत । रसन न कहा । क्या प्रभाव है वस्तुआ का ? वे कहने लग । अक मिद्ध र (था) । उसन ठह महीन तक देवता का आराधन किया । उस मुष्ट हुअे ना न य तीन वस्तुअें दी (स० जप) । उनका यह प्रभाव (है कि) कथा बारी जाती है और (=ता) पाच सौ दीनार (नाचे) गिरते है । लाठी क ाव स गस्त्र नही लगता । पादुका क प्रभाव स । जसे आकाशगामिना विद्या शकाश मे उडा जाता है । वस ही । एन पादुका के प्रभाव स उडा जा सकता असा प्रभाव सुनकर कुमार न कहा ।

भैन पहन (कभी) यह यागी का वेग नही पहना (स परिधा ध्वनि यय) । इसलिअ अकवार कहो ता पहन देखू । उनन कहा । अकवार पहन ) । पीछ कुमार ने कथा पहनी । साठी हाथ मे की (=ली) । पादुकाअ । म डाली । और जाका म उड गया कुमार । ठग गय चार यथास्थान वे (=जपनी-जपनी जगह चले गय) ।

( ४ )

वयरसेन फिर तीना वस्तुओ के प्रभाव स । नगर म भोग भोगता है । उन ही णिा म वह कुट्टिनी उस वयरसेन की भाग भोगता हुआ देखकर फिर च करके अपन घर ल आयी । कितन ही समय (तक) बिना व्यापार के

नेही बली वेश्याइ प्रीति लगी पूछिउ तिस्यइ मुग्ध-स्त्रभाव लगी कुमारि कहिउ—पाऊया-नइ प्रभान्नि दशातर हूतउ धन आणी बिळसउ तेतळइ ते माथा रची कहइ—ब्रह्म । तइ गयद मइ ताहरइ वियागि विधुरावटी ना सुख नइ काजि समुद्र माहि यथा तेह-नइ यात्रा काई भेटणउ मानउ छइ ते पाउया नइ प्रभावि अनइ ताहरइ प्रमादिइ तु याता करउ कुमारि कहिउ—  
तिम हउ

तेतळइ कुमार पादुका नइ बळि वेश्या-सहित समुद्र माहि यक्ष नइ भुवनि आनिउ पहिलउ पाउया ऊतारा नेहरा माहि पइठु तेतळइ वेश्या पादुका निवरा पामी पगि घाली आपणइ नगरि आनी कुमार जु पाछउ जोइ तु पादुका सहित वेश्या-नइ न देवइ पइइ भयिइ चकिउ हूतउ कुमार जिहा जेतइ उभउ रहिउ तेतइ काई अेक विद्याधर तिहा आविउ तिणि कुमार-नइ कहिउ—तइ माहरापरोधि(?) पक्ष अेक यक्ष-नी पूजा वरिवी पणि जे पाखती वि वृक्ष छइ ते तळहारि तइ न जाइवू अेहनी सीख देई मादकाणि मामग्री पनर दिन नी तिहा मूकी विद्याधर आकाशि उडिउ

धन का खच करत हुअे कुमार को दलकर फिर वेश्या न प्रीति से पूछा । तब मोल स्वभाव से कुमार न कहा । पादुकाओ के प्रभाव से परदेश से धन लाकर भोगता हू । तब वह नपट रचकर बहती है । हे ब्रह्म । तरे गये बाद मीने तेरे वियोग मे विधुरावटी = विधुरावस्था (?) के मुख के लिअे समुद्र म यक्ष (रहता है) उसकी यात्रा (करवे) कुछ (=कोई वस्तु) भट करना मान रखा है (=मानता कर रखी है) । सो पादुका के प्रभाव स और तुम्हारी कृपा से यात्रा करू । कुमार ने कहा असा (ही) हो ।

तब कुमार पादुका क बल मे वेश्या सहित समुद्र म (स्थित) यक्ष के मंदिर म जाया । पहिले पादुका उतारकर मंदिर के भीतर गया । अतने मे बंध्या । पादुका का अकला (=खाली) पाकर । परा म डालकर । अपन नगर म जा गया । कुमार जब पाछे दखता है तो । पादुका सहित वेश्या को नही दखता । पीछे भय से चकित होता हुआ (=सुघ बुध लाया हुआ) । कुमार ज्या ही खटा रहा । त्यो ही कोई अेक विद्याधर वहा जाया । उसन कुमार से कहा । तुम्हे मेरे उपगध (=शिवाम) म जेक पथ तक यक्ष की पूजा स्वीकार करनी चाहिजे (=पूजा का व्रत ग्रहण करना चाहिजे) । पर तु जो पास म आ पड है उनके नीचे तुम्हे नही जाना चाहिजे (=तू मन जाना) । अंसी सीख देकर मात्क जाणि सामग्री पत्रह टिना की बहा रखकर विद्याधर आकाश म उड गया ।

यदा कुमार कौतुकीयाळ हृतत वृक्ष तळ आशित पून शैला सूचियत  
कुमार पून ना प्रभास-नु गदभ हूत पट्टइ पनर दिन न प्राति तिहा  
खेचर त तहन्नउ स्वरूप कुमार नू दखी बाजा वृक्ष नउ पून सूधाडिउ  
दुमार मनुष्य हूत जाश्चय तु कवण कारण रोचर कह—खर विदधा  
मनुष्य विदधा करा अधिष्ठित कारण लगी वृक्ष बिनइ पछइ कुमारि ते  
वृक्ष ना पून जूजूआ गठनीइ बाध्या तत विदधाधर त्या लगी पाचमइ  
कुमार काचनपुर गई मूकिउ

-५-

पठइ त कुमार पूव रीतिइ कथा न प्रभाधि मुन भागता बळी तिणि  
इ दीठउ बळी तिणि प्रपच करी घरि जाणिउ कुमर पूछइ—तू किम रहा  
? मउ वश्या कहइ—तू जतळ पादुका मूकी शैव कुळ माहि पाठ तनळइ  
मिद्ध-पुरुष पादुका लई नामिवा लागउ हु तेह नइ पणि विलगी तिणि

दूसरे दिन (=अक दिन) कुमार कानुक युक्त जाता हुआ (=हाकर) वृक्ष  
न जाया। पून को देखकर गधा। इतने में (=तभी) कुमार पून के प्रभाव  
भाषा हो गया। पीछे पट्टइ दिन के उपरान्त विदधाधर वहा जाया। उसने  
उस का वह स्वरूप देखकर। दूसरे वृक्ष का पून सुघाया। कुमार फिर  
व्य हो गया। जाश्चय कौन (म० क पून, अप० कउणु, । कारण।  
धाधर कहता है। यह विदधा और मनुष्य विदधा से अधिष्ठित (ज्ञान के)  
रण में (?)। वृक्ष दोनों के। पाछे कुमार ने उन दानो हो वृक्षा के पून  
ग गनग (=जुटा जुटा से युत युत=अप० जूजूवउ) गठनी में बाध  
य। तब विदधाधर ने दया के कारण पाचवें दिन कुमार का काचनपुर ल  
गा (=ले जाकर छा दिया)।

( ५ )

पीछे वह कुमार पहन की रीति से कथा के प्रभाव से सुख भागता है। फिर  
में कथा ने दया। फिर वह प्रपच करके घर ले जायी। कुमार पूछता है—तू  
में यहा आया। यह वेदया कहती है। तू जब पादुका त्यागकर दबकुल में  
=मन्दि में) प्रविष्ट हो गया। तब जब मिद्ध पुरुष पादुका लेकर भागन  
गा (म० नग=भागता)। मैं उसके पर से निपट गयी। उसने यहा (लाकर)  
गठना। पर है वस्त्र ! कह तू कम आया। कुमार कहता है। यश की कृपा  
। मैं यहा आया।

इहा मूकी, पणि वरुद । कहि तू जाविउ किम ? कुमार कहूँ—यभ ना प्रमाद लगी हू इहा जाविउ

बेया पूछइ—तुभ नइ कार दीधउ ? कुमार कहूँ—मुभनइ जाणध दाधउ जिणि जरा जाइ योवन आस अहयइ बेया लाभ रागी कहिवा लागी—मुभ नइ ते ऊनधी आपि कुमार तत्काळ त पूरा सूधाइया ततळइ मगधा पीटी रासभी हुइ कुमार लकुट लइ रामभीइ चडिउ पछइ ऊभइ चहुटइ लकुटइ कूटइ लोक मित्या वरुइ—अहा कुमार ! मूकि कुमार तउ न मूकइ तेतळइ सब बस्या पाकार करिवा लागी ततळइ तदार जाया पगण करवा लागी तिस्यइ कुमार लकुट त तिम हण्णा जिम तीजे जइ राजा बीनविउ पछइ राजा सपरिवार कटक लई जु जाविउ ततळ आळविउ—भाई राजा पछइ प्रपव जाणी कुट्टिनी मूकावी

बवे भाइ मित्या म० प्रमाद उपनउ पछ माता पिता ग्राम नृता अणावी राज करवा लागी

बस्या पूछता है । तुम कुछ दिया है ? कुमार कहता है । मुझका जीपवि नी जिनसे बुझाया जाता है जीव यौवन आता है । तब बस्या लाभ व कारण कहन लगी । मुझका वह जीपवि द । कुमार ने तुरत व पूत्र सुघाय । तब (वह) बस्या न रहकर गधी बन गयी । कुमार लकड़ी लेकर गधी पर चढ़ गया । पीछे खड़े बाजार म (=सबके मामन) (चतुहट्टु=बाजार या चौराहा) । लकड़ी म पीटता है (=पाटन लगा) । लाग इकट्ठे हो गय । कहत है । जर कुमार ! छाड़ दे । कुमार ता नहीं छाड़ता । तब सब बेश्याओं पुकार बग्न गया । तब नगर रक्षक जाय । जबदस्ती (प्राण=शक्ति बल) करत लग । तब कुमार न लकड़ी से उनका अस सारा वि । उनन राजा के पाम जाकर राजा स विनता की (म० विनपि प्रा० विण्णत्ती) । पीछ राजा परिजन व साथ, सना लेकर ज्या ही जाया । त्याही पहचाना । (यह ता) भाई (है) । राजा न पीछ प्रपव की बात जान कर । कुट्टिनी को छुटाया ।

दाना भाई मिन । बडा आनद उत्पन्न हुआ । पीछ माता पिता का गाव स बलवाकर राज्य करत लग ।

## दलपत-विलास

( मत्रहवा सतादी )

दलपत विलाम राजस्थानी गद्य का जीवनी गद्य है जो अपूर्ण है। इसके का नाम अज्ञात है। इस ग्रंथ में बीकानेर के महाराजा रायसिंह का पुत्र महाराजकुमार दलपतसिंह का विवरण है जो आगे चलकर र के राजा हुए। ग्रंथ के आरम्भिक दो पृष्ठों में सृष्टि की उत्पत्ति लिखाने के लिये लखन राव जोधाजी तथा राव बीकाजी से लेकर सिंहा तक की वंशावली का उल्लेख है। दलपतसिंह की किशोरावस्था के लिये दीवान कमचन्द बच्छावत के काय रायसिंह के पुत्र भापत का जाना दलपतसिंह का मार्ग का पडयान् उनके द्वारा बचपन में प्रसंगिक ही वीरता अक्षर के दरबार में की गयी उनकी मेवाड़ आदि इसके हैं। अनिहायिक दृष्टि से ग्रंथ बहुत महत्त्वपूर्ण है। संकटित अर्थ में ही और राव मानदेके बीच हुए युद्ध के तथा हेमू अब अक्षर के बीच लीपत के युद्ध के सम्बन्ध का कई महत्त्वपूर्ण अनिहायिक सूचनाएँ हैं। समकालीन रचना होने के कारण इसमें वर्णित घटनाएँ अधिक मनीष हैं। ]

-१-

अथ प्रस्तावित महाराजाधिराज महाराजा श्री कल्याणमन विप्रमनगरि राज  
 त्र निज समय लिखी पानिमाह श्री भरमाह राज कर छ निज र पुत्र  
 माह साहिजानो बडो अन्ती हुया

( १ )

इस समय महाराजाधिराज महाराजा श्री कल्याणमन बीकानेर में राज्य  
 में हैं। उस समय लिखना में बरमाह श्री भरमाह राज्य करना है। उनके  
 मनेमाह साहिजानो बडा पाया हुआ।

तिण सम जाघपुर रात्र मालदे राज करे छ विस्तार आगे लिखीजसी, पिण समेप पाडा-मा लिखिय छै इण प्रस्तात्रि रात्र मालदे कटक करि वीकानेर आयो रात्र जतमिघ युद्ध करि चैकुठ मिघायो राव कल्याणमलजी-नू ठाकुरियासर ग्राम टीका हुया पर विखा हुयो

रात्र कल्याणमल आप दिनी पातिमाह श्री सरमाह कहै मिघाया पातिमाह नू मिनिवा आप कटक करि गुडो सायि ल अर मग्ग मिघाया गुडो सरसै कियो निय प्रस्तात्रि पातिमाह कहै परधान मल्हिया हुता मू आया तिवारै पातिमाहजी सरमा पाटण वाम गात्र त्रिया, बयाना, हिमार भेन्नत रवाडी समेत पडगना मूकिया बहूत त्रिलामा मूकी अेकणि प्रस्तात्रि पातिमाह श्री सरमाह सत्रममाहि बाप-बेटा दाजू विखै पत्रियै रात्र लूणकण कहै चाकरी वीकानेर आय रहिया हुता तिण बाव रा विस्तार जाग लिखीजसी तिणि उपगार किय राय श्री कल्याणमलजी गो उपगार करि-नै श्री सरमाह रात्र श्री जतमिघजी र वर बाळण रै कियै रात्र मालदे ऊपरि आप पधारि अर रात्र मानदे रा रजपूत

उम समय जाघपुर म राव मानदे राज्य करता है । विस्तार जागे लिखा जायगा । पर सक्षप घोडा-मा लिखा जाता है । इस समय राव मालदे सय (मजा) कर वीकानेर आया । राव जतसिंह युद्ध करके बकुठ गया (सिधाना—मिद्ध करना स) । राव कल्याणमलजी का ठाकुरियासर गाव म टीका (राजनिलक) हुआ । पर विखा हुआ (विखा=अंमा विपत्तिकाल जिसम देश-त्याग करना पडे) ।

राव कल्याणमल स्वय त्रिलो बाटगाह श्री गेरगाह के पास गय । बाटशाह को (=बादशाह से) मिल । आप सना बनाकर परिजनो का माथ लकर सिरस गय । डेरा मिरमे मे किया ।

उस समय बादशाह के पास (जा) प्रधान (=मन्त्री) भेजे थे वे जाय । उस समय बादशाहजी न मिरमा पट्टन (=नगर) रहने का गाव त्रिया । बयाना, हिमार भवात, रिवाडी महित परगने छाडे (=दिय) । बहूत दितामा (=जास्वासन) दी ।

जैक वार बादशाह श्री शेरगाह और सलमशाह पिता-पुत्र दानो विपत्ति पडन पर राव लूणकण के पास नौकरी के लिअ वीकानेर म आकर रहे थे । उस बात का विस्तार जाग लिखा जायगा । उस उपकार के कारण राज श्री कल्याणमलजी का उपकार करके श्री शेरगाह राव श्री जतसिंह का बर लने क लिअे राव मालदे के ऊपर स्वय पधारे (=आये) और राव मालदे के

## राजस्थानी गद्य विद्याम और प्रवाण

। घण मारिया अर गव माने भागो भाज-करि पीपळो र पाहू  
 वीकानर बड राव कल्याणमत आ राज विराजण भागा  
 न ममयै पानिमाह मरगा वरम आठ सिनी राज करि अर काठिजर  
 जना तठ नाठि पाळा चलायता अक नाठि पाटि पाछी पनी निवार  
 ह नाठि हुना निवार हुना तिणि रा पातिमाह काठि मारिया

-२-

साहरा सिनी टाकै ममममाह पातगा बटा वरम मान पातिमाही करि  
 ताचि मूया तिण र पाठ अन्व रावरा वरा पातिमाह सिनी माह हुया  
 जनाई तिण पातिमा रा मामा ममरेजवान तिणि अन्व-नू मारि-अर  
 निया सिनी रा वरम अक राज किया पातिमाह मना सून हगम किया  
 विशयि ममरजवान जाप गहिला हुया तांग तिण र उकीदि काठिजर  
 रावि-न ममरज नू आप हम् पातिमाही रायि ना

पूत और उमराव (=मरिच और मरार) उदुत-म मार । और राव माने  
 ता । भागकर पीपला व पहारा म चना गया (पण = प्रसिद्ध म) । वीकानर  
 फिर राव कल्याणमत जाकर राज विराजण लग (=राज कल्याणमत  
 र वीकानर जाकर गहा पर बटे और फिर राय करत उप) ।

मम मय वाणाह राणाह जाठ वप सिनी म राज्य करव काठिजर  
 र था । वया तापि व गात चनात ममय अक ताप फकर पीपू गिदक पण ।  
 । ममय वाणाह ताप म (=ताप व) नेजक थ । उम वाणा न वाणाह  
 जना मारा (=जनाकर मार डाना) ।

( २ )

तर सिनी ममममाह टाक बटा (=गद्दी पर बरा) । मान वप वाणाहा  
 रव मोत म मर गया (माध < मृत्यु मिच्छु) । उमक मिहामन पर बटा अन्ति  
 =जातिगाह) बटा । वह सिनी म ढार दिन वाणाह हुआ (जनाई < अध  
 ताप) । उम वाणाह का मामा ममरजवा (=मुवारिज खा) (था) । उमन  
 गन्नि का मारकर सिनी का टाका लिया । जेक वप राय किया । वाणाह  
 । नमक-रागी की म कारण स ममरजवा भी पागद हो गया (विमसि  
 < विषय = विषयता स कारण म जाप < अपि = भा गहिला < ग्रहिल) ।  
 । उमक ववा न देम न ममरज का काठिजर म रवकर स्वय वाणाह न रय  
 नी (=अपन अधिकार म कर ला) ।

इय ममदय हमाऊ पातिसाह काजिल हुता आया आपन म ममरजमाह रा फोज हुता वणि हुयो फाज भागी पठाण विचळिया पजाव ला हमाऊ पातिसाह सीहनद आया पातिमाह हमाऊ रै माधि जववर वरम तरह माम छह रा हुता अकवर र माधि फाजे द अर कलानार नू मरिह अर पातिसाह हमाऊ दिला जाया पातिसाही करता थका अक दिन मुणार पातिमाह हमाऊ चडिया हुता तिहा धी पडिया जर हक हुया पातिमाह अकजर कलानार माह राज बँठो उठा हुती दिन्नी नू हालिया

ताहरा हमू पूरव काळिजर हुता दिन्नी जाया जायन निली ली तठ तिन्नी माह पातिमाह अकवर रा उमराव तुरतीयेग हुता सू नामि-अर जववर पातिमाह पासि गया ताहरा उमराव भरववग अन वलीवग त्या बुलाय तुरतीयेग नू कहिया—र तुरतीयेग <sup>1</sup> था माय जववर पातिमाह मलामत हुता जर तू वाणिय आगे भाजि-अर जाया मू क्यू ? इसा जवाब करता ममान तुरतीयेग जाणिया जू म्हारी अदम पड इमड वापिया तिम पातिसाह र हुकम करि अरि उमरावै सहयि मारिया अर गाडिया

एक समय हुमायू बादशाह काबुल म आया । परस्पर ममरजवा का सना स लडाइ हुई । मना भागा । पठान विचरित हा गय । (हमायू न) पजाव ल ली । हुमायू बादशाह सिहनद आया । तरह वप और छट महीन का जववर (बादशाह हुमायू व माय) था । अकवर के साथ मना कर और उम कलानार भेजकर बादशाह हुमायू लिला जाया । बादशाहत कर्त हुअ बादशाह अक तिन्नी भीनार पर चढ थ । वहा स गिर और हक ही गय (=मर गय) (हक < जरवी हक = सत्य) । बादशाह अकजर कलानार म राजगद्दा बठा । वहा से दिल्ली का चल ।

तय हमू पूव (म स्थित) काळिजर स दिल्ली आया । आकर तिन्नी ली । वहा तिन्नी म बादशाह जववर का उमराव तुरतीयेग था । वह भागकर अकवर बादशाह क पास गया । तव उमराव भरववग और वलावग थ । इहान तुरतीयेग का बुनाकर कहा—जर तुरतीयेग <sup>1</sup> तर ऊपर बादशाह अकवर सनामन था और तू बनिय के आगे (म) भागकर चला जाया । यह क्या ? जमा जवाब करत ही तुरतीयेग न समभा कि भरी अदम नष्ट हाता है यह समझ कर कापने लगा (?) । इतन म बादशाह के हुकम स करके (=हुकम स) उमरावा न(उस) अपन हाथा स मार डाला आर गाड दिया (महथ= स्वय के हाथा स) ।



। आप रा बैग-नू ले रिणयभोर गयी रतनमी रो छाती माहे रिणयभोर नही पूरविया पूरणमल नू रिणयभोर मलिया बहधो—थ विक्रमादित्य व-नू तेड लात्र तर ओ रिणयभार गया तर हाडी करमेती व-धो—अँ तो । नाहा छ इणा रा जवाव मूरजमलजी करमा तर आ बूदी मूरजमल न गयो जाय नै कहधा—राण रतनमा विक्रमादित्य उरसिध नू तेडाया वै कहै छ माहरो जवाव मूरजमलजी करमी तरँ मूरजमल कहधा— आत्ता छ तर दीप्राण मू हकीकत मानम करस्या

तर पूरणमल चीताड जायो राण हकीकत पूछी तर इण कहधा—व तो ने आवै पिण मूरजमल जावण द नहा तर रतनमी र डील आग लागी पिण टीका रो मूरजमल हाथी अेक घाडो अेक न जायो थो मू रतनसी या नही कह्या—राण साग ता-नू लान लसकर घाडा मेघनाद हाथी दिया मू मा नू द इण कह्या—हू क्यू जाट-पटल थो नही मू चारण दिया मू हम पाछा मागिया दू? बात कराडा वार हुयी राणा रतनसी मल नू मारण रा गान घाव कर छ

१ (=स्वगवास किया) । रतनमी राजा हुआ । हाडी करमेती अपने बेटो नेकर रणयभोर गया । रतनसा की छाती म रणयभोर अच्छा नही लगता मटकता है) । पूरविय (=चीपान) पूरणमल को रणयभोर भजा । कहा । विक्रमादित्य और उदयमिह को बुला ला । तत्र यह रणयभोर गया । तब ते करमेती न कहा । ये ता छोट वन्चे के वन्का (=इनकी ओर से) जब मूरजमलजी करेगे । तत्र यह बूदी मूरजमलजी के पास गया । जाकर कहा । रा रतनमी ने विक्रमादित्य और उदयमिह को बुलाया है मा व कहते है हमारी ओर से जवाब मूरजमलजी करण । तब मूरजमल न कहा—हम भा ने हैं तब दावान से हकीकत मानूम करावण (=निवृत्त करेग) ।

तत्र पूरणमल चित्तौड आया । राणा ने हकीकत पूछी । तब इमने कहा— तो बहुत बात है पर मूरजमल आन नही देता । तब रतनसा के शरीर म ग ग गयी । पहल भा मूरजमल राजतिनक का (=राजतिनक के समय भट लिअे) अेक हाथी और अेक घोडा ल आया था । व रतनमी न रले नही । हा—राणा भागा ने तुम गाल-लेशकर घोडा और मेघनाद हाथी तिलक के य थ वे मुझे द । इमने कहा—मैं काई जाट-पटेल तो था नही कि (राणा ) चराने को दिय थे और अब मागने पर लौटा दू । बात सीमा के बाहर हो यी । (अब) राणा रतनमी मूरजमल को मारने के दाव घात कर रहा है ।

-३-

तिण मम चारण भाणो मीमण जात रा, गोडा री बारहठ, चीताड र गाव गन्-कोदमियै रहै छै सू नाव्रजादी चारण छै बडो जाखरा रा करणहार छै

सू भाणा रा जजमान गोड छै बूदी रा चाफर छ तिणा कनै जाय छ माम अंक दुय माम उठ रहै तर भाणो हाडा सूरजमल र पिण उठ जाव तर मुजरो कर गुणे गीता गावै तद सूरजमल घणी मया कर छै

अंक दिन सूरजमलजी कह्या—भाणाजी ! हाला, सूर रा सिक्कार जावा ! भाणा नै सूरजमल सिक्कार सूर रा गया बाजा माय हाक भेलियो भाणा न सूरजमल दोय जणा हीज हुता सूर तो हाथ नाया न दोय रीछ आजाजीत आग पोछ आया इमडा कदे आखिया ही दीठा नही जिणा दाठा मरीजै सू सूरजमल उण सू बाया हुवो अंक कटारी सू मार पाडियो तितर दूजो आयो उण-नू ही उण-हीज भाति मारियो भाण-नू बडा इचरज आया सू भाण कह्या—ये कासू किया ? तरै कह्यो—कासू करा ? भाडा गळ पडिया पछ पाछा

( ३ )

उस समय गौड राजपूतो का बारहठ (<द्वारभट्ट) मीमण गाखा का चारण भाणा चित्तौड के गाव गड कोटमिय म रहता है। वह नामवर (=व्याप्ति प्राप्त) चारण है। बडा अशरो का रचने वाला (=कविता करने वाला) है।

सो भाणा के यजमान गौड राजपूत है जो बूदी के सबक हैं। भाणा उनके पास जाया करता है। अंक महीन या दा महीन बहा रहता है। उस समय भाणा हाडा सूरजनल के यहा भी जाता है। तब मुजरा (=अभिवादन) करता है गुणो (=गुण वणन की कविता) और गीता से यग गाता है। तब (=इसमे) सूरजमल (उसपर) बहुत ममता करता है (स्नेह रखता है)।

अक दिन सूरजमलजी ने कहा। भाणाजी ! चलो सुअरो की गिकार को चनें। (तब) भाणा और सूरजमल सुअरो की गिकार का गय। इसर साथ (के लोगो) को हल्ले म (=हल्ला करने क लिये) भेज लिया। भाणा और सूरजमल दो व्यक्ति ही थे। सुअर तो हाथ नही आये। पर दो रीछ जजेय (?) अचानक ' ) आगे-पीछे (=अंक पहले अंक पीछे) आये (मिते)। असे कभी आखो मे भी नही दखे थे (दीठा<दृष्ट)। (अस कि) जिनके दोखते ही (आदमी) मरे (=प्राण छोड दे)। सो सूरजमल उनसे भुजाओ से भिन्न गया। अंक को कटारी से मार गिराया। इतन म दूमरा आया। उसको भी उमी तरह मार लिया। भाणा को बडा आश्चय आया (=हुआ)। सो भाणा ने

राण गीत गुणे सूरजमल नू रीभावियो तरै सूरजमल जाणियो—लाल घोडा न मेघनाद हाथी लार राणो पडिया छ सू भाहरा परधान रजपूत वाय न राणा-नू तिरावसी, ता हू भाणा मरीखा पात्र-न देन अमर गेडा हाथी गानू भाणा-नू दिया भाणा नू बडी भोज दे साख ने विदा

राणा रो डरा चीलोड थो काम नस सिक्कार रमण र मिस किया छ ।ह सूरजमन मारण रो मलो छ राणी पवार रावत करमचंद रो बनी छै सू भाणा उर जायो दीवान रै मुजर तर दीवान पूछी—बठ हुना ? अरज बीवा—बूनी हुना तर रतनसी कह्या—सूरजमन रो बात बहो रणा सूरजमल रा बखान किया तर राणा नू सुहाणो नही भाणो घो नही जू राणा इण-मू इतरी कु मया कर छ तर राण पूछियो—इतरा मन रा बगण करो छो सू इतरा सूरजमल म कामू दीठा ? तर भाण

। आपने यह क्या किया (जा नस भिड गये) । तब सूरजमल ने कहा— करे (कासू < कीदगम) । जबदस्ता गल आ पडे (माडा < अप० मडड) । । वापिस आय । भाणा न गीता और गुणा (=गुण-वर्णन की कविताओ) सूरजमल का रिभाया (=प्रमन किया) । तब सूरजमल न जाना =विचार किया) —राणा लाल-लस्कर घाडे और मेघनाद हाथी के पीछे पडा सा मर मत्री और सरनार मुके दजाकर राणा को दिना देंग ता फिर में ना मरीखे पात्र (दान के योग्य 'यति' कवि) को देकर (अपना नाम) तर कर । (फिर) घोडा और हाथा दाना भाणा का दे दिया । भाणा को बडी भ देकर लाख-यमाव नामक दान दकर दिया किया ।

सा राणा का येरा चित्तौ म दम काम पर शिकार खेलन के बहान या हुआ है । मन म सूरजमल को मारन का विचार है । पवार (=वशाय) नी रावत कमचर को देना साथ है । सो भाणा दीवान क मुजर पर =अभिवादन के लिये) वहा आया । तब दीवान ने (बात) पूछी— हा थ ? भाणा न निबदन किया—बूदी था । तब रतनमी न कहा— सूरजमन का बात बहो । तन (उसन) सूरजमल के बहुत बखान किय (स० व्याख्यान प्रा० बखान) । तब राणा का अच्छा नही लगा । (उधर) भाणा पमभा नहा कि राणा इमम (=सूरजमन म) इतनी अकृपा (=दुप बुद्धि) रगना है । तब राणा ने पूछा—सूरजमन के इतन बखान करत हो मा इतना सूरजमन म क्या न्या । तब भाणा न रीदा की बात विस्तार स बही । और

रीखा री बात भाड कही न कह्यो—दीवाना ! सूरजमल इसडो रजपूत छ, जिको उण-नू मार सू कुसळे न जाय तरँ राणी इण बात ऊपर बोहत भाणा-सू बुरो मानियो

तितर किणी-जेक भाणा-नू पूछियो—थे इतरो सूरजमल री जस करो सू हुमार था-नू कासू दियो ? तर कह्यो—मा नू लाल-लसकर घोडो मेघनाद हाथी न लाख पसाव्र त्रिया तर राणा र बळै जोर आग लागी भाणा नू कह्यो—थ माहरी हृद म मत रही थ बूदी जावो

तरँ भाणो पूछ भाटक उठियो पाछो बूदी-न हालियो तठा पहली आ खबर सूरजमल-नू पाहती सूरजमल सामा आदमी भाणा र भेलिया घणो आदर कर तेड हिरणामा गाव सासण कियो, घाडा हाथी लाख-पसाव्र घणोई द्रव्य दियो कह्यो—म्हारो भाग ! दीवाना मो-भो बडी मया करी, भाण मरीखो पात दियो

—४—

सू राणो सिकार खेलतो-खेलतो बूदी दिसा आत्र छै सूरजमल वन आदमिया

कहा—हे दीवाना ! सूरजमल असा राजपूत है कि जो उसको मारे (= मारने का प्रयत्न करे) वह कुशल से न लौटे । तब राणा ने इस बात पर भाणा से बहुत बुरा माना ।

इतने में किसी ने भाणा को पूछा । आप सूरजमल का इतना यश (प्रशंसा) करते हैं सा अभी आप को क्या दिया ? तब भाणा न कहा—मुझे लाल-लसकर घोडा और मेघनाद हाथी और लाख-पसाव (अर्थात् लाख रुपया का प्रसाद = पुरस्कार) दिया । तब (= यह मुनकर) राणा के फिर बहुत जार से आग लगी । (उसने) भाणा से कहा । तुम मेरी सीमा म मत रहा, तुम बूदी चले जाओ ।

तब भाणा पूछ फटकारकर उठा (जोर) वापिस बूदी को चला । उसके पहले ही यह खबर सूरजमल को पटुची । सूरजमल न भाणा के सामन आदमी भेजे । बहुत आदर करके बुलाकर हिरणामा गाव (गनपत्र देकर) दान म दिया । (सामण—स० गसन ब्राह्मणो चारणा आदि को दिया जाने वाला भूमि या गाव का दान जिस पर कर नहीं त्रिया जाता था) । घाडे हाथी लाग्य पसाव आदि के रूप म बहुत द्रव्य दिया । (जोर) कहा—मेरा (बडा) भाण्य ! दीवान न मरे साथ (= पर) बडा दया की (जो) भाण जसा पात्र (= वनीजन कवि) दिया ।

(४)

सो राणा सिकार खेलता-खेलता बूदी की दिशा म आ रहा है । सूरजमल

मो आग्र छ—सताव आत्रो सूरजमल जाण छै—जाऊ क न जाऊ ?

अेक दिन माजी खतू राटोड-नै पूछिया—मो नू राणा रा आदमिया दमी तेडा आग्र छ मो-सूँ राणा बुरो छ मो-नू मारसी कहा ता र राणा-नू हाथ लिखाऊ ? तर मा कहा—दमना वात क्यू कीज ? गा रा मदा चाकर छा इसडी ता आज पहली आपा-सू बुरी कोई हुई तो राणा तो-नू मारसी ता-ही सताव राणा कन जात्रो घणी चाकरी र सूरजमन राणा कन गया

बल्ल र तीरथवालो बाजणा गात्र बूदी चीतोड री गडासघ छ तठ आय न राणो मन म घणी घाट गख छ न सूरजमन रा आदर घणा किया न भाई कह बतलाया

द जेवण दिन कहा—म्टे जेक हाथा लिया छ निण म्ट भेठी अमबारी पठ उवा हाथी राणा चढ़िया सूरजमल-हा घाट चन जायो जकण ठोड ने निसी सूरजमन ऊपर हाथा बहतो घो रतनसी आप चढ़िया था

स जात्री-पर-आदमी जा रह है कि जत्ना आओ । सूरजमल विचारता जाऊ कि न जाऊ ।

तब अेक दिन माजी (=राजमाता) खतू राटाड का पूछा—मुझे राणा जात्री-पर-आदमी बुलावे (बुलान के लिये) आ रहे है । मेर प्रति राणा है (द्वयभाव रखता है) । मुझे मारेगा । (जाय) कहे ता निखा करके विद्रोहा बनकर और राज्य त्याग करके) राणा का हाथ लिखाऊ । तब ने कहा । जमी बात क्या कीजिय । हम इनके सत्ता से सबक है । अैसी ता बुराई हममे आज क पूव हुई नहा । जो राणा तुम्ह मारणा ता भी र राणा के पास जाओ । खूब सवा करो । तब सूरजमल राणा के पास गया । गोखण के तीय वाना बाजणा गाव बूदी और चित्तोड की ठीक साम्ना है । वहा आकर मित्त । राणा मन म बहुत द्वय रखता है (तोड= अपन दुष्टता, द्वय कपन) । और सूरजमल क आदर बहुत किया । भाई जमल कहकर बुनाया ।

पीछे अेक दिन कहा । हमन अके हाथी लिया है । जत हम साय-साय जात्री करें । पीछे उस हाथी पर राणा चना । सूरजमन भी घाड पर चढ़कर या । अके सबडा (सग) जगह का जा ( ? ) सूरजमन की आर गथी चल ग था । रतनसी स्वय उम पर चना हुआ था । सा सूरजमल क ऊपर थी भौक दिया (=ठेन दिया) । सूरजमल न घोटा लात मारकर, निकाल

सूरजमल ऊपर हाथी भोकियो सू सूरजमल घाडो लात मार काढ दियो दाव टाळियो सूरजमल रीस करी राणै कह्यो—हाथी माडा आयो घणी हळमळ की

दिन अेक आडो घात-न कह्यो—आपै सिवार सुअरा री मूळा री खेलस्या तर सूरजमल कह्यो—भली वात

-५-

अेक दिन री वात छै राणो पवार राणी आग कहै छ—अक म्हे सासतो मूअर जेवल मारस्या थानू तमामो दिखावस्या

तीरथ गोकह्ल र पवार राणी सिनान करण गयी थी तथा पहली सूरजमल सिनान करण गया था सू पवार आयी तर धानिया हीज पहर बन ह्य नीसरियो तर पवार सूरजमल-नू दीठा किण ही नू पूछियो—ओ कुण ? तर कह्यो—आ सूरजमल हाडो बूदी रो घणी जिण सू दीनाण कु मया कर छ तर पवार ममधा—राणा मूअर-मूअर कर छ सू डण नू मारण मत छै गत पवार गयी तर राण बळ वात सुअर री चनायी तर पवार कह्यो—आ सुअर म्ह दीठा उण रो नाव थ मत त्या तर राणै कह्यो—तू कामू जाणै ? तर

लिया । दाव टान दिया । सूरजमल न रोप किया । राणा ने कहा—हाथी जबदस्ती भा गया । बहुत हलभन (=मीठी बातें खुशामद) की ।

अेक दिन बीच म देकर कहा—हम लाग सिवार सुअरा की पेडा का खोह मे छिपकर (?) खेलेंगे । तब सूरजमल न कहा—अच्छी वात (है) ।

(५)

अेक दिन की बात है । राणा पवार रानी के जागे कहता है—हम जेक प्रचड मुअर अेक दात बाला मारेंगे । आपकी तमागा दिखावगे ।

पवार राणी गोकण के तीथ म स्नान करन गयी थी । और सूरजमल पहल स्नान करने गया था । सो पवार रानी आयी तब बवन घोती ही पहन कर (=पहन हुए) पास हाकर निकला । तब पवार न सूरजमल का देखा । किमी की पूछा—यह कौन है । तब कहा—यह सूरजमल हाडा बूनी का मालिक है जिसम दीवान द्वेप रखते है । तब पवार रानी मममी (कि) राणा सुअर-मुअर करता है सो इसी को मारने का विचार करता है । रात का पवार रानी गणा के पाम गयी तब राणा ने फिर मुअर की बात चलाया (=गुरू की) । तब पवार रानी ने क्या । यह सुअर हमन देला है उसका नाम आप मत ल (=उस न छेडें) । तब राणा न कहा । तू क्या जानती है । तब पवार रानी न कहा ।

राज्ञो—उण-नू छेइती मू बुमळे न आत्र तद राण बुरो मानियो  
 ३ सत्रार राणो मूरजमन-न स गिबार गया मूळे घैठा दूजो माथ  
 थारको दूरो किया राणो न पूरणमन पूरबियो छ मूरजमल नै  
 न रो अेव गत्रास छ तिण गम गण पूरणमन-नू बाधा—तू मूरजमन-न  
 तर मू इण-मू लोह किया न गया तर राण घाड चड मूरजमल-नू  
 बाया मू माया रो ग्यापरी न गया मूरजमल ऊभा छ तितरै  
 न तोछेर वाहथा मू मूरजमन गी मापळ लागे मूरजमन दाड-न  
 न-नू पाडिया उण बूकवा किया तर राणा उण रा ऊपर-नू बळ आयो  
 न-नू लाह वाहो मूरजमन बाग रो जह भाल-न बटारा गळा नीचा-मू  
 पू राणा रा सूटा आत्रता रही राणा घाडा-मू हटो पडिया पडत-हीज  
 मागिया तर मूरजमन बाधा—वाळ रा-न्याथा हम पाणी पी सक नही  
 छ मूरजमल राणा बेहू मुत्रा पत्रार गता हुई राणा रा दाग पाटण हुत्रा  
 गी र बेगे बाई न हुनो तर रजपूत मारे मिळ-न करमेती हाडी न

। छत्रगा बहू सही मनामन नौतकर नही आवगा । तब राणा ने बुरा माना ।  
 तीछे सत्रे राणा मूरजमल को लकर गिबार को गया । सुपो म छिय  
 ?) बठ । दूसरा सारा माथ अपना और पराया दूर कर दिया । (अक और)  
 और पूरणमल चौहान हैं । (दूसरी आर) मूरजमल और मूरजमल का अक  
 है । उस समय राणा न पूरणमल को कहा । तू मूरजमन पर सस्त्र से प्रहार  
 मा वसम (=पूरणमल से) प्रहार किया नही गया । (=उमकी हिम्मत नही  
 । तब राणा न घाटे पर चत्कर मूरजमल को भटका चलाया (=आघात  
 ) । वह माथ को खापरी न गया । मूरजमल लडा है । इतने म पूरणमल  
 छेर (=बरछा) चनाया । सो मूरजमल की जाघ म लगा । मूरजमन न  
 कर पूरणमल का गिरा दिया । उसन पुकारें की ।

तत्र राणा उमकी महायता को फिर (वहा) जाया । मूरजमन का (=पर)  
 चनाया । मूरजमन न लगाम का गिरा पकडकर बटारी (पकडकर  
 । क) गन के नीच से चनाया । सा राणा की नाभि पर आता रहा  
 नाभि पर आकर रकी) । राणा घाटे से नीच गिर पडा । गिरते ही पानी  
 गा । तब मूरजमन न कहा । कान के खाय हुआ । अब पानी नहा पो सकत ।  
 पीछे मूरजमल और राणा दाना मर गय । पवार (रानी) सती हुई ।  
 १ का दाह-कम पाटण म हुआ । रतनमी के बेग कोई नहा था । तब सारे  
 पूता ने मिलकर हाडी करमेती और विजमान्तिय और उन्प्रासह की

वित्रमादित्त-उदसिघ-नू रिणयभोर-सू तेड लिया अँ आया वित्रमादित्त-नू टीको ह्वो वित्रमादित्त-उदसिघ सूरजमल रा बेटा सुरताण-नू बूदी रो टीको दियो

---

रणयभोर स बुला लिये । य आय । वित्रमादित्य का राजतिलक हुआ । वित्रमादित्य और उदयसिंह न सूरजमल के बेटे सुरताण को बूदी का राजतिलक दिया ।



# वचनिका राठोड रतन-रो

( अठारहवा गताब्दी—पूर्वाध )

[ लिडियो जगो ]

[ जग्गाजी विडिया गाखा क चारण थ । इनके पिता रतलाम-नरेण सह क राजकवि थे । कहा जाता है कि उज्जन की लटाई से पूव जग्गा [र-नरेण जसवतमिह क परिवार म थ । वही इनके पूवजा की साकडा (ग्राम ) जागीर थी । पर जग्गा का जसवतमिह के दरवार म रहना मन्दिथ है ।

वचनिका राठोड रतनमिधजा री म्नेसदासोत री जग्गा की महस्वपूण सात्मक अतिहासिण कृति है । इसम जोधपुर के महाराजा जसवतमिह मुगल-सम्राट् गाहजहाँ क दा विद्रोहा राजकुमारा—औरगजेब और मुराद— क लड गय धरमत (उज्जन) क युद्ध का वषण है । यह युद्ध स १७१५ का था जिमम जसवतसिह की जार म न्त हुण रतलाम-नरेण रतनसिह गति को प्राप्त हुण । य ही रतनमिह हम वचनिका के नायक ह ।

अच्छास मोची री वचनिका की भाँति यद्यपि इसम भी पद्य की तुलना य बहुत कम प्रयुक्त हुआ है तथापि वह अदिक प्रौढ और विकामा मुग्य है । सकलित अंग म रतलाम-नरेण रतनसिह और उनक सहयागी सनिका— हठ जमराज रतन भगवान अमर गिरधर साहिब रायमिह आदि— उत्साहवधिनी वीरदप पूण उक्तिया का चित्रण है । ]

-१-

तिण बेळा दातार भूभार राजा रतन मूछा कर घाति बोन तरवार  
[—आग लका कुरमत महाभारथ हुवा देत्र-दाणव लडि मुत्रा च्यारि जुग  
। रही बदयाम बालमीक कहा जो तीसरो महाभारथ जागम कहता

(१)

उम ममय । दाता दानपीन । नरुन बाजा वीर याद्धा (युद्धकार) ।  
।। रतनमिह । मोद्धा म हाय डालकर बालता है । तलवार को । तोनता है  
ता है । पन्ने पूवकान म । नका जीर कुम्भेत्र म महाभारत (महायुद्ध)  
। देवता और दानव नहकर मर । चारो युगो म उनकी कहानी रही ।  
व्याम जीर वात्मीकि ने कहा । यह तीसरा महाभारत । शास्त्रों क

उज्जिण खेत अग्नि-मोर गाजमी, पवन वाजमी गजवध छत्रवध गजराज गुडसी,  
त्रिद-अमुरायण लडसी तिका तो वात आय साकाबध मिर चढी

हुइ राह पातिसाहा री फौजा जडी दिली रा भर भारत भुज दिया कमधज  
मुन किया, वेद-नासन बताया, मू अवसाण आया उजेणि खेत, धारा तीरथ,  
धणी रो काम खित्री रो धरम साचवीज लाहा रा वाह सेला रा धमका लीजै  
न पीज खाडा री खटाखडि भटाभडि टडाहडि खलीज पातिमाहा री गज घटा  
पनीजै औभण मारि ठेलीजै पातिसाहा-र छत्र घाय बीज पुरजा-पुरजा हुइ  
भडा तो बैकठ चनीज क्यू बारहठ जसराज !

हा महाराज ! महाराज रा मनारथ श्रीमहाराज पूरै अखियात ऊवर,  
महाराज रा मुहडा जागै लडा, दूक दूक होय पडा

-२-

जतरा माह माचोरा मछरीक गाहिण रा गाडा फौजा रा लाडा काल्ही-  
रा कळस मती रा नाबरे सादूळ रा सादूळ भगवान जमर वोलिया बहादर

आगम-वचन (भविष्यवाणी) क अनुसार । उज्जिन क क्षेत्र म । (होगा) ।  
(तापो म) अग्नि और वाकूद गरजैंग । पवन (वग स) बहगा । गजपति  
(=राजा), छाधारी (=राजा), (और) गजराज गिरैंग । हिंदू और अमुरा के  
समूह लडेगे । वह वात ता आकर । । मिरै चढी (=पूरी हुई, घटित हुई) ।

दोनो धर्मों के वादगाहो (अधिपतिया) की सनाजे आमन-नामने खडी हुइ ।  
दिल्ली के वीरो ने (भर < भट) युद्ध का भुजाआ का सहारा दिया । कवधजा  
(राठोडो) ने प्रमाण किया । वेद शास्त्रा ने बताये सा अवसर आये । उज्जयिनी  
क्षेत्र खडग धारा का तीर्थ, (फिर) स्वामी का काम । अत क्षत्रिय का धम सभाला  
जाय । शस्त्रा के प्रहार भाला के आघात । लिये जाय और दिये जाय । तलवारों  
की खडाखड भडाभड से डडा का (डाडिया का) खेल सेला जाय । वादशाह  
की हाथिया की घटा (घटा जसी सेना) माग्कर हटा दी जाय । वादशाहा  
के राजछत्रा पर आघात किये जाय । पुजै पुजै हाकर गिरा जाय । ता ककुठ  
का चढा जाय (पहुचा जाय) । क्या बारहठ जसराज !

हा महाराज ! महाराज क मनोरथा का श्री महाराज (=भगवान)  
पूरा करें । पीछे अमर ब्याति रहे । (हम) महाराज क मुन के सामने लडें और  
दुकड-दुकड होकर गिरें ।

(२)

इतने म साचार बाल अभिमान (?) के गाडे (=अत्यन्त अभिमान)

तो कहै—) गोळा सर बाणा री मारि लापि हाथिया रा कुभाषळा खग  
बजाडा, गज-ढाल पाडा पानिमाहा रा खासा झडा जाडा थडा आडा  
। जायस्या रूक पिवाला पीयस्या-पायस्या चाचरि विहडस्या-विहडाय  
रिणमेत र विलै रगियै बाणासि मतवाळा ज्यू घूमता थका हाथिया-मू  
ता धायस्या महारुद्र-न सिर पैस करा अपद्वरा करा देवना स्यावास  
सी च्यार जुग बात रहिसा

इतरा माहे बोलियो गिरधर गागाजत रात्रना पति रात्रन—पातिसाहा री  
हैबर बूजर घटा पछाटा चद जसनामो चाटा

इतरा माहे बाणिया माहिव बाभाणा मुरधरा रो अणी-याणी (आं तो  
—) माहूर ता भगवानदास बापौत कहता—

अन्नमाण मरण खग धारा सामि-वामि भजिय दहा ।

सोचिन चित नित नित पाइज्ज पुन रेहा ॥

गाओं के प्यारे बावलीक बलश, सती के नारियल<sup>१</sup> मिहो व सिंह । बहादुर  
न भगवान और अमर । बोले । य तो कहत हैं । गाला की, सरो की(?) और  
णो की मार को लाकर हाथिया के कुमस्थना पर खडग बजावेंगे । हाथिया की  
लें गिरा देंग । बादगाहो क खास झडा वाल सधन समूहो के खडगो के सामने(?)  
वेंगे । तनवारा के प्यात्रे पियेंगे और पिलायेंगे । मस्तक खडित करेंग और खडित  
रवावेंगे । रणक्षेत्र म रगे हुअें खडग के साथ मतवाला की भाति घूमते हुअ (नगे  
। वभान हुअें) हाथिया मे टक्करें खावेंगे । महारुद्र को सिर भेंट करेंग ।  
पमरा वरण करेंगे । शैवता गावास कहेग । चारो युगा मे क्या रहणी ।

इनने म बोना । गागा का बटा गिरधर । राजाआ का पति राजा ।  
गादगाहो के । जादमियो और घाडा तथा हाथिया की घटा का । पछाडेगे ।  
वद्रमा तक यगनामा (कानि) चढायगे ।

इतन म बोना कूभा का बटा माहिव आ मरुभूमि का पराक्रम (?) था । यह  
ता कहता है । मेरे तो बाध के बटे भगवानदास कहत थ—मरण के जबसर  
पर खडग की धारा म स्वामी के काम म शरीर का भग कर दीजिय । मुचित  
(स्वस्थ) चित्त से सत्प मत्प पुण्य की रेखा का प्राप्त कीजिय ।

अमा यह तो बटा अवसर आया है । गहर मरावर म कितकिता की

<sup>१</sup> पगला मिर पर घडा ठकर चने ता वह अवश्य ही फूट जाता है । इसी प्रकार सती का नारियल भी निश्चित रूप म फूटता है । अत इन मुत्तवगे का अर्थ है अवश्य मरने वाल ।

जस औ तौ बडो जवसाण जायो ऊडै ब्रह्मि किलकिला ज्यू फूलधारा विच उडि पडा पातिसाहा री फौजा सू लडा, महाभारथ बरि मरा, बगडी जाघाण ऊजळा करा

इतरा माह बालिया रासौ कुन्नर दूसरा मधुकर (औ तो कहै—) जळाबोळ रिण समद माहे जमि जिहाज धरा किलवा घडा मारि पारि करा मरा तो अपछरा वरा नही ता जीवित सिभ हुइ ऊबरा

—३—

वारहठ कहै—बाप हो बाप ! बाप र जोड अतुळीवळ भला त्राडियो वाळ घमळ महाराज विमाह र आगम मगळ धवळ खभाइची कीजै पिण औ महाभारथ री आगम अेक वार सूरु पूरा रा अन्नसाण सिद्ध क्षत्रिया रा वडा राग माहे वडा दूहा गवाडो ज्यू सूरु पूरा रा चाचरा रा कस घणणाइ न ऊभा हुन्नै, पोरिस चड सीग ब्रह्माड अड, कायरा रा घडा पड विहाण

भाति फूलो की धारा क बीच म उडकर पडेंग । वादशाहो की फौजा स लडेंग । महाभारत करेके मरेंग । बगडी और जोधपुर को उज्ज्वल करेंगे ।<sup>१</sup>

इतन म बोला रायसिंह कुमार (जो) दूसरा मधुकर (=महेगदास)<sup>२</sup> था । यह तो कहता है । गहर जल से भरे युद्ध रूपी समुद्र मे तलवार रूपी जहाज रखेंगे । यवनो की सेना का मारकर उस समुद्र को पार करेग । मरेंगे तो अप्सराया को वरेंगे । नही ता जीते जी गभु बनकर उबरेंगे (=अमर होंगे) ।

(३)

(तब) वारहठ (द्वारभट्ट) कहता है । बाप र बाप (प्रशसात्मक उद्गारक) । पिता के पास म । अतुल बल वाला यह बानक धवल (श्वेतवृषभ) मूढ़ दहाडा । हे महाराज ! युद्ध रूप विवाह के पूर्व मगन-गात खभायची (खम्भाच) राग मे कीजिय (गवाइये) । परंतु यह महाभारत का आरंभ है । अेक वार पूरे और गूर अवसान सिद्ध (जवमर पर पूरे उतरन वाले) क्षत्रियो के वडे दोहे बडे राग मे गवाआ । जिममे (=ताकि) पूर और गूर क्षत्रिया के माथे (=सिर) के कंग चनाटे क साथ खे हो जाय । पौरुष चडे । सीग(अथात मिर) ब्रह्माड (=आकाश) स जा अडे । कायरो के समूह नीचे पडे ।

<sup>१</sup> बगडा जोधपुर राज्य का प्रथम श्रेणी का ठिकाना था । जोधपुर राठोडा का प्रमुख स्थान था ।

<sup>२</sup> मधुकर या महेगदास रायसिंह का दादा था । रायसिंह रतनसिंह का दूसरा पुत्र था और महेगदास रतनसिंह का पिता था ।

त-लाक-ते सग-सोक जायस्या, मूरा-पूरा खिन्निया री बात सुणो आपणा  
केई-अब सुणसो

वाह-वाह बारहठजी ! भनी कही मन री नही हुक्म बिया जागडिये  
ग राग माह दूहा निया

परिजाऊ दूहा बगड माड घन्नळ रा दूहा अकन गिड वाराह रा दूहा  
ज मारदणी रा दूहा राव रिणमल रा दूहा राव अमर रा दूहा कल्याणमल  
यमलोट रा दूहा बरण रामात रा दूहा तजमा डूगरसायात रा दूहा जमन  
ता रा दूहा जना-कूपा रा दूहा प्रिधीराज जतावत रा दूहा, गागा डूगरात  
। दूहा अखैराज सानिगरा रा दूहा नग भारमलात रा दूहा अमर धरमावत  
। दूहा ईमर जीवावन रा दूहा सोभा साचारा बीकममी रा दूहा अन्नर ही  
तीन बस अन्नमाण सिद्ध खिन्निया रा दूहा गाया जर मुनाया

प्रात कान (विमान स) मृत्युनोक स स्वगलाव जावेंगे । गुरवीर पूर  
=सच्चे) क्षत्रियो की क्या सुनो । अपनी भी कई-अब (बहुत-से) सुनेंग ।

वाह वाह बारहठ जी ! खूब कही । मन की (इच्छा) प्राप्त की (=पूरी  
इ लह म लभ्) । तब हुक्म बिया । डानी न बडे राग म दाह दिय (=कह) ।  
आग दाहा क नाम गिनाय गय हैं) —परिजाऊ दोह दो मीगा वान धवल सा  
गह (वृषभ वीर का प्रताक माना गया है) अकनगिड नामक वराह क  
है (वराह भी वीर का प्रतीक क्या गया है) मुज और मारदणी के दा  
व रणमन क दाह, राव जमरसिंह राठाड के दाह रायमन क ग्रे कयाणमल  
दाहे राम क ग्रे करन के दाह डूगरमी क पुत्र तजमी क दोहे जयमन  
रीर पत्ता क दाह जता जीर कूपा क दाह पृथ्वीराज जतावत के दाह डूगर  
वट गागा के दोह अखराज सानिगरा क दाहे भारमल क बने नगा के दा  
रमा के घट अमरा क दाह जीवा के बटे इमर क दाहे सोभा क वगज (?)  
साचार क बीकममी के गह । और भी राजपूतो क छत्तीस वगा क अवमान  
सद्ध क्षत्रिया (वीरा) क दोहे गाय और मुनाय ।

## राठोड दुरादवास-रो कागद ( अठारहवीं शताब्दी—मध्य भाग )

[ सकलिन अश राजस्थानी के पत्र माहित्य का उदाहरण उपस्थित करता है। इसका समय अठारहवीं शताब्दी का मध्य भाग है। पत्र सुप्रसिद्ध राठोड वीर दुर्गादास की ओर से डायलाणा के चौधरी राजसिंह को लिखा गया है। इमम औरंगजेब द्वारा अपने विद्रोही पुत्र अकबर तथा शिवाजी के पुत्र राजा राम के विरुद्ध भेजे गये समदल सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण अतिहासिक तथ्या का उल्लेख किया गया है। ]

श्री श्री परमेश्वर जी सत्य हैं

स्वस्ति श्री गान्ध डायलाणा सुधाने चौधरीजी श्री राजसिंहजी ज्योग लखर था राज श्री दुर्गादासजी लिखावत जुहार अन्नधारजी जी अठा रा ममाचार था महाराजाजी रा तेज प्रताप कर भला है राज रा कागळ समाचार सदा भला चाहैज राज उप्रात म्हार काई बात न छ अठा मारू काम काज हुव मू निविया करजी, किणी बात री जुदायगी मत जाणजो अठा उठा रा अक बात कर जाणजी जी

अप्रथ राज रा कागळ आया ममाचार पाछिया आवा री लापमी मल्ही था मू पाहती छ

श्री परमेश्वर जी सत्य हैं।

स्वस्ति श्री गान्ध डायलाणा शुभ स्थान मे। चौधरीजी श्री राजसिंहजी योग्य। लखर से, डायली से। राज श्री दुर्गादासजी ने लिखाया। जुहार स्वीकार कीजियेगा जी। यहां के ममाचार श्री महाराजाजी के तेज और प्रताप से अच्छे हैं। आपके पत्र ममाचार सदा अच्छे चाहैजे। आपसे बढकर हमारे कोई बात नहा है। यहां के लिये (=योग्य) काम-काज हो सो निवा कीजियेगा (=लिखते रहियेगा)। किसी बात का अलगाव मन समभियेगा। यहां-वहां की अक बात करके समभियेगा जी।

और आपका पत्र आया। ममाचार पढ़के (पोछिया=पाछिया)। आयो

## राजस्थानी गद्य विकास और प्रकाश

अप्रच श्री अकबरजी रो हजूर या वासीद आग आया या आ साथ समाचार  
 ॥ या मू म्हे राज-नू पहला निवियो छ न दिखण रो खबर आया यो  
 ॥ छ—मु० काबुल-या अमीरखा पातसाह-नू वाकाम लिखियो छ जू  
 वरजी रो थाणा खघार आयो छ न असन्नारी हुयी छ सताब हिन्दुमथान  
 गन्नसी त्तिण ऊपर आजम तारा-नू विदा कियो छ

राजा रामसिंह रा पातरा-नू नोय हजारी चार हजार अमन्नार नै अक  
 रोड दाम इनाम दे-नै राजाराम ऊपर विदा किया छ

और समाचार आबमी मू राज-नू निखमा समसय साथ रो जुहार अक  
 रजी वळना बागन्-समाचार वेगा देजा

आमाढ सुदि १३ रविवार मुकाम कोटडा

। लपसी (मीठा व्यजन विशेष ? छवडी ?) । भेजी थो सो पहुची है  
 =पट्टूच गयी है) ।

और श्री अकबर जी के हजूर स (अकबर औरगजेब का पुत्र या जिमन  
 रगजेब से विद्रोह किया था) । दूत पहले जाय थे । इनके साथ समाचार  
 य थ । सो यह हमन आपको पहले लिखा था । और दक्षिण की खबर  
 यी । यह आयी है (कि) मुकाम काबुल से अमीरखा न बादशाह (औरगजेब)  
 । वाकआम (घटनाआ के सवाद-पत्र) म लिखा है कि । अकबरजी का थाना  
 वार आया है और सवानी (=चढाई) हुई है । शीघ्र (फारसी सित्तब)  
 दुस्थान का आवेंगे । उनके ऊपर आजम (औरगजेब का दूसरा पुत्र) तारा  
 । बिना किया है (=भेजा है) ।

राजा रामसिंह के पोता (=वशजा) को दो हजारी चार हजार सवार  
 र अक करोड दाम (=अक सिक्का) इनाम देकर राजाराम (=शिवाजी  
 पुत्र) (के) ऊपर विदा किया है ।

और समाचार आवेंगे सो आपका लिलेग । समस्त साथ का जाभिवान्त  
 शीकार कीजियेगा । लौटते हुअे (=वापिस) पत्र-समाचार शीघ्र दीजियेगा ।

आमाढ सुदि १३ रविवार मुकाम कोटडा ।

## अदालती न्याय

( अठारहवीं शताब्दी—उत्तराध )

[ मुहणोत सप्रामसिध ]

[ मुहणात सप्रामसिह प्रमिद्ध रयात लखक मुहणात नैणसी के पीन थ । इनका समय अठारहवीं शताब्दी का उत्तराध है ।

फारसी में राज शिक्षा पर 'अखलाक-अल माहसनी नामक एक बहुत सुंदर ग्रंथ है । सप्रामसिह ने नीति पकास नाम से उसका राजस्थानी गद्य में भाषांतर किया । ग्रंथ में बादशाहों में अपेक्षित ८० गुणा का विस्तार के साथ वर्णन है । इन गुणा को स्पष्ट करने के लिए बीच-बीच में जनक कथाओं दृष्टांता और पुरान राजाओं की जीवन घटनाओं का उद्धृत किया गया है ।

यह ग्रंथ राजस्थानी गद्य का अके उत्कृष्ट उदाहरण है । अनुवादक ने मूल ग्रंथ का हू-ब-हू अनुवाद न करके उसे कहीं-कहीं पर सक्षिप्त भी कर दिया है । ग्रंथ का गला बहुत प्रौढ़ है । राजस्थानी के ठेठ शब्दा मुहावरा आदि के प्रयोग से शती निखर उठी है ।

सकलित अश नीति प्रकाम से लिया गया है । यह अग अठारहवीं शताब्दी के उत्तराध के गद्य का नमूना है । इसमें याय की महत्ता याय करने की विधि याय का प्रभाव तथा अयाय के दुष्परिणामों का वर्णन किया गया है । बीच-बीच में रोचक और प्रणदायी दृष्टांतों के प्रमाणित किया गया है कि याय का महत्त्व ईश्वरीय सेवा से किंचित भी कम नहीं है । याय करना सबसे बड़ा धर्म और सबसे बड़ी तपस्या है । नागेरवा मलिकानाह, बहराम गारी मामू जसे यायपरायण वादशाहों के उदाहरण इस प्रसंग में दृष्टय हैं । ]

-१-

अदालती याय-नू अत्त गहणा कहज मुल्क रा न नूर री आ मवारणत्तर जात छ प्रभू री माटा बदान आनी आग्या छै—अदन करा अहमाण करा

( १ )

अदालती याय को अदल (याय) नामक आभूषण कहिय (=कहा जाता है) । यह मुल्क की और नूर की मवारन वाली (=गीभा बढान वाली)



रत्न आ छ— याय दोहरा-दूबला-नू गबला बहै निराय अन्गान ओ  
 त दोहरा-दूबला निरामा ऊपर दया कर उण रो मनगा पूरण कर बडा  
 छ—अरे गायन 'याय रो बाग्गाह-नू तान में माठ बरग रो बग्गा ज्यु  
 छ बढगी रो नपा करणवाडा मित्राय रिणी दूजा-नू न पनाच न फायतो  
 रा ताम-ताम माग द्वाग नू पनाच धरम करण रा भलाई अन्त-नू  
 । कायम दीग 'याय रा धरम लगा गू घणा छ मन र विचार-नू  
 छ

-२-

अक बाग्गाह-नू कछ्छा हुई अ मक्का-गरीफ रो जात्रा कर तर बजार  
 गात्रा अरज कर-गगार-गगार ! मक्का गरीफ रो जात्रा में धन चाहाज  
 माहा र बरो घणा हाय तो-नू गाय-गामान-नू पधारा थाड गामान-नू  
 रण में भय छ दूजा दम में नीत्र जाय छ जू आप रा गाया रन्धन  
 ता नू जळगा हाय तर फिगाह हाय गगार में सरावा हाय नू बाग्गाह

ति है । बडे लोगो का ईश्वर की यहा आभा है कि 'याय बरो अहमान  
 पकार) बरो ।

'याय य' है कि 'याय दुनिया-दुबला का मक्का व पाय म (=बतवाना  
 ) निचावे । अहमान यह है कि दुनिया दुबला निरागा पर त्या करवे  
 त्वा इच्छा पूरी कर । बडा न (दान) बही है । 'याय की अक घडा बाग्गाह  
 नि अ तान म (=परिमाण म) साठ बप की (ईश्वर की) मत्रा व समान  
 रो (=मूयवान) है । मत्रा का लाभ मवा करन बाल व अनिरिक्त और  
 'मी का नही पन्वता (=प्राप्त हाना) । जोर 'याय का लाभ लाभ  
 =विनिष्ट लाग) जोर आम (=मवसाधारण) तथा बडे जोर छात्रे सबको  
 दूकता है । धम कम की अष्टता 'याय (क हान) स अच्छी स्थायी दिनाया  
 ती है । 'याय का धम (=पुष्प)हिमाय से अधिअ है (उसका निसाय नही किया  
 ता मक्ता) ; मन व विचार स बाहर है (=अचितनाय अकल्पनीय है) ।

(२)

अक बाग्गाह को कछ्छा हुई कि मक्का गरीफ का यात्रा करू । तब  
 लीरा जोर सरदाराने निवेदन किया । ' दीन प्रतिपालक ! मक्का गरीफ की  
 रात्रा म आराम (गति) चाहिअे । बाग्गाहा व गनु बडत होते हैं । इम  
 कारण साथ और मामान स पधारिअे (=पर्याप्त साधिया और सामान का  
 साथ लेकर जाइय) । थाड सामान व साथ जान मे भय है । दूमरे (दूमरी ओर)

पुरमायो—जे आ न वण तो किण भात सवाव मक्का री हज रो पाऊ ?  
जणा उजीर अरज कीवी—अठ अब दरवेस छ, उण माठ हज किया छ मक्का में  
मुहता रहिया छै हमै गोम वठी छै मही मवाव हज रो उण सू मोल लय लो  
जिण मू जात्रा रो फळ अठ ही पात्रो

वादसाह उण दरवेस कहै गया कितरी जेक वळा पाछै कही ज म्हा नू  
चाह हज मक्का री पदा हुयो छ पण वजीर-उमराव सनाह ढील री दवै छ  
म्है सुणी छै—ये हज घणी कीवी छ जे थ जेक हज रो फळ मा-नू वचा तो  
था नू मपति मिळ म्हा-नू धरम जुड दरवम कही—हू तो तमाम हज वेचू छू  
वाग्साह पूछी—हर-अेक हज कितर में वचो छी ? दरवेस कही—उण जात्रा  
र अेक पात्रडा री कीमत में सगळी प्रथवी लेऊ छू वादसाह कही—दुनिया न  
दुनिया री मता म्हार क है थोली घणी प्रथवी छ सा अेक पावडा रा माल  
नही वण तो पछ हज वयूकर सळ न सारी हजा री वयूकर मन में गुजार ?  
दरवेस कही—हे वादसाह ! सारी हजा ग मोन तो नू आसान छ वादसाह

ए म प्रजा का जीवन जाखिम मे है (=होगा) । जब आपकी छाया (आध्य)  
प्रजा पर से दूर हो जायगी तब उपद्रव हागे लोक म खराबी हागी । तब वाग्साह  
न कहा कि यह (वात) न बन ता मक्का क हज का पुण्य किम प्रकार प्राप्त  
करू । जब (=तर) वजीर न निबदन किया । यहा अेक दरवण (माधु) है ।  
उमन साठ हज किय ह । मक्का म बहुत ममय रहा है । अब घर के कोन मे  
(=अेकान्त म) बठा है । हज का उचित पुण्य उमसे मोन ले लें जिमस यात्रा  
का फन यही (बठे) प्राप्त करें ।

वाग्साह उस माधु के पाम गव । कितन अेक (=बुद्ध) समय के बाद  
कहा कि हमका मक्का के हज की इच्छा उत्पन्न हुई है । पर वजीर जीर  
उमराव बीन की मलाह दत हैं । मैंन (यह बात) सुना है (कि) आपन हज बहुत  
किय है । यदि आप अेक हज का फन मुझ वचें ता आपको सपति मित्र और  
मुझे धम जुट (=पुण्य प्राप्त हा) । माधु न कहा । मैं ता मभी हजा को  
वेच रहा हू । वादगाह ने पूछा । प्रत्येक हज कितन म वचत हैं ? माधु न कहा ।  
उस यात्रा के अेक पांव (=पर) के मूय म सारी पृथ्वी गता हू । वाग्साह न  
कहा । मरं पाम घोडा बहुत पृथ्वी है । मा अक पर का मूल्य भीन ही बनता ।  
तो पाछ हज क्या कर (मान) लू । और सब हजो का बात मन म कस नाऊ  
(=माचू) । माधु न कहा । हे वादगाह ! सब हजा का मूल्य (दिता) तेर निअे  
सहज है । वादगाह ने कहा कि किम प्रकार स सहज होगा यह बताइय । तब

जे किण भात-स आसान हायस मो वताय तर दरवम कही—जद गरीव  
 'जिया मैं याय कर जिका वळा उण काम-नू नगाव उण रो धरम मो नू  
 ता हू माठ हजा रो पुण्य तो नू देख तिण मैं मो-नू नफो जत घणा छ  
 तो वादमाह नू मानम हुवा जे नीनी रा जप तप मित्राय डूजी कोई तपस्या  
 छ प्रभू रा वदा रो प्रतिपाळणा करण मू वसी कोई धरम नहा है  
 यत अण रो ज नही होन तो निरळा नू भार खूखार कर जिन्नाई मसार  
 आपस मै भिळी छ मिनत्तार हान रो सवार 'याय बिना नहा दरवस  
 रा मसा पूरण किया न याव किया जिकी मन मैं हाय मा ही मोगर छ  
 लेलत अणालत रो मैं जा ही नुक्ती दाव छ जदन प्यारा सारा मिनत्ता  
 छ

-३-

इण भात रो बात नमरवा अदली रो न हजाज जालम रो छ नमरवा  
 अग्नीहात्रा थो न हजाज मुमळमान था जद नमरवा अदला रो बात चाल  
 सारा स्यावाम धय धय कर उणर याय-न अर हजाज रो वाग  
 न तर उण नू अयाय र कारण सारा धक् धक् करन साप दत्र तिण-नू

तु ने कहा । जब (तू) गरीब व भग<sup>३</sup> म (मुकद्दमे म) 'याय करता है तब त्व  
 म म जितना समय लगाता है उमका धम (=पुण्य) मुझे प्रदान कर । तब मैं  
 ठ हजो का पुण्य तुझे दूंगा । म (मौ<sup>३</sup>) म मुभ नाभ बहुत अधिक है ।

तब वादमाह का बात हुआ कि नाति क (=नोति रूपा) जप-तप क  
 तरिकत दूसरी काइ तपस्या नहा है । दरव<sup>३</sup> क वदा की प्रतिपातना करन म  
 कर काइ धम नहा है । 'याय की हिमायत (=पृष्ठपापण) यति नही हो ता  
 वना का खूखार लोग मार डान । मसा<sup>३</sup> का जीवन परस्पर मित्रा हुआ<sup>३</sup>  
 =अेक दूसर पर निर्भर है) । मनु प्रा की दगा का सुधार 'याय क बिना  
 । (हा मक्ता) । भूले माधुजा का च्छा पूरी करने म और याय करन म  
 । मन म हा वही अक्षर<sup>३</sup> । याय की प्रतिष्ठा थपटना यही मुक्त का  
 =मुक्त सूत्रम भीतरी) गव है । याय मर मनुष्यो का प्यारा<sup>३</sup> ।

(३)

इस प्रकार की कथा यायी नौगरवा और जानिम हजाज की है । नौगरवा  
 दू अग्निहात्रा (=अग्निज्वक पारमी) था और हजाज मुमनमान । जब  
 यायी नौगरवा का बात चलता है तब सब लाग उमक 'याय को गावाग ।  
 'य धय' । (बहकर प्रशमा) करत है । और हजाज की बात चलती है तब

किणी न दुख नही दत्रणा न दुखिया रो याय करणा जिण मू अठ दौलत, जम अर राजस यिर रहै आग वडी गन रा कारण छै

अहुन अेक दिन आप र बेटा नू कही—<sup>२</sup> पुत्र ! आपणा घराणा में तौलत व राज कटा ता<sup>२</sup> रहस ? जो याय नहा करम उण रो खराबी हास बडा कही छ—बादशाह-नू अल साया प्रभू तपा रो छ तिण क<sup>२</sup>है आया अ यायी रो लगायी जळण मिट ठडी हाय हकीमा कही छै—अदल बराबर रो राखणी छ ममार रै माही काई सबळो निवळा ऊपर जोर न कर, हर-अेक तफा नू आप रै पाया म राख बादशाह र चार तफा छ—प्रथम तरवार रो साथ उमराज मिपाही अ ता जगनी समान छै बीजो कलम रा साथ बजीर नजीमदा जे परन ज्या जाणजे तीजो मौतागर न किमरी अै पाणी सम जाणजे चौधी खतेड आ ठोड खाक रो छै जिण भात प्रकत च्याग न आदमी रा सरीर में रगवाळी उपज तिण भात जाइ दण च्यारा में अेक तफ प्रकत देस राज रो

उसको, अयाय के कारण मत्र प्राग धिक्कार विक्कार । करके गाप दत है । दमसे (=इमलिअ) किमी का दुख नही दना और दुखी लाग्ना का याय करना । जिससे यहा (=इम लोक म) यग जोर राज्य स्थायी रहे । आगे (=परलोक म) यही परम गति (=प्रेष्ठ गति) का कारण है ।

अहुन न अेक दिन अपन बेट का कहा । ह पुत्र ! अपने घरान म सपत्ति और राज्य कहा तक (=कब तक) रह्य । जो याय नही करेग उनकी खराबी होगी । बडा न कहा है । बादशाह के लिये याय ईश्वर-कृपा की छाया है उसके पाम आन म जयाय की नगायी हुइ जनन (=मताप) मित्रकर ठनी हो जाती है । हकीमा ने (=बुद्धिमानो ने विद्वाना ने) कहा है । याय सबल निग्रन सब का बराबर रखना है ममार के अत्र कोई सबल निवतो पर जार (=जबदस्ती जुल्म) न करे । हरेक तफा का अपन स्थान म रते । बादशाह के चार तफाअे हैं । प्रथम तलवार का साथ अर्थात् सरदार जोर सनिक (=क्षत्रिय वग) । य तो अग्नि (तत्त्व) के ममान है । दूसरा बन्म का साथ अर्थात् मंत्री और लखक (=ब्राह्मण वग) । उनको पवन (तत्त्व) के ममान ममभिय । तीसरा सौतागर जोर शिल्पा (=वश्य वग) । इनको पानी (तत्त्व) के ममान जानिय । चौथा खेतोहर (किमान) । यह धून (पृथ्वी तत्त्व) क स्थान पर है ।

प्रकृति चारो को जिस प्रकार मनुष्य के शरीर मे रगवाता (=सुरक्षा) उत्पन्न हो उस प्रकार जाइती है (=उनका मयाग करती है) । इन चारो

वी ऊपर जात्र ससार रा काम विगाट तिण वास्त सारा-नू आप री हू  
वया राजस रा जापता रहे

-४-

तमाम यय री रीत में विसम फरिजादा रा वचन सुणण रा सरियत छ—  
तासा देय सुण जे कोई घणा वक जोळभा देय तो बेराजी नही हाय रीस  
ी कर जठ बादसाह वद री ठोड राण छ फरियादी रागा री जायगा छ  
ी चाहै तमाम हकावत राग री कहू ता बै तमाम वात रोगी री सुण न  
ग ऊपर रबरदार हाय विचार कर तद उण री वात-नू नाडी सू राग  
प ताहरा जासल कर रोग गमाव

जेक दिन अेक सखन बडा मिनख र क है आप री विद कही उण नही  
गी जगा पर कही फेर नही सुणी ता तोजा वार कही सो घणी दबाय कर  
हा तर उण कहा—कितरा क दुख माध-नू देयम ? जणा फरियादी कहा—  
थो तू छ दरद न कठ ल जाऊ ? जद उण री वात सुहाया सो उण रो काम  
। जिवा कर दिया प्रभू पहाच दीही छै ता पटिया रा हाथ पकट न उठाव

। अक तफा प्रकृति देग और राय की खराबी पर आती है तो ससार का  
ताम विगाडता है। इसलिअे सबका अपनी मर्यादा म रखन स राय की  
यवस्था रहती है।

(४)

समस्त यय का विधि म विरोप (महत्त्व की बात) प्रार्थी के वचन सुनने  
की विधि (?) है। दिलासा (=आश्वामन) देकर सुन। यदि कोई बहुत बक  
(=बकता जाय) उपात्म (=उलाहन) दे ता ऋद्ध न हो रोप न कर।  
यहा बादसाह वद्य की जगह रखता है प्रार्थी रागो की जगह है। रागा  
(मदि) चाटे (वि) सारा विवरण रोग का कहू ता वद्य सारी बात रागो की  
सुनता है और उस पर सावधान हाकर विचार करता है। तब उसकी बात  
स नाडी स राग का निश्चय करता है (धरप < स्थाप = धण्प)। तब दवा  
करक राग का दूर करता है।

अेक दिन अक व्यक्ति न बेट आदमी क पास (=म) अपना विधि  
(=वोना) कहा। उसन नहा मुनी तब फिर कही। फिर नही मुनी ता तामरी  
वार कही। वह बहूत दबाकर (आग्रह क साथ) कही। तब उसन कहा (मर)  
मिर का कितन दुख देगा ? तब प्रार्थी न कहा—मिर तू है अब दू को (और)  
कहा ल जाऊ (=ता मिर म हा रहगा)। तब उसका बात अच्छा लगी।

अब बादशाह अके महापुरख न कही जे हर वमत री जागत छ पण वादशाह री जागत कासू छ ? तो उण जबाब दिया—बादशाह री जागत जा छ जो फरियादी आय पुकार कर तो उण रा वचन मुण उण-नू निलामा सू वचन कहै करडो जबाब नही दय बात करण में दाहरा दूबळा स जाळ नही रागै छोटा नू बात रा जबाब त्णो बडा रा सुभात्र छ दगा हजरत मुनमान वादशाही न पगवरी छता वचन निरबळ कीडी रो मुणियो

जेक बादशाह चीण देस रो था सा 'याय सू नाम पायो था तिण सू प्रभू न प्रजा दानू ही राजी था बुडापा में माथो तूख काना-मू बहरा हा गया था तर वजीर उमरावा न भळा कर न रोया मा सगळा दिलगीर हुवा पळ बादशाह री तसल्ली नू उपाय करण लागिया बादशाह पुनमायी—थे जा मत जाणो जे हू काना री कमी रै ऊपर राऊ छ निम्ब जणू छू जत सगळा मरीर नास हायम तिण-नू जाण ना मरत क्यूकर निलगीर होय ? भ्हारै रावण रो कारण आ छै क' कोई दुखी फरियादी फरियाद कर ता हू मुण नही सक

मो उसका जा काम था वह कर दिया । ईश्वर ने पहच (=सामर्थ्य) दा है ता गिरे हुआ के हाथ पकडकर उनका उठा ।

अब बादशाह न अके महापुरख का कहा कि प्रत्येक वस्तु की है पर बादशाह की क्या है ? तब उसने उत्तर दिया । बादशाह की यह है कि फयान्ती (=प्रार्थी) आकर पुकार कर ता उमकी बात सुन । उमका आन्वामन के साथ बात बढे । बडा उत्तर न दे । बात करन म दुसियो और दुवना स कपट न रखे । डाटा का बात का उत्तर दना बडो का स्वभाव है । दखो । हजरत मुलेमान न बादशाही और पगवरी (क) होने हुअे भी, । निबन चाटी की बात मुनी ।

चीन देग का अब वादशाह था । उमन 'याय द्वारा नाम प्राप्त किया था । इससे ईश्वर और प्रजा दानो ही (उमम) प्रमन थ । बुडापे म मिर दुखकर कानो से बहरा हा गया । तब वजीर और उमरावा का इकटठे करके राया । मा सब नाम दुखी हुअ । पीछे बादशाह की तसल्ली (सतोप) के लिये उपाय करन लग । बादशाह न कहा । तुम लग यह मत ममभा कि मैं काना की कमी पर रोता हू क्योकि निम्बय जानता हू कि सारा मरीर नास हागा । इम बात का जा ममभता है (=जा समझार है) वह मनुष्य क्याकर दुखी हागा ? मर रोन का कारण यह है (कि) कभी कोई दुखी फर्यान्ती फर्याद करेगा ता म मुन नही सकूगा और तब वह निराग हाकर जायगा । मैं शर का

निरास जायस हू प्रभु री तरगाह चिन्ता करम्भू वजीर-उमरात्र पूछी—  
 । रो मारग फुरमात्रो तर बादशाह फुरमायी जे इण दम में त्पिरा  
 विगर परियाण काई माय ऊपर तान कपडा न पहने मा तिण सहनाण  
 मा नू सखर पलम जणा हू याय करम्भू

—१—

गा-ही बादशाह अक याय र कारण यम रा दुखा सू ठूठ बकट न

इगाह मन्कमाह मन्जाक अक त्पिन नन्ना कितार भिक्कार खल धो त्प  
 र कारण अक बाग में ठहरिया धो चाकरा में-म जेक गुलाम याम हजूरी  
 । ग्या उण अक बकरी नू चरती दख मार वात् खाधी बकरी रा मानिक  
 । नू खबर पणे मा मारग गी पठर ऊपर आय बठी बादशाह उण  
 त्रियो ताहरा डाकरा घाडा री बाग पकटी उण ही गुलाम मारण नू  
 । उटाया त्प बादशाह फुरमाया—मार मत ना जा ता परियाण करण

(दरवार) में चिन्ता करू गा (=मुझ चिन्ता करनी पड़ेगी) । वजीरो और  
 वो न पूछा । निश्चिन्ता का भाग कहिय (=बताय) । तब बादशाह न  
 कि त्पम दग म त्पिरा फरो (=घोपणा कराआ) कि फर्याणी क भिवाय  
 । काई माये पर तान कपडा न पहने । मो इम पहचान (सहनाण  
 तान) को देखकर मुझ सखर पल जायगी (पना लग जायगा) और तब  
 य करू गा ।

(५)

इहल-म बादशाह जेकमात्र याय (करने) क कारण यम के दुखा स  
 र बकट का गय है ।

शाहमाह मन्कमाह मन्जाक अक त्पिन नन्ने के कितारे भिक्कार खलता  
 (=खत रहा था) । तब धूप क कारण अक बाग म त्परा था । मन्का म  
 । दास जो याम हजूरी (मेवक) था गाव म गया । उसन अक बकरी  
 रनी हुई त्पबकर मारकर और बादकर खा डाना (खाधी < अप खड) ।  
 । की मानिक बुटिया का पना गया । वह मान क पुत्र पर जाकर बड  
 । बादशाह उधर म आया । तब बुटिया ने घात् की उगाम पक्ता ला ।  
 त्पम न मारन क त्पिच चावुक उगाया । त्प बादशाह न क्पना । मारना  
 (मत ना = मत) यह ता फर्याण करीवानी त्पियायी रनी है (दीस <  
 ।) । त्प इमका वृत्तान्त पूछा भिक्कार ऊपर पुकार करती है । तब

बाली दीम छ, दखा इण नू हाल पूछा, किण ऊपर पुकार छ ? तरै वात्माह डाकरी नू पूछी—फरियाद कर । डाकरी कही—हे बादशाह ! जा याव नण नती ऊपर नहीं किया तो मोटा प्रभू री आण छ ता नू बैतरणी र तीर ऊपर याव किया विपर नहीं छाडसू भली विचार दोनू ठौड मैम कठ यात्र करसै ? वात्माह इण रा वचन री धाक म तुरत पयादा होय कही—हे माता ! उठ जवाब देवण री पहाच मा म हरगिज नहीं छै तू आपणा दुख कह तो-सू किण भूडी कीवी छ ? मा उण-सू याव दिराऊ डाकरी कही—हे वात्माह ! ओही गुलाम मो नू जवरा ताजणा मारिया म्हारी बकरी मार खाधो तिण बकरी सू में अर नि बापा म्हारा दोय दाहितग गुजगण कर था तरै मलकनाह उण गुलाम रा हाथ कटायो अर जेक बकरी र बदल सत्तर बकी दिरायी

कितरा-जेक दिन पछ वात्माह काळ कियो डाकरी जीव थी मा डाकरी आधारात में बादशाह री गोर ऊपर जाय घणी दीनता सू प्रभू नू वीणती कही—हे प्रभू ! ओ बने धारा घोर में छ अेक सम म्पारें में विपत्त पडी तर इण म्हारा हाथ भाल मत्त कात्री, हमार उण में बला पडी छ तू इण पर नपा कर उण बत धक मा ऊपर नपा करी थी तू बडो छै उण रा गुनाह वकम

वात्माह ने डाकरी को कहा—फरियाद कर । डाकरी न कहा—यदि इस नती पर याव नहा किया ता बडे प्रभु (=ईश्वर) की आन है । तुम्हे बैतरणी (=परनाक की नती) क तीर पर याव किय बिना नहीं छोडूगी । भनीभाति विचार ले । दोनो जगन्ने मे से कहा याव करेगा । बादशाह न इसके वचन की धाक मे तुर त पदल हाकर कहा । हे माता ! वहा जवाब देन की सामथ्य मुझ म बिलकुल नहीं है । तू अपणा दुख कह । तुझ से (=तेर माथ) किमत बुरी (=बुराई) की है । ताकि उसम याव जिलाऊ । बुडिया ने कहा—म्मी दाम न मुझ आर के चाबुक मार । मेरी बकरी को माग्कर खा गया । उन बकरी मे में और मेरे ओ पितहीन दौहित्र निर्वाट करते थे । तब मलकनाह न उस दाम का हाथ कटवा दिया और अेक बकरी क बदल मत्तर बकरी (=बकरिया) दिनाया ।

कितन अेक तिनो बाद बादशाह न काल किया (=मर गया) । डाकरी जीती थी । उस डाकरी न आधी रात का बादशाह की कब्र पर जाकर बहुत आनता के साथ ईश्वर स प्राधना की । हे इश्वर ! यह तेरा सेवक कब्र म है । जेक समय मुझ पर विपत्ति पडी थी तब इनन मेरा हाथ पकडकर (मेरी) मद की । मम समय उम पर विपत्ति की बना पत्नी है । तू मम पर कृपा कर ।



री दमूध आन तो घणा हामन वध अर रण्यन रो पण की विगड ननी  
 राग रो हासल मगळा मू नयमा  
 वागवान नू कहा—अक पियाता अनार रो फेर भर लाव माळी घणा  
 में पियालो नेय जावियो वहराम पूछी—पहनी वार में ता वेगो आया  
 अर र मू जादया अर पियाला भी उतरो नही भरियो माळी जाण नहा  
 औ ही बहराम छ मो कहण लागिया—हे जवान ! आ चूक म्हारी नही  
 नार बादमाह रो छ तिण आप रो नीयत फेरी छ जयाय वरण रो विचारा  
 रो कारण मू पहना रो वरकन दूर हुयी में पहना वार अकहा दाडम मू  
 ना भरिया था अबकी बार दम दाडमा-म जो पियातो भरिया नहा  
 अरामनाह-नू वचन भिनिया विचार किया था मो मन मू पगे निमारिया  
 बूढे माळी नू कहा—अक पियाला और लय आव मा माळी वाग में जाय  
 पियाला भर हमता ही जावियो अर पियाला बहराम र हाथ माही लियो  
 रही—हे मवार ! इचरअ रा समयो छ फेर वाग्माह रो नजर नकी पर  
 छ मा मवा में वरकत जाहिर हुयी अक हा दाडम मू अबक पियाता फर

बहुत है । यदि वाग का दमना हिम्मा (कर म) अब तो लगान बहुत बड़े  
 प्रजा का भी कुछ विगडे नहीं । अब वाग का लगान सबसे लग ।

(फिर) वागवान को कहा—अनार (के रस) का अक प्याला फिर भर ना ।  
 तो बहुत दर में प्याना उकर आया । बहराम न पूछा—पहली वार में तो  
 तो आ गया था अब की दर से आया और प्याना भा उतना नहा भरा ।  
 माला जानता नहा था कि यही बहराम है । मो कहने लगा । हे जवान !  
 दाप भरा नहीं है मरे वाग्माह का है । उसने अपना नापन बताया है ।  
 राय करने का भावी है । इस कारण से पहने की वरकत दूर हुई । मैं  
 ना वाग अक ही अनार में प्याला भरा था । अब की बार दम अनारा स  
 1) यह प्याला भरा नहीं ।

बहरामगाह का वचन सुने । जो विचार किया था वह मन से दूर निकाला  
 =निकाल दूर किया) । और बूढ़े माना को कहा । अक प्याना और न आ ।  
 माती वाग में जाकर तुरन्त प्याला भर कर हमता हुआ ही जाया । और  
 ना बहराम का हाथ में लिया ।

तब कहा । हे मवार ! जाश्चय का समय है । वाग्माह की नजर फिर  
 गई पर हुई है । मा मवा में वरकत प्रकट हुई । अक ही अनार में अबकी  
 र प्याना फिर भर गया है । बहरामगाह ने मौजदा मूरत (=वतमान

भरियो छ बहरामसाह मूरत हाल री माजी नू कही—कजिया आप री नीयत  
मूधी करण रा न फेर भनी विचारण रो कहिया

सो आ वचना-मू सीख माना नीयत रव्यत रै ऊपर नपा री करा हकीमा  
कहा छ—अदल भला खरा गुण छ न अयाय खरा बुरी खुबारी छ अदल  
रा गुण खिरला दम री न तरक्की राजम री छ फळ अयाय रा नास दम रा  
न खगबी राजम री छ

—७—

हुसगमाह आप रा बटा-नू कही थी मा मजकूर छ—ह बटा ! अयाय रो  
नाम छाड न याय अर जटमान घणा कये फरयाणिया री दुरामीस स घणा  
डग्णा बडा कही छ—अक दुरामीस बुडिया राड री करे मा हजार तीर-तर  
वार नही करे अत अयाय रा विचार कर ता अयाय मू दौनत जाय माल  
रा इच्छा मै सू माल ता घणा रै पगा हू हाथा म धमिया छ तिण र वास्तै  
रव्यत-मू भगडा मता कर

आ निम्मदह छ—जिण वादमाह रव्यत री माया लीपी तिण भान री  
नास खाना नै मदी नापी

म्यिति की वान) माली स कही । अपनी नीयत बुरी करन का और फिर  
भना विचारने का भगडा बताया ।

स्मिन्न इन वचना स सीख माना । प्रजा पर कृपा की नीयत करा ।  
विद्वाना न कहा है । याय बटुन अच्छा गुण है । और अयाय वास्तव म बुरी  
खबारी (खबानी) है । याय का गुण (नाभ) दग की म्यिरता आर राज्य की  
तरक्की है । अयाय का फल रग का नास और राज्य की खगबा है ।

(७)

हागमाह न अपन बर का कडा था । वह निम्नावन (=रम प्रकार) है ।  
ह बटे । अयाय का नाम छाड दना और उपकार खब करना । फयाणिया का  
दुरामीस (अभिगाप) स बटुन डरना । बटा न कहा है । बुडिया राड की अर  
दुरामीस जा (अपकार) करती है वह हजार तीर आर तनवारें नही कर  
सकत । अयाय क परिणाम का विचार करें ता अयाय म सपत्ति चना जानी  
है । धन का इच्छा म मा धन ता बटना के पगा क नीच (आर) हाथा म आया  
है । उमके निअ प्रजा स भगडा मन करना । यह (वान) निम्मन्मि है  
(कि) जिम वादमाह न प्रजा का सपत्ति सी उमन भीन का नीच खाना डामा  
और उमगे मेणी (ऊपर का बमरा अटारी) सीपी ।

भू लागा प्रयी रो ऋद्ध भागो दादुरा टहडहै माण आत्रग ग  
मघ कः

मो ममपी वण रह्या छ करवा मडनै रही छ विजली मिनामिन  
रन रहा छ बादला भू लाया छ महरा महरा वात्र चमकनै रही छ जाण  
टटा नायका घर-मू नीमर अग त्वाय दूमर घर प्रवेम कर छ

मार कुहक छ, डडरा टहक छ भावरा रा नाळा वातन रह्या छ  
णो नाडा भरन रह्या छ चाटियाळ डहकन रही छ वनमपनी-मू बना  
पन रही छ

परभात रो पार छ गाज-आत्राज ह्यन रही छ, जाण घण घण गगन मू  
तमा-मू मित्रण आयी छ

भू लागी । पृथ्वा का ऋद्ध भाग गया = पृथ्वा इस्थानी अब घन धाय  
प मपन हा गया । दुर मन्व । डहडहन है हरभर होत है पुनर्जीवित हान  
के । धावण माम (व) आन का । मिद्धि कहन है सूचना त्व है ।

जमा ममप्र बन रहा है । वपा मड रहा है (वर्षा का ममा बन रहा है) ।  
विजला भवमनाट कर रहा है । वातना न । भरी लगाया है = भडा तगा ली  
के । निवरा निवरा (पर) विजनी चमक रहो है । माना कुलटा (जमता)  
नायिका घर म निकनकर । अग त्वावर = अगा का त्वाता हूँ । दूमर  
घर म (पर-मुग्ध व घर म) । प्रवण । वगता है = कर रो है ।

मार कुवन है । मन्क वातन है । पलाश व नात वात रण के (गण कर  
रण है) । पाना तनयाजा म भर रहू है । यागिनिया चीन (?) ।  
गण कर रहा है । वनमपनि म व रा जाति म । वने (वर्तित वन्ति) ।  
तिपन रण है ।

प्रभात का पहर (=ममय) है । गात्र (=मघ-नात्रना) का गण ना रण  
के । माना । घण । घन (=बहुत) ह्य स । जमान म पृथ्वा म । मित्रन  
आया ह ।

## डोकरी-रो बात ( अठारहवीं गताब्दी )

[ लोक कथा ]

[ सकलिन लोककथा अठारहवीं गताब्दी के गद्य का नमूना उपस्थित करती है । इस कथा के कई रूपान्तर मिलते हैं पर सब का मूल कद्राय भाव एक ही है । रास्ता भूत हुए राजा भोज और माघ पंडित बातचीत के क्रम में बुढ़िया को बटाऊ पाहुन, राजा, भारक्षम माधु उजल परदेगी गरीब धवल, भर हुए चतुर, निस्संग हारे हुए आदि विविध रूपा में जात्म-परिचय दत है और बुढ़िया प्रत्येक वार अपने अनुभव एवं ज्ञान-बल से उनका खडन कर दागों को निस्तार कर देती है ।

बुढ़िया के दिये गये उत्तर तत्कालीन लोक विश्वासों मानवीय मूल्या और सामाजिक भावताओं के परिचायक हैं । ]

जेक दिन समाजोग र बिस् राजा भोज तथा माघ पिंडित सब मिक्कार गया था मू आवता मारग भूया सू आपन म माघ पिंडित राजा भोज दोनू विचार करण लागी—जापा मारग भूया किण न पूछा ? इतर माघ पिंडित अरज कीवी—महाराजाधिराजाजी ! अक खेत गवा रा डाकरी रक्वलाळ छू तिकन पूछा तार राजा भोज फुरमायो—हाला पूछा तार दोनू अमवार घाडा दउडराय न गया जाय न कह्यो—राम राम डाकरी !

जेक दिन के सयाग में ( समाजाग = सयोग में समय योग विल = विषय में ) अत्रवार । राजा भोज और माघ पंडित । मर और निकार (वा) । गद्य व । मो । जाते हुए लौटते हुए । रास्ता भूत गया । सा । आपस में राजा भोज और माघ पंडित दोनों विचार करने लग । जपन (= हम) माग भूव गया । किसको (= किससे) पूछें ! इनमें (= तब) माघ पंडित ने अर्जें की । महाराजाधिराजाजी ! गहुओं का एक खेत बुढ़िया रक्वा रही है (= निगराना कर रही है रक्वलाळना = रक्ववानी करना निगरानी रखना) । उसका पूछ । तब राजा भोज ने कहा—चला पूछें । तब दाता मवार घाट दौनकर (वहा) गया (जम्दार = स० जद्ववार) । जाकर कहा । राम राम बुढ़िया !

बहना—भात्रा वीरा ! राम राम ! तार तानू वानिया—वाह ! ओ मारग जामी ?

तार डाकरी बहो—ओ मारग ता इठ-ही-अ रगी ऊपर फिर छ तिके री वारा ! थ कुण छा ?

वाई ! म्ह ता बटाऊ छा

तार बहो—बटाऊ ता दाय तिके किमा ? अक ता सूरज दूसरा चद्रमा किमा बटाऊ छा ? वीराजी ! थ माच वाना, थ कुण छा ?

वाई ! म्ह तो छा प्राणुणा

प्राणुणा ता दाय तिके किमा ? अक ता थ दूसरा जीवन थ किमा णा छो ? वारा ! थ माच वानो थ कुण छो ?

वाई ! म्ह ता राजा छा

राजा ता दाय तिके किमा ? अक ता इन्द्र दूसरा यम थे किमा राजा ! ? वीरा ! थ माच वाना थे कुण छा ?

वाई ! म्ह तो छा भरखमा

भरखमा ता दाय तिके किमा ? अक तो धरता दूसरी अम्त्री ? वीरा ! किमा भरखमा छो ? वीरा ! थ माच वानो थे कुण छा ?

(बुनिया न कहा) । आजो भाई ! राम राम । तब दाना बाल बहन । ह माग कहा जायगा ? तब बुनिया ने कहा । यह माग तो यही रहगा जो पर चलत है व जायग । भाई ! तुम कौन हो ? बहन ! हम ता बटाऊ =पयिक) है । तब (बुनिया न कहा) । बटाऊ तो दो हैं । व कौन-न ? एक तो सूर्य और दूसरा चद्रमा (क्योंकि य बराबर भाग पर चलत रहते हैं) । तुम कौन-स बटाऊ हो ? भाईजी ? तुम सच वनाओ कि तुम कौन हो ? बहन ! हम तो है पाहुन (स प्राणुणव) । पाहुन तो दो हैं । वे कौन स ? एक ता धन और दूसरा जीवन (क्या कि य पाहुने की भाति चाहे हा निन रहते हैं) । तुम कौन-स पाहुने हो ? भाई ! तुम सच वाला तुम कौन हो ? बहन ! हम तो राजा हैं । राजा तो दो हैं । व कौन स ? एक ता इन्द्र और दूसरा यम (इन्द्र वर्षा के द्वारा समस्त प्रजा का पानन करता है यम का अधिकार सब पर है) । तुम कौन से राजा हो ? भाई ! तुम सच वाना तुम कौन हो ? बहन ! हम तो हैं भारतम (—बोझ महुने या डान वाने) । भारतम तो दो हैं । व कौन-स ? एक ता पृथ्वी और दूसरी स्त्री । भाई ! तुम कौन स भारतम हो ? भाई ! तुम सच वाना तुम कौन हो ?

वाई ! म्हे ता साघ छा

साघ तो दोय तिके किसान ? अक तो सीछ बीजो सतोग्ग ये किसान साघ छा ? वीरा ! ये साच बोली, ये कुण छो ?

वाई ! म्हे ता छा ऊजळा

ऊजळा तो दाय तिके किसान ? अक तो पाणी बीजो सावू थ किसान ऊजळा छा ? वीरा ! ये माच वानो, ये कुण छो ?

वाई ! म्हे तो परदमी छा

परदमी ता दोय तिके किसान ? अक तो जीव बीजो पान ये किसान परदमी छो ? वीरा ! साच वाना थ कुण छो ?

वाई ! म्हे तो छा गरीब

गरीब तो दाय तिके किसान ? अक तो छाळी रो जाया वकरा दूसरा डाकरा । ये किसान गरीब छा ? वीरा ! साच कहो थ कुण छा ?

वाई ! म्हे ता धवळा छा

धवळा ता दोय तिके किसान ? अक ता बळघ दूसरी कपाम ये किसान धवळा छा ? वीरा ! साच वालो थ कुण छा ?

वाई ! म्हे तो भरिया छा

भरिया ता दाय तिके किसान ? अक ता वादळ दूसरी अस्त्री थ किसान भरिया छा ? वीरा ! ये माच कहो थ कुण छो ?

बहन ! हम तो माधु है । माधु तो दा है । व कौन स ? अक ता शील और दूसरा मताप । तुम कौन म माधु हा ? भाई ! तुम मच वानो तुम कान हो ? बहन ! हम तो हैं उजन । उजले तो दा है । वे कौन म ? अक तो पानी और दूसरा सापुन । तुम कौन स उजन हा ? भाई ! तुम मच वाला, तुम कौन हो ? बहन ! हम तो परदेशी हैं । परदेशी तो दो ह । व कौन म ? अक तो जीव दूसरा पत्ता (पान < पण) । तुम कौन से परदेशी हा ? भाई ! मच वाना, तुम कौन हो ? हम ता ह गरीब । गरीब तो दो हैं । व कौन म ? अक ता वकरी का जाया वकरा दूसरी कया । तुम कौन-म गराव हा ? भाई ! मच कहो तुम कौन हो ? बहन ! हम तो धवल (सनेट) है । धवल ता दा है । वे कौन म ? अक तो बल दूसरी कपाम । तुम कौन-स धवल हो ? भाई ! मच बोला तुम कौन हो ? बहन ! हम ता भर हुअे हैं । भर हुअ ता दो हैं । व कौन-ने ? अक तो वादल दूसरी स्त्री । तुम कौन-से भरे हुअे हो ? ह भाई ! तुम मच कहो तुम कौन हो ?

वाई ! म्ह ता चतर ह्य

चतर ता दोय तिरे किमा ? अेक तो अन, दूसरा पाणा थे किसा चतर ? वीरा ! साच बाना, थे कुण छो ?

वाई ! म्ह ता छ निमग

निसग ता दोय निक् किमा ? अेक तो इद्र, दूसरी अकूडी थ किसा सग छा ? वीरा ! साच वाला थ कुण छा ?

वाई ! म्ह ता हागिया छा

हारिया ता दोय तिक् किमा ? अक ता माथ देणो इसरो वेटी रो बाप किसा हागिया छा ? वाराजा ! थे साच बाना थे कुण छा ?

वाई ! म्ह तो न जाणा छा जाणै सू तू ही जाण छ

तार डोकरी कह्यो—ओ राजा भोज छ तू माघ पिडत छ ओ हा पारग जावा

बहन ! हम ता चतुर है । चतुर तो दो हैं । वे कौन से ? अक ता अन दूसरा पानी (दाना के बिना का चतुरा काम नहा करती) । तुम कौन स चतुर हा ? भाई ! सच वाला तुम कौन हो ? बहन ! हम तो निस्मग (=आसक्ति स रहित) हैं । निस्मग ता दो है । वे कौन से ? अेक तो इद्र दूसरा घूरा । तुम कौन स निस्मग हा ? भाई ! सच बाना तुम कौन हा ? बहन ! हम ता हारे हुआ (=पराजित) हैं । हारे हुआ तो ग है । अेक तो जिमक मिर पर दना है (=ऋण-ग्रस्त) दूसरा लटकी का पिला । तुम कौन-स हारे हा हो ? भाई जी ! तुम सच वालो तुम कौन हो ?

बहन ! हम ता नही जानत । जानता है मा तू ही जानती है ।

तब बुन्दिया न बन्ना—यट राजा भाज है तू माघ पडित है यहा माग है जाया ।

## खुदाय बावळी री घात

( अठारहवीं गताब्दी )

[ लोक कथा ]

[ मक्किन लाकवथा अठारहवा गताब्दी म त्रिपिटक की गयी थी । राजस्थानी की हास्य रम की रचनाआ म इमका ऊचा स्थान है । खुदाय बावळी का अर्थ है बावली खुदा । यहा खुदा का बावना ही नहीं कहा है पर उने स्त्री भी बना दिया है—खुदाय राजस्थानी की व माना (=विधि माना=विधाना) का प्रतिगण्य है ।

इस कथा में परिस्थिति और मयोग के सहारे खुदा के बावलेपन की व्यजना की है—जैसी खुदाय बावळी किमी का उठाय किसी को न्ये । पस-पसे के लिए माहताज रहनवाने मुल्ला अब्दुल्ला और मिपाही अलगा कथा के अन्त म सयोगजय परिस्थिति के कारण ही चारा द्वारा चुरायी हुई अपार धनराशि क स्वामी बन जाते हैं । कन्नगाह म मत्यु का बहाना बनाकर मुल्ला अब्दुल्ला का जीवित सोना अलदाद का वही मकदरे म बैठकर तमबीह (माना) फेरना, चोरा द्वारा नये पीर की मनीती करना आदि एम प्रमग हैं जिनसे कथा म ह्याम्य विनोत का पुट आ गया है । कहानी बडी मजीब है । मुमलमान पात्र होने के कारण मवादो की भाषा राजस्थानी मिथित खडीबोली है ]

—१—

दिनी सहर में मुल्ला अबदल्ला रहे अर दुमर माहलैं में सिपाई अलदाद रहे सू दिल्ली बडा तखत सहर तैं में आदमिया री किमी गिणत ? सू इया दाना-नी रै कमाला कुमज्या काई नहीं तद आप र घर सू मुल्ला कुमात्रण-न हात्रियो सिपाई आप रैं घर सू कुमात्रण-नै हालियो सा आगिलैं गाव में दान भेळा ह्य गया आपन में रात भेळा रह्या दस्त-पामी ह्य जायगा मोहला

(१)

दिल्ली गहर म मुल्ला अबदुल्ला रहता है । और दूसरे मुहल्ल म सिपाही जलदाद रहता है । सो दिल्ली बडा राजधानी का गहर है । उसम आदमियो की क्या गिनती ? सो इन दाना के ही तगी । कमाई काई नहीं । तव मुल्ला कमाने के त्रिअे अपने घर से चला । सिपाही (भी) कमाने के त्रिअे अपन घर से चला । सा अगने गाव म दोनो इकटठे हा गय । रात को परस्पर माथ रहे ।





कुमार सोदो सेवै छै जितर काई जागीरदार आइ नीसरियो जागीरी नवी हूयो थी सू मिपाही-चाकर राखण लागो सू अलदाद न महीनार कऱ ऊ ल गयो मुल्ला कुमार रै सार्थ वहीर हुनो दोन दुआ-मलामी कर बीछुडण लागो तद मिपाई कहघो—मियाजी ! अघेना मेरा है सू घरा देणा मुल्ला कही—वहात ख्व

ज तो दाना तरफा गया कुमार रै विहा म घणा-मा कुछ जायो नही जागीरदार रै जागीर कवजै मै नही दादनी चडती गयो जितर अेक गाव मै जमीदारा-सू जागरदार रै लडाई हूयो जागीरदार काम जायो दादनी महाना छ री साथ रही खराव हाय अलदाद घरा जायो मुल्ला जबदुल्ला पण फिर भटक घरा जायो करम-छाहडी साथ फिरै हाथ दोना ही र कुछ चनिया नहा वहीन कसाला

-२-

अेक दिन अलदाद र तमाकू नही बिना पश्म दिली म काई कुछ दे नहा तद मार ही जाय रहघा हाथ क्यू पड नही इतर मुत्ता रा अधला याद आया तद उठि मुल्ला र घरै गया जागै मुल्ला मिलिया दस्त-पामी करी अगना

कुम्हार सीदा लता है इतने म बोई जागीरदार जा निकला । जागीर नयी हुइ थी । सा मिपाहिया का नौकर रखने लगा था । सा अलदाद को महीनदार (भाहवारी वेतन पाने वाला नौकर) बनाकर बह ल गया । इधर मुल्ला कुम्हार के साथ बिदा हुआ । दाना दुआ-मलाम करके बिछुडन लग । तब मिपाही न कहा । मियाजा ! मेरा जदेलो जाप म तेना है सो घर पर दे देना । मुल्ला न कहा । बहुत अच्छा ।

य दोना दाना ओर गय । कुम्हार के विवाह म मुत्ता के कुछ अधिक हाथ नही आया । जागीरदार क जागीर कवजे म नही थी दना (=भ्रूण) चडता गया । जितन म अेक गाव म जमीदारा के साथ जागरदार की लडाई हुइ । जागीरदार काम जाया । तनखाह छ महीने की बाकी रही । अलदाद खराव होकर घर आया । मुल्ला अबदुल्ला भी फिर भटक कर घर आया । कम की छाया साथ मे फिरती है । दोनो के ही हाथ कुछ चना नही । बहुत तगी (है) ।

(२)

अेक दिन अलदाद क तमाकू नहा । पस क बिना दिली म काई कुछ दे नहा । तब सब जगह खोज चुवा । हाथ कुछ पडता नही । इतन म मुल्ला का अधला याद आया । तब उठकर मुल्ला क घर गया । आग (वहा) मुल्ला मिना । हाथ चूम । अगला पिछली बाने का । फिर कहा । कही भी कुछ राजी लगा

होती वाता करी बहधा—कहा-ही कुछ रोजी नही। फिर भन्व पाछे आये घडी बठ अनन्त बो-या—मियाजा । जधेको तिराओ आज तमाकू न थी और 1-ही हाथ पुर नही, तद इतनी भूम आया हू मुल्ता ही बहधा—हशान देखत ही हो पण मुन्ना परमू कर दऊगा व्य तर वहि मीग गत्री  
 जर निदान राजीना बार पाच सात फिरियो पण मुन्ना र अमा कसानो अधो मिर मू उतरणो जर मुन्ना भना गरम रो माणस बार-बार अनन्त गण आज ज मू बहोत गरमाया जर अलदाद पण भनो गरम रो आन्मी मू र द माग नही जर घर में बोट गानारी मू मागण न तो जाव पण (मावतो-मो जाव

तन् मुन्ना आप रा जान्-मू कहै—अनन्त हमेया अधेना मागण आज धनो जुड नही आ मागना गन छाड नही रहोत खराब हुय तिण-मू में बहू कर त्यू गन छून् तन् लुगाद कह्यो—तुम क्याग मू करग तन् मुल्ता कह्यो—जद आज जनैनाद मागण कू आर्त तन् तुम भरे ऊपर चादर डाल देस्यो ताजत तियो—मुल्ताजी फीत हुय तव आप द बठ रहेगा तन् तुगाई बहधा—अच्छी

ही । फिर भटकर लौट आये । अक घने बठकर अलदाद न कहा । मियाजी ! धना दिलाओ । आज तमाकू नही थी । और वही हाथ चलता नही (और ही से कुछ हाथ म नही आता) । तब इतनी दूर आया हू । मुल्ता न कहा । त तो तुम देखते ही हो । परतु वन या परमा दूगा । इस प्रकार कहकर बदा दी ।

अब निदान प्रतिदिन पाच सात बार फिरा । परतु मुल्ता के अमी तगी कि जधना सिर से उतरना कठिन हो गया । भला राम का आदमी था । जलदाद बार बार मागन आता है जिसस बहूत गरमाया । और अलदाद भी भना गरम वाला आन्मी । मो जाण देकर मागना नही । जीर घर म बहुत नागरी (गगवा) । मो मागन ता जाता है पर गरमाता मा जाता है ।

तव मुल्ता न अपनी स्त्री म कहा । अनदाद सन् अधला मागने आता है । अपने जधला जुडता (इकटठा हाता) नही । और यह मागना हुआ पीछा नही छान्ता । बहुत खराब हुये । इमलिज में बहू सा कर । जिसस पीछा छून् । तव स्त्री न कहा । तुम बहोत मो करेग । तव मुल्ता न कहा । आज अब जलदाद मागन को आव तव तुम मुक पर चहर गान दना जीर गोव मनाना (ताजियत = गमी मानगपुरीं) कि मुल्ताजी मर गय । तव अपन आप ही बँठ रहेगा । तव स्त्री ने कहा । अच्छी बात है । परतु कदाचिन या क्याग कि लफनाकर जावेंगे ।

बात है, पण कन्नाच यू कहैगा—दफनाय कर जायेंगे तद मुल्ला कहचा—ता क्या है ? तो गोर थान ले जाइयो, जपण तो कवर-क पट्टा होना है तिम बीच घर र, कोई खतरा नहीं तद मुल्ला माच ऊपर माय रहयो

जितर अलदाद आयो तद मुल्ला री लुगाई रावण न लाग गयी जलदाद कहयो—है क्या ? तद कहयो—मुल्लाजी फौत हुय लोक जाण भेळा हुवा मुल्ला न उठाया अलदाद कहयो—मियाजी हमारे बडे दास्त थे हम भी साथ हुवेंगे अलदाद पण साथ हुवो गोर-मथाना में जाय कवर खुणी पडदा कर मुल्ला न भीतर रख ऊपर रत दय सारा घरा न घिरिया तद अलदाद खडा रहयो लोका कहयो—क्यू भाई ! तुम क्या खडे ? जावो डेर कू तद जनदाद कहयो—मियाजी हमारे बडे अमनाब थे च्यार दिन जीवता बात मजकूर किया था ना अेक रात फौत हुवा पास रहाण तब ताक तो सब घरा-कू गये और जनदाद वहा गोर-मथान-क पास अेक मकबरगे थो उण में जाय बठो ढाल तरवार क है ही बैठो तसबी फेरै है—

तन मकसती मन गरीबी हाल मोरा तोकदानी आलमा ।

दस्तगीर दरमादगा कारसार बि कारमा ॥

ण नात्र री बात री तसबी फेरै है

तब मुल्ला ने कहा । तो क्या है ? तब कन्न गाह म ले जाना । अपन ता कन्न के पर्ना हाता है । उसके बीच म रखे रहे । कोई खतरा नहीं । तब मुल्ला खाट पर मो रहा ।

जितने मे अलदाद आया । तब मुल्ला की स्त्री रान लग गयी । अलदाद न कन्ना है क्या ? तब कहा । मुल्लाजी फौत हो गय । लोग जाकर इकट्ठे हुअे । मुल्ला को उठाया । अलदाद ने कहा । मियाजी हमारे बडे दोस्त थे । हम भी साथ चलेंगे । अलदाद भी साथ हो गया । कन्न गाह म जाकर कन्न खोदी । पर्दा करके मुल्ला को भीतर रखकर ऊपर मिट्टी देकर सारे घरों की ओर मुड । तब अलदाद खण रहा । तोगा ने कहा । क्या भाई ! तुम क्या खडे हा ? डेर को थना । तब अलदाद न कहा । मियाजी हमारे बडे प्रेमी थे । जीत हुअे चार दिन वानचात की थी । तो अेक रात मरन पर साथ रहेंग । तब लोग ता मार घरा का गय । और अलदाद वहा कन्न गाह के पाम अेक मकबरा था मो उसम जा बठा । इतन-तरवार पाग म था । बैठा इन नाम के वन की माना फेरता है ।—

जितन जाधीरात गयी च्यार चोर आय सदा ही उसी मारग आवता जाय गार-सयाना में खडा रहथा जितर नवी कबर देखी कहथा—जाज नवी कबर दीसती है काई नत्रा पीर हुता तद अेक चोर कहथो—नवा ८ ! जो मरे हाथ चारी अच्छी-मी लग तो पाच रुपिया सीरणी चटाऊ र सनाम कर कहथा—नत्रा पीर ! जो मर दस्त अच्छी मी लग ता वाफता ५ चानर का चटाऊ तीमर कहथो—नवा पीर ! जा मर हाथ कुछ अच्छी-डळी लग तो पाच सर भारणी चटाऊ चौथे कहथो—नवा पीर ! जो मरे थ चारी लग तो तर नाक-कान काटू इण भात छना कर च्यार वहा ११ सू उम नी ज रात पानस्याहा र पूरज का खजाना आया था गाडा रती डूटा था चार उठ जाय लागो चौकीदार सोय रहथा गाडा फाटिया नी दम मोहरा रुपिया री लावी गाठ अेक कपडे री लीनी छावडा अक मिटार हाथ जायी बडा गजक कर हालिया जाय कबर ऊपर खना रहथा

जद हेक ता रुपिया पाच चनाया दूज गाठ माय-सू वाफता चनाया तामर

(३)

जितन म जाधी रात बीत गयी । जीर चार चोर जाय । मरा उसी माग जात थे । मा आकर कत्रगाह म खड रहे । जितन म नयी कत्र दया । वात । आज । नया कत्र दिखाया पन्ती है । कोई नया पीर हुआ । तव अेक चार न कहा । नय पीर ! जा मर अच्छी-मी चारी हाथ नग ता पाच रुपय सीरनी डाऊ । दूसरे न सलाम करक कहा ह नय पीर ! जा मरे हाथ अच्छी मा गरा नग ता वाफत की अेक चदर चटाऊ । तीमरे न कहा । नय पार ! । मेर हाथ कुछ अच्छा मी डळी (अर्थात मानमता) लग ता पाच सेर (मिठाई) पगता (=प्रमाद) चढाऊ । चौथे न कहा । नय पीर ! जा मरे हाथ चारी नग १० तर नाक-कान काटू । इस प्रकार कामना कर (=मनौता मानकर) चारा चाना हुये ।

मा उसी रात बादशाह के पूरव का खजाना आया था । गाडिया रती म हूटा हुद थी । चार वहा जा लग । चौकीदार सा रहे थे । इन गाडिया का फाटा । मुहरा रुपिया की दम थलिया नी और अेक कपडे ११ । मिटार ११ अक छावडा हाथ आयी । बडी खुशी (?) करक १२ पर १३ हूये (ठहर) ।

तव अक न ता पाच १४

न गा १५

छावडीम तू-सू मिठाई चढायी तद चौथो गार खुणन लगा तद बली बहण  
 लागा—गत्तार ! गोर क्यू खुणै ? तद उण कही—तुम ता तुम्हारा चढावा  
 कबूल्या था मू चाड्या मीं कह्या है सू मीं ही करू गा तद उवा कहयो—त  
 क्या कबूल्या था ? तद दर्य कय्या—मीं नाक-बान पीर-कं काटणे कबून थे मो  
 गार खुण काटूगा तद बलिया कह्या—ब कुट्टण ! असा-ही काई काम करै  
 है ? जिम पीर न अमी फत करी सू बडा जवनिया है तद उवै कह्या—क्या  
 जाण मेरी-ही कबूलात ऊपर महरवान हुय है ता मीं कबूल्या है मा करू गा  
 वनिया वरजियो घणो हो पण ओ ता रह्या नहा गार खुण परब-भ हाथ घात  
 नाक पकडिया तद मुल्ला हाथ भाल बालिया—है व काई नहा ? तद मुल्ला  
 री हाक मुणत सूवा जलदाद बाल उठिया—गजर साहब ! डान-तरवार निया  
 आया चार भार नाख नाठा सू चलता रह्या मुल्ला पण कवर सू बाहर  
 आया तब ता मता बात पथी तद मुल्ला दूहा कहै—

जाँदाद ! अल्ला-की बाता क्या कय्या ऊ क्या न कर ? ।

हमती मार गरद मीं डार रवान मिर छन धर ॥२॥

तीमरे न छत्रडी म से मिठाई चढायी । तब चौथा कत्र खानन लगा । तत्र माथा  
 कहन लग । रे गवार ! कत्र क्या खादता है ? तब उमन कहा । तुमन ता अपन  
 चढाव जा कबूल थे मा चढा दिय । मैंन कहा है मा मीं भी करू गा । तब उनन  
 कहा । तून क्या कबूला था । तब इसन कहा । मैंन पीर के नाक-बान काटना  
 कबूला था मा कत्र खोदकर काटूगा । तब साधियो न कहा । ब कुटन (या कुटन  
 याग्य) ! काई असा भी काम करता है ? जिम पीर ने अमी फतह की सा बडा  
 जोनिया (मिद्ध) है । तब उमने कहा । क्या जान मरी ही कबूलियत (मनौती)  
 पर महरवान हुअे हो । सो मैंन जा कबूला है सो करू गा । साधिया न बहुत  
 वरजा । पर यह ता माना नही । कत्र खोदकर पथे म हाथ डालकर नाक  
 पकडी । तत्र मुल्ला ने उसका हाथ पकड लिया और बोला । है व ! काद यहा ?  
 तब मुल्ला की हाक मुनते हो जलदाद बाल उठा । हाजिर साहब ! और दाल  
 तलवार लिये हुअे जा पट्ट्या । चोर वामक का पत्र कर भाग मो चलत हुअे ।

मुल्ला कत्र म बाहर जाया । देखता है ता बहुत माल पडा है । तब मुल्ला  
 दोहा कहता है—

ह जलदाद ! अल्लाह की बातें दखा । क्या करता हुआ वह क्या नहा  
 कर डालता ? हाथी का मारकर धूल म मिला देता है । जोर गरीबा क सिर  
 पर छत्र रखता है (उनको राजा बनाता है) ॥२॥

तब अलदाद कहता—हा, मियाजी ! माई अस-ही-ज हैं मान मुला देखण तद जलदान कहै—

दूही—देख क्या भीया अवतलना ! लणा हाय मा नय ।

अभी खुनाय वात्रळी किमी का उठाय किमी-कू देय ॥३॥

अभी कहि मना ममत् भेळी कर पाट बाध मुकवर म जाय वाटण बठा जाधो आध वाट नीती हम जनान जधेलो मागियो तत् मुलना धीठा । बदळ रुपया लिया जात्र नही अधेना कहै नही सू कहै—बडे फजर देखेगे गद कहै—मेरे केर कुण फिर ? अब देवो इय तर भगड ६

-४-

जर चोरा बन्धा—र ! बढी मना हाय आयी थी पण इस कुट्टण-की यी गयी पण खबर ता करे देखा केते हैं ? तत् घोर जेक दया माय निकळ कर जायो आग मुकवर में बोलाळा मुणिया तत् जाय मुकवर २ वारी थी मिर घात देखण लागो मुला उत्रै वारी हेठ बढी थी अधारा मुकवर रणो मूम क्यू नही बोलतो मुणीज सू अधेल रो भगडो हुय रहधो छ वारी में मिर घालिया मुण छै इम में मुला न उवामी आयी आळम मोड

तब अलदाद ने कहा । हा मियाजी ! मानिक जसे ही हैं । मुल्ला मान लेखने लगा । तब अलदाद कहता है—

हे मिया अदुल्ला ! क्या देखता है ? जो लेना है तो ले ले । खुदा जसो बनी है कि किसी का उठाकर किसी को द देती है ॥३॥

(४)

जस प्रकार कहकर माल का समेटकर गाठ बाधकर वाटने के लिए मकवरे जा बठे । मब जाधा आधा वाट लिया । अब अलदाद ने जधेला मागा । तब ना न सोचा—अधले क बदने म रुपया नहीं दिया जा सकता और जधेला म नहीं । मो कहता है—सबरे नेग । अलदाद ने कहा—मेरे फिर कौन रेगा (उने का आवेगा) ? अभी दो । इम प्रकार भगड रहे हैं ।

और (उधर) चारो ने क्या । अरे ! क्या माल हाथ जाया था पर इम दून का कमाई (करगून) से चला गया । पर पना ता लगाओ देखें कितने । तब दूनम स ओक चार निकनकर मकवरे आया । जागे मकवरे म जाबान मुनी । तत् अकवर म खिडकी थी उमम सिर डालकर देखने गा । मुलना उमी गिडका के नीचे बठा था । अधरा मकवरे म बहून गा । निधायी कुट्ट देता नहा । केवल आत्मी बोलता मुनाई देता है ।

हाथ ऊचा किया सू चार रो सिर मुल्ला र हाथ म आय गया सू चार ता सिर काट लिया पाघ मुल्ला र हाथ माय रही मुल्ला लेय जलदाद र खाळ म नाखी—यह ले तर अधेले में

चोर नास जाय साथिया नै कह्या—इतन पीर भेळे हुय ह अधला-अधेला वाटिया जाया जक कू अधला नाया था सू मरी पाघ खाम दीवी मै ता जीव ल भागा सू साई-साई करता नीठ तुम ताई आया तव चार ता साम पाळ उठि गया मुल्लाजी अर जलदाद दोन धन कपड री पाडा कर घरा आया मुख सू खाधी विळगी अमी खुदाय वावळी छ

मा अधेले का भगडा हो रहा है। चार गिडकी म सिर डाल सुन रहा है। इतने म मुल्ला को जम्हाई आयी। जालस माडकर हाथ ऊचे किय। सा चोर का सिर मुल्ला के हाथ मे आ गया। सा चार न ता सिर निकाल लिया पर पगडी मुल्ला के हाथ म रह गयी। मुल्ला न लेकर अलदाद की गोद म डाली। जोर कहा। यह ले तर अधल म।

चार न भागकर जाकर साथिया स कहा। इतन पीर इकटठे हुआ है कि अधेला अधेला बटवारे म आया। जेक का अधला नहा मिला था सा उस मरी पगडी छीनकर दे दी। मै तो जी लेकर भागा। मा खुदा खुदा करता बडी कठिनता म तुम तक जा पाया हू। तव चार ता सागध निकालकर उठकर चले गय। मुल्ला जोर अलदाद दोना धन की जोर कपटें की गाठे बाधकर घरा का आय। वन का मुख से वाया आर भागा। खुदा अमी वावली है।



## धनुष-भग ( अगस्त्या गान्ती )

[ राजस्थाना म रामायण भागवत जेव अयाय पुराणो के अनेको अनुवाद रूपांतर प्रस्तुत हुआ गद्य और पद्य दाना म । अधिकारा अनुवाद वाचक ब्राह्मणा आदि क किय हुजे है । अमा ही अक रूपांतर रामचरित जमका धनुष भग प्रसंग यहा उपस्थित किया गया है । रामचरित की कथा म स्थान-स्थान पर कथा के साक्षिक रूप के दगन होते हैं । ]

-१-

जेकटा प्रस्ताव श्रीपरसरामजी राजा जनक र प्राहुणा जाया था तिवारइ परसरामजी नू भाजन हुवता था तिवारइ परसरामजा राजा जनक-न कही टाठ निराता श्री महादेवजी रद हाथ रा धनुष छ तिण री पूजा करि पछ तन करि तिवारइ राजा जनक सीताजा न कही—थ हाठ निरावो जिम परामजा धनुष री पूजा करि तिवारइ सीताजी टोळ निरावता थका थावा । मू धनुष उठाया जेन हाठ दे न जीमणा हाथ-मू नीचो मनियो तर परामजी धीठा देव न अचरित्र पाया—अ क या महावळव्रत तर राजा जनक परसरामजी नू पूजियो जू म्हारी पुत्री कर प्राप्त हुथी सो

(१)

अक समय का बात (है) कि श्री परगुरामजी राजा जनक के पाहुन (होकर) य थे । उम समय श्री परगुरामजी को भोजन होने वाला था (=भाजन गया जान वाला था) । उम समय परगुरामजी न राजा जनक म कहा कि ताठ ताथ (=आगव म गारा निपदा दीनिय) श्री महादेवजी का धनुष उमकी पूजा करके पाठे भोजन कर (ग) । उम समय राजा जाक ने ताजी का कहा । तुम गारा निपताजा (=नीपा) ताकि परगुरामजी धनुष पूजा करें । उम समय सीताजी न गारा देव हुअे वाये हाथ से धनुष उठाया जीर दाय हाथ स डाठ टेकर (गारा लीप कर) नीचे रग या । तब परगुरामजी न देवा । देवकर आश्चय पाया (=अश्चित्त र) । (मन म कहा—) यह कथा बडी बलवान है ।

किण-नू पाणि ग्रहण कराऊ ? तिवारइ परसरामजी कहिया जू अे म्हारो धनुष चढाव तिन-नू पाणिग्रहण कराअे तिवारइ राजा जनक कहिया—थे कह्यो सू परमाण, जिको ओ धनुष चढावमी तिन-न परणायीम

हिव उला-हीज प्रतया भाली, जा अे धनुष चढावै तिन नू परणाऊ तिन वास्त मभा मडप रचायो छै अनेक देम-दस-ना बडा बडा राजवी आय मिलिया छ राणो रावण पिण आयो छै बीजा पिण राजा दुर्जघन युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम इत्यादिक अनेक राजवी आया छै पिण धनुष किण ही राजवी मती ब्विमइ नही राजा रावण-सो तो पिण खिस्या नही हाथ हठ आयो सू निटठ काढियो राजा रावण खिसाणा पडि घरै गया आप ग मत्री राख कर कह्यो— अ क्या कुण परणै, तिन रो निगाह राखिज्या डम कहि घर गयो बीजा ही राजवी पिण खिसाणा पडिया

तरइ राजा जनक विश्वामित्र रिखीश्वर-नू तडा मलिया तरइ विश्वा मित्रजी श्रीरामचद्रजी-लक्ष्मणजी-नू साथ ल-नै आव छ तिवारइ गानम रिमोसर रो जदनी अहिल्या, सो गोतम रिखी र थाप करि सित्र ह्यो पडी छइ तिन

तव राजा जनक ने परशुरामजी का पूजा कि मरी पुत्री वर प्राप्ति के याग्य हुई (=विवाह याग्य अवस्था को प्राप्त हा गयी)। भा किमको पाणिग्रहण कराऊ (=किमसे विवाह कर )। उस समय परशुराम जी ने क्या कि जा यह मरा धनुष चढा द उसका पाणिग्रहण कराना। उस समय राजा जनक न कहा। जापने कहा सा प्रमाण। जो यह धनुष चढावगा उसको याहूगा।

अब (उहाने) यही प्रतिज्ञा पकडा (=ग्रहण को) कि जो यह धनुष चढावे (गा) उसको याहू (गा)। इसके निअे सभा मडप सजाया है। अनेक देम-देशो के वने बडे राजवशी (राजवी=राजपति) आकर अँकत्र हुआ है। राजा रावण भा आया है। और भी राजा दुर्जघन युधिष्ठिर अर्जुन भीम इत्यादिक अनेक राजवशी आय हैं। पर धनुष किसी राजा स ब्विमक्ता नही। राजा रावण मे भी ब्विसका नही। (उमका) हाथ नीचे आ गया सो गुकित्र म निकाला (निटठ<अनिष्टे, निटठड)। राजा रावण ब्विमियाना होकर घर गया। जपन मत्री (वहा) रखकर (उनसे) कहा। डम क्या का कीन याहूता है इसकी खबर रखना। या कहकर घर गया। हमरे राजवशी भी ब्विसियाने पड (=सज्जित हुआ)।

नव राजा जनक न ऋषीश्वर विश्वामित्र का बुनावा भेजा। तव विश्वामित्रजी श्री रामचद्रजी और लक्ष्मणजी का साथ लेकर आत है। उस

तम गिमि श्राप दीयो तिवार अस्त्री कहा—स्वामी ! म्हारो कलि उद्धार नी ? तिवारद श्रीरामचद्रजी खेह पगा रो लागी ति बार खह लागत समा दिव्य देह धरि न मिल जावाम-नू ऊनी

मो यू करता जाग नन्ने जायी मु भीवर सिल उडता देखि न नात्रा ल न पाठा पूठसू साण घणा-ही किया पिण नात्रटिया नाव पाछी आण नहा तावडिया कहै—थाहरा पग लागी मिल उडी छ ता माहरी नात्रा उड ता माहरा फुटव भूवा मग्इ म्ह माहरा हाथ-सू थाहरा पग धोय न नात्रा ऊपरि इमानिस्था ननी पर उतारिस्था ति बार पग धाय न ननी पार ऊतरिया भीवर-न कुटव सूधो ऊधरिया

पछ राजा जनकर नगर आया पछ राजा जनक विश्वामित्र रिख-नू धणो आदर मान लिया हिव राजा जनक विश्वामित्रजी नू पूछ छ—अ बाळक कुण रा छ ? तर विश्वामित्र रिख कहिया—अ राजा दसरथ रा बीवरा छ बीजा राजवी धनुप नू खस छ, पिण खिस नही तर श्रीगमचद्रजी विश्वामित्र-नू

समय ऋषीश्वर गौतम की स्त्री अहिल्या थी वह गौतम ऋषि के शाप से शिला हुई पडी है। उन गौतम ऋषि ने शाप दिया उस समय स्त्री (=अहिल्या) ने कहा (था)। हे स्वामी ! मरा उद्धार कब हागा ?

उस समय श्री रामचद्रजी के परों की धल लगी। धून के लगने के साथ ही शिला लिख्य शरीर घाग्ण करके जावाग का उड गयी।

सा अस बरत (=म प्रकार चरते चलते) जाग नदा जायी। सो भीवर (कवट) गिना का उटती दगकर नावा का लकर भाग गय। पीछ से शत्रु बहुत हा किय (=जावाग बहुत हो दा) पर नाकवाने नाव धापिम लाते नही (पूठ < पूठ साद < शब्द)। नाववाले कहत है। आपक पर लगन से गिना उठ गयी है तो हमारा नात्र उड जाय तो हमारा कुटव भूवा मर। हम अपन हाथ से आपक पर धाकर नावा पर बिगायग जोर नदा के पार उतारग। तब (श्रीगम) पर धाकर ननी पार उतर। भीवर का कुटव महित उधारा (=उद्धार किया)।

पाछ राजा जनक के नगर म जाय। पीछ राजा जनक ने विश्वामित्र ऋषि का वन्दन आदर मान दिया। अब राजा जनक विश्वामित्र का पूछते हैं। ये बालक किमक है ? तब विश्वामित्र ऋषि ने कहा—ये राजा दसरथ के उडक हैं।

दूसरे राजा धनुप ने समत हैं (=धनुप पर जादू लगाने हैं) पर धनुप गिमकता नही। तब रामचद्रजी ने विश्वामित्रजी से पूछा है। यदि आप आना

पूछिया छै—जे थे आग्या दधा ता म्हे ई धनुष जोवा ? तिवार विश्वामित्र कह्यो—जावा तिवारै राजा जनक कहिया—जै बाळक कामू जावसी ? तर विश्वामित्र कहियो—अ बाळक राजा दमरथ ग छ राजि जोवण न्था थाह रा मनारथ जै पूरण करमा

तर श्रीरामचद्रजी पळत्रठ बाधि नै धनुष चाढण नू तयार हुना तिवार लखमणजी नू कह्यो जू इतरा राजवी बठा छ तिहा म काई वीर न छ जू धनुष चढाव तिवारै लखमणजी कहियो—राजि यू कहीजै नही जा वीर कोई न छ, पिण धनुष बोदो छ राजि हुकम दधा धनुष भाजि कुटका करु तर श्रीरामचद्रजी कहिया—तू शेषनाग रा अवतार छै पिण औ धनुष मो नू चाढणो सीता परणवी

तर श्री रघुनाथजी पाघडी रा पंच समारि काठा किया, पीतावर कडियै बाधिया जन बाहा दोऊ ऊची चाढी तर लखमणजी शेषनाग-नू सारत दीवी जू त मावचेत हुअे प्रियवी मता डुलण देखो पछै कूम नू कहिया—तू सावधान हुअे पछ दस दिगपाळा-नू कहिया—ये मावधान हुज्यो प्रियवी डुलण मता दवो

द तो हम भी धनुष देख । तब विश्वामित्र न कहा देखो । तब राजा जनक ने कहा । ये बालक क्या देखें ? तब विश्वामित्र न कहा । ये बालक राजा दमरथ के है । आप देखन दे (राज=आप, श्रीमान) । आपके मनोरथ ये पूर करगे ।

तब रामचद्रजी कमर बांध कर धनुष चढाने का तयार हुअे । पळवट=कमरबंद (?) । उस समय लखमणजी स कहा कि इतन राजवशी बठ हैं । उनम कोई वीर नही है जो धनुष को चढावे ? उस समय लखमणजी न कहा । जाप असे मत कहिय कि काई वीर नही है । पर धनुष पुराना है । जाप हुकम दें तो धनुष का ताडकर (उसके) टुकडे कर दू । तब श्रीरामचद्रजी ने कहा । तू शेषनाग का अवतार है । पर यह धनुष मुझे चढाना है (चाढणा=चढाना) । (और) सीता को ब्याहना है ।

तब श्रीरामचद्रजी न पगडी के पंच सभालकर (ठीक करके) हठ किय । पीतावर कमर म बाधा (कडि<कटि) । और दाना बाह ऊचा चढायी । तब लखमणजी न शेषनाग का शारा किया कि तू (=तुम) सावधान हा जाना । पृथ्वी को हिलन मत दो (=दना) । पीछे बच्छप म कहा । तुम सावधान हा जाना । पीछे दगो दिक्पाला का कहा । तुम सावधान हा जाना । पृथ्वा का हिलन मत दा (=दना) ।

इण मम श्री सीताजी गोप्य बठा देख छ श्री रघुनाथजी उठि जाय न  
 त्रामित्रजी-नू नमस्कार किया नमस्कार करि पग लागि माथ हाथ दिराय  
 आय-न श्री रामचद्रजी डावा हाव-भू धनुष उठाव लियो उठाव ल-न उमाया,  
 आय-न चढाया चलाय-न खाचिया खाचि न भाजिया सू धनुष नमाया तर  
 ना रो राज नमाया अनै जिवार धनुष खाचिया तिवार सीता रा मन खाचिया,  
 १ धनुष भागा जिवार सीता रा मर रा सामा भागा

हिदै धनुष भाजना ममा अरडाट हवा सा परमराम तपस्या करता था  
 जाणिया—श्री कामू सः हुना ? गाव-वी सीताजी ऊतरी श्रीरामचद्रजी  
 वरमाठ घाती दवताजे दव-दुभी बजायी फूला रो बरपा कीधी राजा  
 एक र घर जनक बाजा बाजिया ज जकार सः हुना विश्वामित्रजा खुसा  
 ॥ राजा जनक खुमी हुवा जय इण ममीजे राण रावण मन्त्री वीर राख्या  
 १ सा जाय रावण नू कहियो जू श्रीरामचद्रजी धनुष भागा सीता परणा

—२—

हिन राजा जनक विश्वामित्रजी नू कह्यो—ये लगन थापि दसरथजी बग

जस समय म श्री सीताजी भरोख म बठा देख रहा हैं (गोल < गत्राण) ।  
 श्रीरामचद्रजी न उठकर (जौर पाम) जाकर विश्वामित्रजी का नमस्कार  
 किया । नमस्कार करके परां म नग कः मिर पर हाथ त्रिवा कर (और)  
 तकर श्रीरामचद्रजी न वाय हाथ से धनुष उठा लिया । उठाकर तकर भुका  
 गया । भुका कर चडा लिया (=प्रत्यचा चडा दी) । चलाकर खाचा । खीच  
 र ताड डागा । वह धनुष भुकाया तब सीता की राजा का भुकाया । और  
 तब धनुष का खीचा तर सीता के मन को खाच लिया । और धनुष टूटा तब  
 सीता क मन के संगय टूट गय (सामा < संगय मनेह आगकाअे दुख) ।

अब धनुष का ताडत समय जमा अरडाट (जार का गः) हुआ कि  
 परमुराम तपस्या करता था उमने जाना (=भाचा) यह क्या गः हुआ ?

सीताजी भरोखे से उतरा और उनन श्रीरामचद्रजी के वरमाना डापी ।  
 दवताआ न दव-दुभी बजाया । फूला की बर्पा की । राजा जनक क घर अनेक  
 बाज बज । जयजयकार गः हुआ । विश्वामित्र जी प्रमन हुआ । राजा जनक  
 प्रमन हुआ । अब इस समय राणा रावण ने मन्त्री वीर (वहा) रखे थ उनन  
 जाकर रावण को कहा कि श्रीरामचद्रजी न धनुष तोण सीता का ब्याहा ।

(३)

अब राजा जनक ने विश्वामित्रजी से कहा—आप नग्न (मुक्त) स्थापित

तडात्रो जू जान करि आत्रो तिवार श्री विश्वामित्रजी लगन थापि बधाईहार  
 भलिहया जू जान करि वेगा पधारा हिव राजा दशरथ बटा साथि ल सबळी  
 जान करि मिथुला नगरी आय डेरा किया राजा जनक साम्हो आय मिलिया  
 श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी राजा दशरथ र पावै जाय लागत राजा जनक राजा  
 दशरथ रा च्यार बटा आप री बटी भातीजी करि च्यारे चदरी बाधि न  
 पण्णया घणी भगति कीत्री घणे पक्वाने करि घणा भात दिया घणी  
 पहिरावणी कीत्री घणो दायजा दीया घणा हाथी, घोटा वहिल सुसपाल  
 मभसाला प्रमुख घणा, दाम दामी खवाम प्रमुख घणा दन हलाणा किया  
 राजा जनक घणी भुय ताड पृह्वानेण नू जाया राजा जनक राजा दशरथ मू  
 प्रणाम करि जुहार करि पाद्यो बलिष्यो बलिष्य रिखि विश्वामित्र रिखि रया  
 बटा साथ वहै छै राजा दशरथ रा रथ आग छै वास श्री रामचन्द्रजी रो रथ  
 छ घणा साथ घूमरै मू उछन करता वह छद

करके दशरथजी का गात्र बुनावे कि बरात बनाकर आइये । तब श्री  
 विश्वामित्रजी ने लगन स्थापित कर बधाईदार भेजा कि बरात बनाकर गीघ्र  
 पवारिय ।

जब राजा दशरथ ने बटो का साथ लेकर बनी बरात बनाकर (सबळी =  
 सबल), मिथिला नगरी में आकर डेरे किया । राजा जनक सामने आकर मिला ।  
 श्रीरामचन्द्रजी (और) लक्ष्मणजी आकर राजा दशरथ के परो लगे । राजा जनक  
 ने राजा दशरथ के चार पुत्रों का अपनी बंटिया और भतीजिया के साथ चार  
 चोरिया (विवाह-वेदिया) बाधकर याहा (भतीजी < भ्रातृजा) । बहुत सत्कार  
 किया (भगति < भक्ति) । बहुत पक्वान बनाकर बहुत भात दिये (जेवनारे  
 की) । बहुत पहिरावना (जोडावनी) की । बहुत दहेज दिया । बहुत हाथी  
 घोडे गाडिया मुखपाल (पालकी) नाने रथ आदि बहुत स दास दामी  
 सबक जादि बहुत से देकर चलावा किया (=विदाई की) । राजा जनक  
 बहुत दूर तक पहुंचाने को आया (भुय = भूमि, फासला दूरी) । राजा जनक  
 राजा दशरथ में प्रणाम करके जुहार (अभिवादन) करके वापिस लौट  
 गया । बलिष्य ऋषि (और) विश्वामित्र ऋषि रया में बठे हुअे साथ में चल  
 रह हैं । राजा दशरथ का रथ आगे है । पीछे रामचन्द्रजी का रथ है । पीछे  
 महिलाओं का रथ है । बहुत दग साथ है । ममाराह (?) के साथ उत्सव करते  
 हुअे (=मनाते हुअ) चल रह हैं ।

जय दण समाय परसरामजी मार्यै जटा गळ जनेऊ, कडिया भाथा हाथ मे  
र खवा ऊपर फरमी राता नत्र किया गळगळारत करता गाजता गै  
मणा रुप किया आर छ ज्यू परमगम आचता दीठा ज्यू राजा दसरथ  
फीज चली जाय था सा सरव ऊभी रही रथ ऊभा राया परसरामजी  
रामचद्रजी रा रथ आडो जाय ऊभो रहघो

तिवार परसरामजी कहण लागा—रामचद्र ! त म्हारो धनुप क्या भागा ?  
रा म जुद्ध करि परसराम रो रथ देख न राजा दसरथ बीहना जू जा मोटा  
चद्र बालक विदण री मी किमी ? परमगम आडो ऊभा

तिवार श्रीरामचद्रजी रथ थी उतरिन कहिया—म्हान था बढ री मी  
ई नही म्हे खित्री थ ब्राह्मण तिण वामत म्हे ब्राह्मण रा दास थाह र  
ठ जनऊ माहर हाथ मन्त्र माहरइ हाथ अेक गुण था र गळ नत्र गुण,  
न था ममवड किमी ? जी माहरो गळो आ थाहरी फरमी थे जाणो ज्य  
रो पिण म्हे खित्री ब्राह्मण मामो हाथ न करा

(४)

जब इस समय परगुरामजी सिर पर जटा गल म जनेऊ (यनापधीत  
गणावद्ध) कमर (कानि) पर तरका हाथ म धनुप बधो पर परगु लाल  
हाथ किये गभीर ग करता हुआ गरजता हुआ भयानक डरावना रुप  
प्राय जाता है । ज्या हा परगुराम को जाता हुआ देखा त्यो हा राजा  
दसरथ की सना जो चली जा रही था वह मारी खनी हो गयी । रथ खटे  
म (=ठहरा लिये) । परगुरामजी श्री रामचद्रजी के रथ के सामने आकर  
बडा हा गया ।

तब परगुरामजी कहने लग । रामचद्र ! तून मरा धनुप क्या ताडा ?  
तू मुम सं युद्ध कर । परगुराम का रूप देखकर राजा दसरथ डरा कि यह  
वना ( है ) रामचद्र बालक ( है ) उटने की ममता कमो ? परगुराम माग  
राकर खण है । उस समय रामचद्रजी न रथ म उतरकर कहा—म और  
आपकी युद्ध करने का बरावरी कारी नही । हम क्षत्रिय आप ब्राह्मण म  
कारण हम ब्राह्मण के दास । आजक गल म जनऊ मर हाथ म मन्त्र । मर हाथ  
म एक गुण (धनुप की प्रत्यचा) आपन गन म नौ गुण (नौ सूता वाला जनऊ) ।  
हम और आपकी बरावरी क्या ? - यह मरा गना यह आपकी फरमी,  
आप (ठीक) समझें सा कर । परगु हम क्षत्रिय है । ब्राह्मण के सामने हाथ

ज्यू-ज्यू श्रीरामचंद्रजी गुण मीनति करै त्यू-स्यू फरमरामजी घण बळ चडघा त्यू-स्यू दसरथजी बोहै परमराम घणो बळ करण लागो तरै रामचंद्रजी कहिया—परमरामजी ! आना आप मिला परमरामजी मिलिया तरै रामचंद्रजी तज खाच तियो परमरामजी बाभण रो बाभण ह्य गयो तिवारै परसराम रो घनुप भाया उरहो लियो परमराम-नू कहिया—द्विषद पर जाय वनखड रद विखै तप करो परमगम नन्दी-सटै ब्राह्मण हाय तप करण लागो

राजा दगरथजी श्रीरामचंद्रजी अजाध्या पधारिया राजा दगरथ राय करइ छ हिस विश्रामिअ-नू मीय दीधी

नही करते (= ब्राह्मण पर गस्त्र नहीं चलाते) ।

ज्यों-ज्या श्रीरामचंद्रजी गुण विनती करते हैं त्या-त्या परशुरामजी अधिक बल म चढा त्या त्यो दगरथजी भयभीत हाते हैं (बोहै < विभेति) । परशुराम बहुत बल करने लगा । तब रामचंद्रजी ने कहा । परशुरामजी ! आइये, अपन (=हम लोग) मिलें । परशुरामजी मिल । तब रामचंद्रजी ने तेज खींच लिया । परशुरामजी ब्राह्मण-वा-ब्राह्मण (ईश्वरीय तेज स रहित) हो गया । उम ममय उनने परशुराम क घनुप और तरकस को ले लिया (उरहो=उरो, उरो लेणो मुहावरा है=ले लेना, इसी प्रकार परहो या परो देवणो=द देना) । परशुराम स कहा । अब दूर जाकर वनखड म तप कीजिय । परशुराम नदी के किनार ब्राह्मण होकर (=क्षत्रियत्व को छोडकर) तप करने लगा ।

राजा दगरथजी और रामचंद्रजी अयोध्या पघारे । राजा दगरथ राज्य करत हैं (=राय करा लग) । अब विश्रामिअ को विदा दी ।



## राव मालदे

( उनीसवीं शताब्दी—उत्तरार्ध )

(आसियो वांकीदास)

[ वावाणाम आसिया गाखा क चारण थ । इनका जन्म स १८३८ म डियावास गाव म हुआ । सवत १८६० म ये जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह गुरु आयम देवनाथ के सपक म आय । उहान इह महाराजा के सामन स्थित किया । महाराजा इनका विद्या और कवित्व-शक्ति से अत्यंत प्रसन्न और इह लाखपसाव पुरस्कार दिया । इनकी मृत्यु म १८९० म सावन ी ३ को जोधपुर म हुई ।

वाकीदास बड़े स्वाभिमानी और स्वतंत्र प्रवृत्ति क व्यक्ति थ । कवि के त म इनका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली था । स १८७० म जयपुर नरेश गणसिंह क साथ आय हुए कविवर पद्मकर का इनके साथ शास्त्राध्य हुआ तम ये विजयी हुए । महाराजा मानसिंह के व्यवहार स प्रसन्न होकर इहान जाची व्रत अर्थात् महाराजा को छाडकर और किसी स न मागन का व्रत ण कर लिया । एक बार उदयपुर क गुणप्राही महाराणा भीमसिंह ने इह रक्षित करन क लिए अपन भरदारा का भेजकर पुताया पर इहाने क्षमा थना कर ली । य आद्यु कवि होन के साथ साथ डिगन ब्रजभाषा सस्कृत तरमी क विद्वान् जीर इतिहास के अच्छे ज्ञाता थ ।

इनकी पद्य रचनाओ का सग्रह नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से वाकीदास यावली नाम स तीन भागा म प्रकाशित हो चुका है । इनका गद्य ग्रथ वाकीदास की ख्यात है जा थी तरात्तमदास स्वामी के संपादन म राजस्थान अथ्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर स छपा है । त्तम लगभग २००० पाना का ग्रन्थ है । ये वानें छोटे दाने फुटकर नाने क रूप म है । त्तक का जो त्त महत्त्वपूर्ण लगी उमे उसने नाट कर दिया । इतिहास की दृष्टि स यह नि बन्त महत्त्वपूर्ण है ।

सकलित जग वावाणाम रा ख्यात स किया गया है । यह जग उनीसवीं

शताब्दी के उत्तरार्ध के गद्य का नमूना है। इसमें जोधपुर नरेश राव मालदे का इतिहास है जिसमें गेरगाह सूर तथा मिर्जा शरफुद्दीन के साथ के युद्ध का तथा मेरुते के शामक वीरम और जयमल के साथ के सघप का वणन है। ]

( १ )

राव मालदेजीरा मवत १५६८ रा पास वद १ रो जनम मवत १५८८ रा सावण सुद १५ पाट बठा राव मालदेजी

सवत १५६२ रा माह वद २ नागार खान नू मारिया नागोर लियो सवत १५६४ रा अमाठ वद ८ मिवाणो लिया डूगरमी जतमान बना-नू सवत १५६६ रावजी वीरा सीधल नू मार भाद्राजण लिवी मवत १५६८ वीकानर लियो कूपोजी फौज ले गया हुता चैत वद ५ जतसा मारियो सवत १५६८ चत वद १२ रावजी पधारिया वाकानर जूभण फतपुर कूपाजी नू वधारा म दिया सवत १६०२ रावजी डूगरमी हमीरात बना-सू लिवी फळोधी सवत १६०८ रावजी पोहकरण निजी

पचाळी अभा जाजावत मालदेजा र कामती

( २ )

जैतजी कूपजी वीरमद दूदावत नू मटत रिया सू अजमेर सू डीडवाना माह

( १ )

राव मालदेवजी का म १५६८ के पीप वदि १ का जम। म १५८८ के सावण सुद १५ (का) मिहासन वटे राव मालदेवजी।

सवत १५६२ के माघ वदि द्वितीया (का) नागोर के खान को मारा और नागोर लिया। स १५६४ के जायाठ वदि ८ (का) मिवाणा लिया डूगरमी और जतमाल के पास से। स १५६६ (म) रावजी न वीरा सीधल का मारकर भाद्राजण ला। सवत १५६८ (मे) वीकानर लिया। कूपाजी फौज लेकर गये। चत्र वदि ५ का राव जतनी का मारा। सवत १५८८ चत वद १२ को रावजी वीकानर पधारे। भूभणू और फतहपुर कूपाजी को अतिरिक्त (?) दिये। सवत १६०२ मे रावजी ने डूगरमी हमीरात सफ लोवी ली। सवत १६०८ मे रावजा न पाकरण ली।

पचाळा अभा जाजावत मालदेवजी के कामदार (प्रधान मंत्री) था।

( २ )

जताजा और कूपाजी न दूदा के वट वीरमद को मटते और लिया से अजमेर से डीडवान म स और बाळा म म निकान लिया। बाळा म वीरमदजी

बाड़ी माह-नू काडियो बोळी वारमदजी कहघा—कूपाजी ! अठा-नू ता हरा काडिया नही जागू मरगू कूपजा कहघा—ता भारमा जन् जनजा ताजी-नू कहघा—वीरमन्-नू माग्णा नहा वारमन् बडा रजपूत है जावनो रया क्याहिक-नू आण आपणा मरण मुधारमो

उठा-नू वीरमन् माडन्न रा पातमाह वन गया उण खरची लिवी पद्य ख म जाय मूर पातमाह नू आणिया मूर पातमाह आया जन् वमो मिरोहा ना अमी हजार घोडा-नू रावजी बावर जाय डग किया चापा जमो दासोन जलान जलूवा रा घाडा पातमाह रा मूडा आग तायो पद्य राव ताजेरो साथ पीपळोद गयो भाटी मानर मूरात्रन अजमेर रो किरानार ता अजमेर रा गढ छूने जन् मरण माडियो हो पिण चाकरा मरण दियो ही असुर पातमाह जोधपुर रा गढ लिया जन् गढ माथे काम आयो गन् म जरी राठोड राममिध ऊहड, राठोड मीकर जतसिधोत ऊणवत इत्यादिक् ड ऊपर काम आया

कहा—कूपाजी ! यहा से तो आपका निवाला नही जाऊगा (=निबलूगा) रहगा । कूपाजी न कहा—ता मारगे । तब जताजी न कूपाजी से कहा—वीरमदे का मारना नही वारमदे बडा राजपूत है जीता रहा तो किसी का तकर अपना (=हमारा) मरण मुधारगा (किसी बहुत बडे व्यक्ति को हम पर चलाकर लावेगा जिमने लडकर हम मारे जायगे और एस प्रकार मारे जान से हमारा मरण घय होगा) ।

वहा से वीरम माडा क वादशाह के पास गया । उसने खख क लिअ रकम ली । पीछे पूव (दक्ष) म जाकर मूर वादशाह (गणशाह मूर) को तायो । मूर वादशाह जाया तब (राव मानदे न) अपने परिवार को मिराही भेज लिया । अस्मी हजार घोडो के साथ रावजी न बावरे म जाकर डेरे किय (ठहर) ।

चापा गावा का भस्मान का बटा जसा जलाल जतूका का घाडा वादशाह के मुन् आग स (=सामन म) ल जाया । पीछे राव मालदेवजा क साथ पीपळोद गया ।

भाटी सकर मूरात्रन अजमेर का किरदार था । अजमेर का गढ छूटा (अधिकार से निकला) तब मरन की तयारी की थी । पर सबका न मरन नही लिया । मुमलमान वादशाह (गणशाह) न जोधपुर का दुग लिया तब दुग पर (नडता हुआ) काम जाया (=मारा गया) । दुग म (उसकी) छत्री (=म्मारव) है । राठोड राममिह ऊहड राठोड मीकर जतसिह का वग

सूर पातसाह वरम १ जोधपुर रै गढ रहघो सवत १६०१ पोस वद ५  
 नेहरो पाड मसीत करायी पछै गोकुलदास पाज बधाधी, तळात्र री राग भरायी  
 सूर पातसाह गया मारवाड मू जद भीगसर पाच हजार घाडा थाणा राख गयो  
 रावजी जोधपुर आया थाणा नू वढ करि उगम्या इतरा रावजी र काम आया—  
 राठोड ऊभो वरमिघात माणस ४०० स भत रहिया रावळ हाफो वरमिघोन लाहै  
 पर उपडिया राठाड जभो हाफा माणस ८०० घोडा रा असवार ओठी पाळा  
 महेवा-सू साथ लाया हुता जसिध भरू दास चापावत रो लाहे पड उपडिया

मवत १६०० पातसाह सरसाह सू हार राव मालदेजी सिवाणा री भाखरा  
 गया सवत १६०३ सलेमसाह मुवी जद तुरक जाधपुर रो गढ छोड खत्रामपुरै  
 नमेदनीखा खवासखा बनै गया मडात्रर रा माली गढ म आया, रावजी नू  
 खबर निवी रावजी जोधपुर पधारिया

( ३ )

पछ वरम सात रावजी मडता नू लागा मवत १६१० रा वमाख वद २

ऊनावत शाखा का इत्यादि वीर दुग पर काम आये ।

सूर बादशाह अेक वप जोधपुर के दुग मे रहा । स १६०१ पौष वदि ५  
 (को) मन्दिर को उखाडकर मसजिद बनवायी । पीछे गोकुलदास ने तालाब की  
 पाज बधवायी भरवायी ।

सूर बादशाह मारवाड से गया तब भीगसर मे पाच हजार घाडो का  
 थाना (=चौकी) रख गया । रावजी जाधपुर (लौट) जाये । थाने का लडाई  
 करके उठा दिया (उद् + गम स) । इतने (नेग) रावजी के मारे गये—वरमिह  
 का वग राठाड ऊभा चार सौ आदमिया के साथ खेत रहा (=मारा गया) ।  
 वरमिह का बेटा रावल हापा शस्त्र पर पडकर मारा गया । राठाड जभा और  
 हाफा आठ सौ घुडमवार ऊटसवार पदल महेवा से साथ लाय थे । भेरू दास  
 चापावत का बेटा जसिह शस्त्र पर टूटकर मारा गया ।

मवत १६०० म बादशाह शेरशाह से हारकर राव मालदेजी सिवाने के पहाडा  
 म गये । सवत १६०३ म सनेमशाह (=शेरशाह का बेटा) मरा तब मुमनमान  
 जोधपुर का दुग छाडकर खवासपुरे म नसानीवा खवासधा के पास गये ।  
 मन्ग के माली दुग म आये । रावजी का खबर दी । रावजी जोधपुर गये ।

( ३ )

पीछे सात वप रावजी मडत का लगे रह (मडता के पीछे लगे रह—मडता  
 म युद्ध करते रह) ।

११ ऊपर रावजी आया मडत कुडळ तळास भायें जमन रावजी-मू राड  
 १० जमल वीरमदेवोत दखजोग-मू जानी रावजी रा इता ठावा मिनघ वाम  
 ११—रना भारमलोन बातो १ राठोड नगो भारमलोन बाता २ प्रधीराज  
 १२ ३ राठाड जगमान उदकरण ४ राठोड मूजा जतमिघोन ५ साहड  
 १३ जसप्रत ६

मवत १६१० रा असाड वद १३ राठोड देईनास जतावत न कवर चण  
 १४ जी-नू मालजी मडता माय विना विद्या जमनजी-नू वाडि मडता म जमन  
 या

( ४ )

मवत १६१३ फागण व १२ हाजीखान मू राणा उदमिघजी रँ अदावदी  
 १३ हाजीखान पठान हा हाजीखान राव मानदेवी मू साधी राव मानदेवी  
 १४ ठावा मिनघ हाजीखान री मणत मनिया—राठाड लखीनाम जतावत १  
 १५ रावळ मधराज हाफावत २ राठाड जगमान वीरमदेवोत ३ राठाड  
 तमान जमावत ४ लखमण भादावत ५

राणा-जा रा माय री विगत—राठोड जमन वीरमदशन १ राव

मवत १६१० के धगाय यदि २ (का) रावजी मण पर आय । मडत म  
 १७ तानाव पर जयमल वीरमणवात न रावजी म लवाई की । जयमन  
 वीरमदवान दवयोग म जाना । रावजी व मनन विद्वान के आत्मी काम  
 १८ माय—धना भारमन का वटा बाता राठोड नगा भारमन का वटा बाला  
 १९ मूधवांज जतावत राठाड जगमान उदकरण राठाड मूजा जतमिह का वटा  
 २० सीहड पीया जमवत ।

मवत १६१० व जापान व १३ का राठाड देवीनाम जतावत और  
 २१ राजकुमार चंद्रसनजी का मानदेवी न मेडते पर खाना किया । (उहीन)  
 २२ जयमनजी का निकारकर मडते पर अधिकार किया ।

( ४ )

मवत १६१३ फागुन व १२ का हाजीखान म राणा उदयसिंहजी क  
 २३ मणत हुँ । हाजीखान पठान था । (त) हाजीखान न राव मानदेवी  
 २४ से मेन किया । राव मानदेवी न मनन विश्वामी आत्मी हाजीखान  
 २५ की मण म भेज—राठोड देवादास जतावत राठाड रावळ मधराज हाफावत  
 २६ राठोड जगमान वीरमणवात राठाड जतमाल जतावत और लखमण  
 भादावत ।

कल्याणमल बीकानरिया २, रात्रळ प्रताप वामबाळा रा ३, रात्रळ आमकरण  
डूगरपुर रा ४ रात्रळ तेजो देवळिया रा ५ खराटा रामा जाजपुर रो  
धणी ६ मुरजण बूदी रो धणी ८, रात्र दुरगा रामपुर रा धणी ९  
रात्र रामचद्र तोडरी रो धणी ७ रात्र नारायणदाम इत्यादिक राणा कर्न  
मिरणार

अजमर सू कोम १२ हरमाडी गाव जठ राड मडी १६१३ फागण वद  
१२ राणाजी रा उमराद्र वालीमो सूजा जसप्रताप राठोड देवीदास जैतावन र  
हाथ रह्यो जैतारणियो तेजमो डूगरसी उणावत रा राणाजी रा उमराद्र आछी  
तरह काम आयो यत हाजीवान र हाथ रह्या

रावजी जतारण हुता जतारण-मू डाड हार घोडे हाजीवा री मदत  
मरियो हा हाजीवान जीतो र समाचार रावजी सू मातम कराया

( १ )

रावजी भेन्न पधारण री तयारी कियो जद जामूसा खबर लियो—जमलजा  
रा कोई जादमी मडता म नही है

राणाजी के माथ का विवरण—राठोड जयमल वीरमदव का बेटा राव  
कल्याणमल बीकानर वाला रावल प्रताप वामबाडे का रावल जसकरण  
डूगरपुर का रावल तेजा देवलिय का खराटा रामा जहाजपुर का  
स्वामी राव रामचद्र तोडरी का स्वामी राव सुरजन बूदी का स्वामी  
राव दुगा रामपुर का स्वामी राव नारायणदाम, इत्यादि मरणा राणा क  
पाम थ ।

अजमर स १२ कोस पर हरमाडा गाव है वहा लडाई हुई सवत १६१३  
फागुन वदि १२ का । राणाजी का मरदार वालामा शाखा का सूजा जमवत  
का बेटा राठोड देवीदाम जतावत क हाथ स खेत रहा (=मारा गया) ।  
जतारण का तेजसी डूगरसी उणावत का बेटा राणाजी का मरणा भली  
भाति (लडकर) काम आयो । खेत हाजीवा क हाथ रहा (=विजय हाजीवा  
की हुए) ।

(उस समय) रावजी जतारण म थ । जतारण स डड हजारा घोडा  
(=घाना का दल घोडे) हाजीवा की मदत को भेजा था । हाजीवा जीता ।  
ये समाचार रावजी स (=रावजी को) मालूम कराया ।

( ५ )

तब रावजी न मडते जाने की तयारी की । तब जामूसा न खबर दी कि

संवत् १६१३ फागुण सुदि १३ मंडत पवारिया जमलजी रा माणस गिररी  
पर ममेळ बेदक दिन रह्या हळ जाताय रावजी मेडतिया री जायगा  
गयी

संवत् १६१४ मंडत मालवाट की नीव दिगयी संवत् १६१६ मालवाट  
पूरण वणिया जद राठोड देवीनाम जतावन-नू साथ घणा मू मालकोट थाण  
गियी संवत् १६१८ रा आमोज वत्त म राठोड देईदास जतावन राठाड  
ना नगावन जाळोरगट दियो मलिक वृत्तखा नू वाडियो आमोज सुद ५ कवर  
वदरमण जाळोरगट चटिया

पुत्र जमलजी वधनोर-सू जाय जकवर पातगाह रा उमराव मिर्जा  
परफुद्दीन-नू पातमाही नमकर ममत मन्त मानदेजी रा साथ साम आणियो  
संवत् १६१८ रा चत सुदि ५ रावजी रा साथ-मू लडाई मित्री फत मिरजा  
री हुई, रावजी रा उमराव काम आया मिरजा रो साथ घणो काम आया  
वेत मिरजा र हाथ रयो मन्तो लियो

जयमलजी का कोई आदमी मेलने म नही है ।

संवत् १६१३ की फागुन सुदि १३ को (रावजी) मेलते गय । जयमलजी क  
आत्मी गिररी बापरा और ममल म कई दिना तक रहे । रावजी ने मंडता  
वाता की जगह (भूमि) को हल जुतवा कर गिरवा दी (=मकान गिरवा  
कर हल जुतवा कर भूमि को बराबर कर दी) ।

संवत् १६१४ म मंडते म मालवाट की नीव टिनवायी । संवत् १६१६  
म मालकोट पूरा बन गया तब राठोड देवीनाम जतावत का बहुत सनिक-भमूह  
क साथ मानकोट म चौकी पर रखा ।

संवत् १६१८ की आमोज वत्त म राठोड देवीनाम जतावत जीर राठाड  
पना नगावन ने जानारगड लिया । (वहा के) मलिक वृत्तखा को निकान  
टिया । आमोज सुदि ५ का कवर चंद्रमन जालोरगट पर चला  
(=चलाई की) ।

पुत्र जयमलजी वत्तान स जकवर बादशाह क उमराव मिर्जा परफुद्दीन  
का बादगाह मेना क साथ राव मालदेवजी क साथ क मुकानन म लाया ।  
संवत् १६१८ क चत सुदि ५ को रावजा क साथ स लडाई की । जीत मिर्जा  
की हुई । रावजी क सरदार काम आये । मिर्जा का साथ बहुत सा काम आया  
(=भारा गया) । वेत मिर्जा के हाथ रहा । (उसने) मंडता न लिया ।

रावजी न कवर चंद्रमन का मंडत देवीनामजी क पाम भेजा । राठोड

रावजी कन्नर चद्रसेणजी नू मेडत दवीनामजी वनै मलियो राठाड प्रथीराज कूपान्त १, सोनगरो मानमिध जग्नराजात २ राठाड सावळणाम ३ और ही उमरात्त कुन्नरजी र माथै मनिया दाय हजार घाटा साथै मलिया रावजी कह्या—व करण रो डव हुय तो बड कीज्यो नहा ता दवीदासजी न ल नै उरा आवज्या

अ मेडतै गया पातमाही फौज मबळी देखी आ डेरा पाछा किया देवीदासजी भुरड मालकोट म पठा मुगना मालकाट घेरिया राठाड सावळणाम उदमिधात मुगना साथै पडिया चाकर खाट म घाल ल निसरिया मुगल लार चनिया च्यार नाम माव आय पडिया सावळणाम भली भात काम आयो

मालकाट घेरो मुगल नित डोवा कर रावजी नित दर्दामजा-न लिय— ये तो थारो नात्र करी हो पण म्हारी हाकुराई लोवा हो सवत १६१८ रा फागण बड धरा लागी मालकाट रा बुरज अक सुरग म उडिया मुगल हल्ला उपर हल्ला कर जद जमलजी नू सरफुद्दीन बात करी

मालकाट बारै देवीनामजी निसरिया जमलजी सरफुद्दीन मालकाट गी

पृथ्वीराज कूपान्त, मानगरा मानमिह जग्नराजात राठाड सावळणाम तथा और भी मरदार कुन्नरजी के साथ भेजे । दो हजार घोडे साथ भेजे । रावजा न कहा—लडाई करन का तब हा तो लडाई करना नहीं ता दवीनामजी का लकर चले आना (उरा=अधर, उरा आवणो यह मुत्तवरा है जिमका जथ है चला आना इसी प्रकार परो जावणा=चला जाना) ।

ये लाग मडत गये । वादशाही फौज मबल देखी । अहाने डेर लौटा लिय (=वापिस जा गय) । दवीनामजी लौटकर मालकाट म बठ गय (पठा < प्रविष्ट) । मुगना न मानकाट का घर लिया । राठाड सावळणाम उदमिहात मुगना क साथ (लडता हुआ) गिरा । सेवक खाट मे डालकर नकर निकल गय । मुगन पीछे चड़े । चोर कोम पर जाकर टूट पड़े । सावलदाम भली भाति (लडकर) काम आया ।

(मुगला न) मालकोट के घेन (डाल दिया) । मुगल नित्य हमना करत है । रावजी नित्य दवीदासजी को लिखत है कि आप तो अपना नाम कर रह हा पर मरा राज्य खा रह हो । सवत १६१८ की फागुन बदि म (मालकाट का) घेरा लगा । मालकाट का अक बुज सुरग स उड गया । मुगल हल्ले पर हल्ला करते है । तब सरफुद्दीन न जयमलजा से बात की ।



राज जाग उभा देख रावजी देवीदामजी नू दिखी हुती वा रा पिजमतदार र  
 कन हुती जेक मुगल बद्रुक लेण भूविया बद्रुक कटियाळी गडी मुगल र माथ  
 जटा गटा रा लगणा नू नाक म भेजी निमरा मुगल मर गया जा काम देख  
 जमन मरफुद्दीन नू कह्यो—देवीनास जीवता जोधपुर गयो तो रावजी-नू  
 जापा ऊपर जरर ल आत्मी इण नू मार लणो जा सला करी

सरफुद्दीन जमल फौज ल चनिया गाव सातलियावाम जाय पाहता आ  
 री फौज रो नगरा आ गाइददामजी मुण घोडा ठामिया

सवत १६१८ रा चत मुदा १५ राठोड जमल मिरज सरफुद्दीन गाव  
 सातलियावाम रावजी मानजी री फौज-नू जग कियो राठोड देवदास  
 जनावन वगर रावजी रा घणा उमराव माराणा देवीनास जतावत कन घाण  
 पाच स हुता न जमन कन मिरजा सरफुद्दीन कन घणी फौज हुती देवीनास  
 रुस्तम ज्य जग कर काम आया

( ६ )

आ चत हुवा पछ मडता माथ रावजी कटक किया नही इण राड हुता

देवादासजी मालकोट के बाहर निकल । जयमलजी और शफुद्दीन  
 मालकोट की पौर क सामने खड देख रहे हैं । रावजी न देवीनासजी का जक  
 बद्रुक दी थी । वह उनक विदमनगार (=सवन) के पास थी । जेक मुगल बद्रुक  
 लन को भपण तब देवीनासजी न कडीनार लाठी मुगल के मिर पर मारी ।  
 लाठी के तगन न भजा नाक म जाकर निकला और मुगल मर गया ।

यह काम देखकर जयमन ने शफुद्दीन को कहा—देवीनास जीता हुआ  
 जोधपुर चला गया तो रावजी को अपने पर (=हमार ऊपर) जरर (चत)  
 ने आवेगा । इसको मार लना है । यत् मलाह की ।

तब जयमल (और) शफुद्दीन फौज लकर चढ़ । गाव सातलियावाम म  
 जा पट्टच । उनकी फौज वा नगरा (नगारे का गद) सुनकर इन गाविददासजी  
 न घोणा को ठहराया । सवत १६१८ क चत मुदी १५ राठोड जमल और मिरजा  
 शफुद्दीन ने सातलियावास गाव म रावजी मानदेवजा की फौज स युद्ध किया ।  
 राठोड देवीनास जतावत जाण रावजी क बहन-मारे सरदार मार गय । देवीनास  
 जतावत के पास ५०० घोडे थ और जयमन क पास और मिरजा शफुद्दीन क  
 पास बहुत फौज थी । देवीदास रुस्तम जस युद्ध करके काम आया ।

( ६ )

यह लड़ाई होने के बाद रावजी न (फिर) मेडते पर सना नही भेजी

गद्य आठवै महीन रात्र मानदेजी देवलाक हुवा रात्र चद्रसेण रै भाइया-भू  
अणवणत रही जिण भू मेडता रा नाम न तिया सरफुद्दीन दिली गया जैमल रो  
बटो वीठळदास मेडता री जागीरी भुजब घोडा रजपूत ल पातसाह अकबर री  
चाकरी म गयो

मवत १६१६ रा काती मुदी १२ जोधपुर रात्र मालदेजी देवलाक हुवा  
जोधपुर, सोजत पाहकरण रात्र चद्रसेण र फळोधी उदयसिंघ र सिवाणा  
रायमल र रह्या

(=चढाई नही की) । इस लडाई क हान के बाद आठवे महीन म राव  
मानदेव जी देवलोक हुअे (=स्वग मिघार) ।

राव चद्रसेन की (जा मालदेवजी का उत्तराधिकारा हुआ) भाइयो से  
जनबन रही । जिमसे उसन मेडता का नाम तहा तिया । सरफुद्दीन दिल्ली गया ।  
जयमल का बटो विठ्ठलदास मेडता की जागीर के भुजब घोडा और राजपूत  
(=सैनिक) लकर चादगाह अकबर की सेवा म गया ।

स १६१६ की कार्तिक सुदी १२ को जोधपुर म राव मानदेवजी देवलाक  
हुअ । जोधपुर सोजत और पोरकरण राव चद्रसेन के फौजी उदयसिंह के और  
मिवाणा रायमल क (अधिकार म) रहे । (चद्रसेन उदयसिंह और रायमल  
राव मालदे के पुत्र थ) ।

## जेसलमेर-र पटवा-रो सघ (उनीसवी गता—चतुथ चरण)

[ शिला-लेख ]

[ मकलित जग उनीसवी गता—के उत्तराध क गिलालेखीय गद्य का नमूना है । सवत १८६१ मिति आपाठ सुदी ५ को भट्टारक श्री जिनमहे द्र सूरि की प्रेरणा स जेसलमेर क सुप्रसिद्ध पटवा-शरिवार न सपरिवार सिद्धाचल ताय को यात्रा का सघ निकारा था । इम शिलालेख म उसी का वणन है । सपरिवारो सघ की निकासी स्वागत सत्कार रथ यात्रा प्रतिष्ठा भोज सघ-व्यय सघ प्रव घ आदि क विवरण बड़ी बारीकी के साथ दिय गय है । ]

सवत १८६१ ग मिति आपाठ सुदि ५ दिन श्री जेसलमेर नगरे महाराजा धिराज महागवलजी आ १०८ श्री गजसिंघजी राणावत श्रीरूपजी बापजी विजय-राज्य बहत्तर भट्टारक गच्छ जगम युग प्रधान भट्टारक श्रीजिनहप सूरिभि पटप्रभाकर जगम युग प्रधान भट्टारक श्री १०८ श्री जिनमहेद्रसूरि उपदशात श्रीवाफणा गात्रे देवराजजी तत्पुत्र गुमानचदजी भार्या जता तत्पुत्र ५—(१) बहादुरमल्लजी भार्या चतुरा (२) मवाईरामजी भार्या जीक्षा (३) मगनीरामजी भार्या परतापा (४) जोरावरमलजी भार्या चौथा (५) प्रताप

सवत १८६१ के मिति आपाठ सुदि ५ क दिन श्री जेसलमेर नगर म महाराजाधिराज महागवलजी आ १०८ श्री गजसिंघजी राणावशाय रानीजी श्री रूपजी न पित्र-तुय क विजयी राज्य म बृहत खरतर के भट्टारक गच्छ के जगम युग प्रधान भट्टारक श्री जिनहप सूरि के पट्ट प्रभाकर जगम युग प्रधान भट्टारक श्री १०८ श्रीजिनमहेद्र सूरि के उपस्थ स—

श्री वाफणा गात्र म देवराज जी । उनक पुत्र गुमानचद जी जिनकी पत्नी जता । उनक पुत्र पाच—१ बहादुरमलजी पत्नी चतुरा २ सवाईरामजी पत्नी जीक्षा ३ मगनीरामजी पत्नी प्रतापा ४ जोरावरमलजी पत्नी चौथा ५

चदजी, भार्या माना—सपरिवार सहितन सिद्धाचळजा रा सघ काडघा जिण री विगत—

जेसळमर उदपुर काट-सू कुकुम-पण्या मव दमात्ररा मे दीनी च्यार च्यार जीमण किया नाळेर दिया पछ मघ पानी भेल्लो हुवा उठ जीमण च्यार किया मघ तिलक करायो मिति महा मुदि १३ दिन नटटारक श्रीजिनमहेद्रसूरिजी श्रीचतुर्विध सघ-ममक्षे दिया पछ मघ प्रयाण किया

माग म दमना मुणता, पूजा पडिकमणादि करता नाते क्षेत्रा म द्रव्य लगायता जायगा जायगा सामेळा हाता, रथ जात्रा प्रमुख महाच्छत्र करता श्री पचतीर्थीजी वामनावाडजी जावूजी जीरावळाजी तारगाजी सख्खरजी पचामरजी गिरनारजी तथा मारग माह सहारा रा सब देहरा जुहारघा इण भात सब ठिकाण मंदिर मन्दि दीठ चढापा किया मुगट कुडळ हार कठी भुजबध कण श्रीफळ नगदी चद्रवा पूठिया इत्यादिक माटा तीथ माथ चढापो घणा हुवो गहणो सब जडाऊ हो सब ठिकाण लाहण जीमण किया सहसा वन रा पगथिया कराया

प्रतापचदजी पत्नी माना । इहान परिवार सहित सिद्धाचलजी का मघ निकाला । उमका विवरण (नीचे है) ।

जेसळमेर उदयपुर काटे सं कुकुम पत्रिया मव बाहर क गावो म दी । चार जीमण (=भोज) किय । नारियल दिये । पीछे सारा सघ पाली म इकटठा हुआ । वहा चार भोज किय । सघ तिलक करवाया मिति माघ मुदि १३ क दिन भट्टारक श्रीजिनमहेद्रसूरिजी ने चारो प्रकार के सघ (साधु साखी धावक और श्राविका =चतुर्विध सघ) क सामन (तिनक) दिया । पीछे सघ न प्रस्थान किया ।

माग म दक्षना मुनते पूजा प्रतिव्रमण आदि करत, साता पुण्य क्षेत्रा म द्रव्य खच करत जगह जगह जगवानी (=स्वागत) होत रथ-यात्रा जादि महोत्सव करत श्री पचनीर्थीजी वामनवाडजी जावूजी जीरावलाजी तारगा जी सख्खरजा, पचामरजी गिरनारजी का तथा माग म गहरा के जीग गावा क सब मंदिरा का, अभिवन्त किया । इस प्रकार मभी स्थानो मे प्रत्येक मंदिर म चढावा किया । मुकुट, कुडन हार कठी भुजबध कड नारियल नकदा चन्नेव पूठिन इत्यादि । मोट तीथ पर चढावा बहून हुआ । गहना मव जडाऊ (=रत्नजटित) था । मव स्थानो पर लाहन जोर भोज किय । महमावन की सीडिया बनवायी ।

उठ सू सात कोम ठर गाम सू श्रीमिदगिरिजी मात्या सू वधाय न पालीगणै  
ढा हगाम-भू गाजा-वाजता तळती रा मन्दि जुगार डेरा दाखल हुवा

२४ त्ति मित्ती बसाल सुदी १४ त्ति गान्तिव पुष्टिक हुवा श्रासिदगिराजी  
पवत पर चण्या श्रीमूळनायक चौमुखी जी खरतर वमी रा तथा दूजी बस्या  
व जुगारी माम मत्रा रया उठ चढापा घणो हुयो अगद ताम जात्री भेडा  
द्वारा—पूरव मारवाड मत्राट गुजरात दूणाड हाडोती, कछ भुज मालवा,  
मिध पजाब प्रमुख देसा रा उठ जाण रवियो १ मेर १ मिथा, घर  
ठीठ दीधी जीमण पाच मधया मोटा कियो जामण १ दाई बीजू कियो और  
जीमण पण घणा हुवा श्रीचौमुखीजी र वारण आळा म गामुर यक्ष चक्रेश्वरी रो  
प्रतिष्ठा करावन पधराय चौमुखाजी रो मितर सुधराया अक नक्षो मदिर  
करावण वास्त नीत्र भरामी जूना मन्दि रा जीर्णोद्वार करायाज म  
पुफळ कियो

गुरु भक्ति इण मुजब कीनी—ग्यार श्रीपूज्यजा था २१०० साधु-साक्षी  
प्रमुख चौरामी गच्छा रा तिहा प्रथम स्व गच्छ रा श्रीपूयजी रो भक्ति साक्षी

वहा से मात कोम ठर गाव से श्री मिदगिरिजा को मोतियो से वधाकर  
पानीतान बड समाराह मे गाजे वाज सन्ति ततहुटी के मदिर का अभिवन्दन  
कर डेगे म प्रविष्ट हुअ (=आय) ।

दूसरे दिन मित्ती वगाय सुदि १४ के त्ति गान्तिव-पुष्टिक क होन हुअ श्री  
मिदगिरिजी पवत पर चड़े । श्री मूलनायक चौमुखीजी खरतरा के वमी क तथा  
दूमरी वमियो के मक को अभिवदन कर गवा मन्दिने रह । वया चढावा बहुत  
हुआ । दाई ताल यात्री इफटे हुअ पूरव मारवाड भेवा गुजरात दूणाड  
(जयपुर राज्य) कछ भुज मालवा दक्खिन मिध पजाब आदि देगे क ।  
वहा तहान अक रपया और अक सर मिसरी प्रति घर (के हिमाव से) दिया ।  
पाच बडी जवनारें (=भोज) सधकिया ने की । अक जेवनाग बहुत बीजू ने  
की । और जेवनारें भी बहुत हुइ । श्री चौमुखीजी के द्वार पर ताक म गोमुर  
यक्ष चक्रेश्वरी की प्रतिष्ठा कराकर पधराकर (स्थापना करके) शिखर को  
सुधरवाया (=ठीक करवाया) । अक नया मदिर बनवाने के लिअे नीव  
भरवायी । पुराने मदिरा के जीर्णोद्वार (=मरम्मत) करवाय (जूना < जीण  
जुण्ण) । ज म को सफत कियो ।

गुरु भक्ति इस मुजब की । ग्यारह श्रीपूज्य ये चौरासी गच्छो क २१००  
साधु साक्षी जादि । वहा पहले अपन गच्छ के श्रीपूयजी की भक्ति की ।

हजार पाच रो नग माल दियो दूजो यरन भर दियो पछै अनुग्रमि मारा दूजा श्रीपूजा री माधु मात्रिया री भक्ति माचकी जाहार पाणी, गाडिया रो भाडो तबू चीवररो ठाण दीठ ४१ निया नग दुमालाराळा नै दुमाला दिया सेवग ५०० हा, जिणा न जण दीठ ४२ निया, राटी-वरच अलग पहरण रा माजा, ओग्रघ, सरकी मारु रुपया चाहीज्या जिणा-न निया

पछै भट्टारक श्रीजिनमहेन्द्रमूरिजी पास मिघण्या इवतीम सघ माला पहरी जिण मे माला नो गुमास्त मालगराम मन्वरी-न पहरायी पछै बडा जाटपर मू तळेनी रो मन्दि जुगार डेरा दाविल हुना जाचका नै दान दीनो पछै जीमण एक कियो माघम्ही-नै मिरपात्र निया राजा डेर आयो, जिण न हाथी मिरपात्र म दियो दूजा माग म राजकी नवाव प्रमुख जाया डेर जिणा-न राज मुजब मिरपात्र निया श्रीमूळनायकजी र भगार र ताळा तीन गुजरातिया रा था मू चौथा ताळो सघ-या थाप रा दिया मदावत मरु है ही इमा दो मोटा काम करया

पछै सघ कुगळ क्षेम मू अनुक्रमे राघणपुर आयो जठे जगरेज श्रीगौडाजी रा

साव हजार का नवद मान निया । दूमरा खच (भी) भर निया (=चुवा दिया) । पाछे क्रम क्रम म दूमरे खच श्रीपूज्या की और साधु-मात्रिया की भक्ति की । भाजन पानी गाडियो का भाडा तबू चीवर और प्रति स्थान ४१ नक निया । टुगान वाला का दुगाल निया । सवक ५०० थ, उनको प्रति व्यक्ति ४२ निया । राटी सघ (भोजन खच) अलग (दिया) । पहनन के मोज औपधि खच के लिअे रुपय जिनका जरूरत थी उनको दिय ।

पछै भट्टारक श्री जिनमहेन्द्र मूरिजी के पास सघवियो ने इवतीम सघ माला जे पहनी । उनम दो माला जे गुमास्ते मात्रिग्राम मान्द्वरी को पहनायी । पीछे बडे जाडवर (=समारोह) म तलहटी के मन्दि का अभिवत्न कर डरा म प्रविष्ट हुअे (=आय) । याचका को दान दिया । पीछे जेक भोज किया । स्वधमियो को सरोपाव दिये । राजा डरे आया । उमका हाथी सरोपाव म दिया ।

माग म जा और राजा, नवाव आदि डरे पर जाय उनको राज्य क अनुमान सरोपाव दिये ।

श्रीमूळ नायकजी के भडार क ताळे तीन गुजरात वाली क थ मा चौथा ताना सघवियो ने अपना लगाया । मदावत गुरु है ही (चल ही रहा है) । अने नो बडे काम किय ।

दशम करण-न आया उठ पाणी नहा धो, सू गेवाऊ नदी नीसरी श्रीगौडीजा न हाथी र होद विराजमान कर सघ न दरमण दिन सात इक्कल करायो चत्पाय रा माण तान लाग्य रुपिया आया मत्ता महीना रया जीमण घणा हुवा श्रीगौडीजी र विराजण न बडा चीनडो पक्को करायो ऊपर छनरी वणायी घणा द्रव्य खच्च्यो बडा जम जाया जक्षत नाम कियो साथ गुमास्ता महेश्वरा साळगराम हो जिण न जन रा गिन्न रा सब तीथ करायो

पछ अनुक्रम सघ पाला जाया जीमण जब कर न दानमलजी कोट गया पछ भाई चार जसळमेर आया डरा दरवाज बाहर कियो पछ सामळा बडा ठाठ मू हुवा श्रीरात्रळजी सामा पधारया हाथी र होद सघव्या न श्रीरात्रळ जी आप र पूठ बसाण न सारा महर म हुप दहरा जुहार उपाश्रय आय हवेत्या दाखल हुवा

पछ सब मन्देश्वरी बोरे छत्तीम पान न लुगाया समेत पाच पवनान सु जिमाया ब्राह्मणा न जण दाठ रुपिया अब दक्षणा रो दिया

पीठे अनुक्रम स सघ कुशन क्षेम से राधनपुर आया जहा अग्रज श्री गौरीजी के दशन करले आय । वहा पानी नही था सो अहृदय नदी निकली (गवाऊ फारसी गब स) ।

श्री गौडीजी को हाथा क होट पर विराजमान करके सघ का मात तिन निरतर दगन कराये । चडावे के साइ तीन लाख रुपये आय । सवा मनीन रह । भोज बहुत स हुअे । श्री गौरीजी के विराजन (बठन) क लिये बडा चीनरा पक्का करायो । ऊपर छत्री बन्वाया । बहुत द्रव्य खच कियो । बडा यज्ञ जाया (=मिला) । नाम अक्षय कियो । साथ म गुमास्ता माहेश्वरी जानि का गतिग्राम (नाम का) था । उमका जन क जीग निव के सब तीथ करवाय ।

पीठे अनुक्रम स सघ पाली आया । (वहा) जब जवनार करके दानमलजी कोटे गया । पाछ चार भाई जमळमेर जाय । दरवाजे क बाहर डर किये । पीठे सामेना (=जगाना स्वागत) बडे समारोह से हुआ । श्री गवलजी (=जमळमेर क महाराजा) मामन आय । सघवियों का हाथिया क होट पर अपन पीठे बिठाकर धा राबळजा सारे गहर म हाकर मन्त्रि का अभिवादन कर उपाश्रय म जाकर हजतिया म प्रविष्ट हुअे । पीठे माहेश्वरी मन्त्रि छत्तीम वर्णों का (?) रुपिया समेत पाच मिठान्या स भोजन करवाया और ब्राह्मणा का प्रति व्यक्ति (जणा < जन = व्यक्ति दीठ < दृष्टि) रुपया अब दक्षिणा का दिया ।

पछे श्रीराउळजी जनाने सहित मधव्या र हवेली पधारधा रुपिया-मु चौतरा त्रियो सिर-पेच कठी मात्या की बडा जडाऊ दुमाला नगदी, हाथी घाडा पालकी निजर किया पाठा श्रीगवळजी इण मुजबहीज सिरपात्र त्रियो अेक लोद्रवाजी गाम ताबा पत्रा पट्टे दियो इता इजारो कियो

आगे पिण इणा रो हवेली उदपुर राणाजी, कोटे रा महारावजी, वीकानर-रा किसनगढ रा, बूनी रा राजाजी इन्दौर रा हुनकरजी प्रमुख सब देसा रा राजवी जनान समेत इणा र घरे पधारधा देणा-लणा हजारो रो कियो दिल्ली र पातसाह रो अगरेजा र पातसाह रो दियाडी सेठ पन्नी है सो विख्यात-हीज है

पछे मध रो लाहण यात म दीवी पूतली मान रो वाळी अक, मिथी सेर जेक घर दीठ दीवी जीमण कियो पछे सर म ठाना-ठानान सिरपाव दिया गट माहेला मदिरा लोद्रवे उपाश्रय बडो चनापो कियो इण मुजब-हीज उदयपुर काट देणा लेणो कियो

मध म देहासर रो रथ हा जिण रा इकावन मो लागा प्रगडा सोने रूपे

पीछे श्री रावळजी जनाने सहित मधकियो के (यहा) हवेली म पधारे । (उहोन) रुपया स चबूतरा बनाया (चौतरा < चत्वरक) । सिरपेच मोतिया की कठी जडाऊ कडे दुशाले नकदी, हाथी घाडे पालकी निजर किये (=भेंट किय) । पीछे रावळजी ने बदले म इसी मुजब सरोपाव दिया । अेक लोद्रवाजी का गाव तामपत्र के साथ पट्टे मे (जागीर म) त्रिया । इतना इजारो किया ।

पहल भी इनकी हवेली पर उदयपुर के राणाजी, कोटे के महाराव जी वीकानर किसनगढ ओर बूनी के राजाजी, इन्दौर के हानकरजी आदि सब देसा के राजा जनान सहित इनके घर पर पधार ध देन-लेन हजारो (रुपया) का किया । दिल्ली क बादशाह की जोर अग्रजा क बादमाह की दी हुई सठ उपाधि है सो प्रसिद्ध ही है ।

पाछे मध की लाहण यात म (=विराट्टी म) दी । सान वी पुतली अेक वाली अेक म्ग मिसरी प्रति घर दी । जन्दार की । पीछे गहर म खास-नाम लागो को सरपात्र दिय । गढ के भीतर वान मदिरा म और लोत्रवे म उपाश्रय म वना चडावा किया । इसके अनुमार ही उदयपुर जीर कोटे मे दना जेना किया ।

मध म दहामर का रथ था जिमक इकावन मी (रुपय) लग । मान रूपे के दा प्रगडे य जिण के दस हजार (रुपये) लग । मंदिर के साने चादी क



रा दो जिण रा दम हजार लागा मंदिर रा सोन रूपरी बामणा रा पन्ह  
हजार नागा दूजा फुत्कर सरजाम रा लाख अक रुपिया लागा

हन्न सघ म जायता हो जिण रा विगत—तोफा ४ पट्टण रा नाग  
४००० असवार १५०० नगर निमाण समेत, उरपुर गणाजी रा असवार  
५०० नगर निमाण समेत काट रा महाराजजी रा असवार १०० नगर  
निमाण समेत जोधपुर रा राजाजी रा असवार १० नगर निमाण समेत  
पायटन १०० जेमलमर रा रावलजी रा, जमवार २०० टूकर नवान रा  
जसवार ६०० फुत्कर जमवार २०० घर जोर अगरजी जावतो चपडामी  
तिनगा सानरी रूपरी घाटवाळा जायगा २ परवाना वाळाया अब पालक्या ७  
हाथी ४ म्याना ५१ रथ १००, गाडिया ४०० ऊट १२०० इतरा ता सघत्या  
रा घर सघ नी गाडिया ऊठ प्रमुख वारा मव तरच रा तेवाम नाग रुपिया  
लागा

वरतना क पद्दह हजार लग । दूसरे फुत्कर सरजाम क अक लाख रुपय लग ।

अब सघ म जो सरजाम था उम का विवरण । तोपें चार । पलटन के नाग  
चार हजार । सवार पद्दह सौ नगर निशाण क सहित । उदयपुर के राणाजी  
क सवार पाच सौ नगारे निशाण के सहित । कोटे के मठागवजी के सवार  
अक सौ नगारे निशाण सहित । जोधपुर क राजाजी क सवार पचास नगर  
निशाण सहित । जसलमर क रावलजी क पदल अक सौ । टोक क नवाब क  
सवार दा सौ । सवार चार सौ फुटकर । सवार दा सौ घर क (=निजी) ।  
ओर जयजी इतजाम तिलग चपरासी सुनहर रूपहर घोटे वात जायगा दो  
परवाना पहचान वान जोर पालकिया सात । हाथा चार । म्याना नाम सवारी  
इक्यावन । रथ अक सौ गाडिया चार सौ ऊठ पद्दह सौ । इतने ता सघवियो  
क निजी । सघ की गाडिया ऊठ आरि अलग । मार रच के तेवीस नाग  
रुपय लग ।

## भीखणजी-रा सम्मरण

( उ नासवी गना दी—उत्तराध )

[ जयाचाय ]

[ स्वतावर जेना क श्री जयाचाय स्वामी भीखणजी द्वारा सस्थापित तरापथ संप्रदाय क चतुथ आचाय हुए। इनका जन्म स० १८६० म आश्विन शुक्ला १४ का राट्ट (मार्गवाड) म हुआ। इहोन ६ वष की अवस्था म स० १८६६ म प्रवज्जा ग्रहण की। हमराजजी स्वामी तक विद्या गुरु थ। स० १९०६ म य आचाय पद पर आगीन हुए। अपन आचाय कान म गहान कइ नयी योजनाए प्रारंभ की। सवत १९३८ म इनका देहावसान हुआ।

तरापथ सम्प्रदाय म जयाचाय बहुत बड विद्वान हुए। इनका लिखित साहित्य बहुत विद्वान है। इनकी सर्वोत्कृष्ट कृति भगवती सूत्र का राजस्थानी रूपांतर है जा अनेक राग रागनिया म है।

भिक्षु हृष्टान्त' जयाचाय द्वारा सगृहीत ग्रथ है। इसम स्वामी भीखणजी क ३१२ जावन प्रसंगा का सकलन है। ये जीवन प्रसंग मुनि हेमराजजी क लिखाय हुए हैं जा स्वामीजी क अत्यंत प्रिय गिण्य थ। उनस मुनकर जयाचाय न उह लिपिवद्ध किया।

सकलित जस भिक्षु हृष्टान्त स त्रिया गया है। यह अश उ नीमवी गनाया के उत्तराध क गद्य का नमूना है। इसम तरापथ सम्प्रदाय के प्रथम आचाय स्वामी भीखणजी क जीवन के सम्मरण है। इन सम्मरणो स स्वामीजी क चरित्र ओर स्वभाव पर अच्छा प्रकाश पडता है। गली घरेलू होत हुए भा साहित्यिक है। ]

-१-

पुर भीलवाड त्रिच स्वामीजी पधारता दुगार नी तरफ रा अक भायो

( १ )

पुर (=मवाड प्रदेश का अक कम्बा) जीरा भीलवाडे (=मवाट प्रदेश का अक प्रसिद्ध गहर) के बाच म। स्वामी जी (के)। पधारते (पट धारण स)

रा दो जिण रा दस हजार लाग़ा मदिर रा सोन रूपरी वामणा रा पन्ह  
हजार नागा दूजा फुटकर मराजाम रा लाग़ा अक रुपिया नागा

हउ मघ म जावता हो जिण रो विगत—सोफा ४ पळटण रा लाग़ा  
४००० असन्नार १५०० नगार निमाण समेत उतपुर गणाजा रा असवार  
५०० नगार निमाण समेत काट रा महारावजी रा असवार १०० नगार  
निमाण समेत जाधपुर रा राजाजी रा असन्नार ५० नगार निमाण समेत  
पायल्ल १०० जसळमर रा रातळजा रा असन्नार २०० टूकर नवाब रा  
असन्नार ४०० फुटकर असन्नार २०० घह और अगरेजी जावतो चपडामा  
तिनगा मोनरी रूपरी घाटवाळा जायगा २ परवाना वाळावा अक पाचख्या ७  
हाथी ४ म्याना ५१ रथ १०० गाडिया ४०० ऊट १५०० इतरा ता मघविया  
रा घर मघ रो गाडिया ऊट प्रमुप यारा मव खच रा तेवाम नाग रुपिया  
लागा

वस्तना क पद्रह हजार नाग । दमर फुटकर मराजाम के अक लाग़ा रुपय लग ।

अउ मघ म जो इतजाम था उम का विवरण । तापे चार । पलटन क नाग  
चार हजार । सवार पद्रह सौ नगार निशान के सहित । उदयपुर के राणाजी  
क सवार पाच सौ नगारे निशान के सहित । काट के महारावजी के सवार  
अक सौ नगारे निशान सहित । जाधपुर के राजाजी क सवार पचास नगार  
निशान सहित । जमलमर क रावतजी क पदव अक सौ । टाक के नवाब क  
सवार दा सौ । सवार चार सौ फुटकर । सवार दो सौ घर क (=निजी) ।  
और अगरेजी इतजाम तिनग चपरासी सुनहर रूपहर घाटो घाल जायगा दा  
परवाना पडुवान वान जीर पालकिया सात । हाथी चार । म्याना नाम सवारी  
इक्यावन । रथ अक सौ गाडिया चार सौ ऊट पद्रह सौ । इतने ती मघविया  
के निजी । सघ की गाडिया ऊट आनि जतग । मार खच के तेवीम लाग़ा  
रुपय लग ।

## भीखणजी-रा सस्मरण ( उ नीमवी गताग्नी—उत्तराध )

[ जयाचाय ]

[ श्वतावर जना क श्री जयाचाय स्वामी भीखणजा द्वारा सस्थापित तरापथ सम्प्रदाय क चतुर्थ आचाय हुए । इनका जन्म स० १८६० म जाश्विन शुक्ला १४ का राहट (मारवाट) म हुआ । बचपन ८ वर्ष की अवस्था म स० १८६६ म प्रवर्णा ग्रहण की । हमराजजा स्वामी इनक विद्या गुरु थ । स० १९०६ म य आचाय पद पर जामिन हुए । जपन आचाय काल म बहान कइ नयी योजनाए प्रारंभ का । सन् १९३८ म इनका देहावसान हुआ ।

तेरापथ सम्प्रदाय म जयाचाय बहुत बड विद्वान हुए । इनका त्रिलिप्त साहित्य बहुत विगाल है । इनकी सर्वात्कृष्ट कृति भगवती सूत्र का राजस्थानी रूपांतर है जो अनक राग रागनिया म है ।

भिक्षु दृष्टान्त' जयाचाय द्वारा सृष्टीत ग्रथ है । इसम स्वामी भीखणजी के ३१२ जीवन प्रसंगा का सकलन है । य जीवन प्रसंग मुनि हेमराजजी क लिखाय हुए है जा स्वामीजी क अत्यंत प्रिय शिष्य थ । उनम सुनकर जयाचाय न उह निपिबद्ध किया ।

सकलित अग भिक्षु दृष्टान्त' स किया गया है । यह जस उ नीमवी गताग्नी क उत्तराध क गद्य का नमूना है । इसम तरापथ सम्प्रदाय के प्रथम आचाय स्वामी भीखणजी क जीवन के सस्मरण ह । इन सस्मरणा स स्वामीजी क चरित्र और स्वभाव पर अच्छा प्रकाश पडता है । गली घरेलू होते हुए भी साहित्यिक है । ]

-१-

पुर भीमनाड निच स्वामीजी पधारता ट्टार नी तरफ रा अक भाया

( १ )

पुर (=मवाड प्रान्त का जेक कम्बा) जाग भीमनाडे (=मवाट प्रदेश का अक प्रसिद्ध गहर) कवाच म । स्वामी जा (के) । पधारत (पद धारण स)

त्यो तिण पूछधा—जाप रा नाम काई ? जन् स्वामीजी बाल्या—म्हा रो म भीखण जन् ऊ बोल्या—भीखणजा रा महिमा ता घणी सुणी है मा जाप कना रूख हन् बटा हा ? म्ह ता जाण्या साथ आटवर घणो हुमी, घोटा-हाथी व पालखी प्रमुख घणा कारखाना टुमी जद स्वामीजी बाल्या—इमो टवर न राखा जन् हिज महिमा है माधु रा माग्ग आ हिज है इम सुण न जी हुत्रो

-०-

कनका म परपत्नी बन्टा ठाकर माहकममाहजी पूछधा—आप न गाम-गाम पणतिया आव घणा योग तुगाद आप-न चाव नर नारी जाप न देख न राजी णा हुव काई भाषा न आप वनभ घणा लागो मो काई कारण ? जाप म मो काई गुण ? जद स्वामाजी बोल्या—नाई माहूकार परदेस थो तिण घर रमीन मरयो खरची मनी सठाणी वामीद-न ख न राजी घणी हुयी ऊहा

समय जाने समय यात्रा करते समय । दूडाड की (दूडाड जयपुर राज्य का राचीन नाम था) आर का अेक भाई (मनुष्य) मिला । उसने पूछा । आपका नाम क्या । तब स्वामीजी बोले । मेरा नाम भीखण । तब वह बोला । भीखणजी की महिमा तो बहुत सुनी है (कि वे बहुत बडे महात्मा हैं) । व आप अकेले नाय म सेवक आदि कोई नहीं वृक्ष (के) नीचे बठे हैं ? हमन ता जाना (था) हम तो समझत थे । साथ म । आटवर प्रमान । बहुत । होगा । गोडे जीर हाथी । रथ और पालकी । आदि । बहुत । कारखाना (साज-नामग्री जो कारखाने म सगृहीत रन्ती है) । हागा । तब स्वामीजी बोल । बसा आटवर (हम) नहा (=रगते है) तभी महिमा है । माधु का माग यही है । जमा मुनर (वह पुरुष) प्रमान हुआ ।

( २ )

पछवा (=मेवाड का अेक कस्बा) म बठ हुअ जब स्वामीजी केतवा म बठ व तब । ठाकुर मोहकमसिंहजी न पूछा । जापको गाम गाव (म) दिनपिया (प्रायनाजें) जाती ह । बहुत स्त्री पुरुष जापका चाहत हैं । स्त्री पुरुष जापको खरकर बहुत प्रमान हाते है । वन्नों जीर भाण्या को जाप बलभ (प्रिय) बहुत गगने हैं । मो (मका) क्या कारण (है) । जाप म जमा क्या गुण (है) ।

तब स्वामाजी बान । कोई माहूकार परपत्नी म था । उसने घर पर मन्गवाहक मजा । खर्चा भजा । सठाणी मन्गवाहक का दगवर प्रमान बहुत हुई । उष्ण (गम) पानी म उमर पर धुताय । अच्छी तरह भोजन

पाणी-सू उण रा पग धोत्राया आछी तरह भाजन कर-न जीमात्र कने बठी ममाचार पूछै—साहजी डीला में किसायक है सुख-साता है ? साहजी कठ पाड है ? कठ वैम है ? कामीद जिम जिम समाचार कहै तिम तिम मुण न धणी राजी हुवै । पिण कामीद-न प्य नै राजी हुवा रा कारण धणी रा ममाचार कहै तिण-सू । तिम म्ह भगवान रा गुण बतावा छा ममार नै भाष रा भाग बतावा छा तिण कारण लाग लुगाईं म्हा मू राजी हुवै छै

-३-

रजपूत-न माय बोळानो लइ किण ही गाम जाता रजपूत वाल्या—तमाखू विना आधा हालीज नही जद स्वामीजी वाल्या—ठाकरा । आगे चाला दिन घाडो है रजपूत वाल्यो—तमाखू विना अबै तो हालीजै नही जद स्वामीजी पाछ रहि नै आरणिय छाण-नै ना-हो वाटि पुणे वाघ न कहधो—ठाकरा । तमाखू चोखी ता है नही चसडी है जन् तिण रजपूत चिबठी भर-नै सूधी

करके (बनाकर) जिमाती है भोजन कराती है । पाम म बठी हुई समाचार पूछती है । साहजी शरीरो म (=शरीर मे) कस अक (=कसे) है । मुख और स्वास्थ्य (तो) है ? साहजी कहा मोने हैं । कहा बैठते हैं । सदेश बाहक जसे-जैसे समाचार कहना है वसे वस मुनकर बहुत प्रमन होती है । परन्तु सदेशबाहक को देखकर प्रमन होन का कारण (क्या) ? (बह) पति क ममाचार कहता है इसमे (इम कारण) । वैसे ही हम भगवान के गुण बताते हैं । ममार को भाष का भाग बनात है । इम कारण लोग लुगाईं हम से प्रमन होत हैं ।

( ३ )

(किसी) राजपूत को । साथ म (साथ साथ) । साथ रहकर पहचान वाले व्यक्ति के रूप म । अकर । किसी भाव (को) । जाते (=जात समय) । राजपूत बोना—तवाकू (के) विना आग नही चला जायगा । तब स्वामीजी वात । ठाकुरा ! (आन्तर क तिअे बहुबचन) ठाकुर माहव । आगे चणिय । दिन थोडा (नेप) है । राजपूत वाता । तवाकू (के) विना आगे अब तो नही चला जाता । तब स्वामीजी न पीछे (पाछ > पन्च) रहकर । जगती कड का वारीक (ना-हो > इतधण) पीमकर । पुणिया वाघकर । कहा । ठाकुरा ! तवाकू अच्छा ता है नही असा है । तब उम राजपूत ने चुटकी भरकर मूधी । और रोना । ठीक ही है (अर्थात् काम चवन लायक है) । तब स्वामीजी न पुणिया

न बोन्धो—ठीक र्ज है जद स्वामीजी पुनी उणन सूपी इमी चतुराई करन मऱ टिकाण जाया

—८—

घर म ठना बटाळिया में कोई रो गहणो चार ल गया जद वोर नती म जा कुभार न वानाया कुभार र डीन में त्वता आवनो तिण मू तहून गणा तावा पुनाया कुभार स्वामीजी न पूछया—भीगणजी ! जठ किण रा भम र जद स्वामीजी ण रो ठागा उधाड करवा वहघा—मम ता भजया रा र है हिष रात्रि आऱ कुभार दरता डान जणाया घणा नोक दखता हाका र— हाख द र ! हाख द र ! जऱ नाक घाल्या—नाम बतावो जद वाल्यो —जा जा आ भजयो र मजया ! गहणा भजय तिया जद जनीन घाटो ता । उठया—भजया तो म्हा रा बकरा रा नाम है म्हा र बकर र माथ चोरा वा ! जऱ नाका ठागा जाण्या स्वामीजी लाका न वहघा—५ सूभता तो

उमरा सौपी (=दे धा) । जमी चतुराई करक । कुगल स कुगद पूवक । टिकान (=इष्ट स्थान को) । जाय (=आ गया) ।

( ४ )

घर म हान हुए (भी) । बटाळिया (=जक स्थान का नाम) म । किमी का । गहना (=गहन) । चोर (चुरा) ल गया । तऱ वार नती स अध कुम्हार को बुनाया । कुम्हार के गरीर म त्वना जाता (=जाया करता था) । उमम =मम इन्द्रिय । उमका । गहना बतान को । बुनाया । कुम्हार न स्वामीजी का (=स्वामीजी से) पूछ । हे भावणजी ! यहा किमका भ्रम घरत है (किम पर शक करत हैं) । तव स्वामीजी न उमकी ठगार्ड (धोषवाजा) (को) उधाडा (उद्धाटित खुनऱ प्रगऱ) करन ब त्रिअ कहा । मऱ ता । भजनिय का (भजनिया =भजना व्यक्तिवाचक नाम का अनान्तर वाचक रूप) । घरत हैं । अऱ । रात म रात के समय । जव कुम्हार न दवता(को) । गरीर म । आना लाया । बहुत से नाग देखने बहुत स लागे के देखते हुअ बहुत से योग क समथ । हूत्ते (=हना) करता है । डाल दे जर । डाल दे जर । तव योग वार । नाम बतावो । तऱ घाना । आ जा ओ । भजनिया, जर भजनिया । गहना भजनिय न त्रिया (है) । तव जतीन (=माधु) ऱडा उकर उठा । भजनिया ता मरे बकर का नाम है । मरे बकर ब मिर (=ऊपर) चारी त्त है (=लगत है) । तव योग न ठगार्ड (का) ममभा । स्वामीजी न लागों को कहा । जाय (=तुम) दृष्टि वाना न ता गहना गवाया । और जध

गहणी गमायो अन जाया वना सू बडासा । सा गहणा बटा-मू आसी ?

-१-

विण ही पूछ्या—महाराज ! साधा र अमाता वयू हूत ? जद स्वामीजी बोल्या—विण ही भाठा उद्याळ न हटो माथा माड्या अन पछ भाठा उद्याळण रा त्याग किया ता जाग भाठो उद्याळ्या त ना जाग पछ सूम किया ता पछ न जाग यू जाग पाप कम बाध्या ते ता भागत्रै पछ पाप रा त्याग किया निण रा दुग न पड

-६-

माह्दा माहे स्वामीजी रात्रि रा बगान वाचता जामाजी नीद घणी त जन् स्वामीजी कह्या—नीद आव है ?

जामाजी वाल्या—नही महाराज

बार-बार पूछ्या—नीद आज है ?

जन् त बहै—नही महाराज !

जन् स्वामीजी भूठ रा उधाळ बरवा वाम्न उत्पात बुढी मू बली पूछ्या—

वे पाम स (=अध क द्वाग) निकरवात = । सा अत । गहना कहा न जावगा (=मित्रगा) ।

( ५ )

विमी न पूछा । ह महाराज ! माधुओ के तकलीफ (=बीमारी) क्या गती है । तव स्वामीजी वान । विमी न पत्यर उद्यावकर नीचे मिर दिया (=नगाया) । और पीछे पत्यर उद्यालन का त्याग किया । ता । पहल (जा) पत्यर उद्यान । वह ता नगता ही है (=नगेगा ही) । पीछे गपय की तो पीछे नहा नगगा । ज्या वमहा । पहने पाप के कम बाध व ता भागत ही है । पीछे पाप का त्याग किय (=करन स) उनका दुग नहीं पटता है (=प्राप्त हाना है) ।

( २ )

मन्प म । स्वामीजा (का) । रात का । बखान (ध्याखान) जन माधु का किया हुआ घमोंपण्ये । पहत (समय) । आमाजी आमा नामक व्यक्ति । निद्रा । बून । लता है (=लता था) । तव । स्वामीजी न कहा । नीद जानी है ? आमाजा वाना—नही मन्पराज ! बार-बार पूछा—नीद आनी है ? तव व वन्ता है—नही मन्पराज !

तव स्वामीजा न भन् का उद्यावण करन क जिजे उत्तान-बुद्धि स



१। जीवो नो के ?

ही महाराज !

-७-

एण ही पूद्रयो—भीखणत्री ! थ यू कहा एक महाव्रत भागा पाचूई भाग माथ पाच किम भाग ? जण स्वामीजी वाल्या—पाप रो उण हुव जद म ई जीव दुख भागव जिम एक भिन्नाचर न महूर म फिरता पाच रो आटा मिथो रोटी करवा नागा अक ता राणी उतार-न चूला लार जेक रोटी तव सिक अेक राणी खीरा सिक अेक रोटी रो लोयो हाथ । एक राटी रो आटा कठोती म जेक कुत्ता आया सो कठोती म जेक रो आटो ते ले गयो निण कुत्ता लार भित्तारी हाठा ठ पडियो पहलो लोयो धूळ म मिल गयो पाछो आय दख तो चूना लार राटी ती ते भिनकी ल गयो तत्र री तत्र बळ गयो खीरा री खीरा बळ गयो ते अक महाव्रत भागा पाचू भाग जात्र

रारत म) फिर पूछा । आसाजी ! जीने हैं क्या ? (आसाजी न उत्तर । नही महाराज !

( ७ )

रसी न पूछा । भीखण जी ! आप या कहते हैं (कि) अेक महाव्रत टूटन चो ही टूट जाते हैं । असे अक माथ पाचा कसे टूटते हैं ? तव स्वामीजी पाप का उदय होता है तव । ससार म ही जीव दुख भोगता है । जस । भक्षाचारी को गहर म फिरत हुअे पाच रोनी का आटा मिला । रोटी करने लगा । अेक रोटी ता (तवे से) उतारकर चूल्हे के पीछे एक राणी तव (पर) भिक्ती है । अेक राटी अगारा (पर) भिक्ती है । रोनी का । लवा (=गुध हुअे गाल आट का खड जिमको बेनकर रोटी । जानी है) । हाथ म (है) । और अेक रोनी का आटा कठोती म है (कठोती ठ की परात) । अक कुत्ता आया । वह कठोती म अक राटी का आटा म ल गयो । उम कुत्त क पीछे भित्तारी दौडा । (वण) नीचे गिर पया । थ म का लवा धून म भिन गयो । धापिस आकर नेखता है तो चूट के (जो) गटी पडी थी उस बिनया ल गयो । तव पर की (राणी) तवे पर लयी । अगारो पर की अगारा पर जन गयी । एम नीति स अक महाव्रत के न पाचो टूट जाते है ।

-६-

टीकमजी रा चेला कचराजी जाळार रा वासा सिरयारी म स्वामीजी कनै जायो कहै—भीखणजी कठ ? जद स्वामाजा बोल्या—भीखण म्हारा नाम है जद ते बोल्या—आप न दखवा रो म्हार मन मे घणी थी स्वामीजी वाल्या— देखो पछ कचरोजी बोल्यो—मो न चरचा पूछा स्वामीजी वाया—थ दखवा न आया था न काद चरचा पूछा ? तद त वाल्यो—कायक तो पूछा जद स्वामीजी वाल्या—था र तीजा महाप्रत रा द्रव्य खेत्र काळ भाव गुण काइ है ? जद ते बोल्यो—जा ता भो-न काद आव नही पाना म मडी है स्वामीजी कह्या—पाना फाट गया जयवा गम गया हव ता काई करस्यो ? जद त बोल्यो—म्हारा गुरा था नै चरचा पूछी जिण रा था न जाव न आया जद स्वामीजी कह्यो—था ग गुरा चरचा पूछी तिका हीज चरचा थ मो न पूछो ऊणा-नै जाव दियो है तो था नै ई दयाला जद कचराजी बोल्या—थ ताम्हा-रै लेखा रा दाता गुरु हा सा हू था सू कठा म जीतू ? जद स्वामीजी बोल्या—म्हा र तो इमा पाता चेना कोई चाहीज नही

( = )

टीकम (<त्रिकम) जी का चेला टीकमजी पहले स्वामी भीखणजी क गिप्य रह थे । कचराजी । जानार का रहन वाला । सिरयारी (=अंक स्थान) म स्वामीजी के पान आया । (आकर) कहता है । भीखणजी कहा है ? तब स्वामीजी धान । भीखण मेरा नाम है । तब वह बोना—आपका देदन की मेरे मन मे बहुत (इच्छा) थी । स्वामीजी बाल—दखो । पीछ कचराजी बोला । मुझे चर्चा पूछिय धम चचा की बात पूछिय । स्वामी जी बोल । आप दखन को आये (है) । आपका क्या चर्चा पूछ । तब वह वाला । कुछ ता पूछिय । तब स्वामा जी बोल । आपके (आपक मत के अनुसार) तीसर महाप्रत का द्रव्य क्षेत्र बाल भाव गुण क्या है ? तब वह वाला । यह ता मुझे जाती नहा (पोथा के) पना म लिची हई है । स्वामीजी ने कहा । पना पट गया जयवा रा गया हा तो क्या करेंगे ? तब वह वाता । मर गुरुजी (जादगथ बहुवचन) न आपका चर्चा पूछा जिमका आपका जवाव नही जाया । तब स्वामीजी न कहा—आपक गुरुजी न चचा पूछी कहा आप मुझे पूछा । उनका जवाव दिया है ता आपका भा देंग । तब कचराजी वाला । आप तो मेर हिसाब क दादा गुरु है । सा मैं आपन कहा म जातू । तब स्वामाजी बो- मेर तो (मुझे ता) जस पाता चल नहा चाहिजे ।

कोई साधा रो निगा कर जन आप कुत्र कर न जठगो रहै निण ऊपर जा हटाव निघा—किण न गाम म अक चुगल रहतो मो भेकदा फौज आया ज्या न लोका रा अन धान बताय निघा फौजवाळा क्यक ता अन क्यक गया नही गाम रा नाक वार हाम गया धा, मा क्यक पाछा चुगल धन धान बताया गी वात मुण न नाका जोठभो दीवो—अरे । काम कर ? जण ऊ चुगद फौजवाळा न मुणाय न बायो—हू बतायता मकनिया नो खाटो उठ गडघा न बता नेवतो फनाणा रो ग्योडा उठ गे त बता नेवता उण रा धन फनाणी जाया गडघा त निण बता नेवतो कुवद बग्न बाकी गहघा न पिण उताय नीरा तिम नित्रक कुवद हुन न । कयता कू वात न जठगा रहै

-१०-

वडि मसार ना तथा मोभ ना मारग ऊपर स्वामीजी हणत दियो अक मारुकार र दाय म्निवा अक तो रात्रण रा त्याग क्रिया धम म घणी

( ६ )

कोई साधुओ का निदा करता है । और । स्वय । गगरत उत्पात (कुवद कुमुदि) । करके । अतग रहता है । मने ऊपर इस पर । स्वामीजी ने । गान दिया । किमी गाव म । अक चुगलखोर (=नित्रक) रहता था) । । अक दिन अक वार । फौजवाते । जाय । जिनको नोगा के धन धाय ता दिये । फौजवात कई अक ता (चन) गय । और । कई अक गय नही । अब के लोग बाहर भाग गये थ । सा कई अक बापिम आये । चुगद के (नागा का) धन धान बताय की बात सुनकर यह सुनकर कि चुगलखोर ने फौज वात को नोगा के धन धान बताय थ । लोग न (उम) उपालभ निघा । अर । मे (नीच) काम करता है । तव यह चुगलखोर फौजवातो यो मुनातर =मुनाता हुआ) धाना । मैं (यदि) प्रताता तो । अमुक का । खजाना वहा डा है यह भा बता देता । फनान का खजाना वहा गटा है यह (भी) बता ता । उमका धन अमुक जगह गया हुआ है यह भी बता देता । अम गगरत तरक बाकी रहे थ भी बता दिय । धम (ही) । निद्रक । कुमुदि, गगरली । ता है । वह निगा करता हुआ (भा) भूठ बातकर अलग रहता है ।

( १० )

फिर । ममार के जीर माग के माग पर । स्वामीजी ने । हणत दिया

समझ अन जेक जणी घम म समझ नही केनळ अेक काळ परदम म भरतार काळ कीधा सुण न घम मे न समझ त तो राव बिनापान कर, समझ त राव नहा ममता वार न वठी लाग लुगाई घणा भळा हुवा ते सब रोव तिण न सराव—अे ध य है पतिव्रता है न रोवै तिण न नि—जा पापणी ता मूवो इज वाछनी थी दण र आसू इ आव नही जने माधु किण न सराव ? माधु तो न रावै तिण-न सरावै ज प्रत्यक्ष माथ रा मारग यारा अन लाक रो मारग यारो

---

अेक मातृकार (= यापारी वणिक) क दो मित्रया (थी) । अक तो राने का त्याग किय हुअे घम के विषय म बहुत समझनी है (=थी) और जेक जनी (=जन का नारीजातीय रूप) घम के विषय म (कुछ भी) नहा समझनी (था) । और कितन-अेक समय म कुछ समय बीतन पर । पति ने परलग मे काल किया (=मर गया) यह सुनकर । (जा) घम न नही समझती है वह तो राती है, विलाप प्रलाप करती है । (और जा) समझती है वह रोती नही (सुख दुख म) समत्व की भावना धारण करके बठी रही । स्त्री-पुरुष बहुत मे इक्ठे हुअे । थ मव । जा रोती है उसे मराहते हैं (म० इलाक से) । यह वय है पतिव्रता है । जा नही रोती उसकी निंदा करते हैं । यह पापिनी ता (पति का) मरा हा चाहनी थी, इनके जासू भी नही जाते । और साधु किस मराहेगा ? साधु ता जो नहा राती उस सराहगा । इस प्रकार यह प्रत्यक्ष (है कि) माथ का माग अलग और लोक का माग अलग (है) ।

एक बीनती लिख भेजी पीछे प्रोहित साग फौज हजार चाणोम मन्त केर  
 ली तोई भगड री आमग ह्या नहा दळपत बडा जम मरद बाह्यार दख्यो  
 तद जावदीनखा मूरमिचजी री परध-म मना करी—जो भगडो किया ता पूरवा  
 हा, पण बीकानेर री मिरदाग न जानच त्य फोरो

तद लानच देय आप रा किया दळपतजी-मू मिरदार बदळिया ज्या री  
 तद—ठाकर भाजन री दनीदास जसत्रतोत रा भाइ तजसी ठाकर किसनसिध  
 रायमिधान हमार ठिकाणा मालू ठाकर मुन्तरमण प्रवीरजात ठिकाणा दद्रोवो  
 ठाकर मनहरदाम भगवानदानात ठिकाणा भूकरको, ठाकर किननसिध अमर  
 मवात ठिकाणा हरदेमर ठाकर किननसिध रायमिधान ठिकाणा गाखन्मर  
 हेमादास मादूळात बाणू रा बीका ठाकर राजमी गारधन (?) हामासर री  
 शकर वीरमद बळभद्रात नारणात ठिकाणो मैदसर ठाकर गोरधन केमोदामोत  
 शीदाव्रत ठिकाणा बीदामर ठाकर तजमा गोपाळनामान ठिकाणा गोपाळपुरो  
 तथा चाडवाम बाका गोपाळोत सात्रतसी वास फागा री ठाकर भाण  
 अमरसिधोत घडमीनर रा मथरादाम मुरताणात पारव री गवन उत्सिध  
 ठिकाणो रावनमर ठाकर गापानाय उदमिघात ठिकाणा जतपुर ठाकर जमल  
 माईदामात ठिकाणा माहेको ठाकर भीमसिध बळभद्रात ठिकाणा चूह

ई । तब बाणाही सना भागा । और (फारमी व) । दलपतसिंहजी की  
 विजय हुई । तब जावदीनखा न दिल्ली को मन्त क विजे विनती (प्रायना  
 अज विनति म) लिख भजी । पीछे पुराहित के साथ चाणोम हजार सेना की  
 मदद फिर भजी । सो भी लडाई करन की हिम्मत नही हुई । दलपतसिंह  
 ना बडा जवामन बहादुर रेखा । तब जावदीनखा न मूरजमिन्जी क परिग्रह  
 (=अनुयायीगण) के मलाह की कि नडाई करन स पडुचेंगे नही (मफल नही  
 हाय) । पर बीकानेर के सरदाग का (=मामता को) । लालच देकर बदो  
 (दूसरे पदा से अपने पय म करो पाग) ।

तब (उनका) लानच दकर अपने (=अपन पय क) किय । दलपतसिंहजी  
 से (जो) सरदार बदल गय जिनकी (उनका) याणागन (यानी नामावली)—  
 (इम प्रकार है) ।

नामावली म कुछ विषय गत—बाणू रा बीका=बाणूना गाव का  
 और बीका का वगज । बळभद्रात नारणात—बलभद्र का वग, नारण  
 (नारायण) का वगज । बीदाव्रत—बाण का वगज । वास—छोटा गाव  
 (वास का अर्थ माहत्या भी हाता है) । फोगा—जेक स्थान का नाम । तज

भापनजी नारणोत मगरासर रो, ठाकर महेश इन्द्रभाणोत सारुई रो, मडळो लखधीर भागमलोत माडणोत मिकराळी रो माबळदाम जमलोत ठिकाणा तिहाणदेसर, ठाकर लाखणनी रायमलात तजमीयोत बीको तजामर रा, ठाकर जमवतसिध गोपाळान ठिकाणा माडवा प्रधीराज जमवतोत ठिकाणा हरासर ठाकर गिरधर मानसिघात बीलावत ठिकाणो साभागनेमर लोह्न रा बीदाव्रत खगारात, ठाकर भाटी आसकरण कानावत ठिकाणो पूगळ माडूळ जमरसिघात जमळमर रा भाटी, भाटी मिरग खेतमीयोत बीठणाक रो—इतरा मूरसिघजा र मामल हुवा अह खारवार र ठाकर तजमान नू माजी कहाया जा भाटी जिण सू ता ये म्हारा मिलामी द्या मू म्हे इतरा रत्ना ता थे ई रत्नो तद तज मालजी कहाया क म्हारी बटी मूरसिघजी नू परणावा ता इतवार आत्र पीछे डोळा मगवाय मूरसिघ-नू परणाया तद आदमी पाच सौ-सू तजमालजी मामल हुवा पाछे बद ठाकुरमी जीणदासोत नू कहायो मू ओ पण हजार तीन आदमिया रा धनी हो इण-नू भटनर गावा २४२-मू पट ही तद इण कहाया

मीयोत बीका—बीका=बीका बग का, तेजमीयान=तेजमी का वंशज बीका गठाड राजपूता की अंक शाखा है जीर तेजमीयात बीका गाखा की अंक उपगाखा । भाटी=यादव वंशीय राजपूता की अंक शाखा ।

इतन (मरदार) मूरसिंह जी कं गामिल (=साथ म पक्ष म) हुअे । और सारवार कं ठाकुर तजमाल को । मांजा (=मूरसिंहजी की माता जी) न कहलाया । कि (आप) भाटी हो जिमसे (=जिम कारण से) तो मेरे सलामी हा । मा हम इतन (लोग) रहण तो आप भी रहणगे । तब तेजमालजी न कहलाया कि मरी बनी मूरसिंह को ब्याहा मेरी बटी का विवाह मूरसिंह जी स करा दो ता जेनवार (विश्वास) आव । पीछे डोला मगवाकर मूरसिंह का याहा (गला=राजा महाराजा आदि बडे नाग लडका व्याहने लटकी कं घर नही जाने थे या नही जा सकत थ तो लडकी वाल लडकी का डाली (पालकी) म बिठाकर वर के यहा पडुचा देत थ जहाँ विवाह की रम्म की जाती थी, इसका डाला देना कहा जाता था) । तब पाच सौ आदमियो से (=क साथ को साथ लेकर) । तेजमाल जी शामिल हुअे (=साथ मे जा मिल) ।

पीछे बद (=ओसवाल वंशो की अंक गाखा) ठाकुरसी जीवनदाम क वट को कहलाया । सो यट भी तीन हजार आदमिया का स्वामी या (धनी=धनी मालिक पति) । इसको भटनेर वाईस गावा स (=के साथ) पट्टे (=पट्टे म अयात् जागीर म मिली हुई) थी । (भटनर=अब इसका नाम हनुमानगट

हू तो गादी र घणी रा चाकर छ जिका गादी ऊपर रहमा जिणरी जरी कम्मू जरु बे कही जिण तर घम ता मै-म वच्चा जाय नही तथा गरी जमीरत लय आसू जरु र पण गादाधर र सामन रहसू जरु था सू तो गा ई मितिया है अक मै आया वार्दे थार भारी गरो हुसी ?

पीछ दूज दिन भगडा भलियो दळपतसिधजी हाथी असवार हुवा लार प्रासी म चूरु रो ठाकर भामसिध चलभद्रोन बठी है और सारा ई सिरदार रा घोडा हाथी रै दाळा निजीक है पाछ दून फौजा रा मुहमभ हुवा न तड ग इ मन करी तन भीमसिध चूरु र ठाकर हीन म म्हााराज न हाथ पालियो पीछ घाड असन्नार कर आदमा पचास साग दय हमार म्हाारा-नू गता किया उठ हमार र निवाव पकड फौज साग अजमर म कद किया जाना मत अह वाकानेर मूरसिधजी टीक बठा

पीछ जावदीनया दिती गयो प्रा दळपनजा कद म रया ऊपर जावन सार

\* भट्टिनगर) । तब इमने कहलाया कि मैं ता गद्दी के स्वामी का सेवक हूँ । जा गद्दी पर रहेगा उसकी सेवा करूँगा । और आप कहती है जिम तरह (=उस तरह) घम तो मुभम वचा जायगा नही । और भरी (=अपनी) जमयत (=सना) लेकर आऊँगा जरु पर गद्दीधर के मामिल रहूँगा । और आप स तो । घने हा (बहुत-स ही) । मिल हैं (=मिल गये है) । अक मर आन स (=मैं जेव और जा जाऊँगा ता) आपक क्या भारो गुरुत्व (=अधिकता वल्नी) हागा (=हा जायगा) ।

पीछ दूमरे दिन नडाई हुई (भानो—हाथ म लिया जाना जगाफार किया जाना) । दनपतसिहजी हाथी (पर) सवार हुआ (असवार=स अश्व वार) । पीछ पाछ की जोर । सेवा म चाकरी म in attendance । चूरु का ठाकुर भामसिह चलभद्र का बटा बठा है । जोर सभी सरदारो के घोडे हाथी के चारा ओर नवदाक है । पीछ ताना मेनाओ की भिन्नत हुई । जोर तब मभा न इगारा किया (सन < सजा सण्णा) । तब चूरु के ठाकुर भीमसिह न हीन म म्हााराज का हाथ टाता (=म्हााराज का पकड लिया) । पाछ घाड पर सवार करके पचाम जालमी साथ रकर म्हााराज का निस्तार पन्धते चित्र (पन्धा निय=पन्धा लिया) ।

बहा निस्तार के निवाव न पन्डकर मना के साथ अजमर म कद निय नमान के सन्नि । जोर बीवानर म मूरसिहजी टीक बठे (=राजा हुआ) । पीछ जावदीनया दिती गयो । और दनपन्नी कद म रये । (उन पर)

चौकी आदमी सौ रो है मास च्यार बंद रया

-२-

पीछे सूतै सुभाव चापावत हाथीसिंघ गोपाळदासत सामर जावता  
 आत्मिया दा सौ सू अजमेर आयो महाराज बंद हुता तठ डेग हुवा त  
 हाथीसिंह पूछिया—अ डेरा किण रा है ? तद उठ रा लोका बयो—जी । जै  
 वीकानेर रा राजा दलपतसिंघजी बंद म है तद ठाकर चोपदार मेल मुजरो  
 मालम करायो तारा महाराजा ठाकर खन आदमी मेल कहाया जो अक बार  
 ठाकर में म मिल ज्यावें ता ठोक है तद ठाकर कहाया कँ अवार तो सासरै  
 जाऊ छू वा पाछा आवतो मिलसू तठ महाराजा वळै आदमी मल ठाकर-नू  
 कहायो क सासर जाव जिके महारा ममचार काई सुणसी इसी वही आदमी  
 तठ ठाकर आप र भाया राजपूता-सू सना करी अरु बयो—जम मरण तो न्ह  
 रो सबध छ पण आछ परब पर भरिया नाम रहै तद भाया सारा ई बयो—जो  
 माटा परब है तथा घणा राठोडा इणा-नू इमान बंदळ-नै पकडवाया है सू आपा

ध्ववस्था क लिए । चौकी(पहरा)मौ आदमियो की है । चार महीने बंद म रहे ।

(२)

पीछे । स्वभाव । चापावत गाखा का और गोपाळदास का बेटा  
 हाथीसिंह । समुराल जाते हुए । दो सौ आत्मिया के साथ । अजमेर आया ।  
 महाराज बंद (म) थे वहाँ डेरा हुआ पडाव डाना । तब हाथीसिंह ने पूछा ।  
 य न्हरे किमके हैं । तब वहा नोगा न कहा । जा ! ये वीकानेर के राजा  
 दलपतसिंहजी बंद म हैं । तब ठाकुर ने एक चोपदार भेजकर मुजरा मालूम  
 करवाया (=अभिवादन निवेदन करवाया) । तब महाराज ने ठाकुर के पाम  
 आदमी (=मक्क) भेजकर कहाया कि अक बार ठाकुर मुझ स मिल जावें  
 ता अच्छा है । तब ठाकुर न कहनाया कि अभी तो समुराल जाता हू और  
 वापिस जाता हुआ (=गौता हुआ) मिलूंगा । इस पर महाराजा न फिर  
 आदमी का भजकर ठाकुर का कहनाया कि (जो) समुराल जाते हा ब मर  
 समाचार क्या सुनग । अभी (वान) आदमी न (जाकर ठाकुर से) वही ।

तब ठाकुर न अपन भाईबंदो राजपूता ने मलाह की । और कहा ।  
 जनमना (ओर) मरना ता दन का मख है (नेह क साथ लग ही हैं) । पर  
 अच्छे पव (=पुण्य दिन) पर मरने से नाम रहता है । तब सारे ही भाईबंदो  
 न कहा कि बडा पव (वा अवसर) है । और बहुत-न राठोडो न इनको ईमान  
 बदलकर (बेइमानी करक) पकडवाया है ना अपन (=हम) इनके बल



बदल मरा तो इमा परब मिलै नही तथा आपण वीकानेर रो रिजक तो । है पण जोषपुर रा राजा छ ज्यू र वीकानेर रा धणी छ अर या रो पण ण विगड है सू ओ बडो परब आयो है अठै मारा काम आसा पीछ या रा ई काम आवण रो निस्व करी अर केईक भाई छा ज्या नू ठाकर कयो— नीमरो म्हे काम आसा तद वा कयो जा थे ओ परब दख मरो अर म्हान गे तो म्हान ई ओ परब बड कठ मिन म्हे ई रजपूत हा सू हम ठाकरा गय काम जाप नू छाड कठ जाना ? जा धार माग काम जासा

पीछ ठाकर म्हाराज नू कहायो जा म्हे त्यार छा अेकात्मी नू आवा हा इसमी र तिन सर माया सू केसर मगायी सारा ई ठाकर बगर केमगिया या जा कई पूछिया तो कयो—जान है पीछ इग्यारम र प्रभात रा अ दान-पुन र आदमी दो सौ तथा जसवार दो सौ दळपतमिघजा रा डेरा ऊपर आया गा म्हाराज ऊपर पातसाही चौकी रा आदमी मो हुता तिणा सारा नू मार

रें ता जसा पव (फिर) मिलगा नहा । और अपने (=हम लागे के) वीकानेर । रिजक (जीविका जागीर) ता नही है पर (जस) जाघपुर क राजा हैं वस वाकानेर के स्वामी हैं । और वनका भी मरण विगडता है । सा यह बला न आया है । यहाँ (=इम पर) सब काम जावगे (=प्राण देगे) । पीछे न सब ने काम जान का निश्चय किया ।

और कई एक भाईवत् ध जिनका ठाकुर न कहा—आप निक्ती हम तम आवेंगे । तब उहाने कहा कि आप यह पव देखकर मरते हैं और हम कानते है तो हम भी यह (=अना) पव फिर कहा मिलगा हम भी राज न है सा अब हे ठाकुरा ! (आदर के निअ बहुवचन) काम जा बनन पर =विपत्ति आने पर) । जापको छाडकर कहाँ जावें, जापक साथ (ही) तम आवेंगे ।

पीछे ठाकुर न महाराज का कहनाया कि हम तय्यार हैं । अेकादगी का तने है (=जा रह है) । सा दगमा के दिन गहर म न केसर मगवायी । तर ही ठाकुर जाति न कसरिय किय (=कसरी रग का वेग बनाया केसरी ग क वस्त्र धारण किय) । जो किमी ने पूछा तो कहा (कि) बरात है जान<जया) । पाछे ग्यारम क प्रभात क समय य (लाग) दान-पुण्य करखे मो जादमी और दा मो सवार दनपतमिहजी के डेगे पर आय । और हाराज के ऊपर बादशाही पहरे क सौ आत्मी ध उन सबको मारकर भानर

भीतर जाय महाराज-सू मुजरो किये वा बडी ह्यकडा बाडी तठ मावादाग-नू खबर लागी तद पातमाही फीज हजार च्यार इणा-नू आय घेर लिया तारा या कवीला काड, दळपतसिधजी तथा हाथीमिथ गापाळामोत मारै साथ-सू भगडा कर काम आया सवत १६७० फागण वद ११

महाराज रा कवीला कित्ता-अक भटनर म हा सू फागण सुट ५ नू भटनेर खबर आयी तद महाराज री पाग साग इतरी सती हुयी—१ भटियाणी जात्मने २ भटियाणी नौरगदे ३ सानगरी मताखद, ४ भटियाणी कनकद ५ भटियाणी मदाकवर ६ निरवाण मदनकवर इणा रा हाथ भटनर र दरवाज पाखाण म मडघा है

इण चाकरी-सू वाकानर म जात चापावत हाथी पाळ ताई घाड चनिया आव है

जाकर महाराज को मुजरा किया (=महाराज का अभिवादन किया) और बडी (तथा) ह्यकडी निकाली (=दूर कर दी) ।

तब सूबानर का खबर लगी । तब चार हजार बादागाही फीज न आकर घेर लिया । तब इहान राज परिवार का (बाहर) निकाल लिया । दलपतसिंह जी तथा हाथीसिंह गापाळदास का बग सार साथ के सहित लडाई करके काम जाय । सवत १६७० फागुन वदि ११ (का) ।

महाराज के परिवार (के लाग) कित्ते ही भटनर म थ । सो फागुन सुदी ५ को भटनर खबर आया । तब महाराज का पगडा क माथ इतनी मता हुइ । भटियाणी (भाटी गान्त की) जादमद भटियाणी नौरगद सानगरी मताखद द भटियाणी कनकद भटियाणी मदाकवर निरवाण (गाखा की) मदनकवर । इनके हाथ (=हाथो के निगाने) भटनर क द्वार पर पत्थर मे बने हुये है ।

उम सेवा के कारण बीकानर (क लुग) म चापावत जाति (के सब सरदार) हाथापाल तब घाड पर चढ़े हुअ आते है (पाळ=पीरी बटा द्वार म० प्रताली) ।

## उज्जैणी-रो जुद्ध ( वीमवी गतांगी—पूर्वाध )

[ मीसण सूरजमल ]

[ सूरजमल (सूयम न) भासण शास्त्रा के चारण थ । उनका जन्म म० ८७२ में वूदी में हुआ । ये सस्कृत प्राकृत अपभ्रंश डिंगल पिंगल आदि नेक भाषाओं के जानकार अनेक विषयों के ज्ञान और बहुश्रुत विद्वान थे । उनकी मृत्यु म० १६२५ में हुई ।

इनकी कृतियों में वसुभास्कर और वीर मनसई विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं । वसुभास्कर' एतिहासिक महाकाव्य है । यह काद २५०० पृष्ठों का काव्य ग्रंथ है । इसकी भाषा प्रधानतया व्रजभाषा है जिसे कवि ने व्रज भाषा प्राकृत मिश्रित भाषा कहा है पर बीच बीच में सस्कृत प्राकृत अपभ्रंश और राजस्थानी का प्रयोग भी हुआ है । इसमें पद्य की प्रधानता है पर बीच बीच में गद्य भी है जो अधिकांश में कवचिना शैली का अर्थात् तुकांत रूप है । ध्यान रखने की बात यह है कि वसुभास्कर इतिहास नहीं बरन् गद्य है । इसके एतिहासिक तथ्य और सचन अधिकांश में अजुद्ध हैं । ग्रंथ की रानी जोडस्विनी है । इसमें स्थान स्थान पर अप्रचलित और अपरिचित शब्दों का प्रयोग हुआ है जो केवल कोष ग्रंथों में ही देखने को मिलते हैं ।

उनका दूसरा ग्रंथ वीर मनसई है जो अजुद्ध है । इसके प्राप्त दादा का जन्म ३०० के लगभग है । इसकी भाषा राजस्थानी है । इसमें वीर जीवन के अनेक रूपों का ज्ञान रानी में चित्रित हुआ है ।

सकलित जग वसुभास्कर में किया गया है । यह जग वीमवी गतांगी काव्य व गद्य का नमूना है जो अत्यनुप्रास युक्त है । इसमें रानी का राजगद्दी के लिए हुए गार्हजहाँ के पुत्रों के मघय का वणन है । उज्जैन का उद्ध म० १७११ में गार्हा मना और जीरगजय तथा मुगल का सम्मिलित जना के बीच में हुआ जिसमें गार्हा मना पराजित हुई । सूयमन्त न अंग युद्ध में गार्हा का मौजूद हाना कहा है पर यह एतिहासिक तथ्य नहीं है । ]

-१-

जिम समय दिल्लीस साहजिहान र महातक रो प्रकोप थियो जिक्ण री पीडा र परतत्र होद आप ग अधिकार र ऊपर बडा पुत्र दारा नू रहण दियो जिकी बात प्राची रा अधीम दुजा कुमार मुजामाह रा उर म न भायी अर अनामय पूछण रो राज करि पिता नू बडा भाई समत मारि साह होण रो मकल्प करि दिल्ली माथे आप री चतुरग चम् चलायी

तिका मत्र उपद्वर भी चार लोका रा चतुरपणा थी चौड आयो वका पहली ही इसो घाट घडता तीजा साहजादा जोरगजेर र सहायक बणिया, जिक्ण महापातक माय र'र आधी पातमाही रा नोभ दे प्रतीची रा पति आप रा अनुज मुरादमाह नू मिलाद पाउम री कान्ठविनी र अनुकार आप रो अतीक तणिया

अठी दुजा साहजादा न आप र ऊपर चनायो जाणि तिक्ण नू पाछो फेर रा काज कुमार दारामाह रो कुमार सलममाह विदा कियो तिक्ण र

( १ )

जिम समय (=उम समय) दिल्ली पति साहजहा के महाराज का प्रकोप हुआ (म स्थित) । जिमकी पीडा क परतत्र (=जाधीन) हाकर । अपने अधिकार पर । बडे पुत्र दारा का रहन दिया । जो बात (=यह बात) पूव दिशा के (=साम्राज्य के पूर्वी भाग के) नामक दमरे साहजाद मुजामाह (=गुजा) के हृदय म नही समायी (=सहन नही हुई) । और उसन आरोप्य पूछन का बहाना करके पिता को बडे भाई सहित मारकर बादशाह हाने का मकल्प करके दिल्ली पर अपनी चतुरगिणी मना का चलाया ।

वह मत्र (=विचार) गुप्त (होने पर) भी जाम्म रोगो के चातुय से प्रकट हुआ (=प्रकट हाकर) पहल ही जसा घाट घडत हुये (=असा ही विचार या मकल्प करते हुये) तीमरे साहजाद जोरगजेर के (त्रिभे) मनायक बना । जिमन महापाप मिर पर नकर आधी बादशाही का नोभ कर पश्चिम दिशा क (=साम्राज्य के पश्चिमी भाग के) नामक अपन दाट भाई मुरामाह का मिताकर वपा (प्रावृप) की मघघटा क समान अपन मय का ताना (=फनाया बढाया) ।

दमरे साहजाद का अपन ऊपरच ला हुआ जानकर । बादशाह न । उम घातम लौगने के निजे । साहजादे दारामाह क घट मनमगाह (सुलमान गिबोह) का खाना किया । उमक माय कछवाहा जयमित गौड अनिच्छामिह

साथ बख्शवाह जयसिंघ गौड़ अनिरुद्धसिंघ नवाब दनेलखान तीन हा मुख्य  
 मामत द र आप रा उद्धत अनाक दिया तीन-ही मामता मलेम र साथ माम्  
 गा वानाग्मी र समीप कुमार रा वाना नू कोरडो लाह चन्दाया जिण धी  
 हना ही प्रधात म परम्पुय हो दूजा कुमार दूजा रा प्रहार भा न खाया

साह मुजा गज ममर मामता र मलम ।

मन् विण पाछो महियो जिह्मग रद विण जम ॥

पिता पितामह धा प्रणत त्रिखि मनम जय वाह ।

कळह-जयी मतकारिया पण दिनाइ सिनाह ॥

पच लाख मुद्रा पण ल जयसिंघ दनेल ।

नोधा गौड़ दु लाख नग खगार रण जय खल ॥

एण रीति आप रा और भी विसम बीरान् वधाइ काको रा दुवार रा  
 बन्नाइ होइ मना ममन मलम उठ ही जाडा रहिया अर काक भी पुळियार हा  
 प्राची रा परिकर इकठो करि फेर भी निनी पर चनाइण हठ भाव रहिया

नवाब दलन खा ताना प्रमुख मामत दकर अपना उद्धत साथ दिया । नीना  
 ही मामता न मलेमगाह के साथ मामत जाकर बनारस (वाराणसी) क पाम  
 गाजा क चाचा (=गुजा) को कारडा (?) लाहा चन्दाया (=गस्ता  
 का मजा चन्दाया) । जिससे पत्नी हा मुठभेड म पराड मुग हाकर दूमर  
 गाहजाद न (गुजा न) दूमरी मुठभेड का वार (प्रहार) भी नहीं चखा ।

गुजागाह का युद्ध म पराजित करके मामता और मलेमगाह ने उरु  
 दात रहित साप की भाति मद सं रति करके घापिम लौटा लिया । प्रणत  
 (=विनीत) मनम न जयनाभ (का ममाचार) निखकर पिता और पितामह  
 स युद्ध का जीतन बाल बीरा का पट्टे (जागीरें) दिनाकर सत्कृत किया ।

जयसिंह और अनेन खा ने पाच लाख मुद्रा की जागीर पायी । गौड़  
 अनिरुद्ध न लो लाख का जागीर पाया । तलवारों से युद्धभूमि म विजय (का  
 खेद) खेलकर ।

अम प्रकार से अपन जीर भा विगिष्ट बीरा का बटाकर । चाचा क  
 दरवाज का किवाड बनकर (=जब रोधक बनकर) मना के साथ सलेमगाह  
 बहा । मामन (=माग रोधकर) (जय अडड) । बना रहा (=डेरा डान  
 रहा) । और चाचा न भी भगाडा (पुळणा=चलता से) हाकर पूरब का  
 बटक इकठठा कर फिर भी दिल्ली पर ल जान का (=चलाई करन का)  
 हठ भाव (=हठ निश्चय) ग्रहण किया ।

-२-

इण बात रै हाक पहनी ही मितारा, बीजापुर भागनगर प्रमुग दिक्खण रा अधीमा-नू विजय रा फळ म विभागी घणाइ दक्खिण-पच्छिम रा अधीम दो-ही माहजादा मिळिया, तिके दूजा अग्रज ७ अनुकार साच मक्खप दिल्ली रा दायाद होइ साम्हा चलाया, अर तिल्लाम भी घणा माहम यी आप रा जात्रण म आडा होइ चलाया इमडा वडा कुमार दारा-नू साम्हे पूगण रो निदम दे र विदा कीधा जतर तापी-नू नाधि नमत्त नदी र नजीव आया

माह कहियो—महा रा अनामय रा उहूम करि आन्न तिका-नू साम्हे जाहू ही समुभाइ पाछा माहियाऊ तिका भी तात रो निदम मनमानि दारा कहिया—पिता रा पधारण म हू भी पाट रा पुत्र प्रतिष्ठा नू पाऊ

जर पानमाह जाधपुर रा अधाम राठाए जमवन च्यारि ही अनुजा सहित काग रो अधीम हाडा मुकुट भाळन्न दम रा पच्छिम प्रात रो पुहनीम रतळाम

( २ )

इम बात क हलन (=गौर) के पहन हो इम बात का हला हान क पहन ही। मतारा बीजापुर भागनगर (हैराराग) जादि दक्षिण क गामका का जान क (=जीन क हानवान) फन म (=लाभ म) हिस्साग बनाकर। दक्षिण जीर पश्चिम के गामक दाना गाहजादे (परस्पर) मिल। व (अपन) दूमर व भाइ (=गुजा) क अनुकरण म (=ममान)। मच्च मक्खप के साथ दिल्ली के दायाद (=पतृक सपत्ति म हिस्सा बगनवान कुटुम्बी) हाकर सामन चल। और दिल्लीपति न भी बन्त माहम म अपने जान म अवरौवक हाकर चल (उनका राकन के लिअ वादशाह स्वय जाना चाहता था पर दारा न वात्गाह का जान से राक दिया और स्वय चला)। जस बड शाहजादे दारा का (उनक) सामन पहुचन का आज्ञा दकर खाना किया। तब तक (व नानो गाहजादे) तापी नदी का पारकर नमदा नदी के निकट आ पहुचे।

वादगाह न कहा—मेरी बीमाग क उद्देश्य स जात है। उनको मामन जाकर मैं ही समभाकर वापिस मोड जाऊगा (=लौटा आऊगा)। वह पिता का हुकम भी सनमान कर नारा न कहा। पिता के जाने म मिहामन का अधिकारी पुत्र (=बडा पुत्र) मैं भी प्रतिष्ठा नहीं पाऊंगा।

जब (=तब) वादगाह न जाधपुर का राजा राठाड जसवतमिह चारो छोट भाइया सहित काटा का राजा हाडा मुकुटमिट, मालवा देग क पश्चिमी भाग का राजा (पृथिवीग) रतलाम नगर का बसानवाला राठाड

नगर से बनावरणहार राठोड रतनसिंघ विश्वामघान करि आप रा भाम  
अमरेम रा चरणा से छेणहार गौड नरम अजुनसिंघ राणाउत राजा रायसिंघ,  
नवाव कामिमखान करीमखान प्रमुख आप रा मुख्य मामत सहायक करि बग  
वत्थ र साथ जभण रा माहसी कुमार दारानाह नू औरग मुराद र माम्हे  
विदा कीघो अर इण रा कुमार मनम-नू पहला सूचिया महायका समत प्राची  
रै पथ सुजामान जाण रहण गीवा

अठी माह र ममाधी हुत्रा केड दारा साह न अधिकार रा काम भी छाड  
दाधा ता भी नान ही भाया रा तखत माथ चनारणो जाणि प्राची मे पुत्र नू  
भेजि अवाची नू जाग्रता दो ही पुत्रा नू समुभारण माम्हे जावता पानसाह नू  
पलि बडो पुत्र साहम र सहाय पहली कहिया कटक र माथ दर बूचा दक्खिण रै  
अभिमुख चनाथा निवण अन्नतीपुरी र पर पच कोम र प्रमाण पूगि वीरा री  
वानठि हजार मेना र माथ मेळ पायो १

जत दा ही फौज र दूज ही सिम काठ काप तोपा से घोर घममाण  
राचियो अर बीच बीच बडी रा वेहडा वज्र बग वानत वीरा र मस्त्रा रो

रतनामह विश्वामघान कर अपने बहनोई अमरसिंह के परा का छेक गौड  
राजा अजुनसिंह राणावत (राणावगीय) राजा रायसिंह नवाव कामिम  
खा करीम खा जाति अपन मुख्य मामता का महायक बनाकर बड समूह के  
साथ जूभने के माहमवाते गहजादे दाराशाह का औरगजब और मुराह के  
सामने खाना किया। और उमक शाहजादे मनमगाह को फल सूचिल किये  
महायका सहित पूरव के माग म गुजागाह के मुकाबले म रहन दिया।

यहा (=धर) वागाह के स्वयं जाने र वाद। नारागाह न अधिकार  
का काम भी छाड दिया। तो भी तीनों भाइया की मिश्रसन पर प्रस्थान  
(=चलाई का बान) जानकर। पूरव म पुत्र का भजकर। दक्षिण म आत  
हुत्र दाना पुत्रा का समभाने का सामन जाने हुत्र वागाह से राक्कर। बडा  
बडा (=दारा) माहम के साथ पहल उनाय हुत्र माथ र साथ पुत्र करता  
हुत्रा रणिण के सामन (=रणिण का आर) चना। उमने उज्जन के जाग  
पाच कोम के प्रमाण (=पाच कोम दर) पदच कर वीरा की नामत हजार  
मेना के साथ मन पाया (=परा डाता)।

बना गाना मनाओ के दमरे ही सिम वान तोपा तोपा का भयकर  
घममाण (=घुड) हुत्रा। और वाच बीच म पगनी के बनग जम वज्रतुल्य

१ गग वम घुड म समिचित नयी था।

सपात माचिया

असी सहग सना जठा सहग उठी वामट्टि ।  
 भडा आपिया, भीरवा नीर गया मुख नट्टि ॥ १ ॥  
 प्रथम गजर तोपा पड गोळा बजर गुडाण ।  
 मचिया जिण जिन माभिया धार प्रळ घममाण ॥ २ ॥

—३—

जिण समय दो ही फौजा रा हिवाळा समुद्र र समान प्रमाण मे जाया अर तापा रा गाज हू मन रा मीमा समन मकराकर मयळा महा र मनाळा लगाया दिक्पाळा रा गाढ समत दिग्गजा रा मद छूटि आठू ही जनकप चकितपणा रा चीत्कार करण लागा, अर रज धूम रा वितान म भारतड रा मयून अनर्धान विद्या रो अभ्यास करण लागा दो ही तरफ गाळा री गजर हू आट जाव जिता-ही घोडा सिपाहा समत हाथिया रा गोळ उडण लागा अर दळा-आकास रै हागनळी रूप विघ्नकारी डूगरा रा डाहणहार विघ्न विहीण परिरभ जुडण लागा

वेगवाल बानत वीरा के गस्त्रो का सपात (=प्रहार आघात) मचा ।

अस्मी हजार मना इधर (धी), उधर बामठ हजार । वीरो (क मुखा पर तज) गाभायमान हूअे और कायरा के मुखा पर तज नष्ट हो गय । (नार=पानी=तज) ।

पहन । ताप पड । वज्र जभ गोले चल । उम दिन वीरा का भयकर प्रलयकारी घमासान (=युद्ध) मचा ।

( ३ )

उस समय दोना सनाओ के हिल्लाल । समुद्र की भाति । प्रमाण म जाय (=दाना सनाआ म समुद्र की भाति बडा तरगे उठी) । और तापा की गजना स गपनाग के मिरो सहित मकराकर (=मकरानम=समुद्र) की मयला वाली (=समुद्र स घिरा दृइ) पृथ्वी के मघक (आघात) नगाय (=पृथ्वी का निसा निया) । जिगाओ क अधिपति देवताआ क गाढ (=दृढता या गव) क सन्ति जिगजो क मद छूटकर आठा ही हाथी चकितपन के (=जाचय क) चीत्कार करने नग (=स्नमित होकर विषाडन नगे) । और धूल के धुअे के मरुप म सूय का किरणे अतर्धान हान की विद्या का अभ्यास करने लगा (=सूय निरणे अदृश्य होन लगा) । दोना ओर गाला की गजना स ।

उनन ही घाडा और सिपाहियो सहित हाथियो के समूह उडन लगे । और



त्रिंशत् समस्य मठामागे २ मणाल नरा गे नाम - गि कार्क बरुणा मय गे  
 मणाल आरु गे अमथ मासक मृगिदा धारै बरुन गे हृग धारि मणामाह हाथा  
 मय मणाल २ हा उरिषा १ अर पना गे प्रवट प्रशास १ परिषा १ पुटिगार  
 १२१ आन गाह गे मठा गे निपाह १ मय मय माग मणाल १ अमथ  
 परिषा

त्रिंशत् गे मठ म मठा म मठा गे माहाराज गे मना गे ज्ञान गे यपी  
 यथा आम आ उपाह र उपाह मठा मठै मनावा १ मणा गे बचरुपाण  
 म भाग गे अनाक गे १ १ गे प्रशास म परिषा नवाक बागिमगान ममन  
 कुमार दागमाह भा टहरण म पावा

जह ता बहा बहा अमीगो गे आणग प्रहाह पट्या १ गदना मृगि मठाह  
 राजा जगजनिधि मणावन राजा रावनिधि प्रमुन विना हा आय जयना गे  
 आय दाग गे माय दाहि आण आय १ अगार चारिदा अर चारि हा भावा

गुप्ता और आवाग के हासवना के समान (—हारा की तरह गाम्भिर)  
 विष्णुकाग गहाहा का मयावान विष्णु रतिन परिभ जुहन मग ।

उम समस्य । (मुद्र कपा) मणामाग के आरभ म मनुका के नाम का  
 मणकर कई अक कचना मनाह के मवान । मुद्र के अमथ्य (=अपरिभ)  
 मनाह दी (?) पा (पर) चदन का । हौम धारण कर (=इच्छा करके) ।  
 दाराणा । हापी कपा राजमिनामन म नीच उतर गया । मय । (उम)  
 मामन धाना के (=मनुभा के) प्रथम प्रशास गे गिरा हृभा (=मुद्र म  
 मारा गया) अथवा भाग गया जानकर । चान्पाण का मना के निपाहिया  
 न अपन अपन माग लगने का (=भागन का) आरभ कर दिया ।

दि नी के मय म दगर भगणोह मयन गे । य मय गे बड़ा हुई  
 पाहजाण का मना न आग आकर । उपाह के उपाण म मठाप्रथम मया  
 दिया । यहा अनका के महानाग म । अपना मना के उपन्य के प्रवाह म पहा  
 हृभा । नवाक बागिम या मद्रित पाहजाण मारागाह भी । टहरन नहीं पाया  
 (=टहर नहीं मरा) ।

जहा ता (=उम समस्य ता) । उठ वऽ अमाग के । बल गावन । प्रहार  
 के पूर ही पत्त हुआ । दसकर । राठाट राजा जमजतमिह राणावन राजा  
 रावमिह आदि । जिनने हा आय (=हिहू) (और) मुमनमाना के समूह ।

१ यह धरना उज्जन के मुद्र की नहीं किन्तु सामूहिक के मुद्र की है जो उज्जन  
 के मुद्र के उठ नाम या हृभा था ।

समेत माधाणी हाडो मुकुदसिंह गौड अजुनसिंह राठाड रतनसिंह जिसडा जोधार काळी रा कळस रण—गळियार हाइ हाथिया रै माथ हाथ करता माथिया रै मूरता रो माण गगवता साहजादा रै ममीप हालिया

घणा घोडा भडा रा घाण काडि वूदी काटा दा रा ऊजळा त्रिपाद हाडा रा वम न बीजा म बधता वताइ ताज रूप लगर रा खैचिया पता रा प्रतिमल्ल मदा लाया मदद माधाणी मुकुदसिंह माहणसिंह कहीराम जूभारसिंह च्यारि ही भाई पैला नू जय-ममय जणाद छागा रा खैच म खड बिखड हाट विमाणा बटा गरिया र गळवाह कीवा सुरलाक पूगा जिवा नू द्रादिक अमरा वधाइ आधा लीधा तिका मुधा रूप मोधु रा छाकिया नदन वन र निवाम मुधर्मा मभा म बठि मुरा रै माथ विलास कीधा

अठी पाचमो भाई किसारसिंह के ही हाथिया नू हठाइ वर वीर बैरिया नू

गरा का माथ छाडकर । अपन अपन घर (का) चल गिय जीर चाग भाइया समेत माधासिंह का प्रता हाडा मुकुदसिंह गौड अजुनसिंह राठाड रतनसिंह जम घोडा । पगली क कलम । युद्ध के बनकर । हाथियो के ऊपर हाथ करते हुअे (=गस्त्र प्रहार करते हुअे) । माथियो के गूरता (वारता) की सान लगाते हुअे (=माथियो की वीरता का तीक्ष्ण करत हुअे) । साहजादो के पाम (=ओर) चल ।

अनक घाडो जीर वीरो का विनाग कर । वूदी और कोटा दोना को उज्ज्वल (=निष्कलक यशस्वी) बनाकर । हाडा के वग का ह्मर वगा म यत्ता हुआ (श्रेष्ठ) बतलाकर (=दिगाकर) । लज्जा रूपी लगर से विचे दूअ (जिनको लज्जा युद्ध में भागने नहीं देनी थी) । गनुआ क प्रतिमल्ल । मर चढे हुअे मृगद । माधोसिंह के बडे मुकुदसिंह माहनसिंह कहीराम जुभारसिंह । चारा भाई । गनुआ को विजय म सह जताकर । तनवारा क सेन मे टुक टुक होकर । विमाना पर बठे हुअे । नारियो के गन म बाह किय हुअे (अस्मराओ को आलिंगन किय हुअे) । स्वगलाक पहुच गय । उनका पद जादि देवताया न अभिनन्ति कर आग निया (=स्वागत किया) । उहान मुधा रूपी मन्दिरो मे द्वा हुअे नन्दवन क आवास मुधर्मा मभा (देवताओ की मभा का नाम) म बठकर देवताओ क माथ विनाम किय (=भोग भोगने गण) ।

इधर पाचवा भाई किसारसिंह कई हाथिया को हटाकर, श्रेष्ठ वीर गनुओ को बडे भाई क तथा अपने साथी बनाकर, पृथ्वी का त्रिवाट (=रण)

अग्रजा रा तथा आप रा साथी वणाइ धरा बन्नाड हाण करवाळ ह्य वक्रचा म  
अग रा फाचरा उडाइ सता रा सामा करि पाया जुडाइ खेत पडिया, अर  
जाप री जाऊ र वळ उरगिया अग न कवाडपणा म गाढा करण कलव रूप  
काग म जडिया

गौड राजा अजुर्नामिध वरिया रा धाट विराट्टि वडा गजा र चाचर  
चद्रगम चलाइ मकण सूग नू साथी करि महावृद्ध री माळा म जाप रा मु  
रा मह चडाइ रड थकी नी धारा में तिल तिल पळचरा री पाता पुद्गळन  
रान्नि द्रष्टोक् पूगिया

रण रीनि रतलाम र राजा राठाड रतनमिव मारथी समत तरणी नू तमाम  
लगाव क हा गज र्ना महित मुडाण्ड सूना करि दीठा दोयणा र सोणित  
भद्रवाळी रा खप्पर भराइ वीर वताळा नू गूद रा गाळा जिमाइ विना माथ  
भी माहाजादा-नू मका लोह द्यक धूमता गजा री घडा में मूर-मज्जा सूत इच्छा  
र अनुमार परलोक लियो

उठा हाडा रा अधिगज नरेम सनुगाल रो ताजा कुमार भगवत्सिध

हान क लिअ तनवार र्पो जारो स गरीर क फाचरे (दुकटे) उडाकर ।  
भानो के प्रहाग स वापिम जोडकर । युद्धभेत्र मे गिर पण । और अपनी उम्र  
क वन स दवे हूअ गरीर को काटा म जडा ।

गौड राजा अजुर्नामिह । दधुओ के समूहो को विरस्त कर । मतवाले  
हाथिया क पिरा पर तनवार चनाकर । मकण वीरो का साथ लेकर ।  
महाण्ड की मुडमाता म अपने मुड (तिर) का सुमेर (=माला का बडा  
मनवा) चनाकर । कत्रव हुआ हुआ भी । तनवारो की धारा म । तिल तिल  
मामभक्षका नी पवित्र मे (=हिस्स मे) गरीर को रखकर (=अपना गरीर  
मामभक्षका को रकर) । अभीष्ट लोक को (=स्वय को) जा पहुचा ।

एन प्रकार रतलाम र राजा राठाड रतनमि न । सारथी जरण सहित  
मूय का तमाम म रगाकर । कई जव । हाथी दातो युक्त गुडा-दडा को सूने  
करक । दोख हुआे दजना क (=गधुआ क) ताहू स भद्रकाती क खप्पर का  
भगवाकर । वाग वताना को गूद के गाव (=मंद या चर्बी के समूह) जिमा  
कर । विना मिर क भा (=कत्रव हाकर भा) (दाना) गाजगा का गवित्र  
कर । गस्त्रा म एक हुआे मनवान हाथिया की घटा म । वीर गव्या पर साथ  
हूजे । इच्छा क अनुमार मग्लाक तिया (=प्राप्त किया) । उधर हाडा क  
अधिराज राजा अनुगाल का तीमरा कुमार भगवत्सिह औरगजव क जा कई

आरग जाग के ही पला पटता नू पौडाइ प्रेत-गोधादिक पळचरा-नू घपाइ चडी रा चसक म आप रो अस्त्र आसत्र पूरि च्यारि तरवारि लगा जीवतो-ही खेत रहिया,  
अर दो-ही तरफ हजारा ही सिपाह भरिया तथा घायल करिया तिका म दिल्ली रा दळ र भागवै जठी रो घायल बहुपणा रा दाव मे पडियो थको दूज दिन अेक भी जीवता न लहिया

-४-

ऊरिया गज-सू अठै दारा चूके दात्र ।  
तदि ऊरिया तघत-सू भोळा स्व मनि भ्रमात्र ॥  
गज तजता पुळिया गिणे स्वामी कामिम सग ।  
दळ भगो दिल्लीस रा जाणे परबळ जग ॥  
भागता दळ भाजिया दारा कासिम दोहि ।  
पुळिया टोडा-जाधपुर आदि घणा भड आहि ॥

जठ इण गीति हाडा गौडा राठोडा आप-आप रा लूण उजाळिया अर हजारा बरिया नू यसुधा भायै विछाद्र ढाला समत के ही गजराज ढाळिया मातू ही सामत खास बाडा नू ताडि गजा रा गोळ मे जावता जक्रिया अर

अेक शत्रु वीरो को सुलाकर । प्रेत गीघ आनि मागभोजिया का तृप्त करक ।  
चडी (दुर्गा) के मद्यपात्र म अपने लाहू का मद्य भरकर । चार तलवारें लगन पर । जीता हुआ ही खेत रहा । और दानो तफ हजारो ही सिपाही मर तथा घायल हुए । उनम दिल्ली की सेना के इधर का । घायल । बहुपन के दाव म पडा हुआ (?) दूसर दिन अेक भी जीता नहीं मिला ।

( ४ )

यहा दारा दाव को चूककर हाथी से उतरा तब भोला दारा अपनी बुद्धि के भ्रम से राजमिहामन स (भी) उतर गया । हाथी को छाडते ही (=हाथी से उतरते ही) स्वामी का कासिम खा के साथ भाग हुऐ जानकर (और) युद्ध को प्रबल जानकर । दिल्लीपति बादशाह की सेना भाग चली ।

सेना के भागन पर दारा और कासिम खा दानो भाग चल । टाडा और जोषपुर आदि के बहूत स वीर (भा) भाग चल ।

यहा (=वहा) इम भावि (ऊपर गिनाये) हाडो, गौडा राठोडा ने अपन अपने नमक उज्ज्वल क्रिय (=नमक-हलाली की) । और हजारा शत्रुआ का पृथ्वी पर विछाकर । ढालो के सहित अनेक गजराजो का गिरा दिया । माता ही सामत (जिनके नाम ऊपर गिनाय गये हैं) खास बाडे का तोडकर हाथियो

और भी सीमादिया रावत जगरूप जिना व ही अछूता अणी रा वाद उठ ही गता पटिया लोह छक्रिया

बीजा रा घटय म जिना रा मयवी जाणिया तिक ता निलनी रा दळ रा मयल जीवता रहिया और हजारो-हा खत सोधण र समय सचेत जचत प्राणधारी पाया तिक मव ही औरग रा आदेम रूप अनठ मे दहिया जाप रा मयना रा जाण रा जतन कराद ऋग्ण रा महाय सहित दा ही माहजाण अग्रतो र उपकठ के ही मुकाम किया जर जाप रा भडा नू नागा री रीभ र व नी पराया न पठदातण रा कु काम किया

इण रीति औरग रा भाग र जाण मारग माह रा भडा तजियो अर तिको भी घो विमाळा पुरी रो कजियो जीनि जागरा माध आतण रा आरभ म मजियो

उजणी रण जीति इम बीरा मन विकमान् ।

उभ भ्रान रहिया उठ छत्र ऊपर धक छा ॥

कं मम् म जाते हुअ । और जय भी सीमादिया रावत जगरूप जैसे कई अक (=अनक) । अछूती मना (=कुजारी मना) क दूह वन हुआ । वहा पहुचत ही । गस्त्रा स छके हुये । गिरे (=मारे गये) ।

दूमरा का (=गयुआ की विराधी) मना म विद्यमान । जिनके सखिया न पहचान तिय । व निलनी की मना क दूमरे हजारो ही घायल ता जीते रह । युद्धभेद को तून्त समय सचेत और जचत प्राणधारी (जीवित) पाय गय । व सभा औरगजेय की आना रणी अग्नि म जन गय (=औरगजव की आना म मार गय) । अपन घायना क जीवन (की रथा) का यत्न कराकर दग्नि के सहायका सहित दानो माहजादा न उज्जन क पास क मुकाम किया । और जयने बीरो का । नाखा (के मूल्य) की रीभ (रीभकर दिया हुआ पुरस्कार) दकर । पराया का (विगाधिया) का पय बदलने क त्रिअे प्रग्न करन के अनक टुकम किया ।

म प्रकार । औरगजव क भाग्य क वल न वादगाह के घोघाआ न रग का छाड लिया । और उमन भी यह विगालापुुरी का (=उजयिना का) युद्ध जानकर आगर क ऊपर जान (=चलाई करन) की नय्यारी की ।

म प्रकार उजयिनी म युद्ध का जीतकर (और) बीरा क मनो का । प्रफुलित करक । दाता भाई (=औरगजव और मुराद) उत्साह के ऊपर धक (=पाव) छाकर (पनावर) वहा ठहरे ।

मक् चउदह मत्रह मम उज्जणी रण अेह ।  
हुवा हजारा मरण हद मच्चि अमि धारा मह ॥

सवत सत्रह सो चौत्ह के समय । उज्जन के इस युद्ध म । हद (=बहद अत्यत) तलवारा की धारा की वर्षा मचकर । हजारों का मरण हुआ ।

टिप्पणी—सवत युद्ध नहीं है युद्ध स १७१५ की वशात्त्र वत्ति ६ का हुआ था यहा दिया गया सवत सभवत चत्रात्ति (अर्थात् चत्र से आरम्भ होने वाला) न होकर श्रावणादि हा ।

## कवळ-प्रसंग

( बौमवी गतांगी—द्वितीय चरण )

[ रात्र बखतावर ]

[ रात्र बखतावर जाति के ब्रह्मभट्ट थे। इनका जन्म स १८७० के लगभग मवाड राज्य के बभी नामक गाव में हुआ। य जव बालक थे तभी इनके पिता मुखराम की मृत्यु हो गयी। बभी के ठाकुर जजुनमिह की देख रेख में इनकी शिक्षा हुई। स १९०९ में ये उदयपुर आयें। तत्कालीन महाराणा स्वरूपमिह ने दो गाव पाव में माना दरवार में बठक और रहने के लिए मकान देकर इनका सम्मान बढ़ाया। महाराणा स्वरूपमिह के बाद तीन महाराणाओं के शासन काल में भी इनकी प्रतिष्ठा पूर्ववत् बनी रही। इनकी मृत्यु स १९५१ में हुई। ]

य ब्रजभाषा और राजस्थानी दोनों के अच्छे कवि थे। ब्रजभाषा में इनके बनावे हुए दस ग्रंथ मिलते हैं। राजस्थानी ग्रंथों में बेहरप्रकाश उल्लरानीय है। इसकी रचना स १९३७ में हुई थी। यह एक गदय-पदचारमक प्रेम कथा है। संकलित जग में नायिका के मो दय का आलंकारिक बणन है। बणन भावपूर्ण और मरम है। गौली अत्यानुप्रासमयी है। ]

जागळघर जागळू जहाँना जाराध, रूप री खाण पुगळ सिंघनदीप री भात जिण जागळू पुगळ म पातर जवाहरराय मन्नडी री पोखता अलम री मवाय

कमल प्रमन का प्रसंग

कवळ = कमल नायिका का नाम।

जागल भूमि में (जागल प्रत्या में)। जागळू (एक नगर का नाम)। सगार में प्रसिद्ध (?)। रूप की खान। पुगल नगर (?)। सिंघनद्वीप की भाति। (है)। जिस (=उस) जागळू नगर में जवाहरराय नाम की गणिका है (पातर < पात्र)। (वह)। ममृडि की पुस्तक (प्रोट)। इस की सवाई (मवस)

पुत्री जिण र कवळ प्रसण, रूप री निधान सुवेशिया सू सत्राई, साव रम्भा रै ममान साहित्य शृ गार काव्य जबानी पर कहै, रमाताल परिजत सगीत म रहै वीणा धर सहजाइ गावै विण भात तराज पर नह आत्र नारद वीणा री तान जिण-न मुण्यां कोकिला मयूर लाज भाग जाव कुरग जी भमग वन पाताळ मू आवै जिण न देख जवाहर तिल म यू जाण रही के म्हार रमायण चतामण जनम ले आण रही जिण न देख पुर पाडास री येक यक यू भाख इ नादानो-न शिव शगताजी चिरजीव राख येक दिन कवळ जाप अटारी पर ऊभी छा, खुद दूना समीप मतारी मू भरखी री खूबी छी जिण घडी पाडोस री वठीनक जो जाव छी स को देख सर्वांग मु दरता न मरात्रै छी

### पहली सुधड घायक

सुधड जठ बोली—या नत्रेली सहल सारै ही सिधात्रज्यो, पण वाग वन सरावर तो कद भी मत जात्र-या जावला वाग तो पिक शुक्-जली उड जात्रमी,

बढकर)। (है)। उसने कमल प्रसन नामक पुत्री (है)। जो रूप की निधान (है) सुवेशी अप्सरा से बढकर (है) बिलकुल रभा के समान (है) साहित्य, शृगार काव्य (वह) जिह्वा पर कहती है। रमा ताल पर्यंत सगीत में रानी है। वीणा लेकर सहज-ही किस प्रकार गाती है? उसके सामने नारद की वाणा क तन भी तराजू पर नहीं आन (=उमकी बराबरी करने का माहस नहीं करते)। उसको सुनने पर कोयल और मयूर लज्जित होकर भाग जात है। हरिण और भौर वन और पाताल में (सुनने को) आते हैं।

उसको देखकर जवाहर मन में या समझ रही है कि मेरे रमायण और चिनामणि जन्म लेकर आ गयी है। उमका देखकर नगर और पडाम की अक-अक (स्त्री) यो कहती है कि इस नादान को (भोत्री भाली का) शिव और शक्ति जो चिरजीवा रहें।

एक दिन कमल जाकर अटारी पर खटी थी। खुद दूना (दानी का नाम) पाम में खडी थी। मितार से भौरवा राग की गोभा (निकल रही) थी। उम समय पशाम की (स्त्रिया) जा बिमी ओर (=बही) जा रही थी व सब कोई (उम) देखकर (उम की) सर्वांग मुदरता का मराह रही थी (=सराहने लगी)।

प्रथम सुधर (चतुरा) का कथन

(वायक < वाक्य)

वहा (तब) पहली चतुरा बानी—यह सुदरी मेरे क निअे मभी जगह जावे। पर बाग वन और सरोवर में तो कभी न जावे। जायगी बाग में तो



न विषफळ धीफळ अनाड सर्ता जो सुखावमी जावला जा वन तो खजन कपोत चाव चूरला मण धर मृग राज गजराज विवर चूरता जावला सरोवर ता राज हम वृड जावसी, कत्रळ काळा पन्ला मिवाळ जतटात्रण आवमा

### जठ दूमरी मुघड वायक

फर दूमरी वाली—रात न या अटारी माथ कटेई जो जावला तो चद्रमा र भरोम राहु म खता हीज खावला राहु कदाक न आयो ता चकोर ता जावसा जावसी न आग माथ चहरा न चूथ जावमी सात्रण आयो घरे या र हीन जिवा घालला हीडिया छ ता परिया धाक परिया गाव चालला

### जठ तीसरी घायक

जठ तासरी बोली—= छदगाळी विधाता मू कुण छद पाया इ र लायक विधाता-म रायजादा बणावणी आया वन न जाया ? = सर्वांग-सुन्दर न भर-नणा जो निहारमी ता ज हमागमणा दूरजादिया-न निहारण इ हारमी इ पदमण रा परसिया पन्न-न ज परस करला ता व फूल वाडर्या भी जाय

(लज्जित हाकर) कायलें सुग्ग जोर भोर उट जावगे, और विवाफ्त थाफ्त अनार सेव ये सुख जायमी । जावेगी यदि वन म तो खजन और कपोत जायगे । मणिधर (नाग) मृगराज गजराज भूमि के विवर म गड जायग । जावेगी सरोवर म तो (र्षा व मार) राजस दूव जायग कमन काल पड जायगे और सेवार औत्न म आ जायगा (=औत्न तगगा) ।

### तव दूमरी चनुरा का कथन

फिर दूमरी वाली । रात को कभा जो यह अटारी पर जावेगी ता चद्रमा व भरोम राहु स खता ही खावगी (=धोग्य म पडकर हानि उठावेगी राहु चद्र के धोले इमको घस लगा) । राहु क्वाचित नही आया तो चकोर तो जावगा (हा) । जावेगा आग आग पर चहर का रौत जायगा (?) । सावन जान पर इनके घर भूना यति डालेंगे और भूनी हैं (=भूनेंगी) तो परिया के घाले परिया खीच ल जायगा ।

### तव तीसरी का कथन

तव तासरी बोता । इस जादूगरनी न विधाता स क्या छनछद पाय है ? इमके योग्य विधाता मे राजपुत्र बनाने म आया या नही (=बनाया जा सका है या नही) ? इस सर्वांग-सुन्दरी का आगें भरकर यदि देखेंगे ता व हसगमनी अप्पराओ का देवना हा भून जायगे । इस पद्मिना के परम (=छुअे) दूथ पवन को यदि स्पग करेंग ता वे पुष्प-वाटिकाभा म जावर भी नाक म सल

नकमनीक हुवा फरला इ चन्द्रवत्नी रा वदन र चानण जो डगक आय डालना तो व चद्रमा रा चानणा-न वडा अंधारा ईज वालला इ तीखा-नणी रा नणां री कटाच्छ जा कोइ गयजादा यात्रसी तो जे सल कटार खाय घूमण भी नहा आत्रसी इ रसीनी रा य अण्णज्ज अघर जो कोई चमरवव चाखसी ता व ऊव रम मुघा रम-न भूडा वारा ईज भावमा जा व वम करणा र वम उमीरजादा होत्रला जिणा री राज लोकां ज्जारी तमवीरा-न ई जोवैला और इ वाटा न विडूजा प्रथूमण रो देखणा जा वणना ता व तलोत्तमा-न तन रती न रती भर हा गणला

### जठ चौथी थापक

जठ चौथी मुघड जो धोली क या तो फूनां र भार नुतणी मोनिवा-मू ई मूघा माली व री अभिलापा ता हममा उमीर करता ई होमी हममा जिवां रा वमीठ जठ फरता ईज होसी पण पूरव पुण्य रा तरवर ज्यां रा इ अत्रमर आय फटना जिवा महा मोहणी या कवळ जाय मिठना

चत्थाये फिरेंग (=नाक भी मिकाडेगे) ।

इम चन्द्रमुखी के मुख के प्रकाश म यत्ति अक डग आकर चवेंगे ता व चद्रमा के प्रकाश को वडा अधेरा ही कहेंगे । इस तीष्ण लोचना क लोचना का कटाक्ष यत्ति कोई राजपुत्र खावेंगे तो वे भाते कटारें खाकर मतवाल हान को नही आवेगे । इस रसमयी के य अण्ण अघर यत्ति कोई राजा चवेंगे ता व ऊव रम और अमृत रम को खराब और मारा ही कहेंगे ।

जरे ! मम राक्षसी क वग मे जो जमीरजाते हाग उनकी रानिया उनका तसवीरो को ही देखेंगी । और मम वाला को विडोजा (इन्द्र) और प्रसुम्न (काम का अवतार) का दखना यदि वनेगा (=व इसको यदि मर लेंगे) ता व तिनोत्तमा (=स्वर्ग की श्रेष्ठ अप्सरा) का तिल (के बराबर) और रति का रती के बराबर ही समझेंगे ।

### तब चौथी का कथन

तब जो चौथी मुघर (चतुरा) थी बड़ वाली कि यह ता फूती क समूह म नुतनवाली है । मोनिवाो स भी महगे माल वाली है । इसकी अभिलापा ता अमीर (रईस) सदा करन ही रहगे । उनके दून मग यहा फिग्न ही रहग । पर जिनके पूव जन्म के पुण्या क तत्वर इम जन्म पर जाकर फवगे उनमे यह मनमोहिनी कमन जाकर मिलगी ।

## जठ पाँचवीं सुघड वाक्य

वचनका—

चोली जठ पाँचमी वाक्य बेल्ल प्रमण थ धही जी लायक  
पण ज्या अजपा जपिया धैमा, अबद-पुष्कर तपिया धैमी  
ज गगोत्तर भूल्या तैमी सित्र-न सीम बबूल्या धैमी  
घाम च्यार पर बहिया हगी धारा तीरथ लहिया वसी  
वासो-करवत बटिया धैमा हमाळ मिळ मिगिया धैमा  
जिण नर नाहीं आ जा मिळमी बीजा हूँम लियां इ धर बळमी

जठ छठी वाक्य

आ काई राजा राज-बेशार धारला अकेई निरधार  
दई इ-न लायक वर देमी लायक या जिण रा सुख लसी

जठ सातवीं वाक्य

जिण र आ लायक धर-जामी ऊ लायक दूणा वण आमी  
मडमी लक्षण लक्षण भोटा रा छडमी बळदाऊ-छोटा रा

## तब पाचवी चतुरा का कथन

तब पाचवा वचन बौती। कमल प्रसन आपन कही उमी योग्य है। पर जिहोने अजपा जाप किय होग जिहान जावू और पुष्कर म तपस्या की होगा। जा गगोत्तरी म नहाय हागे जिहोने गिव का मस्तक चटना बबूला हागा। जा चार घामा म गय (?) हाग। जिहोने धारा-तीरथ लिये होग (=जो युद्ध म तलवार की धार से कटे होंगे)। जा वागी-करवत मे कट हाग। जा हिमालय म (बफ म) मिलकर मिट गय होग। उन नरनाथो म यह जाकर मिलगी। दूसरे लोग हौम निय ही धरो म जलते रहेंगे।

तब छठी का कथन

यह राजकुमारी निश्चय ही किसी राजा को ही जगाकार करगा। विधाता इस योग्य वर दगा। यह योग्या उसका मुख प्राप्त करेगी।

सातवीं का कथन

यह योग्या जिसके घर जायगी वर दुगना योग्य बन जायगा। वह लक्ष्मण क वर भाई (=राम) क गुणो स मंडित हागा (अनुकूल नायक अर्थात् अक ही नायिका से प्रेम करने वाला बनेगा) और बलदेव के छोटे भाई (=कृष्ण) क लक्षण छोड़ दगा (दक्षिण नायक या जनक नायिकाओ से प्रेम करने वाला नहा बनेगा)।

## कनक-सुन्दर

( उपन्यास )

[ शिवचन्द्र भरतिया ]

[ श्री शिवचन्द्र भरतिया का जन्म स० १९१० म ढोडवाणा म हुआ लेकिन बाद मे ये हैदराबाद के कन्नड गाव म जा बस । अन्तिम दिना म य इन्दौर म रहन लग थे । य राजस्थानी के भारत-दु कहे जाते हैं । इन्होंने अनक सुन्दर रचनाएँ लिखी और राजस्थानी को लोकप्रिय बनाने और उसकी ओर लागू का ध्यान आकर्षित करन का निरन्तर प्रयत्न किया । य सस्कृत हिंदी, मराठी और राजस्थानी क अच्छे जाना और दगनगास्त्र के विद्वान थ । स० १९७१ म दनका देहांत हुआ ।

श्री भरतिया न राजस्थानी म नाटक लिखन का सूत्रपात किया । कमर-विलास बुढ़ापा की सगाई और फाटका जजाळ इनकी प्रमुख नाटक-कृतिया है । इनम भारवादी समाज म प्रचलित ऋद्धिया पर प्रहार किया गया है । राजस्थानी म उपन्यास लिखन का सूत्रपात भी भरतियांनी न ही किया । कनकसुन्दर इनका प्रसिद्ध उपन्यास है । इन उपन्यास के पूर्वाध का प्रकाशन स० १९६० म हुआ और उत्तराध सभवत लिखा ही नहीं गया । इसमें भारवादी जीवन और सस्कृति का सुन्दर चित्र अंकित किया गया है । भरतियाजा की भाषा म प्रवाह और शक्ति है ।

सकलित अग लखक क कनक-सुन्दर उपन्यास का एक अक्ष है । इसम उपन्यास क प्रमुख पात्र मुरलीधर की व्यावसायिक र्मानगरी का रोचक वृत्तान्त प्रस्तुत किया गया है । ]

( १ )

दापहर दिन-का बमत च्यारा कानी लू चाल रही छ हवा का जाग-सू बाजू जठी-की उठी-न उच-उड-कर बी-का नग-नवा टीवा हा रह्या छ और भाजण भा रह्या छै मू ऊचा कर मामन चानणो मुस्कल छ तू कपडा माहे

१ कानी—ओर । अठी-की उठी-न—यहाँ स वहाँ । बी-का—उमक ।

बढ़-कर सारा सरीर न सिक्तान्न कर रही छ, धूप न्सी जोर की पड रहा छ  
 क जमी ऊपर पग नेणो मुस्बल छ रस्ता माहे दूर दूर कन्हा भाड का ताब  
 नही बाणू उड कर जगा जगा नवा गीवा होण-सू रस्ता-का ठिनाणा नही  
 आदमी तो दूर रस्ता माह कोई जीन्न जिनान्नर-को भी दरसन न्हा एभी वरत  
 अक जन्नान आदमी जिण-की उमर सोळा सतरा वरम का थी माथो  
 कपण सू बघ्यो हुवा पीठ पर सामान गी पाटळी लादघो हुवा हाथ माहे  
 लोटा डोर लटकायो हुवो हुस हुग करता अजमेर कानी चरयो जा रह्यो छ  
 रेती गरम हाण सू पग क चरका लागकर फोळा आ रह्या छ ता भा जोर सू  
 चाल रह्या छ मन माह बार बार बाल रह्या छ क भाभी ! मावास तन !  
 मन थाली पग-भू जीमता न उठाकर घर छुडायो ! काई हरवत छ ? रामजी  
 म्हा का भी तिन कद ही लासी जरा आप भी म्हा-क पगा पढता फिरयो !  
 भाई तो भाई छ ! मैं तो जाणतो थो क म्हार लार कोई दौन्सी पण भा  
 विना की-न पीठ जात्र ? आज भा होता ता मैं घर बार नोसरतो काई ?  
 इण तरहै का विचार करतो हुवो अजमेर की टेसन ऊपर दाखन हुना

सटवा तरफ गी गाडी जावा न हान पाव छ घटा-की देर थी पाठ पर को  
 बोभो उतार न नीच ररयो पाणी विना मुह सूक रह्यो थो सू विरामण  
 कन-सू लाटा भर जळ लेकर सब मूडो घोकर, थोडो जळ पियो जरा कुछ होस  
 आयो इना माह जेक जणो आकर इण मुसाफर का हाथ पकड कर बोत्या—  
 जय गापाळजी-की भाई साहब ! कठी न की तयारी छ ? क्यू इण तरहै काई ?  
 विना मिल्या ही परभारा टसन पर आया ? सावास ! एण तरहै-हा चाहिज !

—कुण भाई बसालानजी ? भना बसत ऊपर मिल्या ! परभारा काई  
 म्हा को बखत ही अवार इण तरहै को छ भाभी भाई घर माह सू काळ  
 दीतो जरा थ तो खाली दाम्त छो था-सू मिनकर काई हाणा छ ?—इण

भाजण इ०—(?) । कन्कर—घुमकर । सिक्तान्न—सकना । हुग हुश—  
 ग्रीष्मजित याकुलता स उत्पन्न आवाज । चरका—गम जलन ।  
 फोळा—फफाले । हरवत—हज । तिन—अच्छे दिन । जरा—जब तब ।  
 लार—पात्रे । टेसन—स्टेशन । दाखल हुवा—दाखिल हुवा भीतर  
 पदचा ।

विरामण—ब्राह्मण । मूडो—मह । होम—घत । इना माह—इतन म ।  
 कठीन की—किस जोर का । परभारा—परबारे साध । इण तरहै इ०—इम  
 तरह ( = असा ) करना ही आपको उचित है ( पग ) । अवार—अभी इस

तरहै मुमाफर उदामी-मू बोल्यो

वमी०—वाह साव वाह ! दुनिया माहे दोस्त-क बराबर और कोई होतो हासी ? मा-त्राप-सू भी दोस्त ज्यादा काम आया कर छै और साचा दास्त-की परीक्षा बिपत पन्धाज हुवा करै छै ममभचा मुरळीघरजी ?

मुरळी०—हा भाई ! मैं ता गरीब आदमी छूँ मैं काइ इसो दोस्ती-कै लायक छूँ सू कोई मन काम आवै ? दुनिया माह पैसो बढी चीज छै पैसा-वाळा-का हजार दोस्त सगा-सोई और भाई-बद छै

वमी०—अब आ पोटळी-बीटळी लेकर कठी-नै ? परदस जाण-को विचार दीसै छै ? ठीक ! पण आज-कै दिन तो म्हा-कै अठै चालो बाल-की गाडी माह रवाना हो जायीजो

मुरळी०—नही भाई ! अब मन दोस्ती-का फासा माह मती नाखो अब मनै जाबा दो श्रीजी की कृपा-मू अणचीत्यो मिलाप भी हो गयो फेर आप-कै अठै चाल कर काइ करणो छै ?

इण तरहै मुरळीघरजी तिरस्कार-युक्त बाल्या खरा पण मिनता-की मूर्ति सामन खडी रहकर उण-का हृदय कपित करवा लगी बसीलालजी-न छोडवा को दिन हावै नही, और उण-कै साथ उण-कै अठै जाण-का भी दिल हावै नही खूब धूप माटे धवराता धवराता जोर-सू पाव उठा-कर जाणै गाडी-की टेम मिनसो क नही तिका-मू दौडता-दौडता आया और जाण-की तयारी पक्की हा गयी कटै-ही दिल रक्वा नै जगा रही नही इतना माहे बसीलालजी-को मिनताप हो गया और मन दुगध्या माह पड गयो

बसीलालजी पूरो आम्ह कर-न आप-का मित्र मुरळीघरजी-न घरा ल गया विचारा मुरळीघरजी धूप-की तीव्रता-सू चित्त-की व्याकुलता-मू और क्षुधा-की जातुरता-मू घणा श्रमी हा गया था जमी पन पग धर-कर उठावणो मुस्कल थो ताभी प्रेम का रम्मी-मू स्वाचीजता हुवा बसीलालजी-क अठै पूगा ! घरा जाता पाण बमानालजी मुरळीघरजी-को घणा प्रेम-सू आदर

समय । काइ—क्या । पडघा-ज—पडे ही पहन पर ही । सू—कि जिमने कि । सगा-साई—मग-मवधी । हा जायीजा—हा जाइयगा । अणचीत्या—अप्रत्यागित । आप-कै अठ—आपकै यहा आपकै पर ।

खरा—सही अवश्य । जाण—न-जाने । टम—वक्त (टाइम) । जा—जगह । दुगध्या—दुबिधा । श्रमी—श्रान्त थका हुआ (पक्क गद घे) । स्वाचीजता

सत्कार कीनी भट रसोई तयार कराय १ जिमाया शाम-का दो-यू मिलकर हवा खाया न बार गया बसीलालजी मुरळीधरजी न भाभी भाऊ की हकीकत पूछी सुणकर जचम रत्ना रात-का रसोई जीम सुख दुख की वाता कर-न आराम कीनी

{ २ }

खडवा की रचना ठीक ठीक छ मोटो सहर भी नहीं और छान्ने गावडो भी नहीं टेसण का गाव हाणै म रात दिन लोगो को आणा-जाणो वण्यो रहतो वैपार लबो-सा था नहा तो भी महनत मजूरी-गाला न निभात्र की जगा थी मुरळीधरजी उठ अेक छोटी सी काठडी भाडा सू लेकर रहबा लाग्या चारघा कानी फिरकर गात्र देख्यो फेरी सू कपणे घचवा को इरादो कीना किरकोळ कपडो छोटा-का टुकडा वगरा दस पधरा रपिया-का घणी जाच कर न फायला सू लीना और फेरी देणी सळ कीनी विचार कीनी कै कपडा ऊपर थोडा नफो रचकर गिरायक न अक ज भाव बोलणो, मान्य विको अघवा मत विको पहलें दिन सारा गाव माहे फेरी दीनी पण अेक भाव वात्रण सू कुछ विकरी टुपी नहीं मुरळीधरजी निल का पकना और हीमत का पूरा अेक निश्चय कर लीनी क भूळ तो बालणो ज नहीं क्यू भी हा सचात्रट राखणी दखा, भला काद परिणाम होत ? दो-तीन दिन इण तरहै ही गया पर थोडो थोडो कपडा विकवा लाग्यो नोगा । मालम हो गयी क जो वाण्यो जेक वात बोल छ फेर उण माहे कमी ज्याणा कर नहीं महिना पधरा दिना पाछ विकरी आछी होवा लाग गयी ऊपर का ऊपर माल बच-कर जका को कपडो लाता थी न पमा चुका दना इण तरहै थोना दिना माह मुरळीधरजी की साग खडवा माहे आछी पड गयी चार छ महिना माहे तीन चार सौ की पूजी हो गया

हुवा—झीचे जात हुअ । धार—बाहर । अचव रहघा—अचभ म पड गये विस्मित रह गय ।

२ खडवो—मध्यप्रदेश का एक बडा नहर । वण्यो रहतो—बना रहता । निभात्र ६०—निवाह की गुजाइश । किरकोळ—फुटकर सब तरह का । पधरा—पनरा पत्र । फेरी देणी—फेरी लगाना । गिरायक—ग्राहक । अक-ज—जेक-ही । विकरी—बिक्री । ओ वाण्यो—यह बनिया । ऊपर को-ऊपर—इधर खरीकर और तुरत उधर बचकर ।

साच-न आच नही —सचावट दुनिया माहे मोटी चीज छै मच्चा जादमी पर मारा का विश्वास बठ जात्र विश्वास बैठया पीछ कोई बात की कमती नहा साच नै कठ भी डर नही धोका नही, और खराबो नही साच ऊपर सूय चद्र तारा पृथ्वी चाल रह्या छै साच ऊपर सारी दुनिया का कारवार छ साच ही सगळा-का जीवण छै साच ऊपर राज्य को पाया छ साच ऊपर वैपाग-की इमारत छै साच की लछमी बधी हुई छ जिण जादमी-कै पास साच छै उण क सामनै जट्टसिद्धि नवनिधि हाथ जाट कर मडथा छै साच क वशीभूत प्रत्यक्ष नारायण छै साच पुण्य-को भेर धम का मागर नीति की गगा और थाणी का पत्रिअ क्षेत्र छै साच विना शोभा नही आवरू नही धन नहा मान नही कुछ भी नही किसी भी विपत पडा किसो भी परसग जावो—साच न छाडणा नहा राजा हरिश्चंद्र साच-क वास्त राज गमायो, लुगाईं वेटा न गमाया आप विक गया नाना प्रकार का सकट भाग्या पण साच छोडी नही । नठ राजा महा-सकट भाग्यो पण साच छोडी नही पाडवा राज गमायो बनवाम भाग्यो पण साच छोडी नही इण तरहै ही म्हा का मुरळीधरजी साच ऊपर नमर बाघकर साच-को पूरो पूरा आश्रय लीनो

इण सचावट-स खडवा माह सारा ही मुरळीधरजी-की सोभा करवा लाग गया उण पर मारा को पूरो पूरा विश्वास बठ गयो अब कपडा क ताई बराणपुर भुसावळ, जळगाव तोची जावा-आवा नाग गया हजारो रुपिया को माल उधार मिलवा लाग गयो दुकान पर हर कपडा का थान ऊपर कीमत-की चिट्ठिया मार दीनी अेक फरदी कर नै वार सू हर थान का भाव नमूद कर दीना इण तरहै की साब बंधी क भाव बालण की कीन जरूर रही नही कोई भी गिरायक साबत थान लत्रै तो थान पर रुपिया मडथाडा देखकर विना बातया द जात और किरकोळवाळा फरदी माहे भाव देखकर दाम दे जात्र देड दो वरस माहे मुरळीधरजी जाठ दस हजार का मालक बण गया

कठ भी—कही भी ।

धाका—धाखा । खराबो—खराबी विगाड होना । सगळा-को—सब का (सस्वृत सकल) । पायो—पाया नीव जाधार । मेरू—भुमरू पवत । किसी भी—कसी भी । परसग—प्रसग अवसर । सोभा—प्रशंसा । बराणपुर—बुरहानपुर । ताडी—तक । हर—प्रत्येक । चिट्ठिया २०—लेबल लगा दिय । फरदा—धूंधी । वार-सू—गज पर । नमूद—जहिर । कीन—किसी को । जरूर—जरूरत । साबत—पूरा । मडथाडा—लिखे हूजे ।



उत्तम खेती, मध्यम बपार वनिष्ट चाकरी और भीक निदान कहनत छ खेती ऊपर तो आपणा सारो ही देस छ बपार मध्यम कह्यो छ पण परागर ऋषि-का कहणा छ क बपार माहे लक्ष्मी पूरी बस छ बी-सू आधी खेती माह, बा सू आधा राजा की नौकरी माहे और भीष माहे तो कुछ भी नहीं इमी वास्त बपार मारा-सू घणो ऊचो और थ्रेष्ट छ बा-को पार नहीं अग्रेज लागे इती बढी सत्ता और बभन्न बपार-का कारण-सूज सपादन कीना छ बपार को मुख्य पायो तथा आधार साच उदघोग और नियमितपणा पर छ टापटीप व्यवस्थितपणो अेक बात बखत की-बखत भुगनावन, भीठी बात नरमाई और गिरायक-को आदर-भत्कार अ बपार-का अग छ अग्रेज लोग मट्टी-को सोनो कर रह्या छ बै लोग कोई काम माहे फँस भी जात्र ता बी-को पीछो छोडकर निराग होकर बैठे नहीं पूरो पीछो लकर बी काम न छेन्नट ल जात्र आज सारो दुनिया भर-की बपार उण लोग-क हाथ माह छ

( ३ )

अेक दिन उठ-ना बडा साहब कानी सू बपडा-लता और किरकोळ माल की फेरिस्त आयी तिका मुरळीघरजी आप-का भाई-न दीना और कह्यो क फेरिस्त मुजब मारो माल आपणा जाणमा-क साथ देकर माल की कीमत बराबर दगाकर बीजक साथ देकर भेज दधा तिका परवाण हजारीमलजी सारा मान निनाळकर गुमास्ता बन सू बीजक लिखाय न भेज दीनी गाम का मुरलीघरजी जमा-नरच देखवा ताग्या साठ-का भाव-सू माल नोध्योडा दख्यो मारा माल की कीमत बराबर थी परंतु काळी वनात-का थान जका-की कामत नरच नपा सूधा नौ रुपिया वार-की थी सू हजारीमनजी जाण बूमकर बारा रुपिया वार को भात्र लगा दीना थो मुरळीघरजी देखकर चौंर उठ्या । और

कहवन—कहावत । पार—सीमा अत । इती—इतना । सपादन—प्राप्त । नियमितपणो—नियमितता नियम-पालन । बखत २०—उमी समय दाम चुका देना । नरमाई—नम्रता । पाछो लकर—अत तक पीछे लग रह कर । गवन्न २०—अत तक ले जात हैं पूरा करते हैं ।

२ उठ का—बहा के । बडा—बडे । कानी—ओर । फेरिस्त—फहरिस्त सूची । तिका परवाण—उसके अनुसार ( ५० प्रमाण स ) । ना-योडो—लिखा हुआ नाट किया हुआ । सूधा—सहित । वार—गज । बारा—बारह ।

भाई-नै बाल्या क ओ काई कीनो ? नौ क ठिकाने वारा कियान लगाया ?  
आ बात आछी कीनी नही, बात नै बढ़ा लगायो !

हजारीमलजी गुणवर बोल्या क काई हुवो ? चार-पान-सी-नो माल गयो  
जका माहे अेक बनात-का दाम ज्याण लगाया तो काई हरकत छ ? साहब  
सोगा-का काम बै विसा देख छ ?

मुरळी०—(दारा होकर) ब किमा देख छ ।—नहीं नही ! नारायण  
तो देख छ ना ? आदमी-नू तो चारी कर लता पण श्रीजी-क आग चोरी हो  
सक काई ? और इसी चोरी नू फायदो भी काई ?

लाभ न होत्र कपट-सू जो कीजै ब्योपार

जैमें हाडी काठ की चढ न दूजी वार

ओ काम आछो नहान हुनो आज ताई म्हारा नेम पूरा निम्नो पण आज  
बी नो भग हुनो मरजी नारायण-की !

हजारी०—(नीच भाककर) भाया ! इण माहे दोरो होबा को काम काई  
छ ? साहब-न चिट्ठी लिखकर भूल-नू ज्यादा कीमत लगी सू दाम कमती करा  
रयो , साहब ता उठटो खुसी हामी आग इण माहे कोई आछी बात होणी  
छ जरा ओ इमो काम हुवो छ भूल चूक-नो काई ? भूल चूक तो सदा लणी  
णी छ

मुरळी०—(विचार माहे) ठीक छ आज ताई श्रीजी इण तरहै की  
म्हारा हाथ सू भून करासी नही आज वडेरा का हाथ सू हुमी छै सू बो-ही  
नारायण सुधारमी

इण तरहै वोनकर मुरळीघरजी भट अेक अणेजी लिखवावाळा न बुलाकर  
घणा नम्रता नू अेक चिट्ठी साहब-क नाम लिखाकर भेजी क म्हा का भाई का  
भूल सू काळी बनात नौ रुपिया वार थी सू वारा को भाव लगायो गया छ सू  
बीजक दुरस्त कर-न उता रुपिया भेज दीजा

साहब-क पास माल पूग गया था दो चार साहब जीर भी था उणा की

बढ़ो—बलक । चार पान सी—चार-पाच सी । हरकत—हज । किसी—  
कौन स । दौरा—दुखी । श्रीजी—भगवान । नम—नियम । आग—आगे  
चलकर इसमें कोई अच्छी बात (भलाई की बात) हान वाली है । जरा—  
जब तब । वडेरा-का—बड़रो के बड़ा के (=बड़े भाइ के आदराथ बहुवचन) ।  
दुरस्त—दुस्त ठीक । उता—उतन । पूग गयो थी—पहुच गया था ।

मम साहब भी धी माल सारा क पसण आया कीमत भी ठीक नजर आयी काळी घनात दख रह्या था जाप क पास की घनात इण घनात सू मिनायी अेक वणाण-नाळा जेक कारखानो जक नवर अक रग और अेक कपडो मेम साहेब न भात्र पूछया तो ब बाल्या के तरा का भाव ना ममाइ-नू आयी छ जरा साहब न घडा अचरज आयो क जा चीज ममोई माहू तरा का भाव की बिक मू अठ वारा ना भाव की कियान भिनसी ? इण तरहै सारो ही माल किफायतवार छ जाण बूझकर बाण्या कठ कीमत तो कमी लगायी ननी छ ? जाजू बाजू का सारा ही नाग बात्रा नाग्या क साहब ' नही बाण्या घणाज ईमादार आदमी छ बीक पास अेक बात छ आप मोटा माहब छो तो भी बो-ही भाव और कान् गरीब जामी तो भी बा ही भाव कमती यान्त को हिसाब थी क पास छ नही बी की सचावट पर मू दूर दूर का लाग आकर बी क अठ सू माल ल जा= छ बी सू पाई अक को फरक नही दमा लोगा माहे इसो कपारी दूजो कोई लखण माहू छ ननी इण तरहै माता हा रही छ

स्ता माहू मुरळीधरजी की चिट्ठी लकर उण को आदमी आयो साहब न चिट्ठी दानी साहेब चिट्ठा बाचकर अचवे रह्या और समज्या क मन खुशी करवा की बाण्या की जा बालाकी दीस छ एण माहे कोई गक नही फेर जाप का सन्म न पुताकर बोल्या क तू अ नो रुपिया थार पास रख और मुरळीधर सठ की दुकान ऊपर जाकर ऊची मू ऊची काळी घनात जक वार माग वार का नो रुपिया माग तो दकर ल आ ज्यादा दाम वाल ता पीछो आकर कमी रख मू रुपिया ले जाकर फर न आ तू म्हारो सर्स छ जिकी पिछाण धीज मता पूछ तो मट्ट-की छावणी-को छू कर न बोलज

सर्स भट मुरळीधरजा की दुकान-पर जात्रर ऊची-मू ऊची काळी घनात मागी वार भर-का दाम ब ही नो रुपिया माग्या घनात फाड दी आर रुपिया नो न नीना घनात को टुकडो तकर सर्स साहब-क पास आयो साहब पहनी-की घनात-मू मिला लीनो उण की यातग हा गयी घर माहू सू मरकारी वार

नजर आयो—निखाया पडा । ममाई—बगई । किफायतवार—किफायत वाला सस्ता । जाजू-बाजू—जाम पास क निकट रहन वात ।

अठ-मू—यहा स (=दुकान से) । देखण माणे ननी छ—देखने म ननी नही निखायी पटता । समज्या—समझे । पाडो=बापिस । कमी रख=कमी रन् । जिकी—जो = वह यह । पिछाण—पहचान । खातरी—भरसात ।

मगाकर नापी बराबर भरी साहब भट आप की डायरी माहे मुरळीधरजी को नात्र नाध लीना और लिख रस्यो क रायबहादुर की किताब दण माफक जो बाण्यो छ फर किती ही वार इण-क अठ सू माल भोगायो पण पाई-को फरक पडघो नही सरकारी काम काज माहे भी मुरळीधरजी न बुलाया परतु सारी बात सू उण की सचाकट पायी गयी और सारा लोगा का मू मू इण नर-की वार वार जठ उठै साभा ही सुणी साहब की बाल बाल खातरी हो गयी और रायबहादुर' की किताब देणै-कै वास्तै सरकार माहे मुरळीधरजी-की मिफारस कर दीनी

---

भरी—निक्ली । नाध लीनी—नाट कर लिया । किताब—किताब  
 उपाधि, पदवी । जठ उठ—जहां-तहां जगह-जगह । सोभा—प्रगसा । बाल  
 बाल—रोम रोम म पूरी-पूरी ।

मन चायँ माया करू, कर कर करू गुमान ।

साई हाथ कतरणी, राखगो उनमान ॥

(गापीराम क नजीक जाकर) बाबूजी ! आज तो गोकड मे दस लाख रुपिया पडचा है सा क करणा चाय ?

गापीराम—अक काम करो बक बगाल हैड आफिम म भेजकर जमा करवा दघो

रामप्रसाद—भोत चोगो भेज देऊ हू

[ सेठ भोळाराम आत्र है ]

भोळाराम—(हाथ उठाकर) जय गोपाळजी की !

गोपीराम—आवो ! जय गोपाळजी की ! ऊपर न बढो

भोळाराम—बाबूजी ! उपर-नाच सब अक ई माया है म्हे तो सुणी आजकाल म काळो माई-की कृपा-सें थान दो रुपिया भोत चोखा मिल गया है सो सुण-कर भोत खुंगी पदा हुयी, मन म दिचार करधा चालकर निसच तो करणी चाय देखा साची बात है क भूठी है

गोपीराम—(नम्रता से) हा ! आपकी दया-सें इधर म चोखी ई प्राप्ती हुयी है या सब रिदो रोपना थारी ई तो है पला पोत पचास गाठ की इलाली का ये म्हूरत करायो था ज-क बाद वारा-यारा होता ई चल्या गया

भोळाराम—मव परमात्मा की माया है (धीरा सी) अक काम है

गोपीराम—बोलो परमात्रो ?

भोळाराम—रुपिया पचास हजार मन चाय है भोत भारी अडास लाग रही है जाज हुयी पूग है नहीं दीण-स आवरू जातो रड़ेगी (आख भरकर) अ वखत थार सिवाय कोई म्हारो नही है इज्जत बच जावगी तो पदावाडी घणी ई हा जावगी और कह्या कर है—जात्रो लाग रहो माख वज्जत-की

करधा करता—किया करते थ । मन का इ०—मनोरथ करन से क्या लाभ हाना है । चाय—चाहता है । माया—धन (का सचय) । गुमान—गव । कतरणा—कची । उनमान—सीमा म (जनुमान) । करणी चाय—करना चाहिजे । बक—बक । काळीमाई—कनकत्ते की प्रसिद्ध देवी । इधर म—टाल म । रिपोरपना—मागलिक आरभ । म्हूरत—मुहृत । वारा-न्यारा होना—(भाग्य का) निपटारा होना निहाल होना । अडास—सकट काम का अटक जाना । पूग है—गहुचने वाली है । दीण-म—दन स । पनावाडी—कमाई ।

गल ई सगळा भला बाना है, इज्जत नही वचंगी तो अ बखत माटी म मिल  
ज्यावागा

गोपीराम—(धीरज बघाता ह्यो) घबरावो मत-ना सा ठीक हा ज्यायगी  
(रामप्रसाद न) रामप्रसाद ! पचास हजार रुपिया भोळारामजी नै दे द  
भोळाराम भीमराज क पचा सातै नाव माड द

रामप्रसाद—(जेक-जेक हजार का तोट तिजुरी-सँ निकालकर) ल्यो !  
भोळारामजी !

भोळाराम—(रुपिया लेकर) आच्छयो ! तो म जाऊ हू हुडीवाळा बठया  
है, जिका उणा-नै भुगतान दकर नक्की कर देऊ हू

गोपीराम—हा ! जावो (भोळाराम जावै है)

(इतणा म नैणमुख और मगतूराम आसै है)

नैणमुख मगतूराम—(हाथ उठाकर) बाबूजी ! जय गोपाळजी-की !

गोपीराम—जय गापाळ ! आवो, आज जुगल जोडी क्या आ गयी ?

नैणमुख—के आया हा ! इब ये काई म्हान-बी भलो-मो रजगार  
बतावो म्ह तो या दे वाट देखै हा, जिको काळी माई सुण ई लयी है

गोपीराम—घान ता जरूर ई बतावागा अेक काम करो य हुडिया की  
दलाली करण नाग ज्यावा

मगतूराम—भोत ठीक है आज स इ सही बोनो पैला पोत ये  
के बतावोगा ?

गोपीराम—जावो दो लाख-का कळकत्ता (मुदती हुडी कळकत्ता-की) ठोक  
जचाई कर कर नियावो भान म कसर नही लाग ज्यावै चोधी चाखी  
आसामिया की ल्यायो

नैणमुख—ठाक है भाव कानी स और आसामी कानी-सँ ता ये सौ हाथ  
की साड म सोवो

( इतणा म रगलाल आवै है )

गैल—पीछे । सगळा—सारे । भला—अच्छे । बाना—बाने बात रचना  
दशा । सा—सब सारी बात । पचा— । नाव माड दे—नावे लिय  
दे उधार निव द । आच्छयो—अच्छा ठीक ।

क्या—कसे । या <sup>र</sup>—यही । दग हा—देखते ये दग रह ये । लयी—  
ली । जचाई—जाच । कसर—बुटि, कमी घाटा । आसामी—साहूकार

गोपीराम—(मदधा हाजर रगलाल न) जानो सठ साब ! जयगोपाळजी की आज क्या पधारधा ?

रगलाल—जयगोपाळजी की ! क्या का सेठ साब ! आपा ता भाई हा ! सत्र अक ई माया है

गोपीराम—या ता क्यू कयो हो ! म्हार ता थ सठ ई हा था रो गुण थोडा ई भूना हा साची पूछो तो थे म्हाा के जाण था पण कितणी मातबरी कर था ये इतणू सहारो नही देता तो अँ कळकत्ता म म्हारा पग ई कानी लागता सठ साब ! धारा गुण म्हं भूलण का नही हा गुणा न खराब आदमी होय जिफा भूल्या कर है

रगलाल—बात ता या ई है कही भी तो है—

हरदी जरदी ना तज खटरस नज न आम ।

सीळन्न गुण ना तज गुण कू तज गुलाम ॥

गोपीराम—आजकल आप क रजगारवाडी का क हाल चाल है ?

रगलाल—फीका ई हाल है इधर म म्हं रपियो भात खो दियो है

गोपीराम—क्या म खा दियो ?

रगलाल—अक जादमा-का फेर म आ गया था बी मोना का म्हैन दिगाकर पला तो म्हारा नाम-स खूब सौदो कर लियो पीछ ज्याना घाना हो गयो जणा नटकर नाक हा गया

गोपीराम—थ इतणा हुसियार ममजदार हाजर क्या ऊ-क फेर म आ-नाया ?

रगलाल—फर म के जा गया ? दूणी क वम हो गया कह्या भी ता कर है—

जसी हो होतब्यना बसा उपज बुद्ध ।

हाणहार हिरु वस विमर जात सब मुद्ध ॥

गोपीराम—या तो ठीक है भर सारु कोई काम होय तो क दिशा मकाच मन-ना करियो

दनदार । क जाण था—क्या जानने थ । मातबरी—विश्वमनायता एतबारी ।

पग ३०—पर हा नही टिकत । याई—यही । जरदा—पालापन जो उमका

स्वाभाविक गुण है । खटरम—खटटापन । गुनाम—नीच या दागना ।

म्हैल—म्हूर । परा—पर । जणर—जब तब । नटकर—मुकरकर ।

नाक—अलग । दूणी—होनी भावी । मुद्ध—चेत । सारु—निज याग्य ।

रगपाल—रुपिया दो लाख की मदत-की दरकार है

गापीराम—रुपिया ता घरा ई है ले ज्यानो (रामप्रमाद-नै) रगलालजी न दा लाख रुपिया द द ! रगलाल राधेगोपाल-कै नाव माड दे

रामप्रमाद—(दो लाख का चोट तिजूरी भा-सँ निकाळकर) रगलालजी साब ! अँ ल्यो !

रगपाल—(रुपिया लकर) गोपीरामजी ! दव तो म चालू हू (मत म) गुण मानणू नाम अ को है साचा मदत अ-नै कह्या कर है ऊपर-स क्यू ई दोल है, भीतर म क्यू ई घाटा घडिया राख है आत्मा-की चोरी राखकर आत्मा क विरुद्ध बात कर है जिवा की मोई आदमी है क ? य बिना सीग-पूछ का पसू है इसा आदमिया-न चौराव ल ज्याकर माड दीणा चाय

गापीराम—म की घरा जाऊगा चाला चाला (दानू जाव है)

---

गुण मानणू—उपकार मानना । घाटा घडिया राख—(दूसरो के अनिष्ट के विषय मे) सोचते रहते हैं । चौराव—चौराहे पर, सरे बाजार सरे आम ।



## मोगरा-कळी

( गद्य काव्य )

[ अजलाल वियाणी ]

[ श्री अजलाल वियाणी विद्वांस व निवामी है । साहित्य सेवा के साथ साथ राजनीति के क्षेत्र म भी इहाने देग की बहुमूल्य सेवाए की हैं ।

इहोन नाटक कहानी निबंध गद्यकाव्य आदि सभी विधाआ म राजस्थानी म रचना की । विजयादगमी' और बाळरामायण इनक उल्लेखनीय नाटक हैं । सीताहरण रामायण की कथा के आधार पर लिखी गयी कहानी है जिसका प्रकाशन स० १९७५ म हुआ । इहोन हिंदी म भी लिखा है ।

सकलित गद्य काव्य स० १९७३ म पचराज वप २ अंक ४-५ म प्रकाशित हुआ था । त्राक्षणिक शली और मूर्तिमत्ता के कारण यह रचना बहुत ही प्रभावात्पाक बन पडी है । ]

( १ )

बडी फजर-की बखत सधि प्रकाम ही गयो छ रात का अधेरो दिन-का चानणा-न जगा दे रह्युया छ तारा जाप का सीतल और मद तज-न मूरज नारायण-का उष्ण और प्रखर तेज-का सामने लोप कर रह्युया छ निरभ्र आकाश म मूय भगवान-का आगमन-का प्रभास-सू लाली छापी हूई है पूव दिसा लाल वस्त्र धारण कर-कर पती-का आगमन की घाट जाय रही छ मर मर और सीतल-सीतल हुत्रा चाल रही छ पछी किलकिलाट कर रन्धा छे कई जणा आप-का विद्यावणा-न छाडकर आप-का कतव्य-क वास्तु नित-नेम कर-कर तयार होय रह्युया छ किना ई आळमी भाई हान-ता-

१ बडी फजर—बहुत सवेरा । बखत—बकल समय । सधिप्रकाम—दिन रात क सधिकाव का उजाला । चानणो—प्रकाश । जगा—जगह, स्थान । लोप करना—ब्रह्मदय बनाना । निरभ्र—मघ रहित । पती—पति अर्थात् मूय । किलकिलाट—बत-बत गन्ध कलरव । कई जणा—कई धर्याकन कई लाग । विद्यावणा—बिद्यौन । किताई—कितन ही । हानताई—अभी तब । बरवा

निद्रा-देवी की गाद में ही पड़घा छै बेई रात का खोटा काम करवाला छै चोर वगैरा सारी रात जागरण कर अब नीद-कै सरण जाय रह या छै आज-कल-की धरती का नवयुवक बड़ी फजर का खट-करम-सू निपट-कर कोट-बूट लगाकर जोर टोपी-नै हात में लेकर नही तो सूटी पर छोड़कर, हवा खावा-नै निसर गया छे इसी मनोहर और सुहावणी समय-का मैं भी महाराज -वाग में जाय पूग्या हाल-ताई सुयोदय ह्यो धो नहा पूरी रीत-सू चादणो पड़घा छै नही फेर महाराज'-वाग सरीखा भाडा-सू लटापट बगीचा में तो और भी ज्यादा अधरो चालती चालती चारघा कानी निरीक्षण करतो-करतो बगीचा की ठडी-ठडी हवा को सुवाद लतो लतो और मारै आनद-कै फूलतो फूलता मैं मोगरा-का कुज बनै जाय पूग्यो !

अहाहा ! वी गाभा-को काई बणन करणा ? जठी-बठी न मोगरा-का भाड दिख रह्या छे धोळा धाळा फूल खिल रह्या छे हवा-क कारण मद मद नाच कर रह्या छै वा न देखकर मलमल का हरघा जोर सपेद फूला सू जड़घोड़ी जाजम की याद आ जावै छै मोगरा सू मस्त मस्त मानवा-नै मजा चखा रही छै बठा की वा अतुल और स्वर्गीय शोभा देखकर मैं म्हारो आप-सू बाहिर हावा लाग गयो मोगरा-सू सुगंधित हवा-को आस्वाद लवता ही हाथ आप-क मतै ही आगा न चलयो गयो और अक फूल न धीरज क साथ तोकर आप-को कर लियो

अहा ! वा सपत और स्वच्छ पाकळ्या सू जड़घोडा पुष्प मन अक गोरी-का मुख-चंद्रमा छे इया दिखबा लाग गयो पाकळ्या वी का हसत मुख

बाला—करन वाल । मरण—शरण म । फजर—सवेरा । खट करम—धार्मिक जन प्रात काल पटकमों की विधिया पूरी करत हैं अर्थात् शौच स्नान आदि । नवयुवक—नयी पश्चिमी सभ्यता के भवन तरण । निसर—निकल । समय का—समय म । पूग्यो—पहुंचा । चादणो—प्रकाश । लटापट—भर हुआ । चारघा कानी—चारो ओर । फूलतो—प्रसन्न होता । जठी बठी न—जहा तहा । जड़घोडा—जड़े हुआ । जाजम—जाजिम । मस्त—पहन ।

मैं म्हारो इ०—मैं अपने आपे में बाहर होने लग गया (अपने आपे को भूल गया) । आप क मत ही—अपन आप ही । आगा न—आग की आर । आपको इ०—अपना बना लिया अपन अधिकार में कर लिया । सपेत—सपेट । पाकळ्या—पखडिया । गोरी—सुदरी । हसत मुख—हमते हुआ

की मुझ बत्तीसी छ इया भ्रम होवा लाग गयो पुष्प को वृत्त नाका ओ मरेठी फशन को गळा ताई परघोडा हरयो नूगडा छ इण तरह म्हारी खातरी हो गयो इया विचार कर-कर और बी भोगरा-कळी-नै अेक नन्न-भुवती कळपकर मैं बी का सुगध को सुवाद लेवण-क वास्त म्हारा नाक कन ने जावा लाग गयो खुमी सू फूलकर जोर-जोर-सू सास लेवा लाग गयो इ ससार का सगळा दुखा न भूल गयो निसग देवता की गोदी म जाय पूयो ईश्वर-म तादात्म्य होवा लाग गयो ।

( २ )

इ स्वर्गीय सुख म मग्न होकर मैं अेक क्षीय दफ बी-की सुगध-को आनन्द लिया थो कि नही क इत्ता म म्हारा अत्याचारा-क वास्त दड देवा की इच्छा मू को म्हारा गाल म अेक उमदा थप्पड की जमा दीनी था चनपट बठता ई म्हारी गूमी गुग हो गयी और दबू छू ती वायरा-सू तथा म्हारी घिगामस्ती मू उड्याडी अेक भोगरा-की कळी म्हारा गाल-क ऊपर उडती दीखी

मन जरा सुष पर आयोडा देखकर वा भोगरा की कळी मार क्रोव क मन बोलवा लागी—

खबरदार ! अब आगान मूडा-नै करघो तो ! मैं धारा जिया अविचारी नही अेक क्षण भगुर सुख-क माय-न फमकर सदा-क वास्त म्हारा शीळ-न बटने लगाबावाळी नही !

देख ! मनै विगसवा न इत्ती वार हो गयी और धारा सरीसा न ई म्हारा कना-सू चत्या गया म्हारी बना-न जवरदस्ती पक-पकडकर ले गया पण मैं कोई-क कन गयी काई ? था न मोटयारा न बिलकुल शरम नही ! आप-का गीळ-की पिटाण नहा भू जायकर कोई भी अबळा को हाथ पकडवान तियार हो जावो पण कदे अेकादी लुगार्द भी था-को हाथ पकडघो छ काई ?

की । बत्तीमी—बत्तीस दातो की पकिया । वृत्त—डोडी । नाका—नाक । मरेठी—मराठी । परघोणे—पन्ना हुआ । नूगडो—वस्त्र । इण तरह—इस प्रकार । खातर—विश्वास । कळप कर—कल्पना करके । सुवाद—स्वात् आनन्द । लेवणो—लना । कन—पास । निसग—प्रवृत्ति । तादात्म्य—अव्यय ।

२ चनपट—घपन । बठताई—बठते ही, पठते ही । गूमी ०—चेतना गायब हो गयो । वायरा—हवा । उड्याडी—उडी हुई । मुष पर—हाथ म । जिया—समान । बटो—कलक । गीळ—सगाचार । वार—समय । कना सू—पास मे । मोटधार—मद ।

नहीं ! कद्वे भी नहीं !। म्हे इत्ता काचा दिल की नहीं अबळा पर जवरदस्ती करणी ओ काम था नै मोटयारा न ही सूप्या छै धिक्कार छै थानै ।

हे पागन ! जरा विचार द्य तू म्हारा म कित्तो दग हा गयो म्हार लार पडकर कित्ती तन मन की सुध भूल गयो, इ समार-वा दु खा सू बिलबुल मुक्त हा गयो, अठी उठी न तन जानद और मुख ही-मुख दिमबा लाग गयो, तू कित्ती प्यार-की नजर-सू म्हारा कानी देखवा लाग गयो मनै कित्ती अधर-अधर नचावा लाग गया पण म्हा रो ओ सुत कित्ती वार ताई ? अक घडी या दा घडी ! म्हा रो सुगध जठया ताइ छ बठया ताइ ! जित्त मै मुमळाऊ नहा बित्ती वार ताइ ! इत्ती वार सुल दवानाळी पर जे तू इत्तो प्यार कर छै और मान-तान-सू राख छ तो फेर तज जनमता इ सुख देवा वाळी पर कित्तो प्यार करणा चाहिज ? बी नै क्या चोखी तरहे-नू राराणो चाहिज ? पण इत्तो जान तन कठै ?

हे अविचारी ! दख, थारा गृह रूपी उद्यान म खिल्योडी स्त्री रूपी पुष्प-कळी पर तन कित्तो प्यार करणो चाहिज ? बी न कित्तो अधर अधर राखणो चाहिज ? बी-का मन को कित्तो विचार करणो चाहिज ? बी-का सुख-दुखा-की कित्ती खबर लणी चाहिजै बी को कित्तो मान-तान राखणो चाहिज ? पण अ सगळा वाता था सू होत्रै नही

वा पुष्प कळी था की जनम भर की सायण छ धरम-पुन मे हिस्सादार छ सुख दुख म सायण छ बी-का हसत मुख था की समार का दु खा सू रक्षा करवा वाळो छ बी को प्यार था का जमारो न मुखी और रहवा क लायक वणावावाळो छ बी-को रहणो उद्यान नै शोभा लावावाळो छ और वा छ जद ही गृह रूपी उद्यान छ नही तो उजाड वन समान छ

पण बठ ती मदा राड भगडो करवो करो बी का हसत मुख न सदा

पिछाण—पहचान । तियार—तय्यार । अकादी—अकाध कोई-अक । दग—चकित । लारै—पीछे । अधर अधर—ऊपर ऊपर आदर के साथ । जठया ताई—जब तक । बित्ती वार ताई—जितनी देर तक है उतनी देर तक । इत्ती वार—इतनी देर । देवानाळी—देन वाला । जे—यदि । मान-तान-सू—समान के साथ । जनमता इ—जम होने ही । तरहा-सू—तरह से । पण—परतु । कठ—कहा । चाहिज—चाहिए । पुन—पुण्य । सायण—साधिन, सगिनी । जमारो—जम जीवन । रहवा-क लायक—रहन योग्य ।

राड—लडाई । करवा करो—करते रहत ही । रोवणो—राना रोता

रोत्रणो करवा रो प्रयत्न करवो करो वा-का भान की जग वा न जूती की ठोड वरतो प्यार की विरवा-क बदळ बी-पर गाळ्या की वरसात करवो करो बी-को विश्वास राखो नहीं और सदा बी पुष्प न कुम्हळावा-की वटपट करवा करो फेर वतात्रो घा न सुख किया मिलणा ? वठै सुख नहो मिलै जरा ही बी स्वर्गीय उद्यान न छोडकर इण उद्यान मे जावो धिक्कार ।

जा अब तो भी आप्या न खोल और गृह रूपी उद्यान मे विल्योडा पुष्प न आधी तरहा-सू फुलावा को प्रयत्न कर और फेर देख तत कुण-सा सुख की प्राप्ती होत्र जिबी । सम-यो ?

( ३ )

मोगरा की कठी-का कटु पण साचा वचन सुणकर मैं पागल और अविचारी छू या म्हारी पक्की खातरी हो गयी ओर वा जाग न बाल रही थी तो भी म्हारा हाथ-मा मू जाप जाप छूटकर हवा की साग कठीन-ही उड गयी

प्रिय वानक ! राजा कण-की वखत छ भूट कदे बी नहीं बोनसू, जिसी जिसी हुई सा सारी आप न कह सुणाया । आप तो भी म्हारा की नाई अविचारी नहीं बणागा इसी आशा छ

हुआ । वरतो—व्यग्रहार करते हो । वरवा—वर्षा । मिया मिलणो—कसे मिलना कस मित्रे । जरा ही—जभी तभी । फुलावा को—प्रफुल्लित करने वा । प्राप्ती होत्र जिबी—प्राप्ति होती है जा (राजस्थानी भाषा वा मुझावरा) ।

३ खातरी—भराना । आगान—आग । जाप जाप—अपने आप । साग—साथ । कठीन इ—कही । राजा कण की वखत—प्रातःकाल की बेला । भूट—भूट । जिमी जिमी—जमी जसी । आप तोभी—आप भा । म्हारा-की नाई—मेरे वाली तरह मेरी तरह ।

## घनवानां-की लक्ष्मी

( विचारात्मक निबन्ध )

{ 'सत्य-वक्ता' }

[ श्री 'सत्य वक्ता' राजस्थानी के नवाख्यान काल के प्रारम्भिक अवक थे। मकनिन निबन्ध सं० १९८२ में पंचराज के पृष्ठ ४ अंक ८६ में प्रकाशित हुआ था। इसमें लक्ष्मी के स्रोत, व्यवहार और उपयोग के सम्बन्ध में बड़ी सुन्दर कल्पना की गयी है। ]

( १ )

घना-सा घनवाना-नै निदयता बठारता अथवा बजूसी करना देखकर लोग आश्चर्य किया कर छे कारण किताक लाग हाय हाय करता ही चलया जात्र छे और जाग-स्तार कार् नही हुत्रै तो भी बा-बा खुद का हाय-मू न तो मत्वाय म मरच्या जात्र जीर न खाया जात्र छे

जिण-मू लक्ष्मी किता प्रकार-की रया कर छे, यो आज पंचराज का पाठका न भी बगान का हेतु-मू मणिपत मे लक्ष्मी का प्रकार बताऊ छू जिण पर-मू घनवाना का व्यवहार पर जो लोग आश्चर्य किया कर छे वो को कारण समझ म जा जासी

लक्ष्मी का वाहन अर्थात् बठवा-का जामण दो प्रकार-का रया कर छे जिण म प्रथम आमण कमळ-नी छै जिण रै घर म लक्ष्मी कमळासना होकर आत्र छे वो-का हाय-मू लक्ष्मी का सदुपयोग भी हुया कर छे जीर बा मे गभीरता दयाश्रुता उदारता, नम्रता और शांति इत्यादि गुण भी रया करै छे द्रव्य-न दमाग मे लगाण सू तथा दयाश्रुता नम्रता आदि गुणा-का होवा सू वै परायी आत्मावा-का भी शुभ नितन किया कर छे जीर व स्वय भी सुखी पुत्र-पौत्रवान तथा घनवान हाकर आनंद भाया करै छै जीर जिण र घर म लक्ष्मी उन्नत-वाहनी होकर आत्र छे व बहुधा बजूम निदयी अविचारी तथा अहकारी रया कर छे वा का घन को उपयोग सद माग म होणा दुलभ

१ घना-सा=बहुत-से। किताक=कितान अंक कितने ही। चलया जात्र छे=चल जाते है मर जाते हैं। रया कर छे=हुआ करती है। पंचराज=अंक मासिकपत्र जिसमे यह निबन्ध छपा था।

छै कारण उल्लू रात-को राजा छ बी न दिन का दीव नहा जिण मू  
इसा धनवाना क ऊपर अहकार रूपी अधरा हमगा मगार रया कर छ जे  
इसा धनवाना का धन-को उपयोग भा अधरकाम भ ज हुया कर छ जिसा ब  
काम रात-का हुया कर छ वेश्या-नाच जातमवाजी भोग विलास तथा वृद्ध  
विगाह आदि फिजलखर्ची म अथवा काइ जवरत्तरता का ठेगण म परतु सद  
माग म कदे भी नाग मव नही इसा धनवान आप-को बडपणो वतावण सारु  
फिजूलखर्ची अथवा पाखड म कठ कठ धन लगा भी दत्र छ परतु कद्रत भा  
छ क—उल्लू को धन मसकरा मात्र

एण याय सू वसा धनवाना का धन अक तो मसकरा वन्मास वगर साया  
कर छ अथवा घत पाखडी निरहोगी भोग मौज किया कर छ कारण  
क उल्लू-बाहनी लक्ष्मी को यो स्वाभाविक धम ही छ

( २ )

तीजो अक कारण यो भी छ क कित्ताक धनवाना क वन धन कई प्रकार  
को (भला गुरो) आयाडो रया कर छ और बी का प्रायश्चित्त रूप म बी धन  
म सू कुछ धाडो-बहुत भी कोई सत्काय म तरच्या नही जाव ता एसा धनवाना  
की मति (बुद्धि) भ्रष्ट भी हो जाया कर छ एसा धनवाना कन कोई आसामी  
अथवा छाटा भोगो यापारी बल्यो जाव ता भा-को इच्छा या ही रया कर छ  
क इन हजम विण युक्ति-सू क की वस्तु कित्तीक यो म्हाग डात्र  
पेंच म की तर आसा इ की इतिश्री ता नहा हा जावना इत्यादि नाना  
प्रकार-का तरग लाकर नित्यता-मू दूसरा को अहित ही माच्या कर छ एण  
तर सू निदयता कर लोग-को अहित साचणवाला-का भगो करणो ईस्वर भी  
मजूर किस तर करमी ? एण भगुर सुख प्राप्त भी हो जाव तोभा वो स्थिर

दिन का = दिन म । दीव नही = दिवायी नही देता । अधरकाम = बुर काम,  
अयाय अधेरगदी । जिसा = जैसे । आतसवाजी = जातिगवाजी (क खन) ।  
बडपणो = बडपण । सारु = निजे । वत्रत = बहावत । मसकरा = मसखरे,  
दिलगीवाज । निरहयोगी = उदचाग रति, गानमी ।

आयोडो = आया हुआ उपार्जित । आसामी = देनदार । इस्टेट = जायदान ।  
डात्रपच = पावपेंच । इतिश्री = समाप्ति अन् । तरग = मन के तरग अर्थात्

नही रह मर आगरी म आप-का भाव्य-न दाप दिया कर छै परतु आप की करणी-न नही देख तथापि ईश्वर-तो करणी प्रमाणे ही फल निया करै छै इसा लाग-न सकट-क समय म राम माद आया कर छै सगट दूर हाता-ही फेर भूल जाव और सबळप कियाडा दान तक हाथ-सू छूट नहा थोडो बहुत भी मुख प्राप्त हुयो कै भट अहवार म पून जामी बाद-सू वात करण-न या सत्सग सभा, व्याख्याता-न तो पुरसत भी नग पा सब गादी पर पडधा ऊधा-सूवा नुटता, ठाठळधा करता गप्पा मारता पडधा रमी और घणी ज भागवानी हो गयी ता पडदा-की बीबी बणकर बठ जाती बार निकलणा आप री इज्जत क बार ममभर कोड सत्सग, सभा-मासायटी का अथवा उत्तम काय म सहायता करवा-का मौको आ जाव तो भट क दमी—म्हान फुरमत नही छै और पडदा-की बीबी समान घर म-ही बठया रमी

अधाधुध होकर मन-माया काम करवा म अथवा फिजूल नामवरी जोर मोटापणा बतानण मात्र अहवार म फूल्या हूया लदमी-का दुग्पयोग भी करसी तथा फुरसत भी भिन जामी जद विचारी नगमा भी आप-का अनादर और दुरपयोग दव रुस्या विना किया रमी ? जोर पड माव रमा अहवारी लोग बुगना भगत बणया कर छै तथा जावरी म हाय हाय करता ही चल्या जात्रै पण हाथ-सू बुद्ध भी करण नही पाव

नारायण इ भूमि पर भूपति भया अनेक ।

मैं मेरी करता गया त न गया तृण अंक ॥

विचार । प्रमाणे=अनुसार । सबळप=सबलप ।

ऊधा मूवा=उठते सीध । लुटता=नाटते । ठाठळधा=ठिठोनिया । भागवानी=सपनता । पट्टा का बीबी हावर=(रगमहन म) छिपकर । बार=बाहिर ।

नामवरी=यगन्विता प्रतिष्ठा । मोटापणा=बडप्पन । रुस्या=रुटे । किया=कस । पड=पीछ । बुगना भगत=बगुलाभक्त लोगी । बणया करै छै=बना करत है । आवरी=आविर अत । मैं मेरी करता=अहवार ज समता मे फँसे हुये ।



## समाजोपशान्ति को मूलमंत्र

( विचारामय विषय )

[ अज्ञानता को ठारी ]

[ श्री अज्ञानता शोषारी पीपलगायक व निवासी थे । राजस्थानी के नवा  
सिंह के २ विभव से १९७६ में पचराज के वय ५ अक १२ म प्रकाशित  
हुआ था । इसमें समाज की उन्नति के लिए नारी-जाति को सुशिक्षित बनाने  
पर ध्यान दिया गया है । ]

( १ )

आपको समाज रोगी छ या बात बतूत करवान न कोई भी इनकार नहीं  
करनी रोगी भी हतो बिसा नही महान रोगी छ महान रोग तो छै ही  
परतु बी वा साथ छोटा छोटा रोग भी अनेक रया कर छ बचराज जठा तक  
रोगी वा मुख्य रोग को पत्तो तथा निदान नहीं जाणसी, बठा ताई बी की दवा  
दारु कुछ भी काम नैसी नहीं बस ! इनी ही दशा आपणा समाज की  
ई अनेक विद्वान सुधारक उ नति सारु खटाट कर रया छ पण हाल ताई  
समाज वा मुख्य रोग वा निदान पत्तो नागा नही कोई कोई न लागो भी  
छै तो बी की उचित चिकित्सा जाण नही ई वा वास्तु उचित चिकित्सा-की  
बणी जहर छ अब या बात जाणवा की आवश्यकता छ क समाज न रोग  
कुण-मो छ बी-को निदान तथा सुधार को मूल मंत्र काई छ ?

प्यारा मरुभूमि-का मिरदारा ! आजो जरा शांत चित्त होकर आप  
बान पर विचार करा भला ! आपणा मुख्य विषय काई छ ? 'समाजो'  
का मूलमंत्र ठीक ! प्रथम आपा ई बान-को विचार करा  
काई चीज छ कुछ लोग-का मिलजुल कर अक लग सू रक्षण  
पान रीत भात चान चरण बोन-चान भापा बगर जिण  
छ इ वा नाव समाज छ अक नीती व रीती जेव-ह  
आचार विचार तथा अक-रा नियम पर चालवाताळा  
नाम समाज छ अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति समाज-का कुछ अंग छ

१ क-वा न—करन का । इना विग्गी—असा बँसा सा  
रोग जान । सरदार—सजना ।

बिना समाज बण-ही नहीं मकै छै समाज का हर-अेक व्यक्ति (चाह स्त्री हो या पुंरुप) सुधरभोडो छ तौ वो समाज भी सुधरयो तथा उन्नति शील कहासी, और प्रत्येक का विगाट-सू विगडघाडो कहासी प्रत्येक व्यक्ति-को सुधार ह्यो क बस समाज सुधार ह्यो समजना चाहिजै

अब या बात विचारणीय छै क प्रत्येक व्यक्ति आश्रै कटा-सू ? हर-अेक व्यक्ति माह बुराईया कटा सू आश्र छ ? व्यक्ति ममुदाय कोर्द जाकाश सू तो पड नहीं प्रत्येक व्यक्ति, चाह स्त्री हो या पुंरुप मूरख हो अथवा पडित बाळ हो अथवा वृद्ध सारा ही स्त्री द्वारा पदा होवै छ और बी-की गोद माहै ज पळवर मोटा हाश्रै छै, अर्थात व्यक्ति मात्र नै जन्म देवावाळी स्त्री समाज छ

( २ )

या बात तो सब माय तथा निर्विवाद छ क मनुष्य टावरपणा माहै जो वाता मीस लेख बी-न बा कदे भी भूल नहीं जिण जिण वाता-को सस्कार बाळक का वामळ हृदय पर जम जाय ब वाता वो आसी उमर भर भूल नहीं सब बाळपण माह जो आदत पड जातै व कदापि छूट सक नहीं घाया-सू धुप नहीं, काडवा सू निकळ नहीं मतलब यो कै वाल्य अन्नम्या ही अेक इगा समय छ क मनुष्य चाह जिसा उत्तम बण सक छ और चाहे जिमो अधम भी बण सकै छ

बाळ-अन्नस्या माहै आदमी का गुरु माता हीज हाश्रै छै जिण बरत-सू बाळक गभ माते आर्य उण बरत सू ज माता को जसर बाळक पर पडणो आरभ होतै छै जिण जिण भली अथवा बुरी वाता-को मस्कार बाळक का वामळ हृदय पर जम जाय ब ही सस्कार रूपा बाज बडा होतण-सू व त-को रूप धारण कर लेत छ बयू क बाळकपणा का सस्कार प्रबळ हाय-न अन्त बरण-न अपणो बणाय तसै छ जिसा आचरण बाळक माता-को श्रमी विमो-नी आचरण बो करमी रूप जिसा छाडा मा कहावत आपणा माह प्रमिद्ध छ जो बाळक मूग माता-की गोश्र माह पळमी, उण-म दुगुण तथा

गुधरघाडो—गुधरा हुआ । चाहिज—चाहिये । कटा सू—कटी ग ।

२ टावरपणो—बचान । धुप—धुपता है । रूप जिसा छाडा—जमा पेट बसी छाल । लोडा—मूगी छाल क टुकड । जिस्ती—जितनी । बणाग—बनाचि ।

सरदार— अब काई या तो नी कवगा क बहू-बटी री लाज रँ साट मत्ताड  
री स्वतंत्रता न राखी अ नदाता ।

महाराणा—अब मूडो क्यूँकर बतावा ?

सरदार— सब दिन सरीला नी हुन पृथ्वीनाथ ।

महाराणा—सरदारा ! अब ता भेवाड माता-सू विछड़णो ही पडला

सरदार— ता जठ ठाकर बठ ही चाकर

महाराणा—जदी लवा विदा ।

[ सब जणा हाथ जाड न विला लेव ]

जननी ! अब दरमण कद दोगा ?

जाणा पलित अणी-न माता ! पाटो क सुमरोगा ?

वन-वन भटक ऊमरा खाधा जळ भरणा रो दागा ?

दया दृष्टि-सू दग अणी न खोळा म कद लोगा ?

इ कपून गी कुवण-न पण गुण ही आप गणोगा ।

चाकर चूक कर चरणा रो तो पण नी चरहोगा ॥

गक्तिमिह—अनन्दाता ! देस-न घरम रा माचा सक्ता र चरणा म कनीक-नी  
कदीक लिछमा जरूर लोटगा अणी म सदेह नी

(सब धीर धीर जाना लाग न दूजी कानी-सू भामागाह हाफना-हाफता आस )

भामागाह—चरणा म लिछमी जरूर नाटगा अनदाता ! अणी म सदेह नी

महाराणा—(पाछा दख-न) ओ हा ! भामागाहजा ! आप अणी वसत  
कठा-सू आय गया ?

बतरो ही—उतना ही । अनदाता—बडे रामो के लिभे विनेपत  
राजाजो क लिभ प्रमुक्त होन वाला अब सबाधन । अणी री—इसवी ।

पण—(१) परतु (२) भी । नी—नही । नी कत्रगा—नही बहेंग । साट—

सट्टे म, बदन म देवर । मूडो—मूड । पडगा—पडेगा । टाकर—मालिक

(टक्कुर) । जदी—जभी तभा तो । क—कव । अणा-न—रम (सवक) को ।

दोगा—देंगी, राजस्थानी म आदराय बहुवचन का प्रयोग हाता है और माय

ही नर-जाति (पुत्रिग) का भी । ऊमरा—गूलर क पत्र । खाधा—खाय

(अप० मड) । दागा—(पीन का) लेंगी । मोटो—गोत्र (शेड) । इ—रम ।

कुबद—नटगटपन उत्पान (कुबुद्धि) । गणागा—समभेंगी । ता पण—तो भा ।

चरहोगा—बिहेंगी खुद होगा । कनीक-न कनीक—कभी-न-कभी ।

भामाशाह—मेवाड रा खाधा धका लूण नै लखै लगाव्वा न यो भामो वाण्यो  
पण मालका रा चरणारविदा मे आय पौंच्यो है पृथ्वीनाथ ।

महाराणा—आछा ! आप जाया न भ्हा जाना

भामाशाह—आ भ्भारा भाथा रा मोड ! यो कइ होकम करायो ?

महाराणा—सूरमा स मर खूटा, खजानो खाली छै गयो, न मेवाड लागा  
रा कबजा म गयी अब है कइ ज्या अठ रवा (जारया डव  
डवाधीज जाव)

भामाशाह—भगवान सब आछा करैगा अनदाता !

महाराणा—पण ?

भामाशाह—पण कई जन्नदाता !

महाराणा—पण कई ?

धायो नाच धायो कूट धायो कर किलोछा ।

धायो-सू मव राजपाट है धायो विन सब रोछा ॥

भामाशाह—अणो री कई चिंता है पृथ्वीनाथ !

महाराणा—अणो री हीज ता भारी चिंता है क्यूक जाजबल लाग अणा चादी  
रा टुकडा रै साट देस धरम रूप जीवन मान-भरजाद न बहन  
बेटी—सब न बच रया है

भामाशाह—अनदाता ! जणी चिंता न मटवा रो उपाय तो (थली पगा म  
सरकाय नै) या है

महाराणा—ह-ह ह ! कई आप रा धन स ।

भामाशाह—अनदाता ! यो ता मानका रो हीज माल है

महाराणा—नी साहजी ! या नी है सकै । प्रताप उतरो नीचो नी उतर  
गया है हाल तक

भामाशाह—ठीक अरज कर है चाकर अनदाता ! यो तो मालका रा  
हीज माल है

महाराणा—या हू क्यूकर मान लू

खाधा धका—खाय हुआ । लूण—नमक । लख लगावो—उपयोग म लाना ।  
न—जीर । भ्हा—म्ह हम । जाधा—जाते हैं । मोड—मुकुट । हाकम—  
हुकम । सूरमा—सूरवीर । लूटा—समाप्त हो गये । छै गयो—हो गया ।  
लोगा रा—(सूरसे) लोगा के । कबज म—अधिकार म । कई—कइ क्या ।  
ज्यो—जा कि । रवा—रह । धायो—धान अन धन । रोछा—ध्वय नी  
वाते । साटै—बदल । क्यूकर—क्याकर ।

भामाशाह—वन बाळाजी री मोगद क अक्लिगनाथ री आण । यो तो मालका रो हीज माल है (ठर न) मवाड रा मालक तो वन वन म भटका खावता फिर न यो आप स्वारथी वाण्या यो मालका रा होज अन-सू पळयो भामो लूणहरामो वण न घर म वठा सुग्न भोगव । राम राम ! (ठर न) म्हारा मालक तो स्वाधीनता र लीधे दश न छोन जावा न तयार व्हे न दुग्न भोगव नै या भामो मला मे मौज माण । जणा महाराणा रा प्रताप स यो भामो वाण्यो भामाशाह वण्यो वी तो अक अक पर्दसा रै कारण तरछता फिर न भामो भामाशाह वण्यो फिर । धिक्कार है अस्या सुख-नै न धिक्कार है अस्या जीवा न ।

महाराणा—धय है अस्या परधान न । भामाशाहजी । स्वतंत्रता न राखवा म साथ देवा रा कारण मू या मेवाड आप रो पूरा-पूरो उपकार मारना

जैसो चारण—जी धन कारण जगन मे प्रेम मिलण कर धूर ।

पिता पुन पतनी पनी वधु वधु सब दूर ॥

वी धन न ही मजिबर समभा धूर समान ।

त्याग रया निज स्वामि हित धय धय परधान ॥

साची बात तो या है कै—

दूगो अठ अतीव्र अन्ध पत्या री अकठी ।

साजा रही सदीत्र कात्रडिया री कात्रडा ॥

( सब पाछा फिर जाव )

महाराणा—जय हो मेवाड माता री । जय हो अक्लिगनाथ री ।

शक्तिमिह—जय हो महाराणा प्रताप री । जय हो अक्लिग-अक्षतार री ।

[ पडणे गिर ]

बाळाजी—काल भरव । आण—जान । भटका खावता—भटकते । लीधे—निय । माण—मनाये । तरछता—तरमते । वाण्या—वना हुआ । अस्या—असे ।

परधान—प्रधान मंत्री । अठ—अभिमान गेली । अन्धवपती—अरव द्रव्य के मालिक । साजी—अशुद्धि महित । कात्रडिया—भामाशाह क वंश का नाम । कात्रडा—सिद्ध महाराजा की प्रतिमाका को दिवात समय पना जान वाली कविताएँ गंगागान ।

## काबली नसीरुद्दीन

( रेखाचित्र )

[ मुरलीधर यास ]

[ श्री मुरलीधर व्यास का जन्म स० १९४५ में बीकानेर में पुष्करणा परिवार में हुआ । प्रारंभ में ये राज-कर्मचारी रहे । वहाँ से अवकाश ग्रहण करने पर कुछ समय तक बीकानेर के सादृळ राजस्थानी गिस्स इन्स्टीट्यूट में कार्य किया ।

श्री व्यासजी राजस्थानी के प्रौढ गद्यलिपि हैं । हिन्दी कहानी में समयानुसार जितने भी नये प्रयोग हुए हैं उन्हें राजस्थानी में लाने का श्रेय व्यासजी को है । लघु कहानियाँ सस्मरण, रेखाचित्र आदि लिखने में सिद्धहस्त हैं । बरमगठ इनकी २३ कहानियाँ का सङ्कलन है । इनकी रेखाचित्रों और सस्मरणों की रचना का प्रकाशन 'जुना जीवता चित्तराम' नाम से हुआ है । इन चित्रों में राजस्थान का आधुनिक जीवन बहुविध रूपों में मुखरित हुआ है । व्यासजी की भाषा सरल मुहावरेदार और प्रभावोत्पादक होती है । शली घरेलू होने हुए भी साहित्यिक है । इन्होंने राजस्थानी में काव्य रचना भी की है ।

सङ्कलित रेखाचित्र जुना-जीवता चित्तराम में सङ्गृहीत है । इसमें लेखक ने काबुली नसीरुद्दीन की व्यावसायिक वृत्ति के नीचे छिपी हुई बच्चों के प्रति सहज स्नेहशालता और स्मृती बहिन के प्रति दुर्लभ आत्मीयता का बड़ी मर्मस्पर्शिता के साथ उद्घाटन किया है । ]

सल्लादार मलो मैला घणो ढीला सूथणो घणा ढीलो जाडो अर जागा-जागा चीगणे चोळो जेक खाथ ऊपर ना रो भूगळो लटकायाडा बीज फार्थे अेक गाथळी , माथ कुन्ला अर पची अर पगा म हाथ भर लवा

---

सल्लादार—मला बाला, मिकुडनो से भरा । सूथणो—पाजामा । जाडा—  
भोटा । चीगणे—चिक्कट । खाथ—कंध । लो रो—लाहे का । भूगळो—  
पाइप । गोथळी—धैली । कुन्लो—कुन्लदार टोपी । पची—टापी या  
पगडा के आग लगाने का सिरपेच । जून—बड़े जूते । परियोडा—पहने हुए ।

चरमर चरमर करता जूझ परियोग हिग ल नो गिग न नो बत्रता कावली  
नसीप्रीन आप र बेट माग जन् म्हारा गळा म बहना जद आण् रा लर व  
जात्रती घर र भाग धरियाड पाट ऊपर परशार री मडळी म विराजियाडा  
वैराजजी हरख र हल-मू हाथ वधाय र वत्रता—आवो गान घान् । बठा तो  
खा-माथ ई गुग हो न हकीम जी । व र पाट ऊपर धठ जात्रता

तुगाया गामाव री आळियाडी घानी मुण र धार जात्रती अर अेक-दा  
जण्या ह्यडी दाती-न वधाई दत्रण नाठती व धारा कावली भाई आयो है

छोरा छडा किलाळ करता उतायना ऊतायना वत्रता—

मीयो मच्छी मारणो

काग-न उडात्रणो

काग भारी टाच अे

मीया मरग्या अेक सौर पाच अे ।

गळी गुशाड रा बडा वूढा छारा-न तटवता अर वत्रता—बावनी बावोजी  
है मायो मच्छी मारणा नही वत्रणा दावन मुण र छारा चुपका ह्योय'र पाटै  
खन जाय ऊभता कावली बावो कई छोर छारी-न दो चार काजू कई नै धोडा  
मा नजा तो क'न दो चार विदाम धेर पूढता—ग्यडी खुग ह्य ? गोमा  
राजी ह्य ? ताता खुग ह्य ? जावो मवका सलाम वाता मत्रा दूगा जण  
छारा ऊतावळा अेक माग ई वत्रता—हा । राजी है जर नाठ र आपरी दाती  
न बुलावण जात्रता

पछ ह्यडी दादी कावनी भाई री वास्ता कामा पुरस र लात्रती जिक म  
वाजरी रा मोगरा गवारपळी-कावडी रो साग घी-न्वाड म बूरियाग चूरमो,  
जर कटोरो दूध रो भरियोडा होत्रतो बावो वत्रतो—लाडू ला धन ।

साग—माथ । घडतो—घुसता हुआ । लर इ०—लहर बह जाती । धरियोड—रखे  
हुअे । पाटा— वन्त बडी और ऊची चौकी जिस पर बहूत-से लाग बठ सकें ।  
हेत—प्रेम । वधाय'र—व्याकर । घान्—बहादुर । छोराछडा—घालबच्च ।  
टाच—चाच का प्रहार । गुवाड—मुहल्ला । तडकना—घमकाते । दावल—  
सलवार घमकी । चुपका—गात । एन—पास । ऊभता—खड हो जाते ।  
नेजा—चिलगोजा अेक प्रकार का मवा । विलाभ—वालाभ । जण—जब  
तब । अेक माग इ०—अेक माथ ही कहत । नाठ र—भाग्यर (म० नष्ट) ।  
घाम्ना—वास्ते, निमित्त । कामी इ०—परोमा परोम कर । जिक म—जिमम ।

जण रघडी दादी मीठी झिडकी देंवती—लाडू पडिया जाय है । लाडू कठ-सू  
गाऊ रे डाकी ? तू तो घाघा गिटणो है लाडू म्हारै इयें भतीजे वगा माभ'र  
राखिया है

ता भतीजे को दे, जल्दी ना'—कय र बाबो जार सू हा' हा कर र हँसतो  
बा दिना जीमणा री मिठाई मोकळी विवणी आवती दादी १-२ रुपिया  
री लेय र राख मलती थोडी मिठाई टावरा मारू साग काबल पण भेजती

जीम-जूठ'र बाबो गाथळी खोलता वन अर वन रै टावरा-न काबल-सू  
लायोडा मन्नो जर हीग देंवतो

दादी अब लागती जाळमा काढण—वईर निरभाही दा आगळ रो पुरजो ई  
का भेज नी, डाकी मोह चार है

माफ करा बाई ! अब जर भेजूगा खुदा क फजल मे घर पर सब खुश  
हय—कय र बाबो पिट छाडावता

पछ जायोडी सगळी लुगाया-सू मीठी बान र वई-न कई ता वई-नै कई  
देय र सगळ्या न राजी कर र मुतलब री बात छेडतो हीग रा डब्बो खोल'र  
लागतो माल वेचण

बाई कवती—वाळ बाबा ! तू तो नोभी घणा घणा दाम लेव है

ता बाबा कवता—जच्चा जच्चा ! जो मरजी आत दे दो

बाई कवता—हीग चोखी कायनी, कोरो मिस्सो आटा बळ है

ता जच्चा ! जच्चा ! दूसरा नमूना दको बाई ! अमारा हिंग माफक  
दूसरा हिंग नही मिनेगा अमारा हिंग बान जच्चा है बोट सस्ता है—कय र  
सादो पणय लेंवतो बाबो दानो अर सणो वीपारी हा

सोगरा—रोटिया । जणै—जब तब । पडिया जाय है—पड जाते है रक्वे  
हैं (यग) । डाकी—भडक डाकिन का नरजातीय रूप । गिटणो—खानवाला ।  
वगा—लिजे । माभ र—सभाल'र । कय र—कहकर । जीमण—जेवनारें ।  
राख मलती—रख छोडता । मारू—लिजे । काबल—काबुल । पण—भा ।  
आठमा काण्ण—उलहने देन । दो आगळ रो पुरजा—छाटी मी घिटठी ।  
मोहचोर—निर्मोही । फजल—कृपा दया । जायोडी—आयी हुई । कई न  
कई—किसी को बुद्ध । सगळ्या—सबका । वाळ—जला द । कायनी—नही है ।  
मिस्सो आटा—कई दाला के मल से बना आटा । बळ है—जन्ता है (गाली) ।



काबली नसीरुद्दीन काबल सू हींग अर मन्ना लाय'र अठै चोला परीसा खडा करतो अर अठ री जिनमा काबल म बच र दूणो चोगणो नफा करतो काबली बावो पक्को हैमाबिया हो

काबला बावो आपरो अपनो ई का छोडता हा नी, बीजै रो भलाई परीमो ब म रैय जात्रा पाई-पाई रो उधराई कर'र पछ काबल दिसी मूडो करता काबली बावो पूरो लोभी हो

सादो पटावण म बाबा कूड-कपट ई केअट लेंवतो आप रो माल हलाक हाअतो तो ई जमारा माल बोल अच्छा हय अम बुडा हय जूट नहीं बोनता जमारा भात्र सस्ता है —कय र मौदो पटाय लेंवता काबला बाबा चोखो चट अर चरियोडो हो

काबली बाव रो उमर ७० र अड गड ही पण ता ई चरो लात बडी-बडी आख्या, जाडा भवरा मैदी सू रगियोडी लडी उफसियाडा जवाडा अर करारा कवाडा हा नहीं कयो हुन ? ऊभ खाध मेत्रा चरतो हो अर चोखो खात्रतो हो खाध कर उपाध आपाँ रै अठ र डाकरा दाइ व रो मूडो होक दाई पोत्रो आस्थाँ रा खुडडा बठियाडा जवाडा चिपियोडा, अर कवाडा मिलियोडा का हा नी लाया अठ र डणान चौखी खुराक अर घपटवा मेवा कठ मिलण न पडिया है ?

दार । चोखा इ०—अच्छे पस खड करता (कमाता) । जिनसा—वस्तुअँ । नफो—लाभ । हैमाबिया—हिसाबी नाभ-हानि का ध्यान रखेन वाला ।

अधेलो—अधला आधा पसा । बीज रो—दूसरे का । भलाई—भन हा चाहे । रैय जातो—(बाकी) रह जाता । पाई—अक बहूत छोटा सिक्का (तागभग आध पस के बराबर) । उधराई—उगरानी बमूली । कूड—भूठ । चट—चालाक । चरियोडो—चरा हुआ अनुभवी । अडगट—आसपास । तो ई—तोभी । जाडा—मोट । भवरा—भौट । उफसियोडा—उठ हुआ ।

करारा—कठोर हृष्ट-पुष्ट । ऊभ खाध—रास्त चलत, चलत फिरत (?) । खाध इ०—खाना उत्पात करता है । आपा इ०—अपन यहा क वृत्त की तरह । हाज दाई—हुक्के की तरह । खुडडा—खडडे । चिपियाडा—चिपके हुआ मिल हुआ । को हा नी—नहीं थ । लाया इ०—वेचार यहा के बुडनों को । घपटवा—इच्छानुसार जितन जी चाहे उतने । कठ इ०—मिलने को कहा पडे है ।

कावली बाबो बढकनालो हो अर बत्तीसी रो अेक दांत ई खाडो का हुयो हो नी

कावती बाबू रो बटो ब-मू घणा चोखा अर खरो हो कण-कण ई बा अेक लो आवतो जण सगळे ब र खनै मेथो अर मोकळी हीग लेंवता वो कूडी कपटी को हो नी बंदराजजीन बा खुदाई खिदमतगार' दळ री बाता सुणावती जिक रो वो अेक भवर हो

कावली बाबो अर व री बन ठाकुरजी री दरगा म पूग म्या पण बा री याद हाल ताई काल री सी बात दाई, बणियोडी है

---

बढक—ताकत सामर्थ्य । बत्तीसी—बत्तीम दांतो का समूह दंत पक्ति । खाडो—खडिन । को हुयो इ०—नही हुआ था । कण कण ई—कभी कभी । सगळे—सब (लाग) । खन—पास (स) । कूडो—भूठा ।

खुदाई खिदमतगार—सीमाप्रांत (अब पाकिस्तान में) के प्रसिद्ध नेता अहमद गफ्फार खान द्वारा सस्थापित अेक राजनीतिक काय करन वाली मडली ।

दरगा—लगाह दरवार । पूगम्या—पहुंच गया (हैं) । पण—पर । काल री इ०—कल की मी बात की भांति । बणियोडी—बनी हुई जीवित ।

## नागरपान

( गद्य काव्य )

[ विद्याधर गायत्री ]

[ श्री विद्याधर गायत्री का जन्म स० १९५८ में हुआ । इनके पिता प० देवीप्रसाद गायत्री उच्चकोटि के शास्त्रज्ञ थे । उन्हीं के पास रहकर शास्त्री जी ने वेद व्याख्यान धर्म शास्त्र पुराण ज्योतिष आदि विषयों का सागोपाग अध्ययन किया । छात्रावस्था से ही इन्होंने हिन्दी एवं संस्कृत में गद्य पद्य की रचना करना प्रारंभ कर लिया था ।

दूरदर्शन के बीतने के बाद ही वर्षों तक संस्कृत के विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया । अनेक सांस्कृतिक सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं के वे अध्यक्ष एवं सचिव सहयोगी रहे । बाकानेर-साहित्य-सम्मेलन एवं राजस्थान संस्कृत-सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में इनकी सेवाएँ अमूल्य रही हैं । इस समय वे बाकानेर का श्री त्रिविधभारती नामक गाय-संस्था के निदेशक एवं प्रमुख पत्रिका 'विश्वम्भरा' के प्रधान संपादक हैं । संस्कृत में महाकाव्य खण्डकाव्य नाटक आदि विधाओं में लिखित इनकी अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं । सन १९६८ में राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर ने इन्हें मनीषी उपाधि से अलंकृत कर इनकी साहित्य एवं दान के क्षेत्र में की गयी सेवाओं के प्रति सम्मान प्रकट किया ।

संकलित गद्यकाव्य राजस्थानी भाग ३ एवं १ में प्रकाशित हुआ था । यह गायत्री-धला का संक्षिप्त गद्य चित्र है । इसमें प्रकृति की रमणीयता और संगीत की मोहक स्वर लहरी के बीच मरुप्रदेश की कमलमय जिंदगी को स्थापित किया गया है । ]

मिथ्या हीण-आळी ही धोरा-की रत ठडी हुगी ही आज में अक्ली ही टीन्ना के बीच-बीच में खीप मिणिया जर वासा-की बहार देखता देखतो

मिथ्या—सध्या । हीण आळी ही—होने वाली थी । धोरा—रत के टीव । हुगी ही—हो गयी थी । खीप मिणिया वाम—जगली मरुभ्यली पौध ।

दूर ताणी चलयो आयो में जद जद टीबा मे घूमण जाया कह हू जद ही काई न कोई ऊचो-मो टीवो तूड-अर बा-क ऊपर बठ-अर च्यार कानी की प्राकृति छटा न देख्या करू हू

आज में जी धार-क ऊपर बठ्या हो बी-सँ थोडी सी दूर पर अक लावो चवडा गैला वगै हो में बठ्यो-बठ्या अठीन-बठीन देख ही रया हो कै इत म-ही दूर स टणमण टणमण की जवाज काना म पडी पली तो थाडी सी धूळ उठती भीमी केर गाया की डार की डार भमती अर तजी स चालती मेर बन-कै निकळगी में बठ्या-बठयो अकास म उडती चीलगा नै दखण लाग्या अब की वार चाणचक्या ही अब मिट्टी मिट्टी गाण की जवाज काना म आयो—  
छल मरा चाव नागर-पान ।

नगर ऊँची कर देख्यो ता दूर स सणिया छाणा अर लकडिया-की भरोटी लिया पाच छव तेलणा जावती दीसी सहर म इसी स्वच्छद अर सुरीली अवाज मुणन न कठ हू मिल ही ? मेरो ता रोव रोव मस्त होर नाचण लाग्या

धीर धार बीच म हँमती अर गाती टीव क नीच कर व आगीन गयी परी चानणा भी कम हुग्या हो में सोटी उगयी अर छल मरा चाव नागर पान गुणगुणावता बगीची कानी चाल पठयो

बहार—गाभा । दूर ताणी—दूर तन । जद ही—जभी, तभी । बठ अर—बठकर । च्यार कानी—चारो ओर । जी—जिस । बा स—उससे । लावा चवडो—नवा चौडा । गनो इ०—गाण जाता था । इत म—इतने म । अठीन बठीन—इधर उधर । टणमण—टनमन-टनमन । पली—पहल । दीसी—दिखायी पटी । डार—भुड । बन क—पास स । चीलरया न—चीला का । चाणचक्या—अचानक । मिट्टी—मीठी । गाण-की—गान की । चाव—चवाता है । नागरपान—नागरवेति का पत्ता । छाणा—बड । भराटी—बाभी वाक । छव—छह । तेलणा—तलिनै । कठ हू—कहाँ स । राव—रोम । नीच कर—नीचे स । आगीन इ०—आग की ओर चला गया । चानणो—उजाला (मि० चादनी) । सोटी—लकड़ी छाटी लठिया । गुणगुणावतो—गुनगुनाता हुआ । कानी—ओर ।

## प्रेमाश्रम

( भावात्मक निबन्ध )

[ ठाकुर रामसिंह ]

[ ठाकुर रामसिंह का जन्म सन् १९५६ म बीकानेर म हुआ । इनके परिवार का सबंध राजस्थान के जाधपुर जयपुर, बीकानेर आदि अनेक घराना से था । इनकी बड़ी बहन बाकानेर के महाराजा गंगासिंह का याही गयी थी ।

इनकी शिक्षा काशी के हिन्दू विश्वविद्यालय म हुई । प० मदनमोहन मानवीय का इन पर विशेष प्रेम था । उन्होंने विश्वविद्यालय म अंग्रेजी विभाग म प्राध्यापक तथा विश्वविद्यालय कोट का सहायक सचिव नियुक्त किया । इन्होंने वहाँ कुछ समय तक काय किया था कि बीकानेर महाराज न इन्हें शिक्षा विभाग का निदेशक बनाकर बीकानेर बुला लिया ।

राजस्थानी साहित्य-सम्मेलन के ये प्रथम सभापति मनोनीत हुए । इनके सभापतित्व म वह सम्मेलन दिनाजपुर म बड़ा धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ । बीकानेर म साठूळ राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट की स्थापना हुई ता ये उसके प्रथम निदेशक बनाये गये । बीकानेर की अनेक सांस्कृतिक संस्थाओ के ये अध्यक्ष भी रहे ।

प्रारम्भ से ही ये राष्ट्रीय विचारधारा म प्रभावित थे । जून १९२२ की गया कायम म स्वयंसेवकों की एक टुकड़ी के नेता के रूप म सम्मिलित हुए थे । अपने शिक्षा काल म ही उन्होंने साहित्य सेवा का कार्य प्रारम्भ कर दिया था । अनुसंधान एक संपादन और मौलिक सज्जन दाना क्षेत्रो म इनकी प्रतिभा समान रूप से कृतत्वगील थी । अनुसंधान और संपादन सम्बन्धी कार्य जबिकान म थी मुख्यकरण पाराक और नरगतमण्डल स्वामी के सहायक म सम्पन्न हुआ । मौलिक सज्जन के क्षेत्र म ये प्रधानतया कवि और गद्यकाव्य के लेखक हैं । इन्होंने हिन्दी और राजस्थानी दोना भाषाओ म रचना की है । इनका राजस्थानी म विगित मातृभाषा का गान बहुत प्रसिद्ध है ।

सकलित निबन्ध की रचना स० १९७६ के लगभग हुई । इसका हिन्दी रूपांतर हिन्दू विश्वविद्यालय के बीकानेर विद्यार्थी-समाज की हस्तविगित मुखपत्रिका प्रमाश्रम के प्रथम अंक (नवंबर १९२२) म प्रकाशित हुआ था । ]

मणिबूट पवत रै नीच, मघन वानन रै बीच म भागीरथी गगा र तट  
माथ म्हारी पणकुटी है

मणिबूट र मुगट माथ मेघ मडरात्रै सघन वन म भदोमत्त सिंह और  
अचपळा मिरग दौड भागीरथी र निमळ नीर म रग रग री माधिया  
विलाळा कर जीर म्हारी कुटी म प्रेम वस

उठ रा माधु-सत उण तपावन-नै मुर्गाश्रम कशै है, और हू म्हारी कुटिया  
न प्रेमाश्रम र गाव-सू वतळाऊ हू

मुर्गाश्रम रा निशासिया कनै कमडळ, र्द्राक्ष माळा और मृगछाला है,  
और प्रेमाश्रम म वीणा सितार सरा, वनी तदूरो जीर मद्ग है

मुर्गाश्रम रा वासी आप रा दिन रात याग री साधना म वितान और  
हू म्हारा दिन प्रेमाश्रम माथै पुष्पा री बेला चाडण म, गुताब-गेंदा चपा  
चमली जुही मालती, केवडा-केनवी, वूट कुरवक मोगरा मौलसिरी और  
रजनीगंधा रा फाड लगाश्रण म तथा म्हारी राता प्रेमानंद म मग्न धको  
भगवद् भक्ति रा भजन गात्रण म वितान

तपस्त्रिया रै तप रो तेज पमर और म्हारै फूला री महक फूटै तपस्त्री  
ध्यान लगावै, और हू वसी री तान उडाऊ

मुर्गाश्रम म म्हारी कुटी है और प्रेमाश्रम उण रो नात्र है

वसत म आश्रम रा आम्र-बुजा पर नव पल्लव जीर नव मजरी निकळ  
और कळ कठी कोयल हरख म विभोर वणी थका प्रति पळ गावो कर वन म  
मानती फूता-सू लढालूम वण ज्यात्र प्रकृति पुष्पित-मुरभित हू ज्यात्र  
प्रेमाश्रम रा पुमव उण न निरल निरख नै हस जीर अतम गे उल्लास प्रगट  
कर और उणा री मुरगी मुसकयान दूर दूर तार्ई मुगध रा भकीरा फना दत्त  
ऊनाळ म आप रा भायला न भुरभायीजता नेख न प्रेमाश्रम रा पुमव  
भा उताम उदाम रव

वरसात म वन राजि मन भाजन गगन जळ म मिनान कर न हरी भरी हू  
ज्याव जद प्रेमाश्रम रा पुमव भी मद मत् मुळन

गरद ऋतु म प्रेमाश्रम रा फूत रात । विरह वेदना रा आसू बवाव और

अचपळा=चवल । वतळाऊ हू—पुकारना हू । चाण्णा—चाना । वणी  
धकी—वनी हुई । लढालूम—लदी हुई भरी हुई । ऊनाळो—उष्णकाळ  
ग्रीष्म ऋतु । भायता—स्नेही मित्र । बवाव—बहाने हैं ।

भोर री बखत म उणा र वत्रळा अर चीवणा वपाता माथ ज आसू वण मोतिया ज्ये चमक

हेमत म प्रमाथम र पुण्या रा मुकुमार दारीर हिम मीकर बाहिनी चीन समारण र नकारा-सू धर धर बाप और ज भुव भुव न माता मेदिनी रो नह भीना गोती म जा बहन ग ह्रीड लगात

शिगिर म व बरफीने कुशाम मू दकिया रक और हिम-सू पिटीज-न, छायावादी कविया ज्यू जनत री कारण ल

सुगाथम म म्हारा कुटी है जीर प्रमाथम उण रो नात है

चक्क चनणी रात म हू पवत री गिता मार्थे बँठो धको कदर् वीणा कर्ई गरात कर् मितार कदर् धमी वजाया कर् उण बळा राग म मगन हुया धका मिरग घास चरणो छाड दत गिलावा धौर भाठा माथ नाचतो कुन्ता मणविभी रो कल-कल करता प्रगळ प्रगाह अक वार स्तभिन होय-न ठर ज्याने सिवारी मिह कर् जाय-न मा ज्यान माळळिया बुदण लाग ज्यान और भागुर म्हारो साथ दण नाग

मधु रा लोभी भवरा तिन भर गूजता धका प्रेमाथम र च्यारा कानी मडराया कर जीर मध माथिया तिन भर पूता माथ फिरती फिरै व म्हारै होत माथ भी आ बठ व मन कदर्ई डक को मार नी

चपा रा परमळ सू खिचीजी धकी रग धिरगी नागणिया जाय न उणा सू लिपट ज्यान प्रात बाळ म व फणा । पमारिया पुरवार पत्रन रो पान कर उणा रो विध गात हुग्या है और व डमणा भूल चुकी है

भान भति रा फटरा पलक रुदा री कवळी अर फूला-सू लदाजियाडी डाळिया माथ बठा धका म्हारो माणो सुण और आप आप रो भीठा तराणो सुणाय न उड ज्याने

म्हारी कुटा र छपर म भीगुर वस रात रा मन तदूर रा तार छेतो सुण न सुर म सुर मिनाय-न व भणकार कारण लाग ज्याव

कवटा—कोमल । मदिनी—पृथ्वी । वडना—भीतर जाना । कुशासो—कुहरा । पिटीज-नै—पीठी जाकर पिटकर । चटक चाणी—चटकीरी चाँदी से युक्त । भाठा—पत्थर । डील—शरीर । परमळ—परिमल, सुगाथ । खिचीजी धका—खीचा जाती हुई खिची हुई । फूटरा—मुटर । तराणो—तान, तराना ।

अरण्य रा ऊचा शाल रू खा री शाखावा पर बठा शाखामग सदा वृद्धता-  
पादता और किलकारता रैव

सुर्गाथम म म्हारी कुटी है और प्रेमाथम उण रो नाव है

भरभर भरता फूटरा भरणा भागीरथी-सू हिल मिल ज्यावँ अँ भरणा  
कठा सू आवै है ? आ वात जाणण रो मनँ धणो वतूहळ है इण वात रो पनो  
लगावण वास्तँ हू ऊँचो चढू पण आखर हार नँ भरण री फुटारा-न हीज पूछू  
भना । थे कठा-सू आवो हो ? थारो घर कठ है ? व उछळ उछळ नँ उत्तर  
देव—गिरि शिखर, गिरि गह वर गिरि-अ'तर ।

म्हारी वीणा री भण भण भरणा री भर भर हवा री मर मर, पत्ता री  
खर खर भवरा री भण भण भागीरथी री खळ खळ कोपल री कू-कू और  
पपइय नी पी पी मिल न परमान' प्रद चित्र विचित्र घनि न जलम देवै

सुर्गाथम म म्हारी कुटी है और प्रेमाथम उण रो नाव है

सम सम पर वादळा रा दळ गिरि माळावा सू नीच उतर उतर प्रेमाथम  
रा रु खडा और पोधा-न गगन रा जळ सीच सूरज उणा न जमत किरणा रो  
अमर रम पाव समीर उणा पर स्नह री वर्षा कर सिइया उणा न मतरगा  
खेल त्रिवाय न विनमाव

म्हार चप वास्त चादा तरसँ म्हारी चमेली सू तारा तूट-तूट-न मिलण  
आत्र म्हारी जुही न दल न ना'ही ना'ही तारिकावा आकाश-गगा म वह ज्यात्र  
म्हारा गुलाब रा फूला-न देख न उपा वादळा म लुक ज्यात्र म्हारा गदा हजारा-  
न देख-न सूरज आयूण सागर म डूब ज्याथ और म्हारी प्रेमाथम री वाडी री  
सुपमा निरख नँ इ'द्रधनख लाजा मर ज्याव

सुर्गाथम म म्हारी कुटी है और प्रेमाथम उण रो नाव है

कद कदास मग गावत्र भँभीत थका म्हारी कुटी म आ ज्याव चिडिया  
उठ जाळा घात और ई डा देवँ शेर उण री गुफावा मे मूता रत्रँ मणिकूट  
मेघाच्छ'न हू ज्यात्रँ जद बीच-बीच-म अेकाथ जागा खुली र ज्यात्र उण  
खुली खिडकी माय-सू रु खडा भाक और मन ऊपर बुनारँ और चादँ और  
तारा-म चालनी वाता मुणन वास्तँ म्हारो मन लळचीज

कठासू—कहा से । सुवातनी निद्राम—सुपानी हुई गर्मी । सिइया—माक ।  
आयूण—पश्चिमी । कदे-क'म—कभी-कभी । आळा—घामले । मूता—मोये ।  
जागा—जगह । लळचीज—ललचाता है ।



प्रभात की बला में दूरी देवता, अर माझ पडिया परिया अर अप्सरावा  
मदाविनी में जळ कांडा करण वास्त जावै

सुर्गाश्रम में म्हारी कुटी है और प्रेमाश्रम उण रो नात्र है

तपस्त्रिया इण रो भेद जाण लिया है व सुर्गाश्रम न छाड-न प्रेमाश्रम मे  
वसुधरा र प्रेम रा गीत सुणन न आन्रण लाग्या है उणा न धरती रा फूला  
सू रोही रा पशु पक्षिया सू प्रकृति रा नन्ना नवा नाटका नू माह हुग्यो है व  
प्रेमाश्रम रा मग शावका-न कवळा तिण चरात्र और पखेरुणा-न दाणा चुगात्र  
उणा र भाळ माथ प्रेम री जोत जाग उठी है हू उणा री चरण रज माथ  
चढाळ और उणा री आखिया में प्रेम रा वादळ भरीज

नीच गगा चद्रमान-न लहरा र भूल में भुवाअ हलरात्र ऊपर मणिकूट  
मयक रो माघो चूम, बीच में म्हारी वाडी री कुसुम कळिया खिल खिल हस  
और हमात्र

प्रेमाश्रम में अक आश्रम है और सुर्गाश्रम उण रो नात्र है

## साहित्य-रो प्रयजन

( साहित्यिक निबध )

[ नरोत्तमदाम स्वामी ]

[ श्री नरोत्तमदाम स्वामी का जन्म म० १९६१ में बीकानेर में हुआ । इनके पिता श्री जयश्रीरामजी कथावाचक थे । स्वामीजी की शिक्षा कागी के हिंदू विश्वविद्यालय में हुई जहाँ से इनमें संस्कृत और हिंदी में ज० जे० किया । ये पहले डगर कानज बीकानेर के तथा बाद में महाराणा भूपाल-कॉलेज, उदयपुर के और फिर वनस्थली विद्यापीठ के हिंदी प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष रहे । उदयपुर-काल में उपप्रधानाचार्य भी रहे । इस समय राजस्थानी नानपीठ बीकानेर के पीठाधिपति और राजस्थानी भाषा साहित्य सभ में बीकानेर, के सभापति हैं ।

इनकी बचपन से ही साहित्य की ओर विशेष रुचि रही । बीकानेर की अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के ये सक्रिय अधिकारी रहे । 'राजस्थान भारती' के प्रथम सम्पादक तथा अनेक पत्रिकाओं के सम्पादक मंडलों एवं परामर्श मंडलों के सदस्य रहे हैं । राजस्थानी भाषा के समुदाय का कार्य यद्यपि रामकरणजी आसोपा शिवचंद्रजी भरतिया गुलाबचंद्रजी नागरी आदि द्वारा बहुत पहले आरंभ हो चुका था पर इन्होंने उसे नये सिरे से प्रेरणा और नवीन गति दी । ये आगरा और राजस्थान विश्वविद्यालयों की सीनियर आर्ट्स फकल्टी तथा हिंदी बोर्ड आदि के वर्षों तक सदस्य रह चुके हैं । राजस्थान-सरकार की कई समितियों के सदस्य एवं अध्यक्ष भी रहे । हिंदी-साहित्य सम्मेलन ने इनकी प्रथम मानसिंह पुरस्कार से सम्मानित किया ।

इनका अधिकांश कार्य अनुसंधान संपादन तथा पाठ्यपुस्तकों के रूप में है । इनकी उल्लेखनीय कृतियों में राजस्थानी-व्याकरण, रामो-साहित्य और पृथ्वीराजराजो मौलिक कृतियाँ हैं तथा 'दोलाभाई रा दूहा' 'राजस्थान के लोकगीत' 'राजस्थान रा दूहा' 'वीररस रा दूहा' 'क्रिसन रत्नमणो री बेलि' 'पृथ्वीराजराजो का तद्युगम रूपांतर आदि सम्पादित कृतियाँ हैं । बहुत पहले राजस्थानी हिंदी-कोष का कार्य भी इनमें आरंभ किया था जिसकी सामग्री का आग चलकर बीकानेर के सादूठ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट का सौंप दिया ।

सकलित निबध प्रश्नोत्तर शली में लिखा गया लेखक का नवीनतम निबध है । इसकी भाषा सरल और प्रवाहमयी है । लेखक की दृष्टि में आनंद और उपदेश का अद्वैत सम्बन्ध स्थापित करना ही साहित्य का प्रयोजन है । ]

( १ )

साहित्य को प्रयोजन काहे ? मिनख साहित्य रचना क्या कर ? मिनख साहित्य क्या वाच ? क्या मुण ? और क्या देख ?

साहित्य अक कडा है कई विद्वान वक्त्र—कडा रो प्रयोजन कडा हाज, कडा ग कई दूसरा प्रयोजन नही दूसरा विद्वान बाल—कडा रो प्रयोजन आनद कडा जानद दत्र तीमरा विद्वान वक्त्र—नही कडा रो प्रयोजन उपदश कडा जोषणन आग वषण म मन्द दशै माची पूट्रो नो तीना मता म कोई अन्विराध नहा कडा रा मवध मिनख मू मिनख रो सवध जीवण मू कडा मिनख र खातर कडा जोषण र खातर कडा मिनख न जानद दत्र कडा जावण नै आमै वषण री प्रेरणा दत्र

साहित्यकार साहित्य री रचना कर कारण ? साहित्य री रचना करन घो आनद प्राप्त कर उणन आत्म मतोप मिल—तुळसीनामजी र गंगा म स्वात मुख वाचक साहित्य वाच कारण ? साहित्य वाच न वा आनद रो लाभ कर उणन अेक यारा सुय मित—मम्मट र गंगा म ब्रह्मानद महोत्तर साहित्य मनन रमात्र साहित्य मन न आपण म लान कर साहित्य मनन मुख दुय री स्थिति-मू यारो इस लोक म पुगाय देव जठै सगळा दूसरा वय विगटित हु ज्यात्र साहित्य ग प्रयोजन आनद

पण साहित्य रा आनद सस्ती मनोरजन नही साहित्य नीटकी रा खेल नहा वा येण्या रा नाच नही वा गराव री शेतल नही जिण र नम म मिनख आपन भूत ता जात्र पण पतन री टिंगा कानी जाता भी वार नही लाग हिन र महिन हुत्र जन्हा साहित्य है साहित्य जावण न ऊचो उठात्र उणन उदात्त वणात्र साहित्य रो प्रयोजन उपदश

साहित्य उपदेश दत्र पण साहित्य नीतिगात्र नही नीतिगात्र उपदेश देत्र प्रत्यक्ष रूप-सू साहित्य उपदश देत्र परांग रूप-सू—इण भात क आपान

१ देख—दृश्य काय के रूप म साहित्य का अभिनय देखना है। वषणा—वदना। गानर—खातिर लिखे। वाचक—वाचनवाला पाठक। मम्मट—संस्कृत क अेक वडे साहित्यगास्त्री, काव्यप्रकाश क कर्ता। सहोत्तर—भाट वधु। पुगात्रणो—पट्टवाना। दूसरा वेद्य ०—विगलित-वेद्यांतर। वेद्य—अनुभूति। नस म—नगे म। कानी—ओर। वार—देर<sup>३</sup>  
मिनाजो—हितान मू<sup>४</sup> त्यम्।

मानम नहीं हूँ क उपदेश दे रया है साहित्य प्रत्यक्ष रूप-मू उपदेश देण ताग जन् साहित्य साहित्य नहीं रय, बा नीतिशास्त्र रो प्रचारक वण ज्यात्र और साहित्य नीतिशास्त्र रो 'प्रचारक' वण ज्यात्र जन् साहित्य नात्र रा अधिकारी नहीं रय एणां भात साहित्य राजनीति रा पिछलग्गू हाय-न राजनीति र प्रचारक रो काम कर लाग जद घो, और भला ही की हूँ साहित्य ता नहीं-हीज इस साहित्य-न राजनीति रा दासी-पुत्र राजनीति रो गुनाम नात्र देणो उपयुक्त हूँ

( ० )

साहित्य पराश रूप-मू उपदेश कियान दै ? सस्कृत रा साहित्यकारा इण रो बडा सुदर विवचन करघो है उपदेश तीन भात-मू दिरीज—प्रभु समित तथा, सुहृत् समिततया और काता समिततया—मालक आळ दाई मित्र आळ दाई और प्रियतमा आळ दाई

पैला पात प्रभु रा उपदेश प्रभु रा उपदेश कवण म उपदेश पण असल म आणा बो मानणो-ही पड़े उण म बाध्यता हूव और जठे बाध्यता हूँ उठ विद्रोह भी हूया विना नहीं रय आदमी प्रभु रें उपदेश नै माने तो खरो पण मानण रो उमाह धीम धीम घटतो जात्र और छेकड जात्र घट जाव वदा रो उपदेश प्रभु रो उपदेश इस उपदेश रो प्रभाव स्थायी प्राय नहीं हूँ

दूजो मित्र रो उपदेश मित्र रो उपदेश मला उण म बाध्यता कोई नहीं माना ता मरजी नहीं मानो तो मरजी मिनग्य री स्वाभाविक प्रवृत्ति प्राय कर नहा मानण री ही ज पुराणा रो, नीतिशास्त्र रो आधार शास्त्र रो उपदेश मित्र रा उपदेश इस उपदेश रा प्रभाव भी साधारण रूप-मू स्थायी नहीं हूँ

तीजो काता रा उपदेश काता र साथ भावात्मक संबध हूँ काता म मन रम काता री बात मन नै घणी भाँने उण न मानण री मन री स्वाभाविक प्रवृत्ति हूव मन उळतो चाँने क काता जाँने देव और हू उण रो पाळन कर काता आना नहीं देखै पण मन कर क वा आज्ञा देखै वा आज्ञा देखै तो भी मानम नहीं हूँ क आना दे रया है

२ कर लाग—करने लगता है । भला हों—भल ही घाट । कियान—कसे । पैला पात—सबसे पहले । बाध्यता—अनिवार्यता compulsion । छेकड—अत म । जावक—बिचकुल । मला—मनाह ।

साहित्य को उपदेश का ता रो उपदेश वो उपदेश दत्त पण आपा-न मालम नहा हुन्न क वो उपदेश दे रयो है आ परोक्ष उपदेश

साहित्य रो उपदेश परोक्ष हुन्न पण ओ नहा समझणा क वा बिणी भात कम प्रभात्रगाळी हुन्न नहा, उण रो जबरा प्रभात्र हुन्न और घणो म्यायी हिंदी रा मोटा साहित्यकार महावीरप्रसादजी द्विवेदी कयो है—साहित्य म वा गवित छिपियाती है जकी तोपा तरनारा अर बम रा गाळा म भी नही है विजता जाति पराजित जाति न आपण अधिनार म कर जद पला पात उण रो भापा-न पण छष्ट कर उण रँ साहित्य न लाग्नी गळी म हाख

साहित्य म जानद-ही उपदेश और उपदेश-ही आनद कण जात—आनद और उपदेश मे काई अंतर नहा रह जात आनद जर उपदेश रा जो अद्व त ही साहित्य रो प्रयोजन है माचा साहित्य मन नँ आप म रमाय-न जीवण-न उदानता रो दिशा म अग्रसर कर वा जीवण-म जानद भरँ, उल्लाम भरँ सजीनता भरँ उण म भोग है जठ कम भी है उण म सत्य है चतय है आनद है वो सत्य है वा गिन्न है वो मुदर है वो सत्य और नान रूप अनंत ब्रह्म रो रूप है

---

जबरो—जबदम्न । भोग अर कम—मिलाओ—कम का भोग भोग का कम यहा जड का चेतन आनद (कामायनी) । सत्य और नान—मिलाओ—सत्य नानम अनंत ब्रह्म (उपनिषद्) ।

## राजस्थानी साहित्य और जैन विद्वान

( मानविक निबन्ध )

[ अगरचन् नाहटा ]

[ श्री अगरचन् नाहटा का जन्म म० १९६७ म बीकानेर म हुआ । पाचवा बधा तक इनको पाठगाना की शिक्षा मिला । पर सतत जम्यास और निरंतर अध्ययन रत रहकर इन्होंने प्राकृत, अपभ्रंश राजस्थानी गुजराती बंगला हिन्दी आदि का अच्छा पान प्राप्त कर लिया । स० १९८१ म श्री कृपाचन्द्र मूरि न बीकानेर मे चतुर्मास किया । उन्हीं की प्रेरणा से इनका ध्यान राजस्थानी साहित्य का ओर गया । तभी म ये बड़े अध्यवसाय एव रचि के साथ प्राचीन साहित्य के अन्वेषण म लग हुए हैं । भारतीय साहित्य राजस्थानी साहित्य और लोक साहित्य के विविध प्रसंगा और प्रवर्तिया पर य अब तक ढाई हजार से ऊपर लेख लिख चुके हैं । दिन रात ये अनुसंधान के नये क्षितिज खोजन म ही व्यस्त दिखायी दते हैं । जब तक इन्होंने लगाधिक हस्तलिखित ग्रंथो का अवलोकन किया है । जसम जन ग्रंथालय' नाम से इनका निजी संग्रहालय है जिसम बीस हजार से अधिक हस्तलिखित ग्रंथ और महत्साधिक चित्रादि संग्रहीत हैं ।

नाहटाजी कई सांस्कृतिक एव साहित्यिक संस्थाओं के अधिकारी एव विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एव अभिनयनग्रंथो के सम्पादक-परामर्शक रहे हैं । सादूळ राजस्थानी रिमच इन्स्टीट्यूट बीकानेर क निष्ठाक एव प्रामाणिक साध पत्रिका राजस्थान भारती क सम्पादक ये वर्षों तक रहे ।

इनके कई ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं । सम्पादित ग्रंथो म सीताराम चौपई धर्मवचन ग्रंथावली जिनहप ग्रंथावली दम्पति विनोद एतिहासिक जन काव्यसंग्रह जिनराजसूरि-कृति-कुसुमाजनि उल्लेखनीय हैं । प्राचीन काव्यो की रूप परम्परा उनके निबन्धा का संग्रह है । बीकानेर साहित्य-सम्मेलन के रतनगढ़ अधिवेशन म राजस्थानी परिषद क सभापति पद से तथा साहित्य-संस्थान, उदयपुर के तत्त्वावधान से सूयमल्ल-व्यासपीठ से राजस्थानी म दिये गये इनके भाषण महत्वपूर्ण है । हाल मे ही जनकता विश्वविद्यालय म दिये गये इनके भाषणा का राजस्थानी साहित्य की गौरवपूर्ण परंपरा नाम से प्रकाशन हुआ ह ।

सकलित निबन्ध राजस्थानी निबन्धमाला के प्रथम भाग म प्रकाशित हुआ था । ]

जन धरम रा तीयकरा और विद्वाना लोक भापा रो महत्त्र मह-सू ही भनी भात समझ लियो हो जनतार हिवड ताई पूगणरो अकमात्र साचो माधन लोकभापा हीज है इण वातन वा जाछी तरामू हृदयगम कर नी ही टेदसू ही वा आपणा उपदेग तामारी बालबालरी भापा म टिया जकी वातन आपणा विद्वान जाज समभण लागे है उण वातन जन धरमरा महात्मावा हजारा वरसा पली समझ नी ही भगवान महाजीररी इण सूभन पछ आवणवाळा घणकरा धम प्रचारका और पथ थापका माथ चनायी और आप आपणा पयारो साहित्य नाम भापाम—साधारण लोगारी बोलीम—वणायो

प्राकृतर पछ अपभ्रंशरो घणकरा साहित्य जे विद्वानारी रचना है अपभ्रंग पछ राजस्थानी गुजराती हिंदी मराठी तेलगू कन्नड बंगरा लाक भापावाम भी व वराजर साहित्यरी रचना करता रया उण भापावारा घणो मा जारम्भिक साहित्य जन लेखकारो वणायोटा है

लोकभापाम साहित्य रचनारा काम जन विद्वाना बराबर चात्र राग्या जक कारण इण भापावार नमिक विकासरा अध्ययन करणम जन-साहित्यरा अध्ययन घणो जररी है जकी गताण्यारा लोकभापारा उगाहरण दूजा साहित्यम जोया-ही का नाथ नी वा शताण्यारा उगाहरण जन साहित्य म भरपूर लाघसी

राजस्थानीम तो जन-साहित्यरा घणो मोटो भडार है राजस्थानीर आरम्भम लगा र टेद आज ताई काई दशाणी इसी कोनी हुसी जिणम रचियोडो जन विद्वानारी रचनावा नहा मिलसी राजस्थानी भापारो अलड इतिहास लिगणा हुनै तो जन साहित्यरी मदतसू सहज हा लिखीज सकनी और जा साहित्य कठण डिगळम नही पण लोगारा बालबालरी भापाम है जकन जनता आज भी किना टीका टिप्पणीरी सायतार समझ सकै है

नतिक दृष्टिसू भी जन-साहित्यरो घणो महत्त्व है राधक हुता धका भी जन-साहित्य पवित्र भावनान जनम देज जिसो है जन विद्वाना जापर हाज धरमरी कहाण्या तिली हुन इसी बात भी कोनी लोगाम चालती नैकिक कथा कहाण्या माथ भी जनारा घणा मोटा साहित्य है अक विजमाजीत राजारी कथावासू सम्बन्ध राखती पचामसू उपर जन विद्वानारी वणायोडो पोधियारो पतो लाग्या है

जन विद्वानारो त्रिवियोडो राजस्थानी साहित्य गद्य और पद्य दोनू रकमरो है पयरो सदसू मोटो प्रथ तेरापयी आषाय श्रीजीतमलजीरी

भगवती-सूत्ररी ढाळा है जवारो विस्तार ६० हजार श्लोक प्रमाण है गद्य प्रथम विस्ताररी दृष्टिसू महस्त्रपूण भगवती सूत्ररी गद्य भाषा टीका है जर्करी विस्तार कोई ८२ हजार श्लोक प्रमाण है राजस्थानीरा घणो महस्त्रपूण इतिहास ग्रथ मुहणोत नैणभीरी ख्यान है इण ग्रथरी प्रौढ भाषाशलीरी प्रशसा राजस्थानीरा जाणीता विद्वाना करी है राजस्थानारा प्राचीन गद्य लगभग सगळो र-मगळा जै लेखकारी रचना है

काई ओढ हजार बरसामू राजस्थान और गुजरातमे जैन धरमरा प्रचार जोर-मोरमू रया है गौव गौत्रमे आसन्नाळ वगैरा जैन श्रावकारा प्रादुर्भांग ह्यो और वारा गुरु जैन मुनि बराबर बठे आसन ज्ञान लाम्या धीर धीर कइव जन यति गांधाम स्थायी रूपमू बम भी गया जा योगार उपनेससू सईकडा ही लाग जन धरमम दीक्षित ह्या विद्वान वण्या और मातभापारो भडार भरणम तत्पर ह्या साथ ह्या व लाग जका जका आछा-आछा ग्रथ देगता बारी नकला भी करता रया हजारो राम चौपाई, भास धरळ सबध प्रबध ढाळ वगरी रचना करी जवारो प्रमाण आठ दस लाख श्लोकासू कम कोनी गद्य म भी ण तरा बा-आठवाध टब्बा वगरा टीकाशा लिखी जवारो प्रमाण भी छ सात लाख श्लोक जरूर हूसी कई कई विद्वान तो इमा ह्या जका अकेला-ही नाय लाख श्लोक प्रमाण रचना करी जिणाम तरापयी आचाय श्रीजीतमलजी तथा कविजर जिनहपजी विशेषकर उल्लगनीय है जन सित्राय दूजा विद्वानाम शायद ही कई इत परिमाणम राजस्थानी भाषाम रचना करी हुव जनार वास्तु जा घण गौरवरा वान है

रास चौपाई वगरा बडा ग्रथारे सित्राय राजस्थानीम लिखियोणे जन विद्वानारो फुटकर साहित्य भी लाखा श्लोका प्रमाणरो है स्तवन, सज्भाय पद गीत छन, हिमाळी सिलाका पूजा मवाद दूहा वगरा फुटकर साहित्यरो सो कोई पार ही कोनी समयसुदरजी जिसा कविया ५००-५०० पद वणाया है ओ साहित्य सब भातरा है—नीतिरो विनोदरो उपदसरा भक्तिरो जन विद्वानागी राजस्थानी साहित्यरी मेवा मर्वा गीण है कोई इसो विषय कोनी जिण पर जन लेखका कोई रचना नही लिखी हुव

जन विद्वाना राजस्थानी साहित्यरी कोरी रचना ही को करी नी पण राजस्थानी साहित्यरी रक्षामे भी घणो भाग लिया जैन और जनेतर दोनु विद्वानारा लिखियोडा ग्रथान घण जतन जोर घणी समूहिसू आपरा भडाराम राख्या जनतर विद्वानारा घणा ग्रथारी पश्ता आज जैन-भडारार सित्राय



दूसरी जाग्याम जलम्य है नरपति नाहर वीमल रास ग्रन्थन जन विद्वाना हीज नष्ट हुवणसु वधाया इसा इसा हजारा ग्रंथ है जकान आज ताई कायम राखणरो जम अकमात्र जन विद्वानानै है

जन विद्वाना अक और मोटा काम कियो बा आपरी रचनाना बाल चाखरी भाषाम लिखी जियान छद् भी घणा सा लोक-साहित्यस लिया जनतामे धात्रु गीतारी ढाळा जयन बा आपणी कविता निखी आ ढाळारा नाम और पलडी पकिन्या भी बा सुरक्षित राखी इसी ढाळा अथवा देसिपारी अक सूची मुवाईरा जन विद्वान माहनलाल मलीचन्द देमाईजी वणायी है लोक प्रचलित गीतान लिपि-बद्ध करन सुरक्षित राखणरो काम भी अनेक जन विद्वाना किया है लोक साहित्यन इण तरा अमर करणरी जन विद्वानारी सूभर साम मायो जापइ आदरसू भुक जान है

घणा साहित्यिक विद्वाना जन साहित्यन अक सप्रदायरो साहित्य वतायन उणन उपेक्षारी दृष्टिम् देख्यो है पण वारो ओ विचार भ्राति पूण है जन साहित्यरो अ-परिचय ही वार इण विचाररा कारण है वास्तवमे जन साहित्यरो घणो भाग इसो है जका सावजनिक साहित्य कहीज सक है हजार राजस्थानी जन कवि और लेखक आज अधकारम पडया है जन साहित्यर प्रकाशमे बाणसू इण कथनरी सत्यता आप ही सिद्ध हु ज्यासी इण वास्त सबसू जरूरी बात ज साहित्यन प्रकाशमे लावणरी है आगा है राजस्थानरा विद्वान तथा जन घनी मानी अठीन प्यान देसी

---

हिबडो—हृत्प्र जतर । ठम्—आरभ स । घणकरा—बहुत-से । थापक—स्थापक । घणकरो—बहुत-सा अधिकार । जोया ही—डूड़े भी । लगा र—लगाकर लेकर । कोनी—नही (काई नहा) । सायता—महायता । हुना घका—होते हुय । रकम—भाति प्रकार । ढाळ—राग रागिनी म निखी हुई रचना गान (जय अथ तज) । जाणीला—ख्यातनामा । यात्रक—गृहस्थ अनुयायी । सईकडा—सकडो । रास आदि—रचनाओ के विविध प्रकार । सज्भाय—स्वाध्याय । गज—तज । मुवाइ—बवाई । कहीज सक—कहा जा सकता है । अठीन—इधर ।

## लामू बाबो

( स्मरण )

[ भन्नरलाल नाट्टा ]

[ श्री भन्नरलाल नाट्टा का जन्म स० १९६८ म बीकानेर म हुआ । ये राजस्थानी क प्रसिद्ध विद्वान और गवर्नर श्री जगरचन्द नाट्टा के भतीजे हैं और साहित्यिक काय म उनके सहयोगी रहे हैं । प्राचीन लिपि एव कला से इन्ह विरोप प्रेम है ।

अनुमधान एव सम्पादन तथा मौलिक साहित्य-सजन दाना क्षेत्रा म इनकी प्रतिभा ने सचरण किया है । इनके द्वारा सम्पादित कृतियो म हम्मीरावण 'पद्मिनी चरित्र चौपई विनयचन्द-कृति-कुसुमाजलि,' समयसुन्दर रास पचक' आदि प्रमुख हैं । 'वानगी' इनके द्वारा रचित स्मरणो, रखाचित्रो एव लघुकथाओ का सकलन है ।

सकलित स्मरण सबप्रथम राजस्थानी, भाग १, म प्रकाशित हुआ था । 'वानगी' म भी यह सगृहीत है । इसमे लखक ने वचन की स्मृतियो के आधार पर अपने घरेलू नौकर के प्रसन-कोमल स्वभाव और उदात्त चरित्र का बडा मामिक अकन किया है । ]

लामू बाबो ठेठ वार्सिदो किसै गात्र रो हो जा तो मालम कोनी पण म्हारा बापोनी रा गाव डाहूसर-म परणियो हो जिण-सू म्हे तो उण न उठा रो ही समभता घाळा मूढा रो छारो जवान हो जद-सू ही म्हारा घर मे रवती आया हो हो तो वो दो रुपियाँ रो महीनदार पण म्हारा घर रा लोग उण न कर्दई नौकर का समभिया नी काई छाटा अर काई बडा—सगळा उण रो आन्तर करता बडा लाग लामू लुगाया लामूजी और म्ह टावर लामू बाबो कै र वतळावता बार रा लोग लामू बाबान् म्हारा ही घर रो आदमी समभता लामू बाबो जाप म्हारा घर नै ही आप रो घर समभतो टावरपणा में म्हे उण रँ सागै जीमियाडा हा

ठेठ वार्सिदो—मूल निवामी । उठा रो—वहा का । घाळा मूढा रो—साफ मुह का । महीनदार—मामिक धेतन पाने वाला नौकर । पण—पर । कदेइ—कभी । को नी—नही । सगळा—सब (सकल) । बार रा—बाहर के । सागै—साथ । जीमियोडा—जीमे हुए ।

लामू बाबो गोरा रंग रो तबड़ा सरीर रो अर सपेत दाडी रो पसो जवान हा दाबटो रो जागी धोनी और बडी पैरतो माया माय मुलमुल रो पाग बापी राग्यता गळा म हुरद्वारी कठी और हाय म काठ रा मिणिया रो माळा हरदम रवती सीमाळा म दमी ऊन रो कामळ ओढतो जो लामू बाबा रो परेस हा

लामू बाबो जात रो मडीवाळ घना-वसी साथ हो बाप रो नाम श्रीविमनवास बाबा रो बुद्धरदास अर भाई रा नाम आणदा हो काको बुद्धरदासजी रामायण महाभारत वगरा शास्त्रा रा मोटा पिडत हा लामू बाब टावरपणा म उणा वन गाम्त्रा रो ग्यान भीखियो टावरपणा म सीखियोडा इण ग्यान सू लामू बाबा विना पत्निया-होज पिडत हुग्या हो उण न शास्त्रा और पुराणा तथा इतिहास रो कुण जाणं कितो वाता याद ही लामू बाबो भणियोडो कानी हा पण ग्यान म बडा-बडा भणियोडा-न छेड वसाणतो लामू बाबा कह्या करतो—नाणो अट रो विद्या कठ रो

लामू बाबो म्हारा घर म चाळीस वरमा-सू कम का रह्यो नी बो अकलो जको काम करता बो आज च्यार आदिमिण-सू कोनी हुवं भाभरक च्यार वज्या उठला उठ-न भजन करतो पछ सगळा घर म बुवारी नेता पाणी ध्याणतो विलोवणो करतो पोटा घापता ठाणा रो सफाई करतो गाया भस्या न पाणी पावतो जर नीरा नासतो पछ द्वा काम करतो

म्हार हुडी चिटठी रो काम हुलो लाट चालिया कोनी हा हजारु रुपिया रोकडी लावण ल ज्यात्रण रो काम पडता आ सगळो काम लामू बाबो करता भणियोडो अक आखर का हा नी पण लाखू रुपिया रो काम भुगना देतो और कदई अक पइस रो ही भूल को पडी नी

तकटा—तगडा । त्पेन्ती—नादी । जाडी—मोटा । मिणिया—मनक । सीमाळो—गीतकाल । कामळ—कत्रल । परग—पहरवेग पहनावा । जात रो—जाति का । माघ—साधु राजस्थान की जाति विशेष । पत्निया-होज—पढ़ ही । भणियाडा—पत्न लिखा । छेड वसाणतो—दूर बिठाता बल्कर था । नाणा—रुपया पमा । अट रो—अटी का गाठ का जो पाम म हो । भाभरक—सबेर । बुवारी—भाङ्ग । विलोवणो—दही मयना । पोटा—गोबर । घापतो—कड़ पायता । नीरो—चारा । म्हार—हमारे यहाँ । मोट—करमी मोट । चालिया—चन प्रचलित हुए । गाँव गोठ—देहान । वारगत—लेन-दन महाजनी । वारलो—बाहर का देहात के लोग का । पटो—आगा-जाना ।

गाव-गाठ गी वारगत हुण मू म्हार अठ बारनो कटो घणो हो, रोज दस पाच आत्मी आया-गया रवता उण त्तिना म कळ री चक्की ता ही कोनी हाथ सू आणे पीमणो पडतो पीसारगिया आटो पीमती लाभू बाव घवा अत मौक आटा रा फोडा कदेई को देवणा पडता नी विना वहा आधी रात रा उठ-नै धमड धमड दू दा नाखता दिन ऊगतो जद आध मण आटो त्यार

लाभू बावो काम करण-न सत्ता जाणै त्यार-हीन रवतो हरक आदमी रो काम निस्वाय भात्र मू वरतो घर रो तो वार्त्त गत्ताड रो भी बोई जणो काम वास्त वकारतो ता ऊतर वा दतो नी हेरो मुणता पाण भट बालतो—आयो जीमता हुतो तो घाळी छाड किनार हाथ धोय न जा हाजर हुतो कई काम म रुधियाडो हुतो तो ई आ कदेई वा वरतो नी व फनाणो काम करू हूँ अेक 'आया गत्त होज सत्ता मूढा-मू निवळता लाभू बावो वरता—हू फनाणा काम करूँ हूँ इयान कणा अेक तरा मू ऊतर दणो है काम रो ऊतर देणो लाभू बावा जाणतो ही कानी हो

टावरा-नै, विगेपकर म्हा तीना न—काकाजी मघराजजी काकोजी अगरचजी और मन—वडी नीयाळी-मू रावतो अक नै गोती म दूजा न खाधा माथ अर तीजा न मगरा माथै राखिया काम करतो रतो म्हान घणा ओखाणा जर दूत्ता मुणावती मिश्या पडती जद म्हे लाभू बावा न वात कवण वासतै पकड न बँटाय सता बावा म्हारी फग्मास अर रुचि मुजव वाता मुणावता—कदेई रामायण री कदेई महाभारत री कदेई इतिहास री कदेई धूजी रा कदेई प्रह्लाद री कदेई नरसीजी रा माहेरा री

लाभू बावो राम रो भगत क्तव्यगीन और निलोभी हो दास्त्रा री कथावा रा आदश बाव आप रा जीवण म उतारिया हा दिन रात काम करता वखत भी मूढा म राम नात्र हरदम रवतो काम करतो जावती अर भजन गावतो जाता म्हारा घर-सू लाभू बावा न दा रुपिया महीनो

लाभू बाव घवा—लाभू बावा के हाते हुए । फोटा—तकलीफ । दूत्ता नाखता—धुमा डानता चक्की चलाकर आटा पीस डानता । गत्ताड—मुहल्ला । वकारता—बुलाता । ऊतर—जवाब, इनकारी । मुणता पाण—मुनत ही । रुधियोडो—रुघा हुआ रका हुआ । फनाणो—अमुक । हीयाळी—प्रेम । खाधा—बध । मगरा—पीठ । ओखाणा—कहावते । मिश्या—सध्या । धूजी—ध्रुवजी । नरमी—गुजरात क एव प्रसिद्ध भक्त उनकी पुत्री क यहाँ

मिलता भला भला माहुरारा पनर रपिया महीनो न रोनी-बपडा घामियो  
पण लाभू बाब दूज घर नौकरी नहा करी स नही करी लाभू बाबा प्रेम रो  
भूखो हो टका ग लाभो को हो नी

जयानी म लाभू बाबा घणा तागतन्नर हो अब वार बडा दादाजी  
दानमलजी री हूवेनी चिणीजती ही जद पयरा री रास चणवण वामा हमाला  
न बुनाया त्त-त्त मण भारी अबलिया देव न हमाला जीभ बाढ दी जद  
सठा लाभू बाबा न वकारियो लाभू बाब अबल ब दम-दस मण रा अबनिया  
चढा लिया

जतिया री हालत देख-न लाभू बाबा कह्या करता—

कई जती मंत्रछा मिर मूडा ।

करमा री गत-सू हुया भूडा ॥

लाभू बाब कई भेख जीमण जीवत खच आप रा न आप री मामण रा  
करिया हि दू और जन तीरथा री जानाता करी और मरतो सर्वकडू रपिया  
आप री लुगाई मोला र वासत छाड्यो दो च्यार रपिया कभावणआळो जादमी  
किण भात मुखी जीवण विता सक लाभू बाबो इण रा परतख उदाहरण हो

लाभू बाब आप रा जीवण रा गेप दिन गाव म गाठिया माँचा माथ  
बठा सूता हरत्त भजन करतो रत्ततो म्ही टापरान दवण मित्राय कई वात  
री मन म ही काना ही पिताजी मिलण वासत गाँप गया जद उणां न जाया  
गुणतां पाण उभाण पगाँ सौ पाँवटा साम्हा जाया लोगान-घणो अचरज हुयो  
क आज गावा रा वूण पगाँ म त्ती शक्ति कठा मू जायगी

लाभू बाबा न स्वगवामी हुयां आज धीम बरस हुग्या है पण म्हारा मन  
म बाबा रा गुणां री यात् आज ताणी ताजी है

भगवान माहेरा (भात) भरन गये थ । घामिया—देन का कहा offered  
रास— । अबलिया—पत्थर । जीभ का दी—पस्तहिम्मनी प्रकट  
की हिम्मन हार दी । वकारियो—तलकारा । जती—(जन) यती । भूडा—  
बुर निकम्म ।

भेख—(बगधारी) सावुआ के ममाजा का मत्पु भोज । जीमण—जवनारें ।  
जीवत खच—जीत-ओ किया हुआ मरण भोज । सामण—स्वामिन पत्नी ।  
उभाण—नगे । आज ताणी—आज तक ।

## सोप

( गद्य-काव्य )

[ चन्द्रसिंह ]

[ श्री चन्द्रसिंह का जन्म स० १९६९ म घानानर राज्यान्तगत नाहर सहगील के विरवाली नामक गाव म हुआ । उनकी शिक्षा बीकानर म हुई । बचपन स ही असाक्षरता मुवरियाँ दूहा आदि बनाने की रुचि विकसित होती हुई राजस्थान क ऋतु-मौ-दय की आर भाष्ट्ट्ट और वादली तू डापर, 'वमत आदि वाच्य-कृतिया मामने आयी । वादली वाच्य पर नागरी प्रचारिणी मभा, वाराणसी न रत्नाकर-पुरस्कार देकर सम्मानित किया । इन द्वारा राजस्थान की प्रकृति का बहुविध सूक्ष्म और भाषिक वर्णन हुआ है । कविता क अतिरिक्त इहान राजस्थानी गद्य म कई सुन्दर लघु कहानिया एव गद्यकाव्य भी लिखे हैं । खीन्द्र की चिनागदा का इन्होंने राजस्थानी म अनुवाद किया है । राजस्थानी के नव जागरण के कणधारा मे इनका महत्वपूर्ण स्थान है ।

'सोप गद्यकाव्य म प्रकृति के परिप्रेक्ष्य म जीवन और मृत्यु की अथवत्ता समझन का प्रयत्न किया गया है । ]

( १ )

चिडबोली भार म परभाती गाय-न सूत्या लोका न चेत करार  
 मार वरसाळ-म गुरगो बोल न लोका रा हिया हुळमात्र  
 कायन वमत म आप री भीठी राग-मू लागा रा रू रू नचात्र  
 कूज री कुरळात्रणो काळज रा चीरा चीरा वणात्र  
 म्हारा कविया ! घान के हुयो ?

१ चिडबोली—चिडिया । गाय-न—गावर । सूत्या—सोये हुये ।  
 वरसाळो—वर्षाकाल । हुळमात्र—उल्लसित करता है । रू रू—रोम रोम ।  
 कूज—कौच पक्षी । कुरळात्रणो—करण शब्द करना । चीरा—टुकड़े । के हुयो—  
 क्या हा गया है ?

( २ )

विदा लता रात उपा-न कस—काल अठ-ही भलो !

उडती-सी उपा-मू मूरज मुण—काल अठ ही भलो !

आख्या-मू अनीठ हुत मूरज-न साभ अ-ही वचन लल—काल अठ-ही भलो !

( ३ )

ऊनाळ री तपती तालडी-म ताती वेळका पर चालता-चानता जद पगथळिया  
में फाला पड जाश और मूटो लूना-मू भुळनीज जण चुधी आखिया र साम धीय  
वसत री याद आया विना को नी रण पण वमत री बा'र लटता आग आरण  
प्राळ उनाळ रो ध्यान क्यू कोनी आग ?

( ४ )

डाळिया-मू लाग्या हरिया-हरिया पान आमा-सामा भाक चचळ हुन आपत  
म मिलण-न उळचाण पण आप री ठोड को छोड नी

सुका पान दूर दूर-सू आय-न आपसरी म गळ मित्र—साथी ! आव भन

( ५ )

अघार स उजाळ-म आगा ही वाळक रोया

इण-म जीवण रो अथ नगाय लाग हुमिया

धीर धीर देवादेवी सागी वाळक उजाळ रो आदी वणियो

अक तिन अचाणचक अघारा आवता देव सागी वाळक उजाळ वास्त रात्रण  
लागियो

२ काल—कल । भलो—अच्छा (विस्मयादिबोधक अ-सय) । अदीठ—  
लाप अदृश्य ।

३ ऊनाळो—उष्णकान ग्रीष्म । तालडी—धूप । वेळका—वेतुका,  
बालूरेत । पगथडी—पादतनी । फाला—फफोले । मूटो—मुह । भुळनीज—  
भुलसता है । चुधी—चमार्चोथ लायी हुई चुधियाई हुई । वीत्ये—वीने हुअे ।  
कानी—कनी । पण—पर । बा र—बहार ।

४ आमा-सामा—आमन-सामन । ठोड—जगह । आपत म—आपस म ।  
आपसरी म—आपस म । भन—भरें भर जायें टूटकर गिर जाय ।

५ सागां—बही । आदी—अभ्यस्त । अचाणचक—अचानक ।

( ६ )

तपियोड तावड री तीखी किरणा री लीन आप र गळ-सू नीच उतार  
काळज-मे फाला उपाड दिन भर धूणी रमा रात म इमरत वरसाव  
उण चाद-न जगत चोर क्व ।

( ७ )

दानू वाळपण रा साथी  
जवानी म अेक दात रोटी टूटी  
विरधापण साथै वितायो  
मरना पछ अेक गगा-म, दूजो कवर-म  
अत म अळघा करण रो ओ साग कितो ?

( ८ )

हवा रो रूख देख धोळा चूखला उण र साथ उडे  
काळो वादळ अड और ह्या र सामो हाल  
उण-म पाणी है

( ९ )

आधी आव  
फूला और पाना मे खळबळ माच ज्याअ  
हवा रो रुख देख-अ भुक् भुक् सलाम कर  
सुन टाऱळ-न उण-नू काई मतलब ?

६ तावडो—धूप । उपाड—उठाकर । धूणी—धूनी । चोर—सूय की रोगनी को लेकर चमकनेवाला ।

७ अेक दात २०—बहुत गहरे मित्त । विरधापण—वृद्धावस्था । अळघा—अलग । साग—स्वाग मल तमांगा । कितो—कमा ।

८ धोळा—मफेद । चूखला—मफद वादला क र्फ के जस छाट-छोटे छड । अड—अड जाना है । सामो हान—सामन चलता है मामना करता है ।

९ खळबळ—खनबनी । हालळ = छोटी-छोटी और पतली सूखा डालिया । काई—क्या ।



## पाणिवाद

( ललित निबध )

[ मनोहर शर्मा ]

[ डा० मनोहर शर्मा का जन्म १९७२ में भूझणू जिले के विसाऊ ग्राम में हुआ। बचपन से ही कविता की ओर इनकी विशेष रुचि रही। राजस्थानी काव्य-क्षेत्र में इन्होंने भाति भाति के प्रयोग किये। अरावली की आत्मा और गीत-कथा इनकी दो काव्य कृतियाँ हैं। इनके अतिरिक्त धारा रो संगीत कूजा जम्मरकळ गोपीगीत मरवण पछी रसधारा बापू गजमोती बलबध जय जननायक बटावू आदि इनके ऐसे काव्य हैं जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। मधुदूत उमर खयाम अयोक्ति गनक गीता धम्मपद और जिनबाणी इनके राजस्थानी में अनुवादन ग्रन्थ हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय ने इन्हें राजस्थानी वान साहित्य अके अध्ययन शीपक गोध प्रबन्ध पर पी एच-डी की उपाधि प्रदान की।

डा० शर्मा राजस्थानी लोक-साहित्य और लोक मस्कृति के व्यापारिप्राप्त विद्वान् एवं गभीर गवेषक हैं। लोकगीतों और लोककथाओं का इनका गहरा अध्ययन है। इनकी प्रत्येक रचना राजस्थानी लोककाव्य से प्रभावित है। पद्य के साथ साथ राजस्थानी गद्य में भी इन्होंने कई प्रयोग किये। इनके ललित निबध राजस्थानी साहित्य में विशेष महत्त्व रखते हैं। इनके लोक-संस्कृति सवधी निबधों का एक संग्रह लोक-साहित्य की साम्कृतिक परंपरा नाम से छपा है 'क्याणन' में इनकी राजस्थानी कहानियाँ हैं। इस समय वे बीकानेर के राजस्थानी भाषा साहित्य सगम के मानद मंत्री हैं। ये विसाऊ से प्रकाशित होने वाली त्रमासिक गोध पत्रिका वन्त ५ सम्पादक भी हैं।

यह निबध 'जलमभोम पत्रिका के प्रथम वप में प्रकाशित हुआ था। ]

( १ )

बद यामजी महाभारत में पाणिवाद की महिमा गाया है मिनख रा दोनू हाथ भगवान् की बरदान है हाथ हतानणो मिनख रा धरम है समार

पाणि—हाथ। मिनख—मनुष्य। बरदान—दान। हाथ हलावणा—  
हाथ चलाना हाथों से काम करना परियम करना। जहो सिद्धावता

नी सारी जनति री नीव पाणिवाद है वद-यासजी रो वचन है—जहो सिद्धाथता  
 सेपा यपा मनीह पाणय ! भारत मे जिक्को तत्त्व वेद (अर्थात् गास्त्र) मे  
 है वो ही तत्त्व लोक (अर्थात् लोकजीवन अर लाकसाहित्य) म भी है 'लोके  
 वेद च भारतीय सस्त्रुति रो प्रधान लक्षण है भारत रा मनीपिया पाणिवाद  
 अथात् पुरमारथ री महिमा समभी अर इण रो मरम जन साधारण न भी  
 समभाया फळ ओ हुया क पुरमारथ रा महिमा गान लोकजीवन माय  
 रमग्यो अर आज भी भारत री लोककथावा म इण रा सुर गूजै है

राजस्थान माय अक् तौक्क प्रवाद इण भात है—अक् सेठ परदेस सू  
 माकळी माया कमाय र म आत हो धन सू लादियाडा ऊट घोडा साथ हा  
 अर उण रो परवार भी रथ मे साग ही चाल हो वरगा रा दिन हा सेठ रो  
 सारो साथ अक् नगी र सूक पाट माय मौज स चाल्यो आत हो इतर म ही  
 चाणचूकी नदी म पूर आयग्यो अर सारो साथ पाणी मे वयग्यो सजाग-सू  
 अक् लकडा सेठ रै हाथ आयो अर उण र सहार सठ रा प्राण ऊवरिया सेठ  
 नदी र किनारे पूग र बोलियो—

सौ घोडा, सौ करहला, पूत सपूती जोय ।

मेहा ता वरसत भला होणी हो सा होय ॥

राजस्थान माय पाणी री तगी है अर लोग वादळा न उडीकता ही रत्त  
 इय कारण सवनाश री स्थिति मे भी सठ मेहा तो वरसत भला कय-अर

६०—उनकी सफलता अद्भुत है जिनके इस ससार म हाथ हैं ।

लोके वेत्ते च—लोक म और गास्त्र मे भी । मनीपिया—विद्वानो न  
 चित्ता ने । पुरसारथ—पुरुपाय उद्योग परिश्रम । मरम—रहस्य ।

लौकिक—लोक प्रचलित । प्रवाद—जनोक्ति, जनप्रचलित कथा । मोकळी—  
 बहुत सारी । लादियाडा—लेदे हुजे । सूक—सूखे । पाट—विस्तार । इतर म—  
 इतन म । चाणचूकी—अचानक । पूर—बाढ । वयग्यो—बह पया । सहारै—  
 सहारे से । ऊवरिया—बचे । पूग र —पहुचकर । सौ घोडा ६०—यद्यपि सौ  
 घोडे सौ ऊँट और पुधा वाली सद्गुणवती स्त्री ये सब जाते रह तो भी पानी तो  
 वरसा हुआ ही अच्छा (पानी का वरसना ही अच्छा) फिर जो होना है सो हो ।  
 करहला—ऊँट (म०—कग्भ) । मेहा—मेघ बादल । सपूती-सुगुणा । जोय—  
 पत्नी ।

तगी—कमी । उडीकता रेजै—प्रतीक्षा करते रहते हैं । कय अर—कह

सताप मानिया ता आ बात ठीक-सी ई माग पण इय प्रान्त माय गार-तत्व घोर सबट म फग र भी हिम्मत नही हारणो है हिम्मत म ई जोरन री मफटना है

इण प्रान्त माय राजस्थान री जेक दूजी लोक्कया भी ग्यवा जाग है— अक सठ समुत्पार र दग-नू बहून घणो घन कमाय र कई वरगा याद आप र दग आग हा मान-नू भरियाड जहाज माय ही सठ रो परतार भी हा जहाज समुत् न पार करतो-करता दम री घग्ती र नेड-नी पूगियो अर वाणघूकी पाणी म लुक्कियोडी अक चटान-नू टयराय र टूटग्या भारी सम्पत्ति अर गेट रो परतार पाणी म दूबग्या ररम-जाग-नू अकना वाणिया ऊररियो अर किनार आ लागो घग्ती पर पग टेकता ही वाणिये आप री मूछा पर तात्र नियो कई साग आ लीना गेगता हा उत्रा न घणा अचरज हुयो अर उत्रे वाणिय-न इगो विपत्त-म भी मूछा पर तात्र त्रेण रा कारण पूछियो । वाणियो बालियो— जीर्गा नर तो और करगा घर ताग वाणिय री हिम्मत दख र चकित हुयग्या पछ वाणिया अक नगर म आयो अर अक सठ र नौकरा करी नौकरी-नू थोडा सा दाम भेळा द्या ता पछ जक दुवान मोनी दुवान खूब चाली अर थोड करसा म ही वाणियो पाछो सेठ वणग्या पछ आप रा व्याग करघा अर सम सारू परतार रा धिराणा (घणी) भी हुयग्यो

ऊपर री दोनू बात अक-ही मूळ चीज रा दोय रूपांतर-मा भाग है दोनुवा री मूळ भावना अक ही है अक र समुद्र दूजी माय नदी रा रूप धारण कर रागिया है यस और घणो फरक कोनी आ बात उण जमान री याद दिरात्र है जद भारत रा व्यागरी समुत् पार र तैसा माय जावता अर अपार सम्पत्ति कमाय र दस म लाया करता जहर-जरूर इय समुन्नी व्यापार म घण ही लोका रा प्राण भी गया हुकना पण उत्रा री हिम्मत सराहना जोग है आज भी उवा री बात चाल है

कर । फस र—फंसकर ।

नडो सी—निकट । वाणघूकी—अचानक । लुक्कियोडी—छिपी हुई । कम जोग—दवयोग । टेकता ही—रखते ही । जीबला—जियगा जीता रहेगा । और—दूसरा । दाम—पस धन । भेळा—अकत्र । सम सारू—समय क माय । घणी—स्वामी । दोनुवा री—दोना की । घण ही—बहुत से ही । बात चाल है—कहानी चालू है ।

( २ )

भारत र व्यापार-बीरा री आ गौरव गाथा ऊडा ध्यान दवण री चीज है वात रो सठ अेक बौद्ध कथा माय भी प्राणवान है कथा घणी पुराणी है अर उण रो सार इया है—

अक सेठ रा माल-सू लादियोडो जहाज समुद्र मे वव्रता जानतो हा कम्म जोग-सू जहाज पाणी मे लुबियोडी अेक चट्टाण-मू टकराय र लोप हुयग्यो सेठ डूबियो कीनी अर तिरवा लागो समुद्र अपार टूतो पण फेर भी वाणिया हाय हलाव्र हो अर पार लागण री पूरी चेप्प कर हा

इतर म ही देवी मणिमेखळा परगट हुयी अर सेठ-न कयो—अरे मिनल ! तू क्यू दुख पाव है ? ममुद्र री अ ऊचा तर गा तो देख अे तन कन् छाडसी ?

सेठ नरमी सू उत्तर दियो—देवी ! ह तर गा रा विस्तार देखू हू पण फेर भी हाथ हलावणो बढ वानी करू हू मरनू ता भी हाथ हलावणा-हलावता ही मरसू

देवी फेर बोली—अर वावळा ! अ मगरमच्छ तो दल अ धार कानी चाया जाव है धार उबरण रो काइ लेखा ? तू काया नै भूठो हा कण्ट देख है

सेठ फेरू उत्तर दियो—देवी ! हू मगरमच्छा न भी दलू हू पण हाथ हलावणा बढ कीनी करू हाथ हलावणो म्हारो धरम है

इतरी सुणता ही दकी जाप र हाथा सू सठ-न ऊचो उठाय लियो आग ही उण रो जहाज सारो-साबता तिरता हुता देनी उण माय सेठ-न वठाय दियो सेठ आणद-सू दस आय पूग्या

ऊपरली दोनू राजम्यानी वाना इय पुराणी बौद्ध कथा सू अेक प्राण है इमी लागै है जाणै बौद्ध कथा रो ओ सेठ आज भी भारत री लोक कथावा म

२ ऊडो—गहरा । वात रो—कहानी का । प्राणवान—सजीव जीवत । वैवतो—चलता हुआ ।

कीनी—तही । हलायतो—हिलाता हुआ । फेरू—फिर । लेखो—हिसाब गिनती । सारो साबतो—साबुत । तिरता हो—तर रहा था । ऊपरली—ऊपर वाली ऊपर की । अेक प्राण—अक जीव वही बिल्कुन समान । हुय सब है—सभव है ।

जीवतो जागतो है ह्ये सब है क अ कथावा प्राचीन कथा रा रूपान्तर ही हुत्र  
 सठ सगळ है भृगराज सिंह रा सुभाष है क वा वरी-पर अत ताइ वार वर  
 थर वर हार नही मान आ कथावा रा नायक भी नर सिंह है अ वार विपत्ति  
 म भी हार नही माने मौन-न आग ऊभी दंग र भी वचाव रा पूरा प्रयत्न कर  
 अर अत म सफळ हुये

इण भान भारतीय सभ्यता अर संस्कृति रो मूळ मत्र पाणिवा (पुरसारथ)  
 है आज रो लोक कथावा माय भी ओ तीव है अर जन साधारण न प्रग्णा  
 मत्र है इमी लोक-कथावा कवणिया अर मुणणिया भान निरक्षर हुत्रो शिक्षित  
 तो जरूर ही है जै पान घन-न जितरो वाटियो जाव जितरो ही पुन ह पुन  
 रो जड सदा हरी

---

सगळ—सब स्थानो मे, सबत्र । वार—प्रहार जाघात । वचाव—बचाव ।  
 पुरसारथ—पुष्पाथ । कवणिया—बहने वात्र । मुणणिया—सुनने वाले ।  
 भाव—चाहे । निरक्षर—अपठ । जितरो ही—उतना हो ।

## म्हारी जापान-यात्रा

( यात्रा-वर्णन )

[ रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत ]

[ रानीजी का जन्म दवगन् (मवाड) में स० १९७३ में प्रसिद्ध राजपूत परिवार में हुआ। इनका विवाह धीकानेर के प्रथम श्रेणी के जागीरदार रावत सर के रावतजी के साथ हुआ। राजस्थान के महिला साहित्यकारों में इनका उल्लेखनीय स्थान है। ]

साहित्य सेवा के साथ साथ रानीजी विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक प्रवृत्तियों में भी अग्रसर रही हैं। इस समय राजस्थान प्रदेश कांग्रेस की अध्यक्ष हैं। अफा जेशियन सोलिडरिटी राजस्थान, की उपाध्यक्षा एवं इंडो सोवियत कल्चरल सामाजिकी राजस्थान की अध्यक्षता के रूप में इनकी सेवाएँ बहुमूल्य रही हैं।

विदेशों में होने वाली कई कांग्रेसों में इन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया। सन १९५९ में ये जापान में आयोजित एटम हाइड्रोजन बम बल्ड काफ़ेस में सम्मिलित हुईं और सन १९६० में वहाँ की साहित्यिक संस्थाओं का अध्ययन करने के लिए गये हुए भारतीय महिला शिष्टमंडल की सदस्या रही। हमें भारत के साहित्यकारों का प्रतिनिधित्व भी कर चुकी है।

इनकी हिन्दी कृतियों में 'तध्वनि स्वात सुखाय' राजस्थान का हृदय उल्लेखनीय है। राजस्थानी कृतियों में 'भाभळरात गिर ऊचा ऊचा गढा 'कै रे चक्का वात मूमल' 'अमालक वाता हुकारो दो सा टावरा रो वाता कहानी मयह हैं। 'राजस्थानी लाकगीत' राजस्थानी दाहासग्रह, कबीर कल्पनता जुगल विनास वीरवाण इनके द्वारा सम्पादित कृतियाँ हैं। 'हिन्दुकुश क उस पार' में हम यात्रा का वर्णन है।

'म्हारी जापान यात्रा' एक यात्रा-वर्णन है। लेखिका ने जुलाई १९५९ में टिरोनिमा में आयोजित अणुबम विराधी विश्व-सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल की सदस्या के रूप में भाग लिया था। इस निबंध में उसी यात्रा का वर्णन है। रानीजी ने अपनी रोचक एवं प्रवाहमयी शैली में जापानी जन-जीवन की तस्वीर-भी खींच दी है। वहाँ की जीवोगिक प्रगति शांति-स्मारक म्यूजियम के प्रसंग से टिरोनिमा की विध्वंसक लीना शांति माच की रंगीन दृश्यावली आदि का चित्रात्मक वर्णन कहानी का-सा आनंद देता है। ]

( १ )

जापान रो तमली नाम जापान ती है उण रो अमली नाम निप्पोन है जापानी आप रा देग न निप्पान कवै परल्मिया रा अधुद्ध उच्चारण सू निप्पान जापान वण गयो

जापान दम चार गणुवा सू वणियोणे है आ म हाणू टापू मब मू मोटो है टोकियो जोसाका क्योटा हिरोसिमा वगरा जापान रा खास खास सहर इण हाज टापू म वमियाण है बीकनी रा तीन टापू ण मू चिपियोडा है उतराण म हाकायडो टापू है निवणाण म मिक्कोकू जर क्यूसू इणा र अलावा जापान रै समन्तर म छोटो छोटा हजार टापू द्विबरियाडा वसिया है

टोकियो रै हुनेडा हवाई टेसण पर उतरता ई घटी साम्ही भाकी कळकत र और बठ र टम म तीन घटा रो फरक हा आ वात कवणी पडला क अठै रा कस्टमवाळा भला आदमी हा काई आता काई जाता सामान र हाय ई नी अढाया, काई पूछताछ ई ना करी पासपोट देख भटपट छाप लगा सीख दे दा

म्हान प्रिंस-होटल म उतारिया ओ तो म टोकियो म पूगता ई देव त्रियो क अठ नकसा रो जार है म्हा र कभर म नकसो टगियोडो हो का फ्रेंस री ओर-सू म्हा नै कागजात दिया हा उणा म ई नकसो नत्थी हो गैलै म जिण किणी न ई म गला पूछिया उण भट कागज-पसिन काड नकसो माड मन गलो वतायो टकमी डाइवर न कठ ई जावा न बहियो तो भट नेनी नकसो ज बसू काड म्हा र मूडागै राखियो—त्रिण जागा जावणा हुन नकस म वता दको बठ नकस सिवाय कोई बाल ई नी रला मे सफर करबावाळा लार ई नकसा मौजूद

( २ )

उण ईज दिन साभ री गाडी सू म्हा न हिरोसिमा जावणो हो टोकियो

१ ना=नही । चिपियोडा=सटे हुअे मिले हुअ । हू भाकी=मन देला, भाकना क्रिया साधारणतया सक्रमक होती है पर यहा अक्रमक को भाणि प्रयुक्त हुई है । टम=समय टाइम । कवणी पडला=कहनी होगी । कस्टम=जकात विभाग । काई=क्या । आता=आते समय । अढायो=अगया । पूगता ही=पहुचते ही । नत्थी=सयुक्त माय लगा हुआ । गरा=भाग । माड=वनाकर । भट दसो=भट से । मूडाग=मुह के आगे (मूडो=मुह+डो) । जागा=जगह । वठै=वहां । लार=पीछे ।

२ उण ईज—उभी । वडिया—प्रविष्ट हुअे भीतर गय । च्यारू पासो—

टेसण पर पूगिया टेसण-री इमारत म बडिया पण बठै नी ता प्लैटफारम ई दीव्यो, नी गाडी दावी, नी इजन नजर जाया अचभ-म पडगी—ध्यारू पासा दुकाना ई-दुकाना ।

जापान कामल बाळा म्हा नै क्यो हो क आप नै हिरोसिमा तक पुगावा-न म्हा रा आदमी माय दे देसाला तो आप न माभ-न टेसण पर मिल जावैला गाडी छूटण री बेळा नजीक आयगी म्ह उडीकता उक्तायीजग्या

टमण पर भीड घणी ही नी ता गाइड म्हा न जाळव नी म्ह गाइड न ओळग्या अन बक्त पर गाइड हाफतो थका जायो जावता ई मनै देख बोलियो—भला हुश्रा या री इण साडी रो जा इण न दख म था नै ओळगिया

गाइड म्हा-न लेय ऊपर चडियो हू मोचण रागी—आपा-न तो गाडी चढणो है आ ऊपर कठै ल जाव है ? ऊपर आवता ई देखिया कं प्लैटफारम पर आय ग्या हा गाडी मूडगं ऊभी हा ममभ म नही जायी क ऊपर चडिया गाडा किण तर आयी नीच भाषा बाजार सडक, दुकाना नीचै ही टावियो म आबाती घणी गहरी हावा-मू रना दुकाना री छाता पर चाल टावियो म्ह-म रता रो जाळ-सो गूदियाडा है—नाग-पाछ छाव जीमण, ऊचै नाच घटघट करती रैला चालती रश्रै

जापानिया न आप री रना री टाइम री पावदा रा घणो आजग है बठ रेना नट ना हुश्र क ई हुश्रै ता कुछ मरुडा मारू ईज म्हा री गाडी हिरोसिमा आडी भागा जाव ही रन री पटडी र दाना आडी-न गेता म भर जगळ तक म विजळा रा तारा रा मभा गवियाडा बतान हा क जठै उदाग रा वित्तो विन्तार है परा माथ टेस्लीविजन रा अेरियाला ग मभा साम्ही धागळी गियाता जापानी राजन श्री फूकुमिमा बोनिया—भ अेरियता रा थाव दम-न आप अराजा लगा निरात्रो क जापान म वित्तग टेनिविजन है

पारा आर (पा-व) । बो—बह । उडीकणो—प्रतापना करना राह देगना । उक्तायीजग्या—उक्ता गय । आळव—पहचान । अन—टीक । हापता थका—हापना हुआ । गहरी—घना । छान—छन । डा । जीमण—चाय और मूच । आइग—अभिमान गय । मारू-ईन—निअ हा । जाडी—आर । आडा-न—आर का । गवियाडा—राप हुभे गू हुअ । बतान—सूचिन करत हैं । वित्तो—विन्ता । धागळी शिगाता—गना म गवत करत हुभे । लगा निरात्रा—लगा सात्रिय (आदर क निभे प्रशनाथक त्रिया का प्रयाग) । मुगापरा—दाया । आगळ—



सकडा कोना री मुमाफरी म देगियो व जापान म अक आगळ धरती  
वेकार कोनी पटी मान लो कठ ई जमीन खेता र लायक कानी पाणी रा खाडो  
ई है तो उण-न ई काम म ल राखियो है वो खाड म कमळ ई वाय दिया  
कमळ री खाडी वीज पत्ता पून पाण्डिया रा साग वणाई

( ३ )

ता० ३१ जुलाई १९५६ न सुबह १० वजिया हिरासिमा म विद्वान-मम्मलन  
सरू हुया प्रतिनिधि टम सू पहला ही भेळा हुवण लागे

हू वारँ बरामद म ऊभी हा अचाणचक अक लावी वाड रा सरपार टोप  
उतार माथो भुवाय मुजरा करियो धालिया—आप जरूर हिंदुस्तान सू आया  
हो म आस्ट्रेलियन हू पाच वरस दक्खण भारत म रयोडो हू, आप किस प्रदेश-  
सू आया हो ?

म कयो—म राजस्थान री हू

जाछो ! आछो ! उदपुर तक म ई गयोडो हू, म्हारो नाम अड्डूज हचूज है,  
मन मराठी बोलवा री घणी मन म आय रयी है जाप र साथवाळा म कोई  
मराठी बोलणियो है कनी ?

दूज तिन म उणा-न म्हा र प्रतिनिधि मळळ रा नेता श्री हिरे-सू मिलाया हूज  
वा-सू मराठी म घडाधड वात करवा लागे मराठी र ल आखर रो उच्चारण न  
घणो गुद करता म उणा र ल र उच्चारण पर खुसी हुया और अचभो र  
थायो आपण अठ रा हिंदी बोलणिया भाया-सू दासवर उत्तर प्रदेश अर बिहार  
वाळा-न ल बोलणा नी आव ल रा प्रयाग राजस्थानी पजाबी मुजरानी अर  
मराठी म तो खूब हुव

इण ल न लय न मन अक जूनी वात याण आयगी वीकानर राज म  
महाराज गंगासिंहजी र वगत म महाजा रा राजा हरसिंह जी ठावा सरदार हा

अगली भर । कोनी—नहां (काई नहीं) । खाडो—खड्डा । वाय दिया—वो लिये ।

३ मरू—शुरू । भेळा—इकट्टे । वार—बाहिर । अचाणचक—अचानक ।  
लावी वाण रा—लंबे कद के । मुजरो—नमस्कार । जाच्छा—अच्छा । गयोने—  
गया हुआ । बोलणियो—बोलने वाला । है कनी—है कि नहां । नेता—नायक,  
प्रधान । भाया मू—भाइया से बचुजा से । बोलणी ना आव—बोलने म नहीं  
आता, बाना नहीं जाना खोन नहीं सकते । जूनी—पुरानी । वगत—वकन, समय ।

वीकानेर राज-म उण दिना जेक हुकम निक्ळियो क राज री नौकरिया म वीकानेर रा लोगा न ई राखिया जाव फलाणो आदमी वीकानेरी है व नी— इण रो इम्तिहान घणी विरिया महाजन राजा माह्व लिया करता इण इम्तिहान री जरूरत यू आयी क घणा जणा तकली सर्टीफिकट ले वीकानेरी वण जावता उम्मेदवार री जाच करवा-म राजा साह्य उण-न पूछता—बोलो खळळ खळळ वाह्यवाळा-मू शुद्ध उच्चारण नी करणी आवतो और वै बालता खनल खलल उण इ वगत राजाजी आप रो फसलो सुणा देता—था र वीकानेरी होवण म खलल ह भाया ।

श्री ह्यूज महाराष्ट्र री मायली वाता री घणी जाणवारी राखें बठ री जन जातिया र बार म उणा रो घणो चान है जद व महाराष्ट्र री जन-जातिया रै जीन्नण जर सस्कृति री वाता सुणावा लाग्या तो मन म मन घणी सरम आयी में तो वा जन-जातिया रो नाम ई नी सुणियो

( ४ )

काफरस हाल र बार ऊभा प्रतिनिधि लोग गप्पा लगाय रया हा गर्मी तेज पड री ही जानान म द्याता रा पखा नो हुन ई नी मत्र जणाहाथा मे जापानी कागज रा पखा लीधा हिलाय रया हा सूडान रा प्रतिनिधि इजिप्ट री लुगाई-प्रतिनिधि मिस करम-न बतळायी—गर्मी तो अठ ई आपा जिमी पड है पर जापानी आपा जिसा काळा क्यू कोय नी ?

पश्चिम जमनी रो प्रतिनिधि हाफ हाफू करतो फूकां देतो फिर रयो हो— मर गयो भरमी आगो, में तो कालै परो जावूला ।

यूराप री जेक जवान लुगाई प्रतिनिधि घडी घडी आग र बटव-सू वाड

पलाणो—अमुक । इम्तिहान—परीक्षा जाच । घणी विरिया—अनक बार । महाजन—वीकानेर राज्य मे अेक स्थान, यहा के ठाकुर वा वीकानेर राज्य के सामता म सबप्रथम स्थान था । यू—यो इमलिअे । खळळ-खळळ—पानी के जार से बहते समय होने वाली आवाज (तुलना—नाळा वैच खळळ-खळळ—नाला खन खल करता हुआ बहता है) । करणी आवतो—किया जाता हो पाता । खलल—बाधा स्वाबट । भाया—भाई । मायली—भीतरी । सरम—गम ।

हाल—बडा कमरा । वनळायी—बात की बात बही । आपा जिसी—अपने जसा । हाफू हाफू करतो—जोर से हाफता हुआ । आगा—आग से । परो जावूला—चला जाऊगा । बटवो—थला बग । छाट—छिडवती है । तपतै

यूडीकोलन की सीमी न छाट माथ प । हू भइ वठी म्हार ई ललाट र उण यूडीकोलन लगाया । मैं कहियो—मन अिसी ज्यादा गरमी कौनी लाग । हू राज स्थान की अर गा इ तपत बीकानेर की रण-वाळी जठ इण-सू बेमी गरमी पड ।

जिण भन्न म का फरस ह्यी उण र भू ईज गति-स्मारक म्यूजियम हो । घणखरा म्हे वा म्यूजियम दखण लाग गया । इण म्यूजियम मे हिरोसिमा में जी अटम बम-सू तवाही ह्यी ही उण रा तसवीरा नकसा अर आकडा जमाय राखिया है । पूग विवरण उण प्रठ राद रागियो है । उण महानाश रा राखसी कर्मान दख बजर की छातीवाळा र इ आसू आया विना नी रत्र । भीत प अेक भोटी सारी तम बीर लाग री । उण म धून्न रो मगरो रो मगरो लपकता लगो ऊचा च्च रयो है । अटम बम र फूटता ई हिरोसिमा ३ आय की वाळी छाया म डाकतो ओ फोटू चार हजार मीटर दूरा सू खैचियो हो । १९४५ री छ अगस्त न सुबह अन आठ बज र १५ मिनट प अेक जमेरिका र विमाण बम फकिया । वो मत्यानासी विमाण बम फकना इ नटाटूट पाछ पगा भागिया । वा इमा तज भागियो क बम फूट फूट जी र पला १६ किलोमीटर भाग न दूरो निक्ळ गयो ।

बम जमीन सू ५७० मीटर ऊचो आकास म फूटियो । धरती पर पड र फूटवा सू इतरो नास नी हा सक क्यूक बम म अितरी ताकत ही क जमीन मे घस जासता । जा मिनखा बम न आकास म फूटता देखियो वा बनायो क बम फूटता ई इयो लागियो जाण परचड सूरज धरती प उतर रया है । बम फूटियो जिण वेळा उण सू गरमी निक्ळी वा दो लाख सेंटीग्रेड ही । सौ सेंटीग्रेड गरमी मे पाणी उबळवा नाग जात्र । वा गरमी ही दो लाख । भूगडा तिडक ज्यू मिनख निक्क गया । वो धून्न रा वाट्णे जिण न आपविक् वाट्ळ फन्न अड साळीम सेकिड म तीन हजार मीटर ऊचो चटिया । साडी आठ मिनट म तो नौ हजार मीटर ऊपर च्च गयो । पद्दह मिनट पद्द इण वादठ म-सू वरखा हाण लागी । तो घटा ताई बगबर कादा वरसना रया । रेडिया सक्रियता रा जो

—तपत हुए तपन बाल । रण वाळी—रहन वाली निवासिना । भइईज—पास ही । घणखरा—बहुत-से अधिकारा । जी—जिस । तवाही—विनाश । खचियो—खीचा । अन—ठीक । नटाटूट—बड़े बम स । पाछ पगा—उतटे परा वापिस । फूटवा-सू—फूटा स । जा मितखा—जिन मनुष्या ने । उबळवा—उबलन । भूगडा तिडक—चन पट जाते हैं । साडी आठ—साडे आठ (साथ—सड्ड) । कादो—कीचड । लाय—आग । बळवा—जलन । आसइ—मारे ही । छाईस—

कण धूव र मार्ग ऊपर परा गया हा उणा नै बरग्या पाछा नीच ल आयी ।

बम फूटवा रै २० मिनट पछ नीच जमीन प लाय लागगी । लकडी रा घर अर वासडा रा जगळ भभक् भभक् बळजा लाग गया । छोट्टा माटा सब घर भसम हा गया । आख ई सहर म खाली छार्डिम घर बधबळिया र गया । नदिया रा पुळ टूट गया । गाडी री पटडिया वाकी होगी । गरमी इतरी हुयी क लोह काई पत्थर पिषळ गया । हिरोनिमा लाय री लपटा म समाय गयो । तान टिनां नाई धू धू बळतो रया । हरियो भरियो जगळ अर सहर राख रो डिगता हो गयो ।

( ५ )

इण क्यामत म लोग लुगाण्या टाबर टीकरा री दुरन्सा हुयी उण री वात ता कवण जोगा कायनी । जाखिया दखियोडा हाल बठवाळा सुणाय रया हा । म्हाण म ता सुणवा री हीमत ई कोयनी ही, काळजा काप काप जातो । लपटा आभ र जड री ही मिनख बरळाय रया टाबर चरळाय रया कुण किण री सुण कुण किण-न वचाव । मरिया बळिया । लपटा म भसम । इण भयकर काड-री यात्त मू इज मिनख री चेतना परी जाव । २ लाख ४० हजार लाग तुगाई अर टाबर बरळावता थका जीशता बळ गया । ५१ हजार दुरा तरह घायन हो गया । अेक लाख आसर मामूली घायन हुया ।

इण नरमघ मे जळ न मर गया वा तो सुख पायो । पण जा री मासा बाकी रगी न जीवनी लासा पाणी पाणी कर री ही पण पाणी र जबाव मे काळ उणा न लाय री लपटा म दानो कर देतो । डील रा गाभा बळ गया डील सूज गया केस बळ गया चामवी अर हाडकिया बळ न लटक गया । अ नर क्काळ चतो आवता ई बरळावता—पाणी पाणी । पाणी कठ ? पावा बाळो कुण ? आपणे पुराणा म जो रीरव नरक रो वणन कीधो वो इण र आग तुच्छ है । जो हाल तमबीरा म देविया अर जो देखणत्ताळा रा मूडा सू काना सुणियो उण न लिखवा न अर क्वा-न कोई सबज ई नी । म्यूजियम न देखता मन दु ख

छव्वास । गाडी—रेलगाडी । वाकी—टेडी । डिगता—डेर । क्यामत—प्रलय । टाबर-टाकर—बाल बच्चे । जोगी—याग्य तायक । जाभ इ०—जाकाग को छू रही था । बरळाय रया—चिल्ला रह ( थ ) । वचाव—वचावे । परी जाव—चनी जाती है । जामर—अदाजन (आश्रय) ।

५ नरमघ—मानव हत्या का यन् । वा—उ होन । जारी—जिनकी । छानो कर देता—छिपा देता (था) । डील—गरीर । गाभा—कपडे । हाडकिया—

गलानी जर अतर्दाह सून बळवा नाग गयो । मन म रय रय ओ मुत्राल उठतो—  
मिनख इमा हत्यारो हो सक ? अ देख रया हा जो साची तमवारा है ?  
ह भगवान ! मिनख मिनख र साथ ओ बरतान कीरा ? मिनख ई इसा हा सक  
तो पछै राखम पिशाच रत्य जर तानव इण-स ज्यादा कार्द हुत्रला ?

( ६ )

हिरामिमा र सत्यानाश रा जापानिया र दिन अर दिमाग प घणा अमर  
पडियो । बठ रा साहित्यकारा रै जाय ता आज ई हिरोसिमा यू हीज बळ रया  
है अर राष्ट्रीय चेतना वाळा जापानिया रा काळजा म ता आ हाळी पाडिया  
साई सिनगती रखला ।

जेक चित्राम हो भूता री सवारी—हिरासिमा म लाय लावा र तुरत  
पछै री सिबी ही । धूव-सू काळा पनियाडा नर-ककाळा रा मुड ज्या रा कपडा  
बळ गया नागा चामडी फाटियोडी गाभा-ज्यू लटकियाडी हाथ मूडा सूत्रि  
योडा दु ख-सू हास हवाम गायव ज्या मे अत सूभ न गत विचळायोडा ढग  
ज्यू धीरान हुयोडी गठिया म वे मतलव भटक रया । उण वखत री असली  
हालत ही जा । अेक चित्र जोर हा । अटम वप मू निकळी व हिसाब गरमी सू  
लोग धबगय गया । घायन पाणा पाणी कर रया । पाणी कठ ? नळा री लणा  
टूटगा । चार जाडी न लाय लाग रा । तिसिया भरता कठ मूय रया । सरीर  
घावा सू चीरीज रया । पाणा पाणा करता नदी माम्हा दौडिया । दौडणी  
वा-मू जाय नी रयो सास लणी नी आय रया । उठता-पडता नदी र किनार जाय  
पाणी र होठ लगाया । हा बठ रा बठ ठडा पग गया । नदी र किनार नाथा  
रा डिगना नाग गया । हिरोसिमा सहर र माय न सात नदिया वध जर मानू  
नदिया लाया-मू भरगा ।

हडडिया । कळारता—कराहत गरणात पाबात्रालो—पितान वात्रा ।  
लवज—लपज गद । सुवाल—प्रश्न । जा—व । स्त्रीया—त्रिया । इमा—  
जमा । हुत्रना—हाणे । यू हाज—वस ही । बळ रयो है—जन रहा है ।

( ६ ) काळजा म—कलत्रा म । चित्राम—चित्र । सिबी—तमवीर । वस हा ।  
नागा—नग । अत सूभ र गत—अति गति कुछ भी गती सूभनी थी । विचळा  
योग—व्यापुन स विचलित हुए से । दूग—खडहर धीरान । सणा—नाइने ।  
लाग री—लग रही (हैं) । तिसिया—प्याम (नृपा) । चीरीज रया—चिर जा रह  
(हैं) । माम्हा—मामने जोर । दौडणी इ०—दौग नहीं जाता । वध—वध—

सुबह रो बसत हा । टावर पढण-नै गया हा । अेक दिन पला हवाई हमल सू टूटियाडा घरा म मदद सारू जावा रा स्कूल रा टाबरा रो प्रोग्राम हो । मास्टार-र लार स्कूला रा टावर टोळा रा टोळा मल्ल मारू जाय रया हा । उण हीज चसत दो हत्यारो पापी वम पडियो । मा मा करता भोळा भाळा मूडा रा टाबर बठे रा-वठे सीक गया । उण बेडा रो चित्राम देखणी नी आन । आज ई हिग सिमा री मावा आधी रात रा सणण मणण करत वायर म 'मा मा रोवता टाबरा रा हला सुण ।

म्हारै सू तो बै चित्राम देखणी नी आया । आविया मीच-न बैठगी । चित्रामा नै देख-देख हिरोमिमा री जापानी लुगाया रोय री ही । उणा रै म्णग उणा रा टावर यू ही मा मा करता बळता बरळावता मरिया हा । कितरा ई टाबर बठ ऊभा ऊभा आप रा मा-बापा न याद कर रोय रया हा । ह भगवान ! वो नजारो याद आवै जद आज म्हारो काळजो धरथर करवा लाग जावै ।

( ७ )

इण विश्व-सम्मेलन म ससार रा सारा ई देता सू प्रतिनिधि आया हा । अमरिका-सू ई पाच-सात सरदार आया हा । उणा म डा० पोलिंग ई हा ।

डा० पोलिंग अमरिका रा नामा रसायन शास्त्री है । आणविक अस्त्रा न काम-म लेबा पछै उणा गो काई काई असर दुनिया माथै हुत इण विषय म डा० पोलिंग घणी सोध कीधी है । इण ईज काम भाय आ न नोबल पुरस्कार मिलियो ।

डा० पोलिंग मम्मलन मे घणा जोरदार वालिया । डा० पोलिंग रा भापण सुण मुणवावाळा रा काना री पिडकिया खुलगी । जागै दुनिया अधारी दीववा लागी । म्हारा रामजी ! जा मोटा दमा रा माटा लीडरा न जे कुबुद्धि आयगी ता जा दुनिया जिण न हजार बरसा स मानवी सजावता सिणगारता म्प गया है अेक पळ म गारत हा जावला ।

वहती है । पैला—पहल । मूडा—मुल्दे । नीक गया—पक गये जल गये । देखणी इ०—देखा नहीं जाता (धा) । मात्रा—माताअें । मणण सणण—सन-मन (हवा की जावाज) । वायरो—हवा (वात) । हेला—पुकारें आवाजें । बरतावणो—रोना चिल्लाना । नजारो—इश ।

७ सघन । मोघ—मोज । कीघा—की (अप० किड) । काना री इ०—कानो के पर्दे खुल गये । अधारी—अधकारमय । म्हारा रामजी—हे मरे राम । खप गया—पूरा हा गया समाप्त हा गया । गारत—बचाव ।

जापान रा नोगा इण अणु बम विराधी विश्व सम्मेलण र मौक-य बडा जबरदस्त शांति माच कीओ। दूर दूर सू मिनख पगा चानता माच करता हिरोसिमा तक आया। तावडू म् छाया राखवा न चार रा गूबियोडा मोटा मोटा टाप माच मल राखिया हा। लवी खूब लवी सवारी निकाळी। मगळा सू आग ता पदल माच कर न आत्रणिया उणा रै लार विन्नेसा मू आयोडा प्रतिनिधि पाछ हिरोसिमा री अणुपार जनता।

भगी दुपरी। कोई तीन बजिया रा तावडा तख रया। सूरज कडक रयो। सवारी चानी। म्हा नोगा र जाप जाप रा दमा रा भडा हाथ म। पसीनो टपक रया। मन र दोई आडी न मिनख भरिया। थाळी फक तो जागण नी पड। दूकाना री घरा री छाता मिनखा सूल री। छाता पर मू आदमी जुगाया फूता री बरगा कर रया। रगियाडा कागजा री बतरण री पुसप बरगा करण रा बठ रोत है। ऊची ऊची हनेनिया मू कागज रा फाता नीच म्हा प लटकाय रया। फूला मू सक्क भरगी। माथा प रग रगीना कागज रा फाता लटा रया। टेलिविजन माख तमबीरा खचवा न हनीकाप्टर माथा प आय-आय उड उड जाय रया।

ओ उछा अर म्नागत जापानिया उण लोगा रो कीधो जो आणविक अस्त्र प पावनी नगावा री आवाज उठावा न त्रेस विदम-मू ममदर लाध न उठ आया— पदन चानता शांति माच करना देम रा खुगा-खुणा मू टापू टापू-मू बठ आया। मू तो वार कानी हरम उछाह नजर आय रयो हो पण जनता पै जम-न नजर नाग्बा वाळा न अतस में और ई बात दीयी। मडक र दोई कानी ऊभी लुगाया रा रुमान जामूडा-मू जाला हा। जो माच दख उणा री आखिया आग चन्नदा बग्मा पना रा नजारो हाय गयो। का न घर बीनी यान आय री ही। का रा हिन्नडा हनुका लबा लाग गया। व जामूडा पूछती जाय री ही अर फीका फीका

पगा चानता—पदल चलते। तावडा—घूष (ताप+डा)। सवारी—जत्रूम। पाछ—पादे।

तडक रयो—तडतडा रहा था। कडक रयो—कडकडा रहा था प्रचण्डता स तप रहा था। जाप जाप रा—अपन-अपन। मनो—भाग। आडी—ओर। मिनख=मनुष्य (समूह)। अर—और। नाग्बा वाळा—डालन वात। अतस म—हृदय के भीतर। जाला—गील। चन्नदा—घौदह। घरवानी—अपन पर बीनी हूँ। हनुका=हूक। जाय री ही—जा रही थी।

मूढा मू मुळक न शाति-अभिका रो स्वागत करती जाय री ही । उणा री अतर रो अदाजा लगणो कोई कठण नी हो । मगळी जापानी मावा री अेक आवाज हा—म्हारा टाबरा री खैरियत सारू शाति री आवाज उठावा ।

माच कर न आवणिया अर परदेसा म जायोडा प्रतिनिधिया सारू उणा रा मन मे घणो मान हो । माच करणिया नै रांक रांफ पाणी री गिलासा लुगाया भनाय री ही ! मनै तावट म कळमळाती देख जक लुगाइ आप र माथ रो टोप उतार म्हारै माथ प मल दीधा , अेक जणो जाप रो पत्वा म्हार हाथ म भलाय दीधो । मनै कडकतै तावट म तपती जर पमीन मू लथपथ देख उणा नै दुख हो रयो हो । यूरोप स आयाडा प्रतिनिधि तो तावड-सू लाल बब पड गया । उणा रा कान ता सा राता हो गया क जाण अबार लाही टपक पउला ।

सवारी सूधी जूभारा री देखळी प गयी । अेटम बम सू मरियोडा री याद म काळ भाठ री समाधि घणायाही है । सगळा जणा बठै जाय माथो भुकाय डोल प ताज लागी । ताल रै साग बड री धुन गगन गूजाय दीधो—

Never again the Atom Bomb

कदैई नी जब अटम बम कदैई नी ।

सर मे सुर मिलाय लावा कठ गावा लागिया—

अटम बम कदैई नी कदैई नी ।

कदैई खाली वठी रऊ तो उण साभ री वै गहरी भावनाता याज जाय जात्रे जर मै वा म गम जाऊ ।

मुळक-न—मुमकुराकर । अतपीडा—हृत्प की बदना । कठण—कठिन । मगळी—स री । खरियत—कुशल क्षेम कल्याण । जात्रणिया—आन वात्र । मान—सम्मान । करणिया—करन वात्र । भलाय री ही—पकटा रही था द रही था । कळमळाती—व्याकुल होती । मेा दियो—रख लिया । तपती—गर्मी । लालबब—अवृत्त लाल । अवारू—अभी । सूधी—भीषे । जूभार—याथा, सनिह । देखळी—समाधि । बठ—बहा । साग—माघ । गम जाऊ—गो जाता ह ।





आप नै हर काम म आपणा बडका म घणा बडघा चडघा समभा पण इण बढोतरी(?) रै लोभ म आपा आपणो जपणपो ही भूलता जावा हा जिकी जात अर जिक देम री आप री खुद री कोई सत्ता कोनी वै दुनिया म आप री कोई जगा क्या वणा मक ? आज यूरोप रा लागी री भाषावा म दुनिया रा ग्यान विग्यान भरघो पडघो है अंगिया रा करोडा मिनख वा भाषावा नै पढ गुणै, उण ग्यान विग्यान ताई पूगण सारू पण इण कोसीम म रै आप री भाषा रो बिलकुन निरस्वार कर देव अर पराय ग्यान र साथ परायी भाषा रा भी गुलाम वण बठ अँ आमार चोखा कानी या अेक घणी गूढ बात है क भाषा खाली भावा-नै प्रगट करणैवाळो जावा रा डेर ही नही है भाषा रै गैल लोगा री हजारो वरसा री सस्कृति वा रा आचार विचार इतिहास अर ग्यान विग्यान ब-या पडघा है इण वास्त भाषा र नास रो मनलब है इण सगळी धरोड रो नास वेद री विनती म इण सरवनास री ही बात कही है

जिण नै आप री सस्कृति आप रो इतिहास अर आप रा ग्यान विग्यान प्यारो होमी वो आप री वाणी-न आप र दूध पूत री ज्य पाळमी पोससी इण अरथ म वाणी पर लिछमा है जिण री पराया हाथा म जात्रण री अथना घर रै दुध-सू तिल तिल कर छीजण री कल्पना भी आपा नही कर मवा राजस्थान रा चारण कवि धरम धरती अर लुगाई पर विपद पन्ता वक्त मरण रो हेलो मारता हा—

धम जाता घर पळता त्रिया पडता ताव ।

अ तीनू दिन मरण रा, कुण रक कुण राग्न ।।

इमी ही वेळा वा गमभणी चाहीजँ जद घर लिछमी र बरोबर वाणी र मान रो हरण हुतो हुत्रै आप रै ही घर म उण रो निरस्वार हुतो हुत्रै जाज हुता मारणिया चारण कोनी राजस्थान रा वा नीदाळू मूरा न कुण जगात्रै

नागो—डालो । रळो—भटवा बर्वा हावा । आपार भाव—अपन त्रिअे, अपनी जोर स । बडवा—बकर । क्या—वँस । पूगण मारू—पटूचन व त्रिअे । ताँ—तक । आव—अक अक्षर । डेर—समू रागि । गन—पीछ । धरोर—धरोहर । घनिछमा—गूह वा लक्षमा । छीजणा—क्षय हाता । हुता मारणा—आवाज देना ।

धम इ०—अपन धम व जाते समय, अपनी पृथ्वी व पराधीन हात समय ओर श्चि पर बळ पडन पर—य तीनू दिन मरण व है बरा रक और क्या राजा सब व त्रिअे (उस दिन प्राण देना चारिअे) ।

जिन्का वाणी री लूटीजती लाज न बचाव कानी कानी-मू हजारा दुस्सासन अधनागी वाणी रो चीर आप रा हजारा हाथा-मू खीचण म लाग्या है पोटापोट चीर लिया अनेक साकरा मुख री नाट सूत्या पठ्या है

राजस्थान र इतिहास म राजस्थानी भाषा अर संस्कृति रै सकट रो इण मू बेगी वादो कोर्द बखत कन ही आया सुण्यो कोनी पराय राज म सकडा वरस रह र भी भाषा री हालत इतणी खराब कानी हुइ जितणी आज आपण खुद र राज मे हुवै है इण वास्त आज रो बखत नीद लवण रो कोनी ओ बखत जागण रो भाषा री सार मभाठ लेवण रो उण री मान मरजादा सारू सुगण दिखावण रा बखत है है काई माई रो लाल त्रिको सामन आवै अर राजस्थान रा दो करोड कमाऊ पूता री बिसरायोडी टुकडा भागती मातृभाषा न घर धिराणी र आसण पर पाछी बठाव ?

---

मारणिया—भारने वाले देन वान । नीलाळू मूर—निद्रालु वीर । लूगी जती—चूटी जाती हुई लुटती हुई । अधनागी—अधनगना । पोटापोट—ढेर-ढेर । सानरा—शृण्ण । सूत्या—साथ हुअे । बालो—सराब । आयो=प्राप्त हुआ । सारू—लिअ । घर धिराणा—घर की पालकिन ।

## गळगचिया

( गद्य-वाच्य )

[ कन्हैयालाल मडिया ]

[ श्री कन्हैयालाल मडिया का जन्म म १९७६ म मुजाणगढ (बीकानेर) म हुआ । ये प्रारम्भ मे ही गामाजिक राजनीतिक एव साहित्यिक प्रवृत्तिया म रस लेत रह है । हिन्दी और राजस्थानी म इन्गान समान अधिकार से लिखा है । ये राजस्थानी वाच्य को सहनार्द म नव जागरण का स्वर भरन वाले प्रथम पति के कवि हैं । इहाना राजस्थानी वाच्य को दानिकता का पुट देकर अधिक तरल और व्यापक बना दिया है । इनकी अनुभूति म गहराई और अभिव्यक्ति म सज्ज प्रेपणीयता है ।

हिन्दी कविताओ क इनके कई सफल प्रकाशित हुए हैं । रमणिय रा सोरठा और मीकर' इनके राजस्थानी वाच्य-सकलन हैं । गळगचिया नाम से राजस्थानी गद्य-वाच्य का सप्रह प्रकाशित हुआ है जिसम ६४ गद्य चित्र हैं ।

सकलित गद्य-वाच्य गळगचिया म संगहीत है । इनम लख न तान जीवन से विभिन्न उपादाना को चुनकर प्रकृति क विविध वाच्य-व्यापारों के आलोक म जीवन क कई चिरन्तन प्रश्नों और सदमों को अभिव्यक्ति दी है । ]

( १ )

ताव र कळस माटी र घडन कया—घडा ! धार म घाल्योडा पाणी ठडो किया रत्त अर म्हारै म घाल्योडो तातो किया हुज्यात ? घडा बोल्यो—  
मै पाणी न म्हार जीत म जग्या दू है अर तू आतर राव है आ ही कारण है

( २ )

मण-वत्ती कया—डारा ! मै धार-स्यु कतो मोह रावू ह ? साधी ही काळज म ठोड दीनी है ।

डोरो बोल्यो—म्हारी मरवण ! जणा ही तिल तिल बळू है ।

गळगाचिमा—पत्थर क छोटे छोटे टुकडे ।

१ कळस—कलमे न । कयो—बहा । घाल्योडा—डाला हुआ । किया—  
कस । तातो—गम तप्त । जग्या—जग स्थान । जातर—दूर अतर पर ।

२ मणवत्ती—मोमवत्ती । कतो—कितना । काळज—कलजे । मरवण  
—मारवणी प्रियतमे । जणा ही—जभी तभी । बळू हूँ—जलता हूँ ।

( ३ )

डूगर री चाटी परा चढ र कीडी नीच देख्यो तो हाथी बकरी जतोक अर ऊट सुसियँ जतोक ही लाग्या कीडी घणी राजी हूर बोली—अब को डरू ती वम न्यू हा वडाळ दाख हा

हाथी खाथी चाल र नीच आयी तो फन् हाथी डूगर जतोक अर ऊँट हाथी जतोक ही दोह्या घबडा र डूगर न पूछ्या—चनेक म ही ओ फरक पाछो किया पण्यो ?

डूगर मुळक र बाल्यो—पली आख्या धारी पण पग म्हारा हा अब आख्याँ अर पग लोयू धारा निज रा है

( ४ )

बदूक उठा र दाग दी वापडो पखेह तडफडा र नीच भा पडघो लोग कयो—किम्योक हुसियार ठाईदार है !

दूसर दिन घडी री चान बढ हूर ठाईदार मरग्या लाग कयो—भौत किसीक निदयी है !

( ५ )

मिनत कयो—उळभयोडी जेवडी ! में तनँ मुळभा र धारी कत्तो उपगार करू हू !

जेवडी बोली—तू कस्याक उपगारी है जको म्हार-न्यू धानू बोनी , काई जीर नँ उळभाण खातर मन मुळभातो हुसी

३ डूगर—महाड । परा—उपर । कीडी—चीटी । जतोक—जितना । सुमियो—वरगोन (गाक) । हूर—होकर । वम—बहम घम । वडाळ—बडे । दाख हा—लेखत थ । खाथी—तज । फरू—फिर । चनेक—धानी (देर) । पाछो—फिर । मुळक र—मुमनुराकर । पली—पहले । हा—थे । लोयू—दानो । निज रा—अपन ।

४ वापने—वचाग (वज्रभापा—वापुरो) । पखेह—पथी । ठाईदार—निगानवाज । घडी री चान—घडी की भाँति हृदय की गति ।

५ मिनत—मनुष्य । जेवडी—रस्सी । कत्तो—जितना । जका—बहु, यह । धान—धिपा हुआ । और-न—दूमरे रा । खातर—लिअ । हुमा—होगा ।

( ६ )

आगिये पूछघो—दिवला ! चारी उजळी जोत म स्यू ओ बाळा काळो का निवळें है ?

दिवरो बोल्या—भाई ! जा म्हार पापी मन रो पिसतावा है

आगिय क्या—जणा ही ससार आरया म घाल है क ?

( ७ )

जगत रो दाप देखता-देखता जाव जघायीजी ही कोनी अंक दिन अंक छाटा-माक रात्रडियो आंख न देखण-नै जांख म वडग्यो

आव रोम-स्यू लाल टुगी पण रावडियो क्या रा डर हा ? आवर म आव रोवण लागगी जद लार छोडी

( ८ )

बिरखा आयी छोटा छोटा नाळा र खाळा पाणी ल्या ल्या र तळाव नै भर दियो दूसर-ही दिन करडा तावडो निवळघो

नाळा-खाळा रा कठ मूखग्या । नाळा क्यो—तळाव ! म्हे काल पाणी ल्याया जक मे स्यू थोडा पाणी कठ आला करण वासतै म्हान पाछो दै

तळाव चिड र बाल्या—जा जा, छोट मूड वडी बात नही करणी वापडा नाळा तिसा मरता घूळ फाकणी सरू कर दी फेर बिरखा आयी पण नाळा रा ता कठ रुधग्या हा बी सूखण पडघोडै तळाव ताड पाणी कुण ल्यातो हो ?

( ९ )

पानडा क्यो—डाळा ! म्हे नहा हूता तो थे कत्ती अपरोगी लागती ?

६ आगियो—जुगनु ! दिवला—हे दीपक ! पिसताना—पद्यतावा ! आख्या मे घाल है—(दीपक के बाले काजल को) आखा मे डालता है ।

७ अघायीजा—तप हई । रात्रडियो—पत्थर का कण । वडग्यो—घुस गया पड गया । क्या रो इ०—किसका डरता था । आवर—जन म । लार छोडा—पीछा छोटा ।

८ बिरखा—वप । नाळा—नाले । खाळा—प्रवाह । करडा—तेज । तावडा—धूप । काल—कल । ल्याया—लाय । जक म स्यू—जिसम से उस म स । आला—गीत । पाछा—वापिस । मूड—मुह से । वडी—बडी । तिसा मरता—प्यास मरते । रुध ग्या हा—रूक गये थ । मूखण पडघोड—सूखन को पडे हुए सूखने को आये हुअे ।

९ पानडा—पसो ने । हूता—हात । अपरोगी—बुरूप । अडोळा—

फून कयो—गानडा । म्हे नही हूँता तो थे कत्ता अबोळा लागता ?  
 फळा कयो—फूना । म्हे नही हूँता ता थारो जलम ही अकारथ जाता ?  
 फून म छिप र वळ्यो बीज सगळा री वात मुण र वात्यो—भोळा । मैं  
 नही हूँता ता थ काई कोनी हूँता

( १० )

भूपडी रो आडा घोल्यो 'र बार ऊभी चानणी धिना पूछ्या ही चटकण  
 माय बडगी माच परा सूती आगण म पसरी अर कपडा ही कोनी खोलण  
 दिया क रू रू-स्यू लटमगा म कयो, चानणी । रात री वळ्या म, सून घर मे  
 पराय भाटयार कत नही रहणू जा उला जा चाद काइ समभसी ? पण  
 चानणी टस-स्यू मस का हुयी नी

अचाणचूको अँक वादळियो आयो अर चाद्र रो मूडो ढकीजग्यो साग ही  
 चानणी मपक जाती रही वादळिय पाँवडो आग भरयो र चाँन निकळग्यो  
 चानणी पाछी आगी

म पूछयो—चानणी फून गयी ही ? चानणी बोली—भोळिया । म तो चाँद  
 र साग ही रहू हू अब ही कानी समभयो के ? म तो मिनखा रो सत टटो  
 छनी फिर हू

( ११ )

हँसी बोनी—अँसूडा ? थारो रो काँ सुभात्र आवै जणा छान सीक ही  
 ढळकर जातो रथ ? म तो आऊ जणा काई ठा कताक काना-म फिर र  
 जाऊ हू ?

दो-या रो पाडोसी नाक आ वात मुण र होळ-सीक कयो—ऊच र नीच  
 बुळ रा-म अतो ही तो फरक है

सूने साभाहीन । अकारथ—ब्यथ । सगळा री—सब की । भोळा—हे भोला ।  
 कोनी हूँता—नहा हाते ।

१० आडो—द्वार । बार—बाहर । चानणा—चाँदनी । चटकण—तुरत ।  
 बडगी—घुम गयी । माच परा सूती—वाट पर मोयी । पसरी—फला । रू—  
 रोम । लटमगी—लिपट गयी । वेळ्या—बला । भोटयार—मद । रहणू—  
 रहना चाहिये । अचाणचूको—अचानक । ढकीजग्यो—ढक गया । साग—  
 साय । सपक—तुरत । जाती रही—नुप्त हो गयी । पातळा भरयो—पर  
 रखा । फून—किस आर, कहा । सत—आन सत्य ।

११ छान-सीक—गुपचुप । काई ठा—कया पता । होळ—धारे ।

( १२ )

आख र दो बटा अक रो नाव साच अर दूजै रो नाव सपनू साच री लुगाई दीठ, सपन री लुगाई नाद जेठाणी'र देराणी-म अणवणती दीठ अताळ ता नीद पताळ अक घराँ रँद्र तो दूजी पीरँ अक रा काम उघाडणू तो दूजी रो काम ढकणू दीठ अणूती अचपळी तो नीद सात्र ही पळगोड पण घणू अचूभो इ वात रो क सासू-नै दो-यू अक-सी प्यारी बहुता री वडाई करती-करती को थक नी कन्न—इमी सुपातर क पलका म घाली का रडकँ नी अक चानणी र तळात्र री माछ्ठी ता दूजी अधेर र समदर री सीप ओपमा थोडी, गुण घणा आँख रो मोटयार मन' सुणँ जद कन्न—छोरा री मा ! तू तो समदरसी है ।

---

१२ सपनू—सपना । लुगाई—पत्नी । दीठ—दृष्टि । अणवणती—अन बन । अताळ—अतल म । पताळ—पाताल म । घरा—घर म (ससुराल म) । पीर—पीहर म । अणूती—अनावश्यक बहुत । अचपळी—अत्यंत चंचल । नाव ही—बिलकुल ही । पळगोड—सुस्त । दो-यू—दोनो । सुपातर—सुपात्र सुलभणी । पलका-मे—आखा मे डाली भी नही खटकती । चानणो—प्रकाश । समदर—समुद्र । आपमा—उपमा । मोटयार—मन पति । छोरा री—बच्चो की । समदरसी—ममदाशिनी ।



## फरमिल

( रेखाचित्र )

[ श्रीलाल नथमल जोशी ]

[ श्री श्रीलाल नथमल जोशी का जन्म स० १९७८ में बीकानेर में हुआ ।  
ये राजस्थानी भाषा के उत्साही लेखक हैं ।

आभ पटकी इनका राजस्थानी भाषा में लिखा गया सामाजिक उपन्यास है । इसमें इन्होंने राजस्थानी विधवा को केन्द्रबिन्दु बनाकर समाज के दलित गलित अशक्त का मर्मोद्घाटन कर सामाजिक पतन पर गहरी विपण्ण दृष्टि डाली है । उपन्यास की भाषा सरल प्रभावपूर्ण और मुहावरदार है । 'घोरा रो घोरी' इनका दूसरा उपन्यास है जो राजस्थानी भाषा और साहित्य के लिए प्राणोत्सर्ग कर देने वाला इटालियन डा. तस्मिंतोरी के जीवन-वृत्त को आधार बनाकर लिखा गया है । सबडका में इनके रेखाचित्रों का संग्रह है ।

सकलित रेखाचित्र 'सबडका' से सलितत है । इसमें एक ऐसे गप्पीबाज की खबर ली गया है जिसकी बानों का भाव नित्यप्रति ऊँचा चढता जाता है और वह क्षण कभी नहीं आता जब वे पूरी हो । ]

( १ )

हूँ बी न मोकळा दिता सू ओळखता हूँ अर नात्र-ही सुण्वा हो फरमिल मन  
में विचार करधा क इसो उदबुदा नाव कदेई सुण्यो तो कोनी पण हुनिया घणी ही  
बडी है अर नात्र हा मोकळा है कई आदमी रो नाव राम अथवा किसन सुण-न  
कनेई अ भाव को उठचा नी क आ आदमी मरजादा परमोतम अथवा सोळ  
कळा रा जवतार है क नहीं पण काई ठा क्य इण रा नात्र सुण र म्हारी आ  
जणण रो मनस्या ह्यी क आ आदमो साच ई फरमिल यानी गप्पाबाज तो को  
है नीव

१ मोकळा—बहुत-म। ओळखतो हो—पहचानता था । उदबुदा—अद्भुत  
अजीब । बडी—बडी । काई ठा क्य—क्या पता कथो । मनस्या—इच्छा ।

अब दिन भाय-जोग सागो हुमग्यो माथला माय-सू अब-नै फरामल क्या—  
हू तन डाक्टर अचारज रै बगलै मे गुमास्तो रखाय दसू, टम घणी को हुव नी,  
खाली मिभया री मात सू रात री इग्यार बजा ताणी काम करणा हुसी पण  
भई ! देव, काम जी ताड नै करणो पडला महीना भी तो रुपिया सौ रो है  
कव किण-नै है सौ रुपिया ?

ओसर देख-न हू भी बालियो—इसी नौकरो जे म्हार हाथ लाग जात्रै तो  
याल हो जाऊ हू तो फरामल र डील बठ ही ? भट बोल्या ही—तन तो बाल-  
ही रखाय दू, तू ता टप करणो जाणै है, जिको सा ब तन कोडायो राखसी,  
पण हाफस रो तजरबा थारा घणी कोनी, इण वास्त तनै सौ नही तो पिचतर  
रुपिया तो पक्कामत दिराय देसू हूँ डाक्टर साब रो पी अ (निजू सहायक)  
हूँ म्हारा बात ब घोडी ही टाळसी ? काम तो रात नै अग्यार घटा ही करू,  
पण महीना दोय सौ बीस रा देवै है

'पी अ री बात सुण-नै साधला सगळा मुळक्या कै डाक्टर अचारज  
जिको अठ पी अम ओ-न छोड-नै सगळा सू बडो है उण रो पी अ इसा  
आदमी जिण रा बेस तो तूखा अर बिखरियोडा, दाडी बघियाडी अर मूड री  
भत्ता उडियाडा, अब जाब उतराद जात्र ता दूजोडी दिखणाद, बरसा मे  
तीसा-स उपर नही, पण खाधा भुक्रियाडा, खाधा ई ब्यू बभर ई मुडियोडी,  
मायो किडकाबरो अर पग आटा पड पडियोडो नवमी फल अर दिन रा  
जठ नौकरो कर बठ सू पचीस रुपिया महीनो लात्रै ! पा अ री बात जचो  
ता कई र ई कोनी पण सगळा जीवती माखी गिटग्या

साचई—सचमुच । को है नौक—(बही) नही है । भायजोग—दबयोग स । सागो  
—माय । माथला—साथ वान । क्या—कहा । गुमास्तो—मुनीम । सिझ्या—  
सध्या । टम इ०—अधिक दर तक काम नहीं करना हागा । इग्यार—ग्यारह  
(अेकादस) । महीनो—मासिक वेतन । कव किणन—किसे कहते हैं । याल—  
निहान । डील—देर । कोडायो राखसी—उत्साह के साथ प्रेमपूर्वक रखेंगे ।  
हाफम—आफिम दफ्तर । पिचतर—पचहत्तर । पक्कामत—पक्के रूप स  
निश्चित रूप स । मुळक्या—मुखकराय । अचारज—आचार्य ।

लूवा—रुले । दाडी—डाडी । भत्ता—भौह । उतराद—उत्तर (को) ।  
दूजोडी—दूसरे वाली—दूमरी । दिखणाद—दक्षिण (को) । खाधा—कधे । कुडि  
योनी—भुकी हुई । किडकाबरो—कई रंग का काला और सफेद । पग इ०—चलते  
समय पर टेढ़े पडते हैं । फल—फल नापास । कई र ई—किसी के । कोनी—

हू बोल्यो—तो मन साब र बगल काल मू रखाय देसो ?

फर्रामन—थार घरै साब री मोटर लय न आऊ हू आज तो हूँ अर तू बगला जाण जाव जद काल सू थारी सार्इकल भाथै आप ई आवो करिय

हू—भई ! म्हार सार्इकल तो है ई कोनी

फर्रा०—अर ! आद्यो सोच करियो ! थारो तीन महीना रो रुजगार तो हू तन म्हार बन-सू जागूच देसू अेव तो आलीस्यान सार्इकल ले लिय अर भई ! दख, थारी आ इस (गामा) ठीक कोनी हूँ रदिया देऊ जिका मे तीन सागोडा मूट करा लियै

हूँ—इत्ता कराया पछ फेर मन काई चाहीअ ?

( २ )

इत्ती बात हुया पछ बी दिन ता म्हे जाप-जाप र वाम गया दूसर तिन जद बो मिलियो तो में क्या—उस्ताद ! रात ता हू निरो अडीकियो पण थारा तो पता ई नही ?

फर्रा०—रात ता एसो अळूमिया काम धधे म क दो वजा सोवण-न वळा मिली

हू—तो जब आज आत्रणो माटर लेय न ?

फर्रा०—हूँ टैम को दे मकू नी आसू जद आप ई आ जामू

थोडा दिना पछ बो मिलियो तो भट बोल्यो ई—में थार नाब-सू साब-न अरजी देय नी तन हूँ म्हारो छोटी भाई समभ-न थार सातर इत्ती जान लडाक हूँ पण तन तीन तिन ताणी काम रा ट्रायन (जाच) करात्रणो पडसा

हू—जा तीन दिना रा पर्दसा तो मिलसी क ?

फर्रा०—ना ! ना ! आ तीन तिन री कूटी कोडी र को मिल नी

हूँ—काम री पारख कुण करमी ?

फर्रा०—पारख ! पारख हू करमू और कुण करमी ?

नही । जीवनी इ०—जीती मक्या निगलना जाभते हुआ भी भूठी बात का मान लना । काल—कल । गाब—साहब । जापई—जाप ही । आवो करिय—आते रहना । साब—चित्ता । रुजगार—वेतन । जागूच—जाऊ । आलीस्यान आलीशान शान्दार । सागोडा—बढिया । चाहाज—चान्त्रे ।

२ निरो—बहुत । अडीकिया—राह दखी । अळूमियो—उलभ गया । आत्रणा—आना होगा । पडसा—पसे वेतन । पारख—परीभा, जाच । कुण करसी—

हू—ता अठ म्हार दपतर म ईकर ल

फर्रा०—नही ! नही ! अठे नही साब र बगल-म हुसी

हू—पारख करती वळा म्हारो काई पख तो लेसी क नही ?

फर्रा०—पख लेऊ कोनी सागी बाप रो ई तू किसी चकारी म है । पण अबार जे तू पूछै तो हू तन दुनिया भर री वता सकू हू म्हारै-सू कोई विदधा छानी कोनी

घाढा दिना पछै फर्रांमल मिलियो तो बालियो—काम री पारख तीन दिन नही पनर दिना ताणी हुसी

सदेई सदेई फर्रांमल र सागी दळियो-सू जीव जमूभण लाग्या । इण वारण म बात आडी घाल न पूछिया—डाक्टर अचारज र-सू पली तू कठ काम करता हो ? उयळो मिलियो—छव वरसा ताई हू मबाई म टप री मनीनावा री कंपनी म वडो अपसर हा बठ आत्रडियो कोनी, जद इ भूख वीकानर-सू माथा लगान्ना पड है

हू—अठ है तो धार आराम ही ?

फर्रा०—आराम काई नन्न चूला री राख है ? ऊगिय-आथमिय री ता ठा ई को पड नी भाभरक पाच वजी आऊ दपतर जिक री रात री तीन तीन वज जाव अठ ई रोरी अर अठे ई बाटी !

हू—ता तू बगल री दिपटो कण बाल ?

फर्रा०—बगल री दिपटा कण काहू ? आर्द-ता धा र म धाप र कसर है हाल ताइ वहु वेटी रा लक्खण सीग्व सुण मम साब री हाजरी दिलोज्यान-सू भरू हूँ बम इत म ई समझ जा अर मम साब भी म्हार माथ रीभियोडी है

कौन करेगा । पख—पक्ष । सागी—सगा । किसी चकारी म है—कौनमी गिनती मे है । अबार—इम ममय । छानी—छिपा हुई । सदेई-सदेई—सदा मदा । सागी—उमी । दळियो—जलिया घातें बनाना । जीव—जी । अमूभणा=ऊबने लग गया दम घुटने लगा । आडी घालन—धीच म दूसरी बात डाल कर । पनी—पहन । उयळो—उत्तर । छव=छह । मबाई—बबई । आथडियो कोनी—मन नहीं नगा । नव इ —नौ चूल्हा की राख=कुछ भी नहीं । ऊगिय—सूरज क उगन और छिपने का ता पता ही नहा लगता । भाभर-क—बडे सबरे । जिक री—जिसकी । रोटी-बाटी—खाना-पीना ।

दिपटो इ० = डिपटी (डिपूटा) । कण काहू—कब निकालता है काम कब करता है । धाप र—अधाकर, भरपेट भरपूर कसर—कमी । जे कणई—

जे वण ई साव र बगल काम करण-न नहा जाऊ, तो दूनी जाप ई गटका सार त्त बात रगवाज जुगाई है अर देग मम-भाव री हाजरी तन भा जी ताड र भरणी पन्ना

हूँ—वार्ड ता मम-भाव रा हाजरी डाक्टर ई भरता हुमी ?

फर्राँ०—डाक्टर-न बापड-न मरण-न ई वेळा बानी बो की री हाजरी भर ?

फर्राँ० रो मून्ने अेक त्तिन उतरिघाणे हा म पूछिघा—आज काई हुया ? फर्राँ० गल फीम ग्यो म धीरज बघायी तो बालियो—म्हारी ता क ई—हडमानगट क सूरु—कोसीस कर-न बदळी करसाय दव तो यान कर

हूँ—बदळी हुया पछ तू डाक्टर साव र बगल री दिपटी वण बान्नी ?

फर्राँ०—बी रो मोच ई ना कर वारै महीना म जे अेक त्तिन अठ आयग्या ता सगळा कागद पण्ण पण्ण फक देसू दूज-म् इतो काम हुत बोनी दो वरसा म ई

( ३ )

अक त्तिन हूँ ता म्हारै दफतर म काम करता हो अर फर्राँ० माथा-खाथा सास उठियाडा आयो जाण कोम अेक री दौड लगायी हुत बालियो—ल भइ । हूँ तन बघाई नू

हूँ—काई बात गी ?

फर्राँ०—हैनफन मन जात्र बोनी बघाई मान लै म्पारी

हूँ—धारी अकल तो ठिकाण है क ?

फर्राँ०—हूत धारी ! जाघ र आग रोय-न नण गमावणा है देख हूँ तो जाऊ हूँ जोधपुर पी जेम आ रो पी अे वण र अठ म्हारी जागा त्तिरऊ

यत्ति कभी । दूनी—दुलही प्यार का गद । जापही—स्वय ही अपन आप । सटको सार त्तेव—बात बना त्तेनी है । रगवाज—रगीना । बापड-न—बचार को । वेळा—वक्त फुरमत । फीम ग्यो—भन चना बह चला = रोने लगा । क ई—कही । का—या । पण्ण पण्ण फँक दमू—फर फर फँक दूगा तुरत निपटा दूगा । बोनी—नही ।

३ खाधो—तेज । जाण—माना थाया । काई बात गी—किस बात की । हैनफन इ०—हरनरफनर मुक्के जाती नहीं । जागा—जगह नौकरी ।

हैं तन बान, कसा क रग देखाळिया ! कर मक है कोई होड म्हारी ?

हू—थारा ता नकसा ईज थारा है

फर्रां०—याथी वाता-सू हू राजी को हुवू नी चाल सामली दुकान अर तू पी जे हुयो जिक री वधाई में मिठाई खवा

हू—अरे भला माणस ! त मन हाल ताई कोई लिखियोडो हुकम तो देखाळियो ई कोनी, अर पैनी मीठो मागण लागम्यो ? साची बात तो आ है क मन तू कन्न जिक-म बाई गोळ लागै है

फर्रां०—जेक बात कय द मीठो खवासी क नही ?

हू—विना हुकम देणिया किया खवाऊ ?

फर्रां०—म्हारी बात री कोई सनद ई कोनी ?

हू—जच ज्यू समझ

फर्रां०—तो थारै खातर नौकरी धौकरी का है ना तू हकनाक मूढो धोवै है

इनो कर फर्रामन रीसाणो-सो क हुय नै टुरग्यो जा पाछै गिलै तो सनेई है पण बोलै कदेई कोनी मन पसतावो भी हुयो क जेक रुपट्टी री पात्र मिठावडी सट्टै जीवडा ! त पी जे री नौकरी हाथ सू गमाय दी पण जार कार्क हुव ? सीर-ससकार इमा ई हा

देखा ळिया—दिखाय । नकसा इ०—नकाश ही निराल हैं । सामली—सामने वाली । खवा—खिला । गाळ—गडबड । कय द—कय दे । सनद—सबूत प्रमाण । जच ज्या—जस तेरे जच वम । खातर—खातिर दिअे । नौकरी धौकरी—नौकरी-नौकरी । हकनाक—अनाहक व्यय । मूढो धोव है—मुह धोना है पाने को तयार होना है । रीमाणा माक—रिमाया हुआ मा । टुरग्यो—चल गिया । जा पछ—उमक बाद । पसतावो—पढ़तावा । रुपट्टी—रुपल्ली रुपया । मिठावडी इ०—मिठाई के बदल । जीवटा—मरे जी । त-तूने । री पसकार—भाग्य विधि-लख ।

## गाव-रा मास्टरजी

( कहानी )

[ बजनाथ पवार ]

[ श्री बजनाथ पवार का जन्म स० १९८१ में रतननगर (चूरू) में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा सरकारी स्कूल में अध्यापक रहकर बाद में सहकारी विभाग में चले गए। इस समय वे औद्योगिक सहकारी-समितियाँ निरीक्षक हैं। ]

हिन्दी एवं राजस्थानी के ये अच्छे कवि कहानीकार और गद्यलेखक हैं। इनकी रचनाओं में राजस्थान के ग्राम्य जीवन का सुंदर चित्रण हुआ है।

संकलित कहानी 'जाज' की शिक्षण-व्यवस्था पर लिखी गयी एक भाषिक कहानी है। इसमें देश के भाग्य विधाता शिक्षक की गंवावा उसके परिवार की दुर्भाग्य और गाव के स्त्रियों की दुर्व्यवस्था का जो चित्र खींचा गया है वह मन में विक्षोभ और कर्षणा के भाव जगाने वाला है।

यह कहानी राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित 'राजस्थानी कहानी संग्रह' में संकलित की गयी है। ]

(१)

भूरी जब नाक ताई घापगी रामू-नी अकर भळ बुचकारघो बाध लगाया समभाया—लाडी ! आज दूध बायनी दिनगी पी लेयी अब सबकर खा ल घी खा ल ल ग्याड रो चूरमा कर दू पण तीन वरस रा रामू ग्याणो नी भोळा कूकतो-कूकतो को धम्या नी दूध पीऊता हू ता दूध पीऊता—ककतो-ककतो ठणकण लाग्या छेकड भूरी आखती हो र दा घाप लगाया—न ! पी ल दूध ! और पी दूध ! दूध पीऊणलाडो डोळ हुता तो कई भागी र जनमलो षण टापर मे भाग र क्यू आत्रतो ? करम कमेडी रो जर मन राजा रा !

१ घापगा—अघा गयी तग जा गयी। अकर—अकेवार। भळ—फिर। बुचकारघो—बुचकारा। लाडी—लाडले। बायनी—नहा (है)। दिनग इ०—सवेर पी तना। ग्याणो इ०—न मयाना और न भो ता। कूकतो—राता हुआ। धम्यो—बद हुआ। ककता—कहता हुआ। ठणकण—टुनकन। छेकड—आखिर। आखती हो र—खूब तग जाकर। घाप—घण्ट। डोळ हुतो—डग हाना मुह हाना। कई इ०—किसा भाग्यनाला (सपन) के (घर) जन्म लता।

थाप लागता ही रामू अरडायो रामजस, उण रो बाप सुणता-ही बारै-सू  
भाग र आयो काई हुयो, रामू कीकर रायो ? क'र रामू-न गादी-स लगाया  
रामू री बुसबुसिया फाट रोवतो-कूकता बोल्या—मा मारघो

कीकर मारघो ? —रामू गरज्यो

भूरी को बोली न चाली माच सू उतर र तळ वसगी अर धरती कुचर  
लागी रामजस रामू न भुनावत भुलावतै भूरी-नै बूझ्यो—रामू कीकर रोया ?

भूरी भळै का बोली नी

हू बूभू हू, थार मूडै-मे जीभ कोयनी ? रामू काकर रायो ?

आप रै जामणिया नै रोव है—रीसा मे आ र भूरी बोली—मैं थानै बीस  
वार क दियो कै इण नौकरी न चूचाडी लगावा जगा जगा पूर गुदडिया ढोवती-  
ढोवती हू तो आखता हुगी तीन टिना सू सार गाव म बूभू धापी, दूध को मिलै  
नी काइ मोल दव न मीत घाल जसू धरमो अर गीतकी तीनु दूध-दूध करता  
सोयग्या रामू दूध विना रोटी रा टूक-ही को ताड नी तीन दिना म सूख र खेलरो  
हुग्यो अब इण-न कीकर समभाऊ ? इण तीनु टावरा-न देखो—अेक खाट पर  
पड्या है रामू न थ सुधा लसा भळै मेर खातर कायनी

रामजस व आसो हो र देख्यो—अेक टूटेड भोळ म उण री रंगी अर दा  
छोटा बटा नीदा म ऊपरथळी पड्या है दावण माय कर पग नीच लटक है,  
पीठ जमी र अड रयी है भळ आप री राटली कानी जोयो—मूज री खाट  
ठीड ठोड-सू दटेडी जेवडी भाडी रा ऊला मला सेरू ईस खाट काइ हाथ रो  
ऊतर हो रामू बुसक्या लेवतो लेवतो नीद-मे सूयग्यो सपनै म बरडायो—

टापरो—उपरी भोपटी । कमेडी—पडुख चिडिया । जग्डाया—चिल्लाया ।  
भाग र—दौडकर । बुसबुसिया फाटै—हिचकियो के साथ राना ।

तळ—नीचे । बूझ्यो—पूछा । जामणिया—जम देने वान । चूचाडी इ०  
—आग लगाओ । पूर—पटे-पुराने कपडे । मीत—मेंत बिना मोल । घाल—  
ढालता है दना है । खलरा—फूट-कवडी की मूखी फाक । सुत्रा तेसो—(माथ)  
सुला लेंग । खातर—लिअे । रआमो—रोना सा । टूटेडै—टूट हुअे । भाळ म—  
भाली (जमी खाट) म । ऊपरथळी—अेक दूमरे क ऊपर । दावण—अदवान ।  
पण—पर । अड रयी है—लग रही है । जमा—जमीन । भाडी रा इ०—  
वेर का भाडी की उलटी सीधी लकडिया की बना हुई ईमें । खाट काइ इ०—  
खाट क्या थी । हाथ रा ऊतर—न होन क बरावर । बुसक्या—हिचकिया के  
साथ रोना ।



माऊ ? दूध रामजग बाधे चिपायो थपडघा की जपग्या तो ग्या पर मुत्रा निया, अर आप भी गाढा मऊ-म घान र पढग्यो भूरी तीनु टाबरा न मिराण बानी सिरवा र भेडी ह र पगात्या पडगी

रामजस जात रा बामण वीग वरमा-नू मास्टरी कर दा-ब्यार वरसा म कठई ठाठियो जमात्रे इत म बढळो रो हुवम आ पूग वीग वरमा म कोई पनरा गात्रा रा रूख दग निया पनी-पला अेकला हुँतो जद ता दारो-मारो धिवा लत्रतो पण अब लुगाई टाबर -- भाकळा अरगो हुम्पो जात्र जठ मऊ-म ता मवान को मिन नी मवान मिल ज्वाय तोई दा रोटी र सार सान चीज चात्र पर गिरस्ती रो मामना माडा दूधळो आप रा टाबरा न पाळ हा पण अबक बढळो होण-सू ता भात दुप पायो आखो सामान दोत्रता-ओत्रता तीन दिन लाग्ता कई चीजा मूधी-मस्ती वेची कई गाथ ला दूध देत्रती गाथ जकी डाड सौ मे भोल सीनी ही बढळो हुण मूखडावडी आध मान वेची वटाऊ रो भाल लुगाऊ — घास-भूळा लकडी-बळीतो कई चीजा सीत मे ही दीनी अठ आया भळ सारी चीजा री दरवार हुई और तो सर दोरी मोरी धिवात्र पण दूध री जावक अडगी सार टाबरा न दूध पीत्रण री बाण अठ सारा भूखा सात्र रामू ता दूध विना भोत फीको दूध पीसै मिल न मीत मा-बाप रा जी धणो-ही दोरो पण हाथ तोड क पग ?

मूयग्या—सा गया । माऊ—अम्मा । चिपायो—चिपवाया लगाया । थपडघा—थपथपाया । जपग्यो—शात हो गया । की—कुछ । गोडा—घुत्न । पडग्या—पड रहा । सिराण—सरहान की आर । मिरका र—सरका कर । भेडी इ०—गिबुडकर । पगात्या—पतान म ।

मास्टरी—अध्यापनी । कठई—कही । ठाठिया जमात्रे—व्यवस्था जमाता । इत म—इतने म । बढळी—तवात्रता । पनरा—पद्रह । रूख—पड । पनी पली—पहन पहन । दोरा-सारो—सुख स दुख स किमो प्रकार । धिवा लेंत्रता—काम चला लता । मोकळा—खासा । तोई—तो भी । दो रोटी र नारै—पेट भरन क निअे निर्वाह करने के लिअे । मात—कई-अक । चात्र—चाहिअे । माडो इ०—दुखी दुबल । अबक—इस बार । आवा—सारा । जकी-जा । खडावडी—जल्दी म । लुगाऊ—लूटने क लिअे । बळीता—इधन । सीत—मुफ्त । भळ—फिर । जावक—बिलकुल । अडगा—कनि ममस्या हो गयी । बाण—दान जात्र । फीका—निम्नत्व उदाम । पीस—पम से । दोरो—दुखी । हाथ इ०—अपने हाथ ताड या पत्र—क्या करें ।

( २ )

रामू नै छाती लगाया रामजस ग्याटली म पडधा पडधा आप री जिदगानी री पायी रा लारला पाना उथळ नीद जावणी ओखा हुगी नीद भी मूडा देख देव टीका काढ भागी लोगान विना लोरी नीद जाव अ ता दुरभागिया री राता है जकी पसवाडा फेरता फेरता कटना जोखी हु ज्याय रामजस नीद रा भोत नोरा काढधा वाकी नीद तो दूर, जाख्या सळ ही को पडनी

ढळती रात चवदस रो चानणा आखो गात्र नाद मे चूच हो ग्या गत्री मे क कदास कुत्ता भुस वीच वीच-म रामू री दुसक्या सुणाज इत्त म भूरी पसवाडो फेर र बोनी—नीद आयगी काई ?

ना ! नीद बोनी जा- तू जब ताई जाग है ? हु जाणै हो तू सायगी हुमी नीद को जान नी

सो ज्या तू घणी फिकर मत कर नूवा गाव है, जण-सधा लोग है दस पाच दिना म सारा काम जच ज्यासी मवान मिल ज्यामी खाट-लकडी रो वदावस्त भी हु ज्यासी टाबरा खातर दूध भी मिल ज्यासी

'टाबरा-न भूखा सुवा'र माइतान-न कीकर नीद आव ? तीन दिन हुया मेरो तो काळजा भवभव बळ है इसी नौकरी-सू तो माग'र खाणो चोखो बाळ सानो जको कान तोड पचास पानडी-सू काई हुव ? पेट लिवाडी ही को चाल नी फिरता फिरता हैरान वत्ती हुणो पड टाबरा मे कित्ता फोडा पडै ?

तू गनी वाता कीकर कर ? नौकरी छोड र काई भूख मरणो है ? चनी हाडा र ठाकर मारणी चोयी बोनी जुग देख र जीवणा है जाख मास्तरा रो ओ हा हाल है'

२ जिदगानी—जिदगी । लारला इ०—पिछले पान उलटता है । ओखी—कठिन । मूडा—मुह । लोरी—सुलाने वा गीत । विना लोरी—विना प्रयत्न अपन आप । पसवाडा—पार्श्व करवट बदलते । नारा इ०—मनुहारें वा । जाख्या—आखा म सल ही नहीं पडता आखें व' ही नहीं होती । नीद म चूच—महरी नीद म झुवा नीद म बलवर । कदे-कदाग—कभी-कभी । भुस—भोक्त है । जाण हा—जानता था । नूवा—नया । अणमधा—अपरिचित । जच ज्यासी—जम जायगा । माईत—मा-बाप (मातृ-पितृ) । बाळ—जला दा । पानडी—रुपल्ली । पट लिवाडी इ०—पट हा नहीं भरता । वत्ता—विनाप और । फोडा पड—तकलीफें होनी हैं । गनी—बावली । चनी हाडी—चून्हे पर चढी हुइ हेंडिया प्राप्त वस्तु या जीविका-साधन । आव—सारे । जुग

‘आसा रा हाल चोखो पण में सू तो टावरा न रीराशता को देखा जाय नी  
 अक तिन री तो घान कोनी इण नौवरी म तो य-ही पूर नाग्घा फिरणो पडनी’  
 तो तू वता अब नौवरी छाड र काई करस्या ?’

‘काई करस्या ? जोर गारी दुनिया काई कर है ? पचाम-माठ रुपिया आज  
 र टम म राडी वूची कमात्र है भळ घा जिसी गुलामी कोनी भुगत अफमरा री  
 गरज कोनी कर, जगा-जगा भटकणो कोनी पड थ काई करघा पड र ? मूगरो  
 अणप है पण रेलवाई म ६५) महीनो लग है धनिया टीडी अफसर रो  
 चपडासी है पण ६०) लव है सुरजो गिडदात्रर पाचवी किलास ताई भण्योडो है  
 पण १२०) लव है अर थ चउद वरस टापरो घोघो कर र अ मित्तर पानडा  
 ल्यायो हो तो काई ज जरार करो हा ? काई पडघो है इमी मास्टरो मे ? इण सू  
 तो रैनवाई चपडासी हुता तो चोग्यो जको रेल भाडो तो वचात्रता

वात्रळी ! मेरो अर चपडासी री अक ही वात है काई ?

में अक कद वताऊ हू ? में ता कनू है क चपडासी या सू घणो कमात्र है अर  
 घणो सुखी है

रामजस रीसा मे आ र बोल्यो—हव ! ठीक है तू अब सो ज्या

रामजस आप री लुगाई-न तो क सुण र सुवाण दी पण जाप न नाग् आत्रणी  
 जोखी हुगी भूरी माची ही कव है रीम आव तो काई ? मन मिल काई है ?  
 उण रो ध्यान लारन वीस वरसा कानी गयो जद वो घण वाड अर चात्र सू  
 मास्टर वण्यो हो पली पली कित्त चात्र सू टावरा-न पडात्रती ! कित्त हरण सू  
 गात्र सुधार रो काम करता ! वा भी अक जमानो हो जद वो गाथा खात्र तिन  
 रात भाग्या फिरता विदघा सू इलाक न जगमगा दियो आजादी र बोडा-मे  
 अपणै-आप न मिटा दियो पण इत्त वरसा ताई ईमानदारी सू काम करता वका  
 भी जग् उण री कोई तरककी नहा हुयो तो निराश हुग्यो जग् ब देख्या क जावक

इ०—समय देवकर जीना है । चान्को—ठीक । रीराशता—रिरियाते । राडी  
 वूची—राड जिसक काई नही (वूची—नाकान रहित) । भुगत—भोगती है ।  
 अणपड—अपण । रैनवाई—रेल विभाग । गिडदात्रर—गिर्दात्रर । किलास—  
 कक्षा । टापरा २०—घर को बर्बात् कर । पानडा—पत्ते कागज क नोट ।  
 जका—जा जिसम । वचात्रता—वचाते । हर—हा ।

सुवाण दी—सुना दी । कानी—ओर । बोड चात्र—हृप और  
 उमग । जात्रक—बिल्कुल अक्षम । टिकण द नही—टिकन नहीं

कामचार अर हरामखोरा री अफसर तरक्की करै है—रिश्वत ल र चोखा चोखी जागा बदळी कर है तो हिम्मत हारग्यो उण रो कोई कसूर नहीं ता भी अक जगा त्रिकण द नहा रमणवाळा दड नै जिण सग्ह ठोकर मार उणी तरह रामजस अफमरा रो दडो वणग्या उण-न अफमरा-सू नफरत हुगी और पक्को विश्वास हुग्यो कै इण नौकरी म कदर्द तार करै नी

मोचता-सोचता रामजस री आरया लागी तन गाव रै कुत्रे पर माळी वारियो बालै हा

( ३ )

रामजस दा महीना ताई माकळी चढटा करी पण रवण न मकान को मिल्यो नी वा ही पलीवाळो कोठा जिण म विरखा हुध जद पाणी पड अर गरमा वारी उण र ना आग जागणो जोर ना ऊपर छात रेत मे बठ र भूरी राटी पोव अर घर रा जाखा टावर जीम रामजस टैम होण स इस्कूल चल्या जाव अर छुट्टी हुत्र जद आ ज्याव स्कूल म बठण न ना कुरसी ना मूडो पाणी रो कोई प्रबध कोनी गने स्कूल छोटा छोटा कमरा जिण म पाच सात मास्टर सौ डोड सौ टीगरान रोड्या राख भूखा मास्टर दिन भर दुख पात्रता अफसरा अर गाववाळान धूळिया देव गाव रा कई मास्टर सू रू जोडै नी

दूबळ-नै दो 'साढ अक दिन रामजस घडो ल र कुत्रे चाल्या पैली भूरी पाणी लावता पण कई दिना-सू पेट मे दरद होणै-सू वा जाण को सकी नी मारग म लुगाया उण-न देख'र आपसरी म वतळायी—मास्टर हो'र पाणी लावै । सुण र रामजस २ तातै तेल रा-सा छाटा लागा आग कूध पर भिनख वतळाया कै मास्टरा

ने । रमणवाळा—खिलाडी । दडन—गेंद को । तार कर नी—ऊपर नहीं उठगा । माळी—माली पानी निकालने वाले । वारियो—पानी निकालते समय दी जान वाली आवाज । जद २०—तब रात का तीमरा पहर बीत चुका था ।

३ माकळी—बहुत, खामी । कोठो—बिना जागन की कोठरी । टम—(स्कूल का) समय । टीगर—छाट बच्चे । रोड्या राख—बधियो की तरह रोके रखत हैं । धूळिया देव—मीछे धूल उडाले हैं गालिया देते हैं । गाव रा—गाव के लाग । रू जाड—मन करते हैं । दूबळ न ३०—छिद्रवन्तर्या बहुली भवति । दूबळा—अकाल के कारण भोजन न मिलने से दुबला । साढ—अमाढ (वर्षा म और विलव) । जाण को सकी ना—जा नहीं सकी । लुगाया ३०—स्त्रिया न आपम म बात की । तातो गम तप्त । छाटा—छीट । वतळाया—बात की । बोलोवालो—बुपचाप ।



अधपाकी फलसेयडी राटी जीम जठ आ र भूरी भोकळी दुख पायी गाव म छाछ मागी को मिल नी साग-सवजी री वात ही क्यू ब्रभो ! सहर-सू अळघो होण र कारण हरेक चीज भोत मूर्घी मिल ऊपर री कमाई रा घेलो नही सहर म प्राइवेट टघूनना रा मोवळा पीमा हा ज्यात्र पण सहरा म तो जफसरा रा खास-खास आदमी ही रहणै मक् बाकी रा ता बापडा खाडा म जूण पूरी कर

रामजम भी इस्कूल म घणा आखतो जाठ जाठ घटा इस्टूल पर बठघो बठघो आखतो हु ज्याय कुरसी राज देव कानी जा मास्टरी है क सजा ? की समझ मे आवै नी

टीगरा रा ही कोई अडे कोनी, कोई राक-टोक कोनी पली अर दूजी किनासा-म तो चाय किता ही भर्ती हुवो—बाई कानून-कायदो नही दो दा च्यार-च्यार किलासा साग पढाणी पड और किता विषय ! इत्ती माथापच्ची, आ तणसा,अर बठण-नै जो इस्टूल ! रामजस-न इण सारी चीजा-सू घणी नफरत हुगी

अंकर इस्कूल म अफसर रो दौरो हुवा इस्कूल-न अठीन बठीन दखी खोट कसर काणी, मास्टरा-न दस पाच छोटी-भ्वरी सुगायी अर मोटर म जा बठघा रामजम भाग र आग ऊभो हुयो—हजूर ! आप-सू पाच मिनट वात करणी चाऊ जफसर गरज'र धायो—हू जेक मिनट भी वात नही कर इत्त-म कोई नतोजी आयग्या कइ वात पर अफसर सू ताण-तकर हुगी नताजी घटा अफसर र माजन रा टक्का भाडिया

( ४ )

रामजम र पाडोम म कई छारी रो व्यात्र हो जान आयो उण दिन माड ब्राळा पडोस र भूरी जीरा न जीमण-न बुलाया मास्टरजी जावक नटग्या पण टावर जण ठणकण लाग्या तो भूरी उणा-न जिभावण न लेयगी यात्रब्राळा र घर माकळी सुगाया भेळी ह्याची ही कइ वृश्यो—बाई ! आ अणसधी लुगाई

—अधजली (?) । जीम—खाना है । रहण सक—रह सकते है । खोडा भ—जगना म । जूण पूरी कर—जिन्गी पूरी करत है, दिन काटते है ।

आखता—तग दुखी । इस्टूल—स्टूल । टीगर—बच्चे । अडे—हिसाब । चाय—बाह । माग—जेक साथ । खाट कसर—चुटि कमी । नेतोजी—नताजी । ताण-तकर—बालबाल । घटा—घटा (तक) । माजनै रा टक्का भाडिया—इज्जत विगाडा फटकारा बुरा भला कहा ।

४ छारी—नडकी । व्यात्र—विवाह । जान—बरात । माडब्राळा—बधू पक्ष क लोग (स मडप) । औरा न—बगैरह को । नटग्या—मुक्कर गय,

कुण है ! कीनणी री मा कयो—आ तो आपर्ण मास्टरणी है कई तुगाया सार्ण ही बोली—वीरा ! आ क मास्टरणी का गणा न पाती या टाका देयोडी पुराणा साडी, मास्टरा र तो मुफ्त री कमाद जात है

सुण र भूरी नाड नीचा कर ली इत्त-म गीतकी अर नदू धार-सू कूकता आया बूझ्या—लाटी ! काकर राया ? गीतवी रोवती रावनी बोनी—मा ! हू आ फाटेनी घघरी कोनी परू मनै सारी छोरया चिगात्र भूरी उण-न बुचकार र कया—तन जोर नूई घघरी करा देस्या इत्त-म नदूभी ठणक लाग्या—मा ! हू भी नूई कमच परस्यू सारा छोरा कव क आ तो गरीब मास्टर री छोरो है

सुण र भूरी-सू बठघो को गयो नी उठ र खापी खापी घर जा र माचलिया म मू माया ले र पन्गी टावर रोवता कूकता लार आया मान सुकया भरती देख र डरता ररता कनै बठग्या

छुट्टी द र रामजस जद घर पूग्यो तो घर री हाल देख र मतग्ये बनरो हुग्यो खाटली कानी निजर गयी तो काळजो धकधक कर लागो भाग र भूरी री नाड पकडी माथ पर हाथ मैल्यो मन म टरन-डरन बूझ्यो—काई हुया ? जी सोरो तो है ?

भूरी सामो देख्या बोल्या का गया नी सिर गोत्रा म द दिया रामजस रो पेर पूछण री हियाव को पडचो नी ठानी ऊपर-न उठार देख्यो तो टळक-टळक आसूडा ढळक जपमान जोर असतोप री जाग सू जळ र हिवड ग सारा भाव आख्या र मारग हो र गाना पर ढळग्या भूरी कातर दृष्टि-सू पक्षी आप कानी अर भळ टाबरा कानी दग्या

जक आखर कया बिना ही रामजस सौ ममभग्यो आप्या रा भाव आग्या म ही पड निया देख्यो क कर्ष टाबरा न कमीज कोना तो कर्ष र जत्या कोनी तो

इनकार कर गय । ठणकण—टुनकने । भळो—अरन । अणसघो—अप रिचित । वीरा—बहन । क—क्या कसी । पाता—पत्ती । टाका देयाणी—टाका दी हुई । नाट—गदन । कूकता—रोने हुअे । चिगात्र—चिन्ताती है । बुचकार र—बुचकार कर । नूई—नयी । कमच—कमीज । पठघो इ०—बग नही रहा गया । खापी खापी—जल्दी-जल्दी । माचलिया—खाट खटाती । मू माया लर—अपना-मा मुह लकर । मल्यो—गवा । सोरो—प्रस न स्वस्थ । सामी—सामने । गोत्रा—घुटन । पर—फिर दुबारा । हियाव—साहस ।

बार् टोपी त्वातर उणमणा है भूरी रँ दो पुराणी माप्ती छाड र तीजी रो नात्र  
कोनी अर आप रँ किसी पौमाका ? अक पजामा अर अक कमाज जिणा-न  
छुट्टी र त्तिन धा र सुवा-न, पगा-म टायरा री चप्पन ! टायरा रा जो हाल !  
लिछमा-सी लुगाई रो ओ डाळ ! इत दिना म वारिया विग्नरग्या !

दम र भाग विधातात्रा री जा दुःशा ! गात्र-म अपमान राज म अपमान  
जात विरादरी म अपमान ! बापटा मास्टर !

( ५ )

मित्तव री जिदगानी म कइ घडी पळ इसा भात्र जका उण-न ऊचा उठा  
देव अर कई घडी-पळ इसा भात्र जका उण-नै पीदै बठा दध आज भूरी रा  
आसू अर उण र मन र दुय रामजम-नै नयो प्रकाण दिया वो हडबडा र उठघा  
आख्या फाट-अर हाय पमार-अर बाल्यो—भूरी ! उठ आज बीस वरसा री  
गुलामी माथ आ ठोकर है बीस वरसा री कगाली उठ, बीटो बाघ  
अर टायरा-न त्यार कर इण गुलामी-न आज-मू ही नमस्कार है !

भूरा अचरज म आ'र सिर ऊचो कर र देख्या इत म रामजस आधो सामान  
बाघ तियो भूरी उठ र वाली—इमी काई बात है ? दिनग चल्या चालसा

त्तिन ऊगसी आपण गात्र-म—रामजस बीटो बाघतो-बाघतो बाल्या—तू  
वरतण भाडा वारी म घाल हू दो ऊटिया लाऊ हू तू ताका-तोल मत कर  
मर मूड कानी काई देखै है ?

आ क र रामजम हिरण हुग्या

भूरी बाधाबूधी करती करती सोच—अब काई हुसी ? इणा-म इत्ता जोस  
अर हिम्मत कठा-सू आयगी ? टायर सारा विडरेडा-मा भूरी न चीज-वस्त

डळक—गिर रहे है । पैली—पहल । भळ—फिर । क्या बिना—कहे बिना ।  
उणमणा—अनमना, उदाम । टायर—मोटर के टायर । डाळ—डग, दशा ।  
बाग्या विखरग्या—सेहत विगड गयी स्वास्थ्य बर्बाद हो गया ।

भाग विधातात्रारी—माग्य निर्माताआ की—शिक्षका की ।

५ पीट—पेंदे म विठा त्त हैं । बीटो—विस्तर । दिनग—सवर । ऊगसी—  
उगगा । घाल—डाल रख । ताका तोळी—ताकभाव करना । मूड कानी—  
मुह का आर । हिरण हुग्या—हिरन की तरह तजी से भागा । विडरेडा—  
डर हुजे । भलात्र हा—पकडा रहे थे । पीळती—पीला । भकाया—बिठाये ।



भनाव हा नदू धीम स बोल्यो—मा ! अब आपा अठ कोनी रत्ना काई ?

‘ना बेटा ! आपण मात्र चालस्या’

गात्र रो नाव सुणता-ही नदू नाच उठयो—हा मा ! जठ जापणी पीळती गाय है मा मैं अठ कदई नहा जाऊला अठ दूध-ही कोनी मा !

इत्त म रामजस दो ऊट लार भकाया मारो टाडो लाद-लूद अर गाव-सू निकळया जद मास्टरा जीर गात्रवाळा न ठा पडयो लार भाग र आया अर हेलो मारयो—मास्टरजी ! इसी काई बात हुगी ? का कयो नी सुण्यो नी ! मास्टर बोल्या—नौकरी छाडणी आछी कोनी चणी हाडी र ठोकर मारणी चोखी कोनी, भळ पळतावाना

पळतावो इण बात रो है क मैं अब ताई नौकरी छोपी कोनी, सारी जत्रानी इण गुलामी म हाम दी—कवत कवत रामजस ऊटा रो मूरी खीच लीनी

टाडो—सामान । ठा पडयो—पता लगा । हेलो वरयो—आवाज नी । कयो

इ०—कहा न मुता । मूरी—नकेच । मूरी खीच ली—चल पडा ।

कुण जीत्यो ?  
( अक्वाकी )  
[ पूरणमल गोयनका ]

[ श्री पूरणमल गोयनका चूरु के निवासी हैं । आपने स० २००१ म आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी म एम ए किया और अपना पत्रक व्यवसाय व्यापार करन लग ।

मकलित एकाकी डूगर कालेज की मुखपत्रिका म प्रकाशित हुआ था । इम व्यंग एकाकी म दो घूत सठा की कथा है जो एक दूसरे की धोखा देने का प्रयत्न करत हैं । दोना ही धोखा देन म सफल हाने है पर साथ ही स्वय भी जवल्सत धोखा खात हैं । ]

(१)

[ मेठ धनराजजा-का बठक—मठ सचलालजी मसडा क बीच म बठघा है मेठा-क बाय नाक सोहनलाल और रतनलाल बठघा है जक नाक पचितजी बटठ-की जिया बठघा है ]

सचलाल—हा तो भाया माहनलाल ! छोरी न सूल देख लेयी पछ म्हांन दाम को है ना हा पडितजी ! म्ह इवार-की गाडी-स हा चल्या जावाला कुण जाण जट रण म सारो वभ्यो-वणायो खल विगड ज्यात वाणियो है व्याव-म हळदात-वानो हाया पछ दुकाव-की टम मालम पटसा आप की लाज आप ही का थालसी ना जर भाई सोहन ! थोडा ज्यादा बळ ज्यासी दो वसी मर काम्या क परवा है ? तेरो घर तो बध ज्यासी—अ ऊमर क माय पडितजी भी जीवता रक जाण पिछाण वसा जादमिया स काम देव पडितजी ! सारो खल थारे पर-ही है

---

१ मसड—मसनद । नाक—विनारे तफ । सूत—अच्छी तरह । लेयी—लेना । इवार—अभी । हळदात-वानो—वधू के हलदी बढाने का विधान । दुकाव—धरात या वर का वधू के घर पहुंचना । टम—वक्त (टाइम) । पटसी—पडेगा । लाज—लाज के कारण । आप ही—स्वय ही । थोडा ज्यादा इ०—थोडे रूपये अधिक गच नो जायेंगे । दो वसी—दो रूपय अधिक

पत्तिजी—गटा ! दुनिया-ना अया-हा काम धान है पण गगन-न ना भूज जायो

मचनान—वाह पत्तिजी ! याह पत्थी ना जण तो पार धान गान गो की बही था आठ गो गही

पट्टिजी—याण मा ! याण दुनिया म गठ हण ता म्मा ! भरो कर भगवान धारो ! आठ जोर छन चणन

मचनान—(वमा मा) हैं हैं ! क कर गरघा ? क अटगा है ?

पट्टिजी—चत्रण चत्रण-सा साशो उघण्णो है ता चत्रण-का !

सोहन०—पण भाई रतन ! अर दारमणर तर उपर है

रतन०—वाह चाचोजा ! अर माय चुन ज्याउ ता मरा नात्र रतनिया नही इत्ता वरम धूड-भ को राया ना गलरी सात मन नाटक खणन-म जेक तरमो मिल्पा हा मरा भी ता लाडू जात्र है पण कावोजी ! अर वार म्मान वसमीर-की सात जरर वगणा पडगी

सोहन०—रे वटा ! बीस वार करिय

( २ )

[ इत म माय-स सठ धनराज आय है ]

धनराज—ज गोपाळजी-की सा ! ज गोपाळजी-की !

मचलाल—ज गोपाळजी-की ! ज गोपाळजी-की ! आसो विराजो

धनराज—सा ! माफ परमायी म वार न गयोडो थो धान अनीकणो पडधो

मचलाल—वाह सा ! याह वात्रळी वाता कर तागा इमी क ताव ?

सरकावगे थोरे रुपय और दग । अया—अस । छत्र—छ हजार वधू पथ शे मिलेंग । चत्रदा—चौन्ह (हजार) । कर गरघो—कर डाना । अडगा—वखडा । चत्रण—चौंस चतुदशी । माया—नग्न विवाह-मुहूर्त । उघडघा—खना निकना ।

गजनी मान—पिछने थप । तकमो—तगमा पदक । म्हारा भी ता लाडू इ०—भरे भी तो लड्डू जा रहे हैं (विवाह हागा तो म भी लड्डू ग्याउगा नही हागा तो मुझे भी लड्डू खान को नहा मिलेंग) । सत—सैर । करिय—करना । विराजो—विराजिय बन्धिय । परमायी—परमाध्यग । वारन—वाहर । अडीकणो—प्रताशा करना । कर लागा—करने लगे ।

घर की बात है ता थारा पडितजी थान सारी बात ममभा दा होगी क्यू पडितजी !

पडितजी—हा न । मैं मेठ साव न सारी वाता मून समभा दा घर का ही काम है सचलालजी न भी म्हारी पुगणी जाण पिछाण है और सठ तो म्पारा जजमान है ही

सचलाल—हा हा ! ठीक है ठीक है ! वनराजजी ! मी क्य वाता विचार लेयो—घर, वर जलम भर का सीर है पाणी पीय छाणकर, माख करिय खाणकर हा ! तो काइ जची थार ? (रतनलाल कानी इसारा कर है) हा तो वेटा रतन ! तेरो इस्कून कद खुलमी ?

धनराज—कुण-सी किलास मे पडो हा ?

रतन०—मैं अ साल दसवी किलास पास हो जास्यू

वनराज—आपणै, आप क क भाई भण है ?

रतन०—टा भाई अेक भैण

धनराज—थार स छोटा है क बडा ?

रतन०—सगळा स बडो मैं ही हू

सचलाल—हा तो धनराजजा ! बाई न नही इसी तो बाई वात कोनी पण तोभी

धनराज—व मैं काई आट है ? सगाइ होया पली छोरी-न बीस जणा दख हा ! रतनचदनी ! लुगाया ज़िद कर है क ककरजी न दखस्या जी लुभ है सचलाल—हा हा ! जा बटा ! जाइया

[ धनराज रतनलाल-न भाग लर माय चल्या जाव है ]

( २ )

सचलाल—नयू सोहन ! देख, क्याल को बुद्धू बणामो वाणिय-न ? क्य होयी ना मेरी जीन ? दुवाव की टम मानम पटसा जद देखी जासी देख नम्या नुगाया पनाया न व्याव होया पछ मानम पत्सो पछी कुण मा फेग उघड है ? वाणिय का मू

साव—साहब । घर रा—घर का अपना । सेठ—सठ धनराज । सी क्यू—सब कुछ ( = सारी ) । लयो—लीजियगा । मार—सबध । पाय—पाजिय । साख—सबध सगार्द । कानी—नफ । भण—रहन । आट—आपत्ति । होया पत्सा—हाने क पूव । जणा—जन आत्मा । लुभ ह—ननचाता है । जाइया—(भीतर) जा जा हा आ । राग—सग । क्यान-का—किस प्रकार का पसा । होयी—हुई । फेरा—भायरे । उघटणे—खुलना, वापिस हाना ।

थनी-भ सीम दधागा

[ धनराज-क साग अंक छोरी माय-न म् आज है, तर बरस-की सी हाथ म इझायची मुपागी-का छत्री आ र छत्री सचलाल-क सामन छो र बठ ज्याव है ]

धनराज—स्या जरोगा

[ नीनू बय-क्यू उठा लव है ]

सचलाल—बाई तो पढेडी मी लाग है क्यू बाई ! कुण-मी किलास म पढ है ?

[ वा कय सरमाकर भळी भेळी मी हुव है ]

धनराज—है है है मातत्री किलास म पढ है जापण तो घर-को सारो काम-काज आ-ही कर टाको टेवा रसोई पाणी ज-की मान तो आप क आडा टेडा म ही औसाण का बाव ग

सचलाल—म्हारें भा ब की मनस्या पडी तिली-की धो (छोरी उठ र चली जाव है) सान क माय मुगध होगी जो घर अ जादमी अर पछ इसा टावर कठ राग्या है ?

धनराज—हा ! तो

सचलाल—क्यू भाया साहनलाल !

( सोहनलाल क्यू बकन मो हा र सरमा ज्याव है )

सोहनलाल—ये प्रथा में क कह ? थ भगळा र भल-की टी करस्यो

धनराज—पण आज-काल म्हारा हाथ क्यू अर पछ जाज-काल-की टम

सचलाल—बाह साहजी ! बाह नाम-ही धनराजजी पछ धान क्या-की कमा ? हाथी मरघा भी लाख का पछ धागी काना तो धार-म हा है भली कही ! आम-वास म चुग्या को पावा भी धार जिसा अर पछ साहजी ! म्हे तो धेज लण-ण क मखत खिनाप हा म्हे तो टावर देखा अर पछ मुष्य म धगणो

धली म—रपया स । सीम दधागा—सी दग फिरवानगा गही । छत्री—तसनरी ।

गरागो—खाइये नीजिय । क्यू-क्यू—कुछ कुछ थोला थोडा । पढनी—पडी हुई पनीतिली ! भेळी भेळी मी—मिमदता हु सी । टाको टेवा—मीना पिरोना । औमाण—जत (अवसान) । औमाण को बावनी—अवकाश नहीं मिलना । म्हार वें की—मरे यहा उमकी (मरी घरवाली की) । होगी—हो गयी । ज आजमी २०—ज घर वाते और फिर जसा वालक (यहा=क्या) । हाथ क्यू ३०—हाथ कुछ तग है । चुग्या—चुगने पर दूतन पर । धेज—धेज । गिलाप—विरद । मुल म—मुख्य रूप म ।

देखा हा तो पछ म्हारो रात-की गाडी-म ही जाण को विचार है

धनराज—हा-हा ! म्हार कानी र ता कोई डील कोनी पण पडितजी !  
इव म्हरत क्याल को है ?

पडितजी—है-है ! म्हरत-की थ क्यू फिर करो म्हारो नाव पन्ति  
बुधराम है अयाल-क काम मे तो बुद्धू हुव जका आट लगाव सौ क्यू ठीक है  
गुभस्य शीघ्रम इसो लगन आपण लोग वास्त ओजू नही आवण को

धनराज—ता पछ वात पक्ती होयी करा ? रे सुखला ! माय न-म थाळ  
ल्यायी अर कवरजी-न भी बुला ल्यायी

सचलाल—पण थान याव करण-न बठ-ही आवणो पडगो लुगाया पताया  
का टटा होवगो नहा काई जक वामणी अर अेक स्याणी लाग-साळ-की अर  
ना लण दण-को टटा होण देवागा

धनराज—म्हार तो आप क जचगी जिया हो-गी सरदारा-का हुकम रवगो

( ४ )

[ इत्त म सुखलो अेक थाळ ले'र आव है साग रतनच'द भी है रतनच'द  
आ र बठ है धनराज रतनच'द क तिलक कर है अर थाळ-म स रफिया कपडो  
ले र सचलाल-न देव है ]

सचलाल—म्हे कपडा-लत्तो क्यू भी कानी लेवागा

धनराज—लुगाया-को जी कोनी मानगा पण थारी मरजी

सचलाल—आच्छघा तो आज्ञा हुव ! साधो म्हे उघडा लियो है क्यू पडित  
जी ! कद-को ठरयो है ?

पडितजी—है है ! जागली चवदस-को पूरा चवदा दिन बाकी है

धनराज—पण साहजी ! इत्ती वेगी त्यारी को होगी ना काई दूज-वर-को  
ब्याव थोडीई है

[ स-का स खट्या हा जान है धनराज बठई खुस खुस खड्यो र जाव है

कानी—ओर । डील—देरी । इव द०—अब मुहत कव का है । अयान-कै  
—इम प्रकार के अस । आट लगाव—बाधा उत्पन्न करते हैं । सौ क्यू—मव  
कुछ । ओजू—फिर । करा—करें । बठ ही—वही । स्याणी—समभदार ।  
लाग-साळ की—मवघ वाली रिश्ते की । आच्छघा—अच्छा । उघडा लियो—  
निकलवा लिया । साधो—लग्न का दिन । ठरयो—ठहरा निश्चय  
हुआ । दूज वर—दूसरी बार वर बनने वाला । थोडी ई—थोड़े ही ।

जाती वरिया सचलाल वा क बानी दया स दंड है जानो जातो पडित धनराज  
बानी दखकर हाम है ]

सचलाल—(धमक कर) हैं हैं । आ क वात कहो हो ? थान क्या-की  
भी फिर वरण की जरूरत कोनी सो क्यूं टीका हो ज्यावगो आच्छघा तो ज  
यापाळजी की ।

धनराज—आच्छघा ता ठसण पर हाजर हाऊगो

सचलाल—नही नहो ! तक्तीप करण-की कोई जरूरत कोनी

( ५ )

[ एक मिट पछ धनराज जोर सू बोल है ]

धनराज—अ पूलरी की मा ! मार लिया मुडगन-न ! ल आपणी जीत  
होयी ना ! तन कहधो हो ना मेरो नाक भी धमू है धमू !

[ अदर-स अक अनाज आव है ]

(अदर-स)—रे सुलना ! ऊपर जा र चौबारी खोल न जा लिया व-न  
सो-क्यूं ठीक हाग्यो

धनराज—(बठन बटता) र ! ठीक न राग है ! इसो भाग ना कोई-को होयो  
ना होव आ छोरो अर इतो पासो ! कुण देव हो तेर वावळ भाट-न ? कोई  
व्याव-ही को बरतो ना वेटी जणवली लाज राख ली राम कर ज न बै-स  
ही चोखा वर मिलियो !

[ मायन-स अक चीपनी अनाज आव है ]

(मायन सँ)—रे ओ प्रापू ! अ मा ! मन-क्यूं डक दी ? हू हू हू हू मैं  
तो चाणी-की गुडडी लेस्यू असी नस्यू मन आजू डकी तां सारो घर बाळ दचूगी  
(दूसरी बोली)—र वाजळा भाटा ! तेरी सगाई करी है ! आज बळग्यो

राम मारध को भाग ! जाता ही बाळही राम मारया-को घर ! वळ वळा ज्यासी  
जक क तू जासी

[ धनराज खम खुस धूमतो र ज्याग्र है ]

[ पडवो गिर है ]

धमककर—चौककर (कथा कि सोनलाल का यह दूसरा विवाहहागा) । ठसण—संगन ।

वरिया—बला । मिट—मिनट । मुडदा—मुँ । लिया—ले आ । पानी—  
पसा धन । वावळा भाटा—वावला पत्थर (पूहड लडकी की आग सक्त) ।

अणवला—दूसरी लडका का नाम जिसको दिखाया गया था । डक दा—बद कर  
दी । आजू—फिर । राम मारयो—रामका मारा (माली) । बाळही—जला दगी ।

## भीमजी ठाकर

( कहानी )

[ नमिह राजपुराहित ]

[ श्री नमिह राजपुराहित का जन्म स० १६८१ जाधपुर राज्य के खाडप नामक गांव में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गुस्कुल तीगी और वाडगेर में हुई। इस समय में खाडप में अध्यापक हैं।

बचपन से ही माहित्य की ओर इनका विषय रुचि रही।

पैतृक व्यवसाय कृषि होने में राजस्थान का माती में इनका विषय स्नेह रहा है। इनके गानधामा कलम री मार अमर चूनडा आदि राजस्थानी कहानियाँ के समूह प्रकाशित हुए हैं। इन्होंने मामती युग की कठोर वास्तविकताओं और वर्तमान सामाजिक सदमों का अपनी कथाओं का विषय बनाया है। राजस्थानी जन-जीवन को ये बड़ी मार्मिकता और कलात्मकता के साथ अंकित कर पाये हैं। ये प्रगतिशील दृष्टिकोण के यथाववादी कलाकार हैं।

सकलित कहानी रातवामा से ली गयी है। इसमें भीमजी ठाकर के चरित्र के माध्यम से कहानीकार ने परम्परागत राजपूती जान-बान और टक की रक्षा का चित्र कर्त्तव्य मार्मिकता के साथ अंकित किया है। वीरता कृष्णा और प्रेम भावना से आननात यह कहानी राजस्थानी लोकसंस्कृति का सुंदर दर्पण है। असा घटनाओं राजस्थान में बराबर घटती रही है कभी कही ता कभी कही। ]

( १ )

बमाल रा महीना अर आधाक रात रा टम दिन भर जाग में तपियाडा बाजू रेत चदरमा रा मरती चादणा में ठडी टीप हैगी हा दिक्कण निमा सू ऊनाडू पन्न ई धीर धीर सरू हैग्या हा इसी टम में मारग बवता बटाऊना-न धरती मुरग जिसा नाग री ही बठ ता वा दिन में तवा जिसी तपियाडी धरती र बडबळता सू अर बठ जा ठडी ठनी मध्यमल जिमी नरम नरम रेत अर धीमो मधरो पून। इसा बळ्ळा में मारग बवता न ई हूम आत्र

१ आधीक—आधी-जेक लगभग आधी। टैम—वक्त। इमरती—अमृतमय। चादणा—प्रकाश। ठडी-टीप—बहुत ठडी। ऊनाडू—उष्णकाल की। हैगी हा—हो गयी थी। बवता—बहते हुए चलते हुए। बटाऊना—पथिक। मधरी—मद। पून—पवन। हूस—हौंस लालसा, इच्छा। वाठा—रुठ।



काठा बमर राधेन चावना ईज जात्रा पण थावना नजीव इ ना पण इण  
 कारण इज ता बूडा बडरा कहा है क मियाळा म राग गायन अर ऊनाळा  
 म ध्याऊ करन गात्रतगे वरणा चाहाज

समस्या मू दा ऊ ध्याऊ कर न जात्रार वास्तै रत्नै हुता समददा-सू  
 जात्रार माळ वाम पड, एण वास्त ध्याऊ करनै तुरत पिनाण कर चिया हा  
 जिण-सू दिनुगा पती पता ठाड-ठाड जात्रार पूग्या जा सक ऊठ भामजी भाटी  
 रा हा अर भाण पर आयाडा हा

( २ )

भाटी भीमजी इण चोपळा रा जाणीता आमी हा पल्ला गाली  
 हात्रता थका ई घर गन्नाडीनाळा खानखानी रजपूत हो इण वास्त घर घणा  
 होत्रता थका ई ताम उणन ठाकर र नाग-सू वतळावता क्यूक भूय तिरस  
 ता भाई-वन है माटी चीज ना आवरु है अर जिण जिना रो जा विस्ता है  
 उण जिना पोमा री इक्षरी इज्जत नही ही मान्या पोमा सू घणा मूधो गिणीजता  
 उण वखत ताई मिनवपणा रा साप काळ ना पडधो हो इण वास्त काम पण्या  
 मिनव मिनव र काम जावतो लागार मन म हा निहाज अर आख्या म ही  
 सरम मिनव पोमाने कमावतो जरूर हा पण उण र वास्त गलो व्हियाडा नही हो  
 उण वखत रजपूत रो घटो आप री टेक निभात्रण न माया दत्रणन त्यार  
 रत्रतो

ओ इज कारण हा क भीमजी रा गात्र अर चोपळा भव डी कीमत ही  
 वाकी तो भामजी र खन हो ई वाई ? टूटा भूपधो बडरा र हाय री दस-वीस  
 बीघा जमीन अर बाप री कमाई रा दो ऊठिया वस ! इण र अनाज्ञा

चावता इ०—चलन हा जाय । धाकेलो—धकावट । सियाळा—शीतकाल ।  
 गात्रतरो—प्रवास यात्रा (ग्रामांतर) । समदडो—अक शहर का नाम ।  
 पिनाण—पलान जेन । दिनुगा—सूर्योत्थ । ठाड-ठाड—ठडे ठडे ।

२ चागळा—चारो आर क पडोमा गावा का समूह । जाणीता—विरयात,  
 प्रसिद्ध । पल्लो खानी इ०—धनी न हान पर भा । घर गन्नाडी—घर-द्वार ।  
 गन्नाडा—घर । घर घणी—माघारण घर का मानिक हान पर भी । वतळावता  
 —बुलात । तिरम—प्यास । भूस तिरस इ०—य तो साथ लगे ही रहत हैं ।  
 त्तगे—दत्तनी । मानखो—मनुष्यता । मघा—महगा । गिणीजता—गिना  
 जाता था । ताई—तक । काळ—अकाल अभाव । काम पड या—जावश्यकता  
 हा पर । सरम—शम लाज । गलो इ०—पागल हुआ हुआ ।

कान्ध ऊंची किया काळजो दीखतो पण भीमजी र बडेरा री कमाणी हूजी तर री ही व रोटी रा राव अर तरवार र, धणीहा पीनिया लग उणा र घर आयोडो महमान भूम्बो को गया नी जिमी भी जव जवार री घर में ऊकळी महमान र आग हाजर कीवी अर राली माचा रो पग्बध ई कियो आ इज कारण हो के भीमजी र घर-तव कई कडावा न ढाक दिया हा इण र अलावा उणा माको पड्या तरवार-ही बजायी ही इण कारण फटियो फाटाडो ताई जात री इदी हावण री वजै सू गराव हालत म इ भीमजी ठाकर रा समाज-म बडा मान हा

( ३ )

मटिया जाटाळा पातियो काटा छाप लट्टा रा घातियो अर जाळोर री टुकडी री जगरखी ठाकर री वार माम री पासाक ही राापूती हाड अर लावा निसरणी पर अ कपडा फावता जरूर हा पण ठाकर रा चहरा बडो कडोपा हा खरो रग चक्क रा दाग स्टालिन-टाइप उळभियोडी मूछा अर आदत र अनुसार डावी आख हरदम घाडी मिचियोडी रक्षती मूडा म चौका रा दा दात पडियोडा हावण-सू ठाकर हा हो कर न हसता जर मूडा जाडा हाथ राखतो ठाकर री लटपट चाल सू नाग उणा न जाघा-मू ईज ओळख

वाख इ०—पाम बुद्ध नही वा । कमाणा—कमाई । राटी रा राव—राटी क राजा, उदारता स अतिथि सत्कार करने वाल । धणी—धनी । लग—तव । जव—जो । ऊकळी—उबली पकी । राली माचा—गुदडी और खाट । तवै—तव ने । कडावा न—बडाहा का । फेंटिया—तहमा । इदी—ददा पडिहार राजपूता की जेक गावा है निमकी कभी बहुत प्रतिष्ठा थी । वजै—वजह ।

३ मटिया—मटमला । जाटाळा—जाटो वाला पचा वाला । पातिया—साफा पग्ध । काटाछाप—नट्टे का जेक प्रकार । टुकची—थेक कपडा विशप । वार—धारहो । हाड—हडिया गरीर । निसरणा—नमना क । फावता—फवते गोभा देत । कडापो—भयकर कठार । खरा—पक्का । स्टालिन—रूम का प्रतिद्ध तानागाह । डात्रा-चायी । मूडा—मुह । चौका—सामन के चार दात । पडियोडा—गिर दुध्रे । जाडा—सामन । आघासू ईज—दूरस ही । आळ्य लेंत्रता—पहचान नाते

सैवता अर मिनता ईज वगता—ज माताजी री ठाकरा । अर अतरो मुणता ईज आदतन ठाकर रा अक हाथ चट मूछा माथ जाय पूगता अर ज माथ जोर देयन ठाकर नाथी न-सू बालतो—ज SS SS माताजी री कीकर ? तुमा ? इण रै पद्य वाता जानगी करता अर ठाकर आप री उज्जभियाडी मूछा-न उमठबा करता बीच बीच म गाल बात पर ठाकर री तबिया-बलाभ ममझ्या क नी चालतो रततो ममझ्या क नी भाई सात्र । आ बात य हुई ममझ्या क नी भाई माथ । वा बात य हुई अर आ ममझ्या क नी दरापनी रा थीर र ग्यु वधतो ईज जाततो छेष्ट आगतो ईज हार गाय र ठाकरा सू भास माता—वा ठाकरा ! अक सीव करू ! ठाकर चमक र बोलतो—तो ममझ्या क नी जातो भाई !

( ४ )

ठाकर रा गुजारा पामकर ऊठा-पर चानतो समझी मोने गात्र हो अर उण दिना रन-मातरटिया ही कौयता एण वास्त भाटा भत्ता री कमी नहीं ही यू गात्र मे ऊठ इ भाकळा हा पण ठाकर री पूछ विमस ही इण रा कई कारण हा जिण म सब-म पलो कारण हो ठाकर रा तिरलोभी सुभात्र ठाकर आप री उमर म कर्दई भाडो पना त नहीं किया वसाह राजी होय न दीना जिकाड न लियो जे भूल म अवा जाण करता किण ई नहीं लियो तो-ई माग्यो नहा ठाकर रा नीती हा क यात्र जाया द उण रा भलो अर उही द उण रा ई भरो इण सुभाव-सू ठाकर घणो नुकमाण म रवता दूजा ऊठावाळा ठाकर री मजाका उटावता पण ठाकर आन्त-मू लाचार हा अक वार भाडा रो हूकारा भरिया पद्य वो म रा त्रिगली-न ई ठाकर मार देवतो जवान दय-न नट जाणो ठाकर र वस री बात नहीं हा

कवता—कहत । आदतन—स्वभाव वग । कीकर—कमे । चालवो करता—चनती गती । ममझ्या क नी—समझ या नयी । दरोपदी—दोपनी । वधता—वन्ता । छेष्ट—अत में । सीव करू—विदा लू । चमक र—चौककर ।

४ ऊठा पर—ऊटो स । मोटरगिया—मोटर (ऊनवाचक रूप) । भाकळा—बहुत । विमस—अधिक । पला—पहल । यमात्र—बठने वाना ऊठ भात्र करने वाला । जिना ई—जो ही—वही । जाण करता—जान वृक्ष कर । नीती—नीति । हूकारो म०—स्वीकार किये वात्र । हेम री त्रिगली—मोने का डेर । नट जाणो—इनकार कर देना । मौ—भागी । ननी—छाटा । अठी उठी—

भनावा इण र सब-मू मोटी वात ही ठावर मे गिरमळ चाल चलण उण र वास्त माटी सी मा जर नरी मौ वन ही इण वास्तं लुगाया र अठी उठी जावणा वृक्षतो ता भीमजी रा ऊठ भाड किया बाद घर रा आदमी री माथे चालण री कोई जरल नहा ही सोना म पीळी पट्ट अर लडा-लूव हुयोनी सठाणिया निसग भीमजी र साथ जावती-जावती ठावर रो साथ हुया बाद मारी दुनिया वा र साथ ही ऊठा पर गटर-पटर वाता चालवो करती अर लार ठावर ऊठ री पूछ पकडिया ध्यान म मगन चालवो करतो सतरनाक ऊमर री लुगाया कई वार ठावर री मौजूदगी-न भूल जावती अर लौकिक मरजादा-नै ई तोड नाखती वारण के ठावर ता या री निजरा म साळगराम रा-साळगराम अर गोफणिया रो-गोफणिया हो ताम पण ठावर बुरो नही मानता मन में ईज वक्रता—समझ्या क नी टाबर है हाल टाबर अक्कल नही है इणा में, बिल्कुल जक्कल नही है

( ५ )

उण दिना मारग म चोर-सुटेरा रो वडो उत्पात हो घवळ दिन घाडा पडता अर हुजारा री सपदा खासीज जावती नदी रा घागा म उजाड काकड म जर डूगरा री छाया मे चोरा रा अडडा हा दिसावरु अर आडा मारगा पर वा री खास निजर रवती मारग वक्रता भिनख-नै लूट-न मार नाखणो वा र डावा हाथ रो खेल हा पाचन्न-सातव दिन खबर आय जावती क आज तो

यहा वहा । सोना म पीळी पट्ट—सोने के गहनासे अकेदम पाली बनी हुई खूब सोने क गहने पहने हुई । लडालूव हुयोडा—भरी हुई लदी हुई (सोने के गहना म) । गटरपटर—इधर उधर की । चालवो करती—चलती रहता । सतरनाक उम्र री—नवयुवती । लुगाया—स्त्रिया । साळगराम रा-साळगराम इ०—आदरणीय भी और उपेक्षणीय भी । ताम पण—ता भा । टाबर—बालक, नासमझ । मनम ईज—मन मे ही मन हा मन ।

५ घवळ दिन—मर्षद न्ति म, दिन के प्रकाश म । घाडा—डाक । खासीज जाता—छिन जाती लुट जाती । घागा—नदी के पानी क कटाव तथा बह के कारण किनारो के नीचे की जर स्थान स्थान पर पडन वाले बड़े गडडे । । काकड—सीमा । डगर—पहाड ।

दिसावरु—दूसरे गावो को जाने वाले यात्रा मे पडन वाले । आडा—(?) । रवता—रहती । वक्रता—चलते हुये । डावा—बाये । भावरी—पहाडी ।

गूगळा री कावड म तीन ऊठ लूटोज्या तो जात्र बरी री भावरी वन दो आदमी मारिया गया

इसी कुटेम म भीमजी रा ऊठ भाड करया रो मतलब सुरक्षा रो रिजर्व दान करावणा हा नजीक चोखळा रा तमाम चोर-लुटरा भीमजी ठावर-न जाण हा शान्त आ वात जाधी तर-नू मालम ही व एण अडियन आदमी र ऊठा री मूरिया इण रो माथो पडिया र पद्य र्ज हाथ म जात्रला माथो लक्ष्णो आ सोण मूघो हो इण वास्त म ठावर र लार घुड ईज वाळता

बई वार डूगरा री छाया म आडा मारगा-पर रात रा टेम जत्राज आत्रतो कुण है रे ऊठगळो ?

पडूतर म ई ट रो जबाब पत्थर-सू मिळता—था रो बाप भीमा भाटी चट पाद्यो अग्रान आत्रती—घूड था र लार धू नही मरिया भीमना !

ऊठा-पर बठिया भेटा री पाघडिया विखरण लागती अर भेंरा लत्रती सठाणिया रा काळजा अचाणचक ऊचा चट जात्रता म गोदी म सूत्योडा टावरिया-न कसर छाती रे चिपाय लेत्रती अर घाटी म मोरिया कुरळाय ऊठता—मे s s s जो ! मे s s जा ! जाण भीमजी ठावर री ज बालता व्हे—म s s s ओ ! मे s s s जा ! जे s s s हो ! ज s s s हो !

सो-पचाम पात्रडा जाग निवळिया वाड ठावर बालता—डरज मन अे बाई ! अ हिडकिया कुत्ता है तो म्हु ई भाटी भीमा हू पाड-न घाय जाऊ साळान समभिया व नी ! जबाब-मे ऊठा-पर बठियोडा रा पगत काळजा घटवता—घडव घटक घडव !

वन-निवट । कुटेम-बुरा समय । रिजर्वेशन—आरक्षण । मूरिया-मोरिया नवेल । माथा-सिर (मस्तक मत्थज) । मूघो-महंगा (महाघ महग्घ) । लार-पात्र । घूड—रेत । वाळता—छोटत उडाते । घूड वाळता—नाम नहा लेते । पडूतर—जबाब (प्रत्युत्तर) । चट—तुरत । तू नही मरिया—तू मर नही गया । पाघडिया—पगडिया । भरा लत्रती—ऊ घती । काळजा—बलेजे । अचाणचक—अेकाअेक । ऊचा इ०—जी दलहना, डर लगना । भूतियाडा—सोये हुअ । कसर—कसर, टप्ता से । जाण—माना । पात्रडा—पर कर्म । डरजे—डरना । बाई—बहन । हिडकिया—हिडके हुजे पागल । म्हु—हू म । पगत—फसल, वेवल ।

( ६ )

ठाकर सगू सू दो ऊठ राखतो जायो अेक मोटो लहू ऊठ अर दूजाडो वनळो पागळ मोटोडा पर वसारू बठाय़ा जावता अर पागळ पर ठाकर खुद चढतो पागळ रवतो ई इण वास्त हो पण वसारू छोटो-मोटा तीन है जात्रता जर ठाकर-नै लहू रो पूछ पकड न ढाण चालणा पडतो, धर मजला धर कूचा ! धर मजला, धर कूचा !

आज ई छोटो-मोटा पाच वसारू हैग्या हा सेठ घेवरचन, सेठानी भमकू ननियो बाबूडो वीनणी अर गीगलो सठा र सासरा म व्याव हो इण वास्त सेठ परिवार सहित जाळोर जाय रह्या हा भीमजी पर सठा री विशेष किरपा ही इण वास्त सठजी भीमजी रा बधियोडा गिरायक हा सेठ न ठाकर र जलावा कोई दूजा ऊठ माथै गावतरा कियोडो याद नहीं हो, अठा तक क सठ आप रा खुद रा माथ म ई टाकर साथ उण रा ऊठ पर इज बठिया हा नै जरूरत पडती जर ठाकर रै धर समाचार कराय देवता अर ठाकर टम पर जाधी रात रा ई—ममस्या क नी—हाजर सठा-सू ठाकर री घनिष्ठता रा अेक वाग्ण औं हो वो ओ क सेठा रा सामरो अर ठाकर रो नानाणो अेक ईज गाव म हो भमकू अर भीमजी टावरपणा मे घणा साथ रमिया हा सठाणी न टावरपण म खेलियोटा छिपना चोरी, आगळी पागळी अर तूबा-तरू आदि खेल आछी तर-सू याद हा इण वास्त परणिया वाद ही भमकू ठाकर नै भीमजी भाई कय-न वतळावती अर ठाकर ई उण न बाइ कवता ठाकर र ससार म कोई सगी वन ना ही, इण कारण उण री ई सेठानी र प्रति वडी ममता ही

सेठानी डील री सतान अर दिल री दरियाव ही ना जाळोर रा प्रसिद्ध मुहता परिवार री डीकरी अर समदडी रा प्रसिद्ध सेठ परिवार री वीनणी ही

---

६ लहू—सामान ढोने वाला । वनळो पागळ—आरामदायक सवारी का ऊठ । वसारू—बठनेवान । ढाण—तेज चाल से । धर मजला इ०—क्रम क्रम स सीमा लाघते हुए । नयो—छूटका । बधियोडा—बध हुअे स्थायी । गिरायक—ग्राहक । माथ—ऊपर । सासरा—ममुराल । नानाणो—ननिहाल । भमकू—सेठानी का नाम । रमिया—खेल । टावरपण—बचपन । परणिया वाद ही—विवाह हुअे वाद भी । वतलावती—पुकारती बुलाती । वाई—बहन के निअ प्यार का गान । कवती—कहता था । नी—नहीं । डान—गरीर । दरियाव—मागर उदार ।

मुहता मारवाड रा मुनही हा ता सठ लिछमी रा लाइला मुहता जाळोर रा गढ री रक्षा म गढपनिया माथ कर्ष बार तरवारा बजायी ही ता सेठा री लिछमी रँ बार भे इ कइ दत्तकथावा तुनिया री जबान पर ही

( ७ )

तीज रो चदरमा उग्यो अर ऊठा सूणी नदी नाधी उणी वखत डात्री तरफ नदी री डा पर आयोडा गोगा खेजडा पर बठियोडी भरवी बाली—क ५ ५ क क ५ ५ क, चरर चरर चरर । रात रा पला पोर म वरण इसी नी बोली कै जाणै भाटा म करवत चाली है सठजी मोरी खाचर आगला ऊठ न रोक लियो अर ठरता ईज दोयू ऊठ पाछला पग चौडा कर न चाटण लाग्या ठाकर लहू री पूछ छोड र अक कानी आयग्यो उण रेत-सू भरियाडा पगरखा भाटकर पाछा पर लिया थाडी धर तक काई अक शब्द ई नही बोत्यो मिरफ ऊठ चीडता रह्या—तरर-तरर-तरर ! अर काचरी बालती रही—चरर-चरर । क ५ ५ क क ५ ५ क, चरर चरर चरर ।

छेन्नट ठाकर मून तोडिया अर बोलियो—मन चगा तो कठोती मे गगा, खडो सेठा । भूग-न अर भूरा न खडता ईज श्रो जागला पग-सू आम्बडग्यो ठाकर बोलियो—चेत भाई । चेत मूरा । चेत ।

सूडाळा दुख भजणा सणाज बाळो वस

सारा पला सुमरिय गवगी-पुत्र गुणेम ।

अर भूरै सभळता ईज लण पकडनी ठाकर पाछी पूछ पकडली पग

डीकरा—लडकी । धीनशा—दुनहिन । मुमही—अधिकारी ।

७ तीज—(कृष्णपक्ष की) तृतीया । उणा—उसी । डात्री—बायी । डा—कगार । खेजडा—शमी का पेड । गागा—गागाजी नामक देवता से अधिष्ठित । भरवी—उलू की प्रवृत्ति का भादा पक्षी जिसके बालने पर साक शत्रुना पर विचार करते हैं । पला पार—पहना पहार । इसी नी—जसी नही—असी । जाण—मानो । भाटा—पत्थर । करवन—जारा (करपत्र) । मोरी—ऊठ की माहरा (नगाम) । ठैरता—ठहरते । चीडण—पनाव करना । भाटकर—झटकार कर । पाछा—वापिस फिर । काचरी—भरवी ।

छेन्नट—अत म मून—मौन चुप्पी । खडा—चलाआ । आम्बडग्यो—टोकर खाकर गिर पडा । बाळा—बालक । वस—अवस्था । लण—ऊठ की तज

मन म जेक काटो गडग्यो—सुगन बडा खराब हुवा ऊनाळा रा मौमम रात री टैम भारग बडा खराब गूगळा री काकड अर वरी री मिनखमार भाखरी वीच भे जावै दायू लुटारा रा खाम अडडा ठाकर रो मन मोळो पन्ग्या पण जब ऊखळ म मायो देय र मसळा-सू किसो डर ? जगदवा महाय करसी, ममश्या क नी—ठाकर मन म ईज बालिया ।

( ८ )

नदी लाघता इज पोकरण ठिकाणा रो गाव करमावास आब अठा-सू आगै खारो सरू श्हे जान खारो सालाणा-सू लगाय-न राखी तक पाच कोस री भू म फलियोडो है बिल्कुल सपाट तालर उडणखटली रो मदान है जिसो धरती खारी जहर अर निजर पूग जितरै कठई भाड-वाटकै नै घास फूस रो नाव ई नी इण धरती मे साडा अर पीपूडी परडा घणी मिळ वरसात रा दिना म अठ पाणी भरीज जावै कोई-कोई जगै थोडी घास ई ऊग, पण पाणी सून्विया पछै लूण री पापडिया जम जाब ऊनाळा मे लूण रा कण चमक र आखिया-नै पाणी रो घासो देत्र तिरस्या हिरण्या पाणी देख'र दौडता रैत्र अर घाक'र मर जाव इण खारच रो वीचलो भाग गूगळा री काकड बाजै, जठै घन्नळा दिन रा ई मिनख तो काई चिडी रो जायो ई नही मिल इण कारण धरती मे मारग वैवता बटाऊडा सब

खारच री काठी धरती-अर ठाकर रा ऊठ रपटक चाल-सू जाय रह या हा

ऊट की तज चाल । काटो गडग्यो—खटका रह गया । काकड—सीमा । मिनखमार—मनुष्य मारक हत्यारी । मोळो—हलका ।

८ खारो—ऊमर बजर, कल्लर । लगाय-न—नगाकर, लकर । भू—भूमि दूर । तालर—ताल, मदान । उडणखटली—हवाई जहाज । साडा—अेक प्रकार का जगली जानवर जिसकी चर्बी देवा के काम आती है । जितर—जहा तक बहा तक । भाड-वाटका=पेढ-पौध और पत्ते ।

पीपूडी परडा—अेक प्रकार की छाटी सापिनें । भरीज जात्रै—भर जाता है । कोई जग—किसी किसी जगह पर । पापडी—पपडा । तिरस्या—प्यास । घाक'र—घक्कर । वीचना—वीष का । बाजै—बहनाता है । घन्नळा त्ति रा ई—घोत्रे (प्रकाश भरे) त्ति म भी । चिडी रो जायो—चिडिया का बच्चा । वैघना—धलत । बटाऊडा—पथिक । सब—इगते हैं । खारच—बह भूमि



ठाकर ई लार रो-आर धर मजला घर कूचा म हो ऊनाळा री रात धीमी मुघरी पून अर पगा नीच काठी घरती ठाकर कल्पना-लाक म पूगियोडो ही—जाधो जायतो जाधो ऊघाणो दिक्कणदिमा मू आवती पून री ल रा साग गीत रा भणकारो काना म पडियो—

नडी नेडी करजो होला ! चाकरी जी

साभ पड या घर जाव मदी रग लागो

सावरडो गात्र नजीक आय रह यो हो भीला री वस्ती म कोई र व्यात्र हो भीलटिया री राग ई छानी नही र व ठाकर ई आप र कल्पना र घोडा रा वागा ढीली छोड भेली ही ऊघ म ईज गुणगुणासन लागियो—

नडी नडी करजा ढाला ! चाकरी जी

साभ पडया घर जात्र मदी र ग लागो

जाखिया आम बीस वरसा पला रो चितराम आयग्यो ठाकर इ माटियारपणा म नडी-नेडी चाकरी कीली हा चाकरी-पर जावता वलत सोटा माटी मोटी आखिया म आसूडा भर र कह यो हो—पाछा धगा पधारजो

अर ठाकर साचाणी पतरव तिन ईज चाकरी छोड र घरा आयग्यो हो फगत साडी र कारण ईज नही पण अेक दूजा कारण ई हैग्या हो कळपना आप रा पन्व जोर आर-सू फडफडाया—ठाकर ग सिवाणा म काम करता अक अलकार री चाकरी म रह यो हा जलकार जात रो विरामण पण घर म निपूतो हो विरामण दवता रो वजन पूरो ढाई मण अर विरा मणी रा ढाई मण पाच सर हा ठाकर न देखीजी री पूरी हाजरी उठावणी पन्ती विरामण-देवतावा री हाजरी उठावणी अेक राजपूत रो घरम है—आ

काठी—कडी कठोर । स्पटक—दौडते हुए तेज गति स । घर मजला घर कूचा—कम कम बढ रहा था गति-गीत था । ऊनाळो—गर्मी । मुघरी—धीमी (मधुर) । ऊघाणो—ऊघ म । मदी—महदी । व्याव—विवाह । छानी—छिपा । वागा—वगाम । चितराम—चित्र । मोटियारपणो—जवानी । सोडी—मोटा नामक राजपूत वंश की कन्या, भीमजी की पत्नी जो सोडा वग का थी । साचाणी—सचमुच । पतरव—पट्टे । पगा—पकत, केकत । कळपना इ०—कल्पना सक्रिय हो उठी भीमजी कल्पना म देखने लगा । सिवाणा—अक स्थान का नाम । अलकार—अहलकार कमचारी । निपूतो—पुत्रहीन । खीच—खीचण खीचडा वाजरी और दाल का बनता

समझ'र ठाकर कपडा धोया वरतण माजिया अर ऊखळ मे खीच ई कूटियो  
पण पनरख दिन देखीजी ठाकर-न पेट मसळण रो हुकम दियो तो ठाकर नीचो  
माथा घाल र घर कानी रवान ह्यो सो घरँ आय न ईज पगरखी उतारी

( ६ )

सावरडो गाव खातो लार छूग्यो हो अर गीत री अवाज मद पडती  
पडती बद व्हैगी ही ऊठ ढाण छोड र आपराळ म चाल रह या हा अर आगाळी  
मरु कर दी ही ठाकर ई भेरा माथै पूगग्यो हा क अचाणचक अेक भट्को मो  
लागिया अर नीद अेकदम उचटगी ऊठा जागाळणो बद कर दिया अर कान  
ऊचा कर'र चालता चानता जठी उठी दखण लाग्या

आग थोडी दूरी पर मिनवा र गुणगुणावण री अर खुमर-पुमर री अब्राजआय  
रही ही ठाकर आखिया ममळ र देखिया तो जीवणी कानी वेरी री भाखरी ऊभी  
ही जर जाडो मारग ई नजीक गो ठाकर जोर-सू खेंवारा किया अर ऊठा न टिच  
कारी दीव्री भूरा समळ ममळ र जागै पग घरण लागियो पण थोपीनीक दूर  
जावता ईज उण-न रकणो पडियो कारण क मारग र स बीच च्यार जमदूत  
आडा ऊभा हा ऊठा र रुक्ता ईज ठाकर धारिया खाध कर-न जागै जायग्यो

जमदूत ठाकर र बित्कुन सामन ऊभा हा सस्तर पाटी-सू लस, मूडा र  
बुकनी लियोडा अर हाथ म नागी तरवारा लियाडा चदरमा रा चादणा-भ  
वा री तरवारा चमक री ही जर साथ-साथ आखिया ई

आप रो भला चात्र तो अेक कानी हट जा रे ऊठवाळा ।—अेक जमदूत वाल्यो  
ठाकर थोडा हॅम र जबाब दियो—उण रात म्हारो जनम नही हुघा रे कुत्ता ।

है वाजरी को पहने ओखली म कूटत हैं फिर दाल मिलाकर खीचडा बनात है ।  
पगरखी—जूती ।

६ खामो—काफी । ढाण—तेज चाल । आपरोळ—ऊठ की धीमा  
साधारण चाल । आगाळी—उगाली जुगाली । भेरा—नीद के भेके ।  
अठी-उठी—इधर उधर । गुणगुणावण—गुनगुनाना धीमी आवाज ।  
जीवणी कानी—दाहिनी ओर । भाखरी—पहाडी । बरी री—बेरा की  
पहाडी (नाम) । जाडो मारग—जाबो के समानांतर बायी ओर से  
दाहिनी ओर और दाहिनी ओर से बायी ओर को गया हुआ भाग ।  
नजीक—नजदीक । खारो=खासना । टिचकारी—टिच टिच की ध्वनि  
पशुआ का हाकन का गण । आडा—बीच म । धारियो—अेक  
गस्थ । सस्तरपाटी ६०—हथियार लिय हुअे । बुकानी—ढाटा ।



ऊमा था-न लट ता म्हाङ्ग जीविया न धिरगार है दुनिया म्हारा नाश-पर थूकना  
अर म्हार बडेरा री कीरती न काळ्य लाग जावैला

लडाई चालती री' अर मौकी मिलता ईज ठाकर री धारिया रो अक  
भरपूर हाथ पडियो—बडद करतो बुकानी समेन माथो मूळा री बापी रै ज्यु  
आधो आय पडियो अर हाथ री तरवार खळद करती भूग र पगा म जाय पडी

सेठाणी र खानदानी खून उछाळो लिया अर बणिक वृद्धि जन्नसर देरयो  
खटाक करती सेठाणी धरती पर अर हाथ तरवार री मूठ पर लगियो जोडणो  
कमर मे 'नेपेट'र वा चडिका-सी भीमजी वीरा री मदद म जाय पूगी—जाणे  
तुबा-तरु खेल मे उत्तरी है पण वा पूगी पूगी जितर तो अक तरवार ठाकर  
रो भेजो फाड र कनपडा रो लपतरो उखेळती साधा तव जाय पूगी लोही रो  
पडनाळो-मो छुटियो—बग-बग बग !

शतरा मे लाग-सू तरवार रा अक भरपूर हाथ पडियो भीमजी पर वार  
करणवाळा रो माथो आधो कटगयो अर आखिया रा कोया वारै आयग्या

आचीती विजळी पडी देख'र लुटेरा रा पग धूजग्या अर वचियोडा दोयू  
जणा जीव लेय नै पड भागा

ढळती रात म ठाकर री लाम थरपट-थरपड करती धरती-पर डिंगण लागी  
पण सठाणी लास न सभाळ नीवी वीरा-रो फाटोणे माथो सोळा मे लिया घाद  
उण रा हिया फाटण लागियो अर मूढा-सू अक चीग्व निवळी—वी रा रे !  
S S S भीमजी वीरा S S S !

चीग्व रै माथै पूरी घाटी म मोरिया कुरळाय उठिया—म S S S जा ! म  
S S S वा ! मे S S S जा ! जाण भामजी ठाकर री ज वांनता है—ज S S S हा !  
ज S S S हा !

अर पत्रतर म डूगर गूज उठिया—जै S S S वा ! जै S S S हा !

ऊमा—बडे । रहन जीविन रतन । धिरगार—धिरवार धिवार । काळ्य—  
वानुष्य कनक । री=रती । बट्ट—प्राधात वा आवाज । मूळा री—मूवा की ।  
बापी—बाबू म वाग टुआ गान टुकटा (कप-वप्य=कान्ता) । आधा—दूर ।  
खळद—गिग्ने वा आवाज । उछाळा लिया—उछाडा । मटाक करती—तुरन ।  
लरिया—जगिया रग वा । आग्या—आग्या । दूर्ग—रा । कनपडा--कनपटी  
लपतरा । उखेळती—उखाळती दृष्ट । तारा मू -पीठे म । काया—जीव  
पनाळा—पनाता (म० प्रान्ती) । बग-बग—द्वय पथाय न वान वा आवाज ।  
आचीता—अचिन्त अत्र यागिन । वचियोडा—वाका अत्र दूत्र । पत्र नागा—  
भाग चव । शरी—वीनती दूर् । थरपट ट०—जन्मना हुई । सोळा—गा ।

## साहित्य

( साहित्यिक निबन्ध )

[ गोवधन शर्मा ]

[ श्री गोवधन शर्मा का जन्म जाधपुर में स० १९८४ में हुआ। प्रारम्भ में य साहित्य मस्थान उदयपुर में रहे। उस समय गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद, में संबन्धित कॉलेज में हिन्दी के अध्यापक हैं। ]

प्राकृत अपभ्रंश राजस्थानी गुजराती आदि भाषाओं को वे अच्छे जानते हैं। 'प्राकृत और अपभ्रंश का डिगल साहित्य पर प्रभाव शीपक' गोधप्रबन्ध पर राजस्थान विश्वविद्यालय ने इन्हें पीएचडी की उपाधि प्रदान की। डिगल-साहित्य इनकी सबसे महत्वपूर्ण रचना है।

संस्कृत निबन्ध सबसे प्रथम स २०१२ में मन्वाणी बंध २ अंक २ में प्रकाशित हुआ था। राजस्थानी निबन्ध संग्रह में भी यह संगृहीत है। इसमें लेखक ने साहित्य की महत्ता उसकी उपयोगिता उसके क्षेत्र एवं उसके स्वरूप पर प्रवाहमयी भावुक शक्ति से रोचक प्रकाश डाला है। ]

( १ )

अरे सत्रान उठ—साहित्य काई है ? उण रो काई अरथ ? समाज में उण री काई जरूरत ? साहित्य पत्थिआ-म पेट भरीज नी भूसो तो धापिय पतीज कविता काणी नाटक न्याय न्याय वात की काम रा ? अणकमाऊ-र मन भाव कमाऊ पूत न तो भरण री फुरमत बोनी काई कर दो ण साहित्य रो ? जमाना बोदो रजगार चन नी साहित्य खाटी बीमारी इण बिघ लोग सका कर

वात वाजवी पण अक गँतार न अक हीरा लाधो वो उण म काई समझ ? मन म घणो हरख हूवो—ननिया तार् रमत लाधी हारा री बीमन

१ भरीज ना—भरता नहीं। धापिय—तप्त हुआ पेट भरने पर ही। पतीज—पतिघाता है विश्वास करता है। काणी—कहानी। बी—बड़ा। अणकमाऊ—न कामान वाला निटलना। बोदो—खराब। रजगार इ०—राजगार चनना नहीं।

वाजवी—वाजिव ठीक उचित। लाधा—मिला (लघ—लद्ध)। ननिया—नहा (स श्लेष, अप न ह)। तार्—लिसे। रमत—मेन किलीना। खाटी—

तो जोहरी जाणं आ वात साहित ताई साची आज रा जमानो खोटा आपा सरीर ताई जतन करा कन्ना—पैलो सुख नीरोगी षाय टका घणा खरचा मियाळ बधज बाधा बदजी री सरण जात्रा देखी-दत्रता मनात्रा पण सरीर सू वत्तो मन मन न दिमाग निमाग सारू की करा नी पट न जीमण दा पण निमाग-नै खुराक नी दा आज रा जुग रा ओ उळटो वायरो आ वात उचित कानी

आज रा दिन साहित सब मू वत्तो इण री सब-मू ज्यादा जरूरत भौतिक वाद रो भूत आज जगत रै दाळो हुग्यो अण-श्रम नै हादहोजन-वम मिनख मद मे आधो भरम सू आपा मूनग्यो विज्ञान रो मालक वणतो सेवक वण ग्यो मीत र मूड जात्र विनास रा बीज बावै आज भरजाद दूटगी वावळो मानवा दौड है आपत भमजै नी जेक-मू-जेक भयकर साधन सजो मार वाट मचात्र इण विनाम-वेळा म साहित सब-स जहरी मिनखपणा री रक्षा तो साहित-ही करमी जद जगत म मिनखपणा रो काळ पडै लोग आपो गमाय कूडी वाता लार दौड, भूठी वाता सिर मोड वण साची लाज, तो साहित म्हा-न साचा मारण वताव ठोकरा मू वचाव, काम न वणाव मानवा री भरजाद राख दण वास्त जाज रा जुग म साहित सब मू जहरी

कव क ओ मिनख जमारो वार वार नी मिन इण रो कारण ओ ईज क मानवा सगळा प्राणिया सू मिर हाथी मरीमा वळवान न ना र मरीसा भय कर जीवा-न चाव ज्यू नचात्र आभा म पखेरू दाई उड ममदरा न पार कर कुदरन नै वम कर इण मब रो कारण वाई ? मानव ओ सगळो करतव आप री चतराई सू कीनो मेहनत मू काना ताकत मू नी ताकत रो सत्राल

गराव । कन्ना—(हम) कहते है । पैलो—पहला । टका—टके=रपय पस । मियाळ—शीतकाल मे । बधज बाधा—पहले म उपाय करते है । वत्तो—विशेष की—कुछ । दा—(हम) दते है । जीमण—भोजन । वायरो—हवा । दोळा—चारोओर । भरम—भ्राति । आपो—अपने आपको । वणतो—वनता-वनता । मूड—मुट्ट मे । वाव—बोता है । मानवा—मनुष्यता मानवता मानव-ममूह । आपत—विपत्ति आपत । सजोव—सध्य करता है । काळ पड—अकाल पडता है अभाव होता है । गमाय—गवाकर । कूडी—भूठी । लार—पीछे । साची—सच्ची (वातें) । लाज—लज्जित होती हैं । वणावै—वनाता है सिद्ध करता है । मिनख जमारो—मनुष्य जम । ओईज—यहा । सिर—बढकर । चात्र ज्यू—जसे चाहता है वसे । आभा—आकाश । दाई—ममान (नाई) ।

उठ कोनी ताकल ही दुनिया म सग होती तो जाज घोडा माथ मिनल नही  
 मिनल माथै घाडो सवारी करतो पण मिनल रो जान उण न सब रो सिरभोड  
 वणायो जुगा सू मिनल जान रा खोज म खपियो पीडिया तर पीनिया बामीस  
 की कामधाव हुयो इण जान रा जपूरब भडार, अनुभव रो जागार न जमाना री  
 भणकार—इण रा नाम साहित अच्च्दार्ई रो घर, फूटरपण रो माप न मना रो  
 दरपण—इण रो नाम सहित भावनावा रो चित्तराम जीवण रा अरथ, न धरम  
 रो मूळ—इण रो नाम साहित जगत रो मार तरक्की रो कारण न धरती न  
 सरग वगावणवाडो—इण रो नाम साहित इण धरती माथ जो भी चोसा सुदर  
 न हितकारी—उण रा नाम साहित

( २ )

साहित रो क्षत्र घणो विशाल इण रो जोरण घणो लावो घणो चवडो भा  
 री ममता न बनड रा लाड मती रो तेज न वीरा रो दप मिरगानणी री  
 लाज नै कत रो मुळकणो भावज रो सुरगी चूदडी न नणद री रोळ बटी री रमत  
 न वीरा री राखी जामी रा मपता न घण रा परज—अँ सग साहित री ओरण  
 रा हल करमा रो परेवा न बोडिया री मेहनत बागा रा रगरगीला फूत न  
 खेजडिया ग खोवा वाजरी रा फूक न काचर बोर मतीरा सठ रा महल  
 न रबारिया रा भूपा, नयी नवेली वरखा न मुळकती गर नपाती हफाती  
 तिमा मारती सू न कपाती धूजाती मिया मारती डापर ऊचा-ऊचा भावर  
 न माटा मोटा धोरा आमोजा रो बळबळतो तावडा न पूनम री घोळी बगला री

सग—मव सबकुछ । खपियो—पचा पूरा हुआ । तर—तर । बोमीस—  
 कागिग । फूटरपणो—अच्छाई सुदरता । दरपण—प्रतिप्रवित करने शक्त ।  
 चित्तराम—चित्र । सरग—स्वर्ग ।

२ आरण—देवता जादि के निअ छोडा हुआ जगल । चवडो—चौडा ।  
 बनड—बहिनी बहिन । मुळकणा—मुखुराना स्मित । चूदडी—चुनरी ।  
 नणद—ननद । रोळ—हास्य विभो । रमत—झोडा । जामी—जमाना ।  
 घण—प्रेयमी पत्नी । मग—मव । करसा—किमान । पन्तो—पमीना (?) ।  
 बोडिया—(?) । खजडी—शमी का पे । खोवा—शमी की पत्नी  
 फनिया । काचर इ—कचरी वर तग्वूज राजस्थान के प्रसिद्ध फल ।  
 मल—महन । रगरी—ऊट चरान बाने । भूपा—भाप । तिमा मारती—  
 प्यास मारना हुई । धूजाता—रुपाती । मिया—मर्दी (गान) । डापर—  
 शीतकान की तज ठडा हवा । बळबळतो—बडबडाना हुआ जनता

शख ज्यू चाण्णी—अ सग साहित र ओरण रा रूख मूछा री मरोड न कुळ री  
आण सारू पग पग माया पाछटणवाणी वीर भावना आपणी धरती गी मरजात  
न प्रेम मारू पग-पग त्याग करणवाळी देगभक्ति, ओछा न सुगला मिनखान देव  
न पदा होवणवाळी घुणा भला न चोखा मिनखान देव-न आतणवाळो लाड  
—अ सग साहित रा क्षेत्र म गिणीज साहित रा देस अंक अनोखो दस इण दस-  
री बेला म लाही दोड भाठा म प्राण वस पखेरू न जिनावर मिनखा री बोली  
बोल, सुरगा फूल मुळकै, न किरत्या रोव इण साहित री अपरपार महमा

लाग साहित न कैव—ओ मत्य गिग सुदरम है इण रो काई अरथ ?  
इण री काई विगत ? आ घणी जरूरी वात है काइ साहित म सग वाता साची  
हुव ? काई उण मे लिखियोडो हुव कै रामूडा रा खेत म कित्ती नेपा हुयी ? साहित  
काई सदाई जडी दख त्र डी ईज कव ? पछ उण-म कल्पना वयू ?—अ सँग सत्राल  
तो है साहित सदाई साची वात कव इण म कोई मीन न मख पण ओ साच  
नय वग रो है साहित नी वतावै क रामूडे र अवकै कित्ती नपा हुयी पण ओ  
ओ वतावै क रामूड-नै घणी नपा देव-नै घणी हरण हुवा साहित मिनखा-स्वभावर  
री सचाई वतावै मिनखा रो रगदग वदळै पण मुभावर नी वदळ जद ईज  
ता विलायत रा नाटकवार शकमपियर रा नाटक जुगा-सू सग रसिवा-न मुहावर  
वाळीदास री कविता चोखी लाग न चेंगव री का णिया मन-भ मात जगाव

‘गिग रो अरथ भलाई करणवाळा हुवै साहित वद भूडा वात नी  
वतावै उण-सू ज्ञान री वधातरी हुव सग जीवा री भावनावा साहित र  
सामल इण विध साहित जगत री भलाई कर

समार-म जका फूटरा ओ साहित रै काम रा माहित-म सुगना टिक नी ]  
सक इण फूटरपण री भावना साहित नै पावडा देव ऊची-ऊची कल्पना  
जीवण न जगत म जका खराब उण न साहित आप र करतव-म फूटरपण म  
दाळ धरती-नै सरग वणाव जिण-सू साहित मत्य, गिग, सुदरम् कयीज

---

हुआ । तासटा—धूप । आण—आन । पाछटणा—पटकना, गिराना । सुगना  
—घुल्लि, बुर । गिणीज—गिन जात है । लागी—लाह । भाठा—पथर ।  
किरत्या—कृत्तिका वा नक्षत्रपुज । गिग—कल्पनाकर । नपा—पदाकार ।  
जही—जमी । वटी—ईगो । मीन न मख—मदह । अवक—इम बार ।  
जदईज—जमी । विलायत—इंग्लंड । घणव—रम का प्रगिड कपाकार ।  
भूडी—पुरी । वयोतरी—वृद्धि । फूटरपणा—गौण्य । कपाव—कहा जाता है ।



## नकटा देव नै सुरडा पुजारी

( निबंध )

[ विजयदान दया ]

[ श्री विजयदान दया का जन्म स० १९८३ में विलाहा तहसील के बोरुदा नामक गाँव में हुआ। इनके पितामह श्री जुगतीदाजी दया तथा पिता श्री सबळानजी देवा राजस्थानी भाषा के अच्छे कवि थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा जतारण तथा बाडमर में और उच्च शिक्षा जसवंत कॉलेज जोधपुर में हुई। ]

विद्यार्थी-बाल से ही साहित्य की ओर इनका विशेष रुचि रही। राजस्थानी लोक साहित्य और लोक संस्कृति के ये गभीर अध्ययन और विश्लेषक हैं। बाता रा फुलवाडी नाम से इन्होंने राजस्थानी लोककथाओं के कई भाग प्रकाशित किये हैं।

सन् १९५३ में जोधपुर से प्रेरणा मासिक-पत्र के आठ अंकों का इन्होंने सम्पादन किया। साहित्य और समाज इनके साहित्यिक निबंधों का संकलन है। इस समय ये रूपायन संस्थान वारुदा से सम्बंधित हैं।

संक्रान्त निबंध वाणी मासिक पत्रिका के वार्षिकी अंक में प्रकाशित हुआ था। इसमें लेखक ने रासाजी बाजी के माध्यम से वर्तमान गणसं-व्यवस्था में प्रचलित लालफीता गान्धी भ्रष्टाचार स्वाधपरेता आदि बुराइयों को उघाड़ कर सामने रखा है। प्रसुक्त मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों से राजस्थानी भाषा की गक्तिमत्ता का अच्छा परिचय मिलता है। ]

म्हार मात रा रासोजी बाजी बाता रा पूतळा इ चोयळा में बाजिदा कुवर रो खजानो खूट जाय पण बा र जायणा रो खजानो का खूट नी लावा हाया रा फटकारा दता बडा मिठाय मिठाय न बाल बाढ—जाण पूल भड लावा

मरे गाँव के रासाजी बापजी बाता के बस पुतल ही (रामाजा-नाम बाजी—बापजी, आदर का शब्द बाबाजी)। मुहल्ल में प्रसिद्ध (नामकर)। कुवर का कोप समाप्त हो जाय पर उनका कहावता का बाप नहीं खूटना। नवे हाया के फटकारे दते हुए बस माठे बना-बना कर बाल निकालते (बानत) हैं कि माना पूल भड रहे हा। लवी और पतली देह लवी गन्ध, तीखी नाक

नै पतळो डील लाबी नस, तीखो नाक, पतळो अर लाबी मूढा दाता रो चौको घोडो-मो वारै तावा धरणो रग लटठा री ऊची घाती विना फडका री लाबी गोल बाया रा डीलो कुडतो मटिया गोल फटो—डावै पसनाड की तीखो अर डीगो डावै कान-रा कोकरा एनै अेक भाड बोर जितो काळो मस्सो बाजी उणियार रा फूठरा तो घणा बोनी पण देखण म सुवावणा घणा ई लागै ऊच आयोडा घाळा चौका माथ वा री हसी अर वा रा मीठा बोन अडा लाग जाण सारदा माता हस विराजी

वा री वाता सुणवा-न कोई मारग बता ई ऊभो रै जाव तो पछ भस चूषती हुनै तो ई पग को उठ नी कदई कोई पूछ—वाजी ! था-न अडी-अडी वाता कठा-सू ऊकल की ता म्हार ई पल्लै घानो तो बाजी थाडा-सा मुळक-न तुरत जवाब द—अरे भाया ! जकल उधारी ना मिल हेत न हाट विकाय आप-आपर हिया री उगतिया है अं कोई दन्नण नेन्नण री चीजा कोना—अकल सरीरा उपजै दीना लाग डाम बरसत पाणी री छाटा गिणाज तो वा रा ओखाणा गिणीज

पतला और लवा मुह (चेहरा) । दातो का चौका (आगे के चार दात) थाडा सा बाहर (निकला हुआ) । तावे जमा रग । लटठे की ऊची घोती विना फडके (लटकत पल्ल) की । लवी गाल बाटो का डीला कुर्ता । माटी के रग का गाल साफा (पगड) । बायी जोर कुछ तीसा और ऊचा । बाये कान के कोकरे ( ) क पास अेक भडवरी जितना काला मस्सा । बाबाजी आवृनि के सुदर तो बहुत नही पर देखने म मुहावने बहुत-ही लगत ह । ऊचे जाय हुअे मफंद चौके पर उनकी हसी और उनक भीठे डोल अमे लगत है मानो हस पर शोभित हुइ (बैठी हुई) माता सरस्वती हा ।

उनकी बात सुनन के लिअे कई माग चलता भी खडा रह जाता है तो फिर (बाटै) बछरा भस का दूध पी रहा हो तो भी पर नही उठाता । कभी कोई पूछना है—बाबाजी ! आप को अैसी असी बातें कहा से सूभती है कुछ तो मेरे भी पल्ल म डालो (मुझे भी दो मुझे भी मिलाओ) । तो बाबाजी थोडे स मुसकुराकर तुरत उत्तर देन हैं—अरे भाई ! बुद्धि उधार नही मिलती, प्रेम हाट म नही विकता (प्रमिद्ध कहावत) अपने-अपने हृदय की उकितया है म कोई देने-लने की चीज नही, बुद्धि गरीर म उपजती है देने से तो डाम (गम लाहे आदि क दाग) आते हैं (राजस्थानी कहावत) । बरसत हुअे पानी की बूँदें गिनी जाय तो उनकी कहावतें गिनी जाय (आखाणा-म० उपाख्यान) ।

अकर ध मुआवजा लेण सार जोधपुर गया च्यार पाच दिन काठा काया होय-न पाछा खाली हाथ आया अब क्यू पूछा ? बारूद रा कोठार म जाण तिणग पडा मोटर-मू उतरता ई बोल्या—नकटा देव न सुरडा पुजारी अडा ई राज करणवाळा न जडा ई अलकार पना भूया रा पूत अब-अब स आगला । इण राज म तो सूक बिना पान ई को हिल नी बात करार-ग पईसा भाग टे लिलाड माथ बूक माडियोडी कीकर धाप ? किण किण न समभावस्या ? आ तो बूत्र ई भाग पडी पला जाणतो—इण राज म की न-की तो अळियो कम ह्यो ई हुबला पण डूगरिया रळियावणा आधा ईसरदास काम पड या-ई ठा पड इण रळियार-दाण म इमाफ कठ ? उपाभरा म कागमिया रो काइ काम ?

बाजी बाता करता-करता ई पाखती रा चातरा-माथ जा बठया । खाल मायला मटिया थलो चातरा माथ धरयो प्याऊ कानी लाबा हाथ रा इसारो कर-न बोल्या—भूमरिया ! जेक लोटो तो भर ला धारो राम भलो क ? बाता-

जेक बार ध (जमीन का) मुआवजा लेन को जोधपुर गये । चार-पाच दिन खूब दुखा हाकर खाली हाथ वापिस आय । अब कयो पूछिय बारूद के भडार म मानो चिनगारी पण गया । मोटर स उतरत हा बाल—नकटे देवता और धगम पुजारी । असे ही (निक्मम) राज्य करन वाले और अस ही (निक्मम) अहलकार (कमचारी) । पना बुआ के पूत अब-अब स बढतर । इस राज्य म तो रिदवन के बिना पत्ता भी नही हिलता । बात करन के पसे मागत हैं । (पानी पीन का) ठेट ललाट पर चुल्लू लगाये हुए । कस पेट भरे ? किस किस को समभावेंगे ? यह तो कुव म भाग पडा हुई है—इस कुव का पानी जो पीते हैं मभी नष्ट म हा जाते हैं—उपर स नीचे तक सभी रिक्तसार हैं । पहले समभता था कि इस राज्य म कुछ न कुछ तो जळिया (कूडा-करकट) कम हुआ हागा । पर ईसरदाम कहता है कि पहाड दूर स हा सुनावने लगत हैं । काम पन्न पर ही पना लगता है । इस गय बात अधर-भातेम याय कहा ? (जना साधुआ के) उपाश्रय म कधो का क्या काम (जन साधु का नही रगत के उहे जड म उपाड दन है) ।

बाबाजा बात करते करते हा पाम के चबूतर पर जा बठे । बात म का मन्मला थला चबूतर पर रखा । प्याऊ का ओर सबे हाथ का (=हाथ उबा करके) इशारा करके बाल—जे भूमरिय ! अब लाण तो भर ला, राम तेरा भला कर । बाता-बाता म ध्यान ही नहा रहा तानू सुरदरा पड गया

वाता-म ध्यान ई को रह या नी, ताळसो मुरदरो पडग्यो सात्रळ बोलीज ई कोनी  
भूमर दौड-न पाणी लायो बाजी घाप-न पाणी पियो लोटो पाद्यो पकडाता  
वाल्या—जीवता रै भाया ! राम थारी हजारी ऊमर करै

सारली वात रो मिलसिला पाद्या पकडयो न वत्रण लाग्या—जथा राजा  
तथा प्रजा ओ तो हळोहळ सूक रो ईज राज है पद्य जलकार क्यू ओछी तार्ण ?  
रूखा जडा टेटा, न वाप जडा वेटा मा करै सो घी कर आ तो दसादगी री  
चलगत है देखा, मौज वणी बादरी-न वीछू खाया जात री राईकाणी न फेर  
डाकण ऊग चत् चढ यात्र अडी वगत आयी नी फेर कोई जात्रै । पाचू  
आगळिया घी म नै माथा कडाव-म मामा रो यात्र न मा पुरसगारी जीमो  
वेटा । रात अधारी अब कुण कवै व्यात्र भूडो ?

दा-तीन दिन तो धीरज राग्यो जाण्यो क्वास डाट्टी निवैना पण सापा रै  
किसी साव ? अ तो भाई ! दूव जिण रै दूखणो न पाक जिणर पीड ज बाबू  
लोग कद ई किणी रा हुया ? बाढी आगट्टी माथ ई को भून नी ज तो नेम ई  
घार लियो क सूक विना नाम ई को करणो नी इणा-सू फेर काई वण आर

(सूग गया) । अच्छी तरह बोला ही नहीं जाता । भूमर दौडकर पानी लाया ।  
बाबाजी न पेट भर कर पानी पिया । सापा वापिम पकडाते हुअे बोल—जीता  
रह भाई ! राम तरी हजार वर्षों की उम्र करे ।

पिछली बात का मिलमिला वापिम पकडा और कहने लगे—यथा राजा  
तथा प्रजा यह तो हलाहल (=खूब गहरा) रिश्वत का ही राज्य है । फिर  
कमचारी क्या जोछी तान (पीछे रह या कमी रखें) । पेड जस टेंट (अर्थात्फल)  
और वाप जस बटे । मा करती है सो बटी करती है (घी < दुहिता) । यह तो  
देखादेखी की चाल है । देखो मौज बन गयी । बदरी थी और (उसे) बिचरू  
खा गया । जाति की राईकानी (राईका—उ ट चराने वाली जाति) और फिर  
डायन, उटो पर चत् चत्कर खाती है । अमा वक्त (न) जाया न फिर कभी  
आवगा । पाचो उगलिया घी म और सिर कडाई म । मामा का विवाह और  
मा परोमने वाली फिर अधरी रात बटे । जीमो (खूब माल उडाओ कोई देखने  
वाला नहीं) । अब कौन कह कि विवाह सराव (कोई बुरा कहने वाला नहीं) ।

दा-तीन दिन ता धीरज रखा समभा कदाचित डाली भुक जायगी (=काम  
बन जायगा) । पर सापा के कौन सा सबध ? य तो भया ! जिमके दुखता है  
उमा का दुख और जिमके पकना है उमी को पाडा होनी है । य बाबू साग  
कभी किसी के (सगे) हुअे ? कटी उगली पर भी नहीं मृतत । एहान तो  
नियम ही बना गिया है कि रिश्वत के बिना काम ही नहीं करना । इनसे फिर

ऊदरी रा जाया तो ऋडा ई खोदमी अ बाबू ता सुनार नवणा—आपरी मा रा हाचळ वाड लव । म्हारी तो अक्ल ई कह्यो को करयो नी जमी मूता आकाम चाट मन म महाराजा हुयोडा सीधो ऊपरला जार वताव काक री पियाडी भनीजा न ऊग मिनख न मिनख का गिण नी फगत आप री मारयोटी नै ई हलाल गिण पण ससार म बडावडा रो खेल है किणा लाठा अफमर रो टेलीफोन आयो म्हार देखता देखता फटाफट काम हुय्यो आकरा देव-न स कोई निवै म्है तो आ चार-याच दिना म आछी तर पनत्राण ली क लाठी जिण री भस लाठा री सकरायत है परईमा री खीर है गरीबा री कठ दाद फरियाद कोनी दूबळा जेठ देवरा बराबर

ये ता सगळा जाणा ई अ हो क म्हार इता नठाव कठ ? हाषोहाष फारगती करी कुण जोखा राख ? मूड मूड कहया—गाया तो उधरगी न पोटा सार छाडगी टका री हाडी फूटी इण रो कोर् फिकर नी पण कुत्ता री जात ता पिछाणीजगी मुआवजो नी मिळियो जिक्ण री परवा नी पण भाडणा म ता

क्या बन आव (क्या हो सकेगा) । बुहिया के जन हुजे तो गडडे ही गोदेंगे । य बाबू ता सुनार क लक्षणो वाल हैं—अपने मा के ही आचल (स्तन) काट लें । मरी ता अक्ल ने ही कहा नहीं किया (=काम नहीं किया) । जमीन पर सोय हुअे आवास को चाटते हैं । मन म महाराजा बन हुअे (=जपन का महाराजा समझत है) । सीध ऊपर का जोर दिग्वाते हैं । चाचा की पी हुई (भाग) भतीजे को उगती है (=भतीज का नणा नाता है) । मनुष्य को मनुष्य नहीं गिनते । बवल जपनी मारी हुई को ही हलाल गिनते है ।

पर ससार म बडा बडी का खेल है (बट को भी बडा मिल जाता है) । किमी बडे (=जबदस्त) अफमर का टेलीफोन आया । मेर देखत देखते फटाफट (=तुरत) काम हो गया । बडे देखता को सब कोई नमस्कार करते है । मैं तो इन चार-याच दिना म अच्छी तरह परीक्षा करली कि जिसकी लाठी उसको भस है । जबदस्तो की सनाति (आन-दोत्मव) है । पगो की खीर है । गरीबा की दाद फर्याद कही नगी । दुवना जेठ देवरा के बराबर हाता है (उसका कोई समान नहीं करता उसे कोई नहीं गिनता) ।

जाप तो सभी जानते ही हैं कि भरे इतना धीरज कहा ? हाषोहाष (तुरत) फारगती की (=निपटारा किया) । कौन जोखिम रख ? मुँ पर ही कह डाला—गायें ता चरन को चली गया पर गोबर पीछे छोड गया (भडे आदमी तो चल गये निक्म्मे पीछे रह गये) । टके की हडिया फूटा इमका कोई फिक्र नहा पर कुत्ते की जाति तो पहचान ली । मुआवजा नहीं मिला उमकी

हूँ पाछ का राखू नी हूँ मरस्यू पण राड ता धन ई कत्ता'र छाडस्यू छेत्रट री लार म्है तो सुणिया सूधा हाथ जाड-न कह या—घायी धार वस-सू, विणिया रै खेत बार बाड घायी धारी छाछ-सू, कुत्ता सू छुडाव म्हार मुआवजो को चाहीज नी—ऊघळी लार दामजो ई सही

दखा आजादी रा रुळियारा मचियो निताताई बेटा जायो, नाळा पली नाक कटायो आ लखणा-न फेर आजादी ! कुत्तो नाळर रो काई कर ? इण राज म तो आघा पीसै न कुत्ता खावै जठी देखो उठी-न ई अल्ला री मा रो चाळीसा है ! पण काई करा ? किण जागै जाय बूका ? भस आगै भागवत वाचणी ! पण भाई ! जाप कमाया कामडा किण-नै दीज दोस, खाजीजी री पालडी बादा लीनी सास भाटा फक-नै माथो माडियो आप र हाथा जाय-न योट री परची बाळी ही दोनू गमायी रे जोगडा ! मुदरा न आदेस ! अब काई कारी लग ? चोर री मा मटका-म मुहा घाल न रोव

नागडा कता फिर—गरीबा रा राग जायो नामा राज आयो ! बाबोजी

पर्वाह नही पर भाडन म (=बुराई करन मे) ता में भी कमी नही रखता । मैं तो मरणा पर राड तो तुम्हे भी कहलवा ही दूगा (पति की पत्नी के प्रति उक्ति) । जत म मैंने तो कुहनिया तक हाथ जाडकर कहा—अघायी तेर वस (कपडा का सट) से, खेत क बाहर निकाल । अघायी तरी छाछ स, कुत्तो स (पिंड) छुडा । मरे (=मुझे) मुआवजा नही चाहिये । (घर छोडकर पराये पुरुष के साथ) भागी हुई क पीछे दहेज ही (दिया) सही ।

देखो आज्ञानी का बर्बाद-खाता मथा है । (जत्यन्त चपल और उच्छ खल युवती) ने बटा जना और नाल के पहल नाक कटवा लिया । इन लक्षण वाला का फिर आजादी ! कुत्ता नारिधन का क्या कर ? इम राज्य म ता अघे पीसत हैं और कुत्ते खात हैं । जहा दखो वही अल्लाह की मा का चालासा । पर क्या करें ? किमक जागे जा कर पुकारें (रावें) ? भस के आग भागवत वाचना है ।

पर भया ! अपने कमाय दूअे काम हैं किमको दाप दिया जाय ? खोजी जा की पालडी को कानो ने छीन लिया । पत्थर ऊपर फेंककर उसके नीच सिर दिया । जाकर अपने हाथा बोट की परची वाली थी (=बोट दिया था) । बाळी थी—जलायी थी (गानी) । अर जागी ! मुद्रा जोर जादग दानो ही गवा दिय । अब क्या कारी लग (क्या उपाय हो) । चोर की मा मटकी म मुह डालकर (=छिपकर) राता है ।

मगे (=बगम सुच्चे) कहते फिरते हैं कि गरीबा का राज्य आ गया । खूब नामतर राज्य जाया ! बाबाजा ! धूनी तापिये तो कहा—बटा ! जी जानता है

धूनी तापो क बेटा ! जीव जाण है ! गरीबा-न राज कुण दत्र ! लरडी माथ ऊन कुण छोट ? बकरी रा मूडा-भ मतीरो कुण राख ? पगत चुणावा रा जिना म गरावा न चितार वान हाथ जाड गराव छीदा पड जात्र पण भाइ ! ओ धन ता घणिया रो है गुन्नाळिया रा हाथ म तो गटिया है इत्ता क्यू चौडा पडो ? इत्ता क्यू जार जताओ ? खान्न-भीषण-न खमला नाचण न नगराज शोट दिया पछ काई हीग लगाय-न ई को पूछ नी इण राज रा सूना जोट भ तो खान्न सूर न कूटीज पाडा

दखा ईज हा क जा वारा वरमा-म काइ चानणो करियो ? काई नन्न री तेर करी जको ऊगतोई को तपिया नी वो आयमतो काई तपसी ? आ री थोथी वाता म कण थोडा न काकरा घणा कोरो यूक विलोक पसरी म पाच सर कूड थोल कीकर पतियारो हुत्र ? भूयो तो घाया पनीज पण जा री उदायोनी चिडिया ता र खा ई का बठ नी

(कि धूनी तापन म कितना कष्ट होता है) गरावो क राज का आनद लो इस गरीबा क राज स जो आनद मिल रहा है उस जी ही जानता है । गरीबा का राज कौन देगा ? भड (क शरीर) पर ऊन कौन रहन देगा ? बकरी के मुह म तरबूज कौन रखेगा (=रहन देगा) । गरीब को सुख कौन भोगन दगा ? केवल चुनावा क दिनो म गरीबो को यात्र करत हैं उनको हाथ जाडत हैं । बम गरीब ढील हो जाते हैं (=प्रसन हो जाते हैं) । पर भाइ ! यह धन तो मालिका का है ग्वाले के हाथ म ता बस लठिया है (वही उसक पाम रहेगी) । धन—गाय गोस् जिनका ग्वाला चराता है । इतन चौडे (प्रस न) कयो होते हो—तना जात्र क्या जतात हा ? खान पाने का खमली है और नाचने को है नगराज (मौज बरन को बड लोग, काम बरन का गरीब) । वोट देने के बाद कोई हीग लगाकर भी नही पूछता । इस राज क सूने (बिना देयभाल वाले) खत म ता खाते है सुअर और (उनके बदल म) पाटे जाने हैं पडने (भम क वच्च) ।

दखते ही हैं कि इन वारह वर्षो म क्या उजाला किया ? क्या नौ की तेरह की ? आ उर्य हात ही नही तपा वह जस्त होता हुआ क्या तपेगा (जिमक आरभ म हा जनता का सुख नही मिता जाग चदकर उमस क्या आगा है) । इनकी भारहीन बाता म अनाज क दान कम जोर ककर जधिक । बारा घून् विलात हैं (कोरा भूरी बात बनान हैं) । पमग म पाच सर (पूर-क पूरे) भून् बालत हैं । क्याकर विश्वास हा ? पर एनकी उनायी हुई चिडिया ता पेग पर बठता ही नही है ।

ज नेता लोग दूगर बलती दख, पगा बलती को दख नी खुद रा दोसण डाक, नागा रा दासण उधाड खुद तो गुरुजी बेगण खाव दूजा नै परमोद वता। खेरणा मूडन हस तथा हाडी न काळी बताव । पराया धन माय लिद्धमीनाथ वणियाडा है आ र गाला मे घाटा दौड पण देखा ज तात रा घाटा कित्तक कास चालै ? कुण इ देस रो भलो का चाव नी ? आप-आप रो रोटा हेठ सँ खीरा दवै घर घर ज ईज माटी रा चूल्हा है जाणा सब हा पण दरमावा कोनी चिडिया-मू किमा खेत छाना है ? राज करियो नी तो काई हुब देखा ता हा धान खावा कोई धूड ता नी खावा परणोज्या नी तो जान ता गया हा तू म्हार मूडा म जागळी दे म्है थारी आख म दू—जकी बात ई हुयी है थारी आगळी खा जाऊ, थारी आख फोड दू पण दोनू हाथा म अँ लाडू घणा दिन को खैला नी इद पछ राजा तो करणा पडसी

अब जाय नै बाजी सा सास लिया थोडी ताळ ताई पाम्बती लागी नामी

य नेता लोग दूर पहाड पर जलती जाग को देख लेते हैं पर पैरो के पास जनती जाग का नहीं दखते । अपने दाप ढकते हैं पर लोगो के दोपो को खालते हैं । गुरुजी स्वय तो बंगन खाते है पर दूसरो को प्रबोध (नान) दते हैं (=दूसरा का उपदस देते हैं स्वय उस पर नहीं चन्ते) । खेरणी ( ) गुड का हसती है । तथा हाडी को काली बताता है । (जो खुद दोपा स भरे है वे दूसरा को दूषित बताते हैं)

दूसरो के धन पर लधमी के नाथ बने हुआ हैं इनके गाला म घाटे दीडते हैं । पर देखें ये तात के (बनावटी, दिरावटी भूठे) घोटे कितन कोस चलते है (भूठे वादे कब तक जनता को प्रभावित करते हैं) ।

कौन इस दंग का भला नहीं चाहता ? अपनी-अपनी रोटी के नाचे सभी अगारे रखत हैं (सब कोई अपने मतलब का ध्यान रखत हैं) । घर घर म य ही मिट्टी के चूल्ह हैं (सब की यही हालत है) । (हम) जानते मब कुछ हैं पर प्रगट नहीं करत । चिडिया से खेत बोन से छिपे हैं (दाई से पेट क्या छिपा है) । राज किया नहीं ता क्या हुआ देखत तो हैं । नाज खात हैं काई धूल ता नहीं खाते । बिवाह नहीं हुआ ता क्या हुआ, बरात म तो गय है । तू मरे मुह म उगली दे मैं तेरी आख म देता हू—वही बात हुई है । तेरी उगली खा जाऊ तेरी आख फोड दू—बस दानो हाथा म लड्डू । पर दाना हाथा म य लड्डू अधिव दिन नहीं रहण—ईद के बाद रोज तो करन ही पडगे ।

अब जाकर बापजी ने सास लिया (बोलना बंद किया) । थोड़ी दर तक आसपाम लागी की ओर देखते रहे । अपना थैला बापिम काख मे बाबा,



देखता रह या आप रो थलो पाछो खात्र म थालियो चातरा मू नीचे उतरया दात पीसता थका बोलया—करिया जानो अयाय, छेवट घडो भरिया रसी, ओ पाप फूट-फूट नै निकळला आज तो था रा सतीर तिर मनचाया कर लो थगत आन्नण दो था रा सूखा काठ ई डूबेला आ तो घटत-बधन री छिया है ओ तो चढणो जितोई उतरणो है देवा बकरा री मा कित्ता थावर टाळै ? थान आज कऊ—याद राखजो के ठडो लो' ताता-न खात्र ना ! ठीकरी घडो फोडेला !

चढूतरे से नीचे उतरे । दात पीसते हुआ बोल—किया जानो अयाय आखिर (पाप का) घना भरकर रहेगा (अवश्य भरगा) यह पाप फूट फूट कर शरीर से निकलेगा आज तो तुम्हारे (मीले) गहतीर तैर रहे हैं, मन चाहे (काम) कर ला (पर) बधन आने दो तुम्हारे सूखे काठ भी डूब जायग, यह तो बढने घटन वाली छाया है यह तो जितना चटना है उतना ही उतरना भी है (=उतरना भी होगा) देखते हैं कि बकर की मा कितन सनिवार टालती है (बब तक खर मनाती है आखिर वह तो बलिदान हाना ही है) । तुम्ह आज कहता हू—याद रखना—कि ठटा लाहा गम दोहे का (अवश्य) पावेगा —ठीकरी घड का (अवश्य) फाडगी—गरीबों का गज्य अवश्य होगा और ये गरीब अयाय करने वाला का अवश्य अंत करेंगे ।

## मिनखजमारो

( ललित निबध )

[ मदनगोपाल शर्मा ]

[ श्री मदनगोपाल शर्मा का जन्म स १९८३ म सामोद (जयपुर) म हुआ । जब य तीन बष के थे तभी इनके पिता का देहांत हो गया । इनका लालन-पालन मा की देखरेख म हुआ । इनकी माता राष्ट्रीय विचारधारा की महिला थी जिनका सबध महिला-आश्रम, वर्धा स रहा । माँ की जन सेवा दश भक्ति और निर्भीकता का प्रभाव इनकी रचनाओं पर भी पडा । इनकी शिक्षा वर्धा वन स्थली नवलगढ जयपुर और दिल्ली म हुई । इस समय ये राजस्थान विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग म प्राध्यापक है ।

शर्माजी मूलत कवि हैं । इन्होंने हिन्दी और राजस्थानी दोना भाषाओ म कविताएँ लिखी हैं । गोख ऊभी गोरडी इनकी राजस्थानी कविताओं का संग्रह है । 'रवीन्द्र पद्य कथा बगला स राजस्थानी म किया गया अनुवाद ग्रथ है ।

कवि हान के साथ साथ शर्माजी सफल गीति-नाट्यकार और गद्य लेखक भी हैं । इनके गद्य म इनका कवि रूप सबत्र भाक्ता रहा है । भाषा प्रवाहपूर्ण एव शैली जाकपक है ।

संकलित निबध सबप्रथम मरूवाणी बष ७ अक २ म प्रकाशित हुआ था । राजस्थानी निबध संग्रह में भी यह संगृहीत है । भावात्मक प्रवाहमयी शली सधी हुई प्रौढ भाषा आर प्रसगानुसार लाकजीवत तथा लोकसाहित्य के रोचक प्रसगा और उद्धरण क कारण यह रचना अत्यन्त सुन्दर बन पडी है । ]

( १ )

मिनख-जमारो यू ही नी मिल चाडी सू लगा र कुजर लग जितरी इण धरती-पर जीयाजूण उण-में मिनख री जूण स नू उत्तम मिनख-न घडता घडता

मिनखजमारो—मनुष्य-जन्म, मनुष्य-जीवन । नी—नहीं । चाडी—चाटी । लगा र—लगाकर लेकर । कुजर—हाथी । लग—तक । जीयाजूण—जीवा की योनिया । स नू—मबन । घडता घन्ता—गन्त-गदत बनाते-बनाते । जाण—

जाण पिरजापन रो बारीगरी ही निठगा ंण चितराम-न रच र चाताग जाण  
 आप चितराम हुयग्यो । मिनग वार् जाण विघाता र हिशड गी हूक जाण गगा  
 जी रो मात्र व जाण िगाशा रा आज जाण षड्रण रो गुनाग वनपूडा रा  
 तिवाम धा विसूरो मिरग गी गारम माग माय चात्रिग री प्याम रमाय माग रा  
 जामा पन्रया मिंग र ष्य जाण मिष्ठा रो गुभ सवळग मारार ह्या जाण  
 आद जाणो-जती मिहजा रा जपन्तप गावार ह्या जाण धरती रो मिणगार  
 ह्या मिनग वाद जनमिया जाण धरती ग गा-म परमानमा रा आप रा  
 औतार ह्यो ।

जिण घडी मिनग जनमिया पछीडा विडद वेसाण्या चिडवाल्या भगड-गीत  
 गाया किरण उगाडो उगूण आगण कूवू विगेरघा ववळ-ळ आमवणा रा मानी  
 सुटाया आवा मारिया भन्नर गरणाया वसत रा विगास ह्या आभ उजान ह्या

मिनख-जमारो ङण धरती रो धन व अनमान रतन ङण रतन धन-न  
 जिनगाणी रो जमोदा भोळी भर भेयो वाभन्ना धरती-न माय प मित्रिया  
 तो गा भरि, राचा प्रम-व्यागना रा प्यासी मतशाळी भीरा माथ रो मा मान  
 मोद भरी नाचा । भोळी गात्र रो गाप्या राजमहला री मीरा सू नी दा पग आग  
 वध आप ही नी नाची उण-न भी चळू भर छाद्य र तार नचाया छवाया अर  
 जीत्रण रो परम फळ पायो पण उणी रतन धन-न वभात्र वेच र कितरा-ही  
 जलम अकारथ गत्राया हीरो दे र भाठा विमायो । घागा दे र घाटा खाया ।  
 हीरा र हजारी लाखीणो विणजारो करम वसाई र हाथा वाडी र मान मिनख  
 पणो वच्यो जौहरी रो बटो कोपला री दनाली म हाथ वाळा करया वडा-वडा  
 मुर नर मुनि जानी ङण मिनवाजून री चादर आणे पण मली ही करी वाइ मा

---

माना । पिरजापन—प्रजापति ब्रह्मा । निठगा—समाप्त हा गयी । चितराम—  
 चित्र । नितारो—चित्रकार । वार्द—क्या है माना । व—या जयवा । चन्तण  
 —चन्त । तिवाम—पौगाव । सारम—गौरभ । चात्रिग—चात्रिक । रमाय—  
 रमाकर । मिस्ती—मस्ति । जा—आदि । औतार—अवतार । जनमिया—  
 जनमा । विडद—विहद । चिडवाल्या—चित्रियो न । किरण-उगाळी—किरणो  
 के उच्ये न । उगूण—पूव व प्राची िगा व । गरणाया—गूज । जाभो—  
 आकाश । जिनगाणी—जिगाना जिदगी जीवन । भन्यो—पकडा ग्रहण किया  
 लिया । मायड—माता । राची—गोभित हुई । चळू भर—चुलू भर । कितरा  
 ही—कितनो ने ही । भाठो—पत्थर । विमायो—(माल) लिया (म० व्यवसाय म) ।  
 घाटा खाया—ज्ञान उठायी । हजारी—हजारों का स्वामा । लाखीणो—लाख

राम रो पूरा दाम कबीर जनन सू आढर ज्यू री-त्यू धर दी ता काई ह्यो ?  
मिनख रा या डोळ देख घरती रोयी, विधाता उदाम ह्यो

मिनखजमारै रो या विगत क्यू ? फूट मे कीडो क्यू नाग जाव ? दीव री  
जोत काळख क्यू ऊगळ ? वणराय म दावानळ क्यू परजळ ? जिण सुरसरी रो  
पवित्र धार गगात्री म इमरत उण फूट उण म ही आग सददमिळाव-म (?) लूण  
कुण घोळ देव ? कुण वा ठगणी जो पन्दै ओल रह अणूता खेल खेन ? इमरत  
म जहर घोळ ? रमतिया तोड ?

उण रा नाम कुण कोना जाण ? दो आखरा रा नाम—माया जो आप री  
खेट में लाक अर परलोक-न समट मिनख र सगळ करम धरम न नचाव भरमाव  
अर पान घ्यान नसावै जिण मू वडा वडा जती मनी भी पार ना पाव काइ है  
या माया ? फकत अेक इदरजाळ ? राम र खेत-न चुगती चिडकल्या-न भगावण  
-न खड यो अेक अडवो ? तान तोडत तबूर री अक टेक ? क या है काई सागोपाग  
टोस चीज जीवण में दरमै है जिण रो रूप जिण रो रग ?

माया रा रग अथाह रूप अपरपार कोई उण-नै फळ विहूण सेमळ र  
पूत रूप देव, कोई न वा अिगजळ र रूप भासै कोई सीप मे चादी र भरम-न  
ही माया ममभ कोई न काळ रा विकराळ रूप धर डराव तो कोई-नै कामण  
र रूप लुभाव भरमावै । माया रा सहस नाम—इदर र इदराणी हा बैठ  
रमावि र विरमाणी लाभ मोह कपट पाखड भूठ रो माया रो विकट  
कटक जग जीतै तुळमी-सा भगत भी हा हा खाव राम-नाम रै सरण जाव

तो काई है या माया ? इण बडी बडी वाता-न कुण समभ ? कुण कनै  
बघाऊ टम है जा वाता रा बडबूत्या थाप ? जठ ता गीता अर गायत्री जिसे

मूल्य वाला लाला का स्वामी । विणजारो—विणजार वजारे न -यापारी न ।  
काइ मा—किसी जेक न ।

डोळ—डग । काळख—कल्मष, कालुष्य । वणराय—वनराजि वनसमूह ।  
सदद मिनख — ? । वा इ०—वह ठगिनी है । ओल—आट म । अणूता—  
अनहोते निरथक । रमतिया—बिलोने । कुण कानी जाण—कौन नही जानता ।  
खूट—वस्त्र क बोने म आचल म । सगळ—मारे । क—अथवा । फळ  
विहूण—फलहीन । फूल विहूण—फूट विधान । इदर र इदराणी इ०—कबीर  
के प्रसिद्ध पद की अेक पक्ति का रूपांतर । हाहा खान्न—बीनता से गिडगिटाते हैं ।

बघाऊ—अतिरिक्त । टम—टाइम समय । बडबूत्या—गाबर की चपटी  
छेन्दार टिकियाअे । थापणी—थापना । मरात्र—इस्तूर डग (?) ।

गायान दूषण रा ही सरास्र बोनी छाछ कुण बिलीवै ? तो पर समभयो—जो आप-हा-आप मात्र अर औरा न नी मात्रण द बा ही है माया, जो आप-ही आप रात्र पण औरा-नै नी रावण दे बा ही है माया, जो मिनखन गुमाराण स डिगारै अर कुगल चलाध बा ही है माया

फूल म कीट क्यू नी राग ? उण रा जग गदगी म जो है गन्गी री बभाई पाण फूज इतरा सर्ग फूज सक मुळक सव पण वासना र कीट मू चित्ता र कीट-मू चित्ता रै धुण-सू वध नी सक तो गदगी रा नाम ही है माया वासा री वनी-म आग लागणा ही जोग है ध आप रै वस-नै विसार वगनी हवा री काना-बाती री अक् फूज माय आपस-म लड मर प्राध अर ईर्ष्या री रगड खाय बळ मरै वरवा अर जादवा री वस रो-वस जड-मूळ सेती गयो इणी अक फूक-स इणी जक आग-सै औरा री विसात ही बाई ? तो ईर्ष्या द्वय रो ही नाम है माया

त्रिलो चस उजास कर सही पण कुण-न सरावा ? त्रिलो सनह र पाण बळ पण मनेह परायो घाणी मे तो विचारा तिल पिल पिस, मनेह रस रो दान कर वाता भी रुअड री ता पराई कुरवाणी रै पाण जो जस रो चानपो होव उण म काळूम लागणी ही चाहीज त्याग-म कपट रो कळास सदा ही लाग ता कपट रो ही नाम है माया

सुरसरी भागीरधी र देवलोक र धोळ हेमाळ री चकचूध सचाई आग्या म रडकी तळ हरियाळी दख तिसळी ना फर गुडक ती ही चलीगी ऊचा ठाव, दिव्य धाम भूतगी जळ गदळ्याग्या अर लूण रठग्या ठीक ही तो हे—जीवण री आत्र डीध मुकाम-म ही अडिग रव नीच गिरता पाण गदळाव्र ता पतन रो ही नाम है माया

मात्र—समावे । कुगत—कुमगि पर ।

कीट—बाडा । पाण—बल पर । इतरा सक्—गव सं भर सकते है । मुळक मर—हम सकते हैं । वनी—जगल रोही । जोग है—याग्य है चाहिजे । विसार—भुलाकर । वगती—चलती हुई । कानाबाती—कतवतिया । वस—जलता है । सरावा—सराह । पिल—पन जाते हैं । रुअड—रुई । चानणा—प्रकास । काळूस—कल्प कालिमा । कळास—कालिमा । धौळ—धवल मपद । रडकणां—पटकना बटकना । तळ—नीच । तिसली—फिसली । गुडकणो—गुडकना । ठाव—स्थान । गदळ्याग्यो—गदला हो गया ।

माया मोहक रूप घर छळ छाया सू उडता पखेरुआन पकडै छाया-  
 प्रासणी सुरसा नाम अहि हू री मा हडमानजी न लीलवान सदा ही मूडा फाड  
 होती आयी रीत, इण-मे काई अनीत सुरसा यानी सुंदर रसा स्वादा, हाळी  
 पिरथी री ममता जो भात भात रा विसय वासना रूपी सापा री जणणी है,  
 सदा ही ठाडी रै मान नम्र परत द्रिड निहचै र हणमान-न लीलवा री करै  
 पण द्रिड निहचै दूणो विकराळ रूप घर दूणा जोस धारै पकड-मे नी आत्रै जो  
 पकड मे आ जात्रै ता साचा हणमानजी नहीं घर-बार पिरथी गिरस्ती री मोहक  
 ममता-नै तोड जा भी फलाग लगायी समंदर पार हुया अर नरपुगव हणमानजी-  
 री पदत्री पायी पण जो इण पार ही रह्य्या ब वानरा ही रह्या तो घर-बार-  
 री ममता जो पुरसारथ अर पराश्रम र आडी आव, उण रो हा नाम है  
 माया

( २ )

पण इण तरिया ता माया रा रूप गिणाया गिणीज नहीं कठ लग रामाण  
 करा ? मिनख-जमारै-न सुधारण रो कोई सीधो-मा नुसखो वतात्रो तो फेर  
 मुणा—मिनख री सगळी गतविध रो आधार है चितवणी, कथणी अर करणी  
 मिनख जिनगाणी री गाडा रा दो पडा—कथणी अर करणी चितवणी है उण रो  
 घुरो घुरा अर दो पडा ठीक-ठाक ता गाडी चाल सडाक सडाक चितवणी  
 घुरो है घुरो घुव-द्रिड-अटल रहणो चाहीजै चित मे चचळता मरदानगी रो  
 निसाण नहीं भगवान-म अटल भरोसो राख द्रिड निहच हाळो ही निसक रत्न—  
 नहच होय निमक, चित नह कीजै चळ विचळ ।

अ विधना रा अक राई घट न राजिया ॥

रळग्यो—मिल गया । आव—कांति आभा । डीध—दीध ऊच । जहिह  
 रो—मर्षो की । होती आयी इ—यह रीति सदा स हाती आयी है । अनीत—  
 अनुचित । हाळी—वाली । मान—वरावर । फलाग—छलाग । आडी—  
 सामने (विष्णु वन कर) ।

तरिया—तरह । रामाण—रामायण लखी चौडी कथा । चितवणी—  
 चितन । जिनगाणी—जिदगानी, जीवन । पडा—पहिय । हाळो—वाला ।  
 नहचै—निश्चित रूप स । अक—लख । राई—राई भर भी जरा भी ।  
 राजिया—बारठ कृपाराम का सेवक जिसको सबाधन कर बारठजा न दाहे  
 बनाये थ, राजस्थान म ये दोहे अत्यन्त लोकप्रिय हैं ।

काम पड्या पती मोच विचार कर मा निमळा पाणी पला पाळ बाध  
साई पानी मोच र काम कर पण कर र वर ना साच कर—

साच कर मा मूर है कर सौच मा कूर ।

मोच करया मुख नूर है कर साच्या मुख धूर ॥

जन् चितवणा रा धुरो ठीक रत्न ता कथणी रा पडा गुडाजता ही रव सार  
सोरा जव सठ-न अक माधू कह्यो—वरणी चानती राख सपत तिन दूणी  
वधती राला सठ बेजो धला तिया कारीगर लाग्या वरणी कद रोकी  
नही सठ करोडपति हुयग्या कारीगर री करणी र सार उण री करणी-न  
भी चानता रहणा पडयो वा कमाई री जुगत जोड नी बढात्र ता चेजार् री  
करणी रक जात्र इण मत्र म यो ही भेत्

कथणी भी जरूरी है कारी करणी गूगी जर कोरी कथणी लगडी अर  
चितवणी र विना दायू ही आधडल्या तीयू जकठी हुत्र तो पार पड कथणी  
विन जिनगाणी रा विणज चाल नही अणबोल्या रो खाखसो भी विना विवयो रह  
जाय अर वोन जी-वा दूमळा-का बालबाला छ कथणा गाड-सी भीठी हुत्र  
तो हित्रड म इमरत धुळ मना रा मेळा हुत्र इण खाड म खरच काई नी केर  
भी मिनख सूम त्रिपणता कर कागो कुण-मू लत्र अर कोयल कुण-न देव भीठा  
वचन मुणाय-क मनडा हर लव सो कथणी म मिठास राखा अर राखा उदारता  
गुड न द तो गुट री सी वात तो कह पण कोरी वाता-मू भी छान को बध नी  
वाता ही-वाना रा वत्रारी ढपाळसय वाज इण वास्त कथणी र करणा री गोट

निमळो—निमल । पाणी इ०—पाना (की वाड क आन) क पहल जो पार  
बाधे जो आपत्ति क जा पडन क पूव उसका उपाय कर रक । कूर—नीच ।  
नूर—ज्योति आभा । गुडीजणा—लुत्कना चलना । सोरा—महज मुख  
कर । रक्ता—रहेगी । चेजा—तामार का काम । करणी—(१) काम करना  
(२) कनी नामक तामीर करने का औजार । जुगतजाड—युक्ति मन ।  
चेजारा—तामीर करने वाला कारीगर । भेत्—रहस्य ।

आधडल्या—अधी । विणज—व्यापार । खाखला—? । दूमळा—गुस  
भूमी । वत्रारी—यवहारी । त्पाळमल—मूख । वाज—बहा जाता है  
(स० वादघते) । गाट—विनारी, मगजी ।

सगाणी ही पड, जद ही जिनगाणी री चुनड चावी चितक क्यणी म पातर कु पातर रो भी घ्यान जरूरी है नहीं तो सीख वानर न दयी घर बइयै रो जाय' ब्राह्मी वात हुक वात ठोड ठिकाणी दस करणी पड नहीं ता दसा विगड इण सारु अक बहाणी याद पड—

चाळीस गात्रा रो ठाकर जगी गढ चिणायो गढ हीघो अर मजवूत सिफत या क माय वडण-रो अर बार निसरण रा गला घणो वूढ्या ही हाय का आन्न नी अक जाट बी गढ-न दखण आयो गढ दिखा'र निपाया पूछया-पटेन । गढ किम्योक लाग्यो ? जाट बाल्या—गढ तो घणा ही ठाडो पण मानै यो साच आवै क ठाकर मरसी जद उणा-न काढगा कठी कर ? सुणता ही ठाकर न रीस आयी—मर हिया फूट्या । इत्या कात्रळ वाळ अर दे दिया उण-न काठ म पटनण वड वेग-न भेज्या क जाय र वाप न छुडा त्यावै छारो जाय बोत्यो—वापूजी-न इण तरिया बोण री काई पडी ही ? उणा र भाव भलाई ठाकरा-न काट-काट र काढया होव जा भस पाणी म । छोरो ता वाप स भी वधाक उण-न भी काठ मे जड दिया दूसरा वटो छुडावण न जायो र कही-व तो दा यू ही मरव है उणा-न क पत्नी ही इण तरिया काभो बालण-रो ? उणा र भाव चाय ठाकरा-नै महन माय ही खाडा खोद र गाड दिया हात्र ल्या यो और भी सुभानत्ता । उण न भी नाग ही काठ म घर दियो पटेनण घणी चतर पूची जेळी जेवडी ल'र तीनुना न छुडावण जाय कह्या—ठाकरा । जठ तीन डागरा आया हा क ? मिनख री बोनी बालणिया तीन डागर

---

चुनट—चुनडा । चितक—चमकती है । बइयो—बया पक्षी बया और बदर का प्रसिद्ध कहानी की ओर संकेत । ठोड ठिकाणो—ठौर ठिकाना, उचित अवसर । ण सारु—इसके लिये तस सम्बन्ध म ।

जगी—बहुत बडा । टीघा—ऊचा । निपत—विशेषता । वडणो—भीतर जाना । ठाणे—जवस्त मजवूत (स० स्त० ध अ० टडड) । कठीकर—कहीं स हाकर किधर स । कात्रळ—धुरा । उणा र भाव—उनकी ओर से । जा भस पाणी म—

वधाक—विशेष बत्कर । कोभो—धुग । चाय—भन हा । सुभानत्ता—सुभान अत्तात्—बत्कर । साग—साध । जेळी—जेई पावा । जेवडी—रम्मी । डागरा—डागर जानवर । अठीन—धर । स्याणा—मयानी ।



म्हारा अठी-न जाया हा ठाकर ममभग्या कै पटेलण घणी स्याणी तीनुवा-न छोड दिया ठीक ही ता है भगवान मिनख-न वाणी री बखमीस करी इण बखमीस रा निरादर ठीक नही बोलण री सुरता विना मिनख मिनख नही डागर ही वाज

ता कहणा-अणवहणी री निग राखणी ही पडै सु-पातर दख र ही कहणो चाहीज जिण तिण र भाग दाढ मार र दुगडो रोवणो जगहमाई करावणी है—

दुखिया आग दुख कहा, आधा दुग हर लय ।

मुखिया आग दुख कहा हम-हम ताळी दय ॥

कहणी री अपनी मरजा कहणी रा जपणा मीळ घरम भाणस-कु भाणस र साथ कहणी रा घूघटा मतो उघाणे रहा तो इज्जत जावरु जात्र कहणी री लाज बहू बंटी री लाज सै तिद भर घाट नही कहणी री पत मुहागण री पत-स भी घणी ऊची कहणी र भाग करणा रा मन्ग साथ दायू मा-जायी भणा कहणी अर करणी रा सगपत सीधो सुरग रो पय कहणी अर कयणी म जितरो जातरो उतरा ही खाडा पड कहणी रा भोग वापडी करणी-न भुगतणा पड कहणी री बोल्योडो दायजा करणी-न दणो पडै—

रहिमन जिम्मा बावरी कहि गइ सरग पताळ ।

जाप तो कह भीतर भया जूतो खात कपाळ ॥

इण वास्त कहणी अर करणी र बहणाप-न दूटबा मनी दया दोयू धरम रा भणा अेक री लाज दूसरी ढक अेक रा घात्र दूसरी भर दोया-भ मेळ ता विस भी इमरत हुत्र—

कहणी भीठी न्वाड सी करणी विष सा होय ।

जे कहणी करणी हुत्र, विख ही अमरित हाय ॥

सुरता—ध्यान सावधानी । निग—निगह ध्यान । सुपातर—सु पात्र । दाढ मारणा—घाड मारना, चिल्लाना ।

ताळी देय—ताली बजाता है, हसी उडाता है ।

घाट—घटकर कम । पत—प्रतिष्ठा । माजायी—सहोदर । भणा—वहनें । सगपत—सगाई सवध मेल । आतग—अतर । खाडा पड—हानि हानी है । बोल्योडा—बोला हुआ, मानता किया हुआ । दायजा—दहेज ।

सरग पताळ—स्वयं स पाताल तक का बडी बडी अेक भली-बरी बातें । कपाळ—मिर । बहणापो—बहनापा । कहणी—कयनी बातें । करणी—करना, काम । जे कहणी इ०—यदि कहन के अनुसार ही काम किय जाय ।

( ३ )

कहणी सोच-सोच, अर करणी सतोल-सतोल कहणी अर करणी रा दो पालडा अर चितवणी इण री डाडी इण ताखडा म मिनख रा लोक जर पर लोक तुलीजै करणी म काण राखै सो स्याणो नही काणो करणी म ल दे बराबर रव तो विणज बेपार धरम री लीक चल पण आजकल तो स ही ददा बण्या विना ही गोदी मे तल्लो खिलायो चाव देवण री बेळा अेक नना सो राग हरै या नी मालूम क—

बास चढी नटणी बहै होत न नटिया काय ।

मैं नटकर नटणी वणी, नट सो नटणी हाय ॥

अेक कानी तो है सूभ जो देवण रो ताम नी जाण बीजी कानी है सत जो देता देता भी रीत नही रीभ नहा उण री निजरा माटी भी सोना अर साना भी माटी पातस्या ममदसा रा भीर मुसी घनानद फकीरी ले र ब्रज म जा बँठघो त्रिस्ण प्रेम रा मतवाळा गीतडा गाव पण कोई चुगल ईर्ष्या रो मार्या वर लवा रा औसर देख नादरस्या-सू चुगली करी—तिल्ली काई सृटो ? जर (धन) तो मीर मुगी घनानद दाया बठघो है नादरस्या रा सिपाही जा र घनानद-सू कहा—जर जर जर घनानद रै त्रिस्ण नाम ही धन तीन मूठी ब्रज री धूळ फक बात्यो—रज रज रज '

जा प्रम रस रा प्याला सू छक्या है धरम ही जिणा रो धन है उण प्रेमिया री निजरा मे जर (धन) रज (धूळ) है अर रज ही जर

सोच—विचार कर । सतोल—तो नकर । ताखडी—तराजू । पनडा—पल्ले पल्ले । चितवणी—चितन । डाडी—डडी । तुलीज—ताल जात हैं तुलत हैं । काण—पासग, कमी । स्याणो—सयाना समभदार (सवान) । काणा—काना कमी वाला अवान (महा सयाना का विपरीत) । ल दे—लेना देना । बपार—व्यापार । लीक—बना-चाया माग । स ही—सभी । ददा=(१) दकार (२) दादा (३) दना । तल्लो—(१) लकार (२) लाल (३) लना । नना—नकार इनकार । नी—नही ।

नटणी—नटनी बास के खेल करन वाली । होत ड०—पास म होन पर काई इनकार न कर । नटणा—नट का खेल करना, नकार करना । नटणी—(१) नटना (२) इनकार करन वाली ।

कानी—ओर, तफ । बीजी—दूसरी (द्वितीय) । रीत—शाली हाता है । निजरा—नजरा म । माटी—मिट्टी । पातस्या—बादगाह । ममदसा—मुहम्मदगाह । नादरस्या—नादिरशाह ।

पण गिरस्ती रा या धरम नही गिरस्त म ता दोयू हाथ रळ्या घुप लेण ण बराबर चार्न घर म फाटघा गूदडा नही, लुगाई रें अग-पग लाज डकण-न दे हाथ चार नही लीरक-लीरा डाव अर ढालोजी बीच बजारा घरम री धुजा फरकात्र या डोग निर्भे नही गिरस्ती न ता खानी रो वसूला वण वसून ही वसूल अर न रिई सी रिदाई धार छीलण तकात पर ही-पर वगात्र उण न तो वगैत री तरिया गायू ही करोट बराबर वाटणो-खाणो पड—  
रदोही होत्र मती मती वसूला मित्त ।  
हाथ करवत मारिसा वाटण खाटण वित्त ॥

( ४ )

ता ण तरिया जद चित्तवणी र धुर वषणी अर करणी र पडा पाण मित्त ख जमार री गाडी चाल ता मोज आत्र सो तो ठीक पण ण गाडी रो गेलो पुण सो है ? गला हजार है पण तीक अक ही वा है मरजाद गी लीक पण जर पत री लाक पण घट ना धन घट अर पन घट ता मत—

पणघट जाता पण घट पणघट कह सब कोय ।

कहिया पण किण विध घट जद पण घट ही हाय ॥

जिण र घट पण ही नही उण रो काई घट ? नाकहाळा री ही नाक कट, नकटा री काई कट ? जयवा फेर दूसरो अरथ भी घट—जिण र घट (प्राण)

गिरस्ती—गृहस्थ । दोयू इ०—दोना हाथ मिलाने से घुलते है । बरोबर—समान रूप से । चीर—कपडा । लीरक-आरा—फटे हाल फिरती है । लीर—कपडे की फटी चीर । डोनाजी—पति । घरम री धुजा फरकात्र—धमात्मा बनने का डाल करत हैं ।

खाती—चर्ई । वसूला—अक औजार । वसूल ण—नेता गी नेता है वसूला छीलन को अपनी आर फेंकता है । रिदो—रदा । रिदाई—फक्कडपना ।

धार—धारण करके । तकात—तक । पर—दूर । वगात्र—फेंकता है । करीत—आरा । तरिया—तरह । करोट—करवट तक । वाटण—दूसरो को दना त्याग करना । खाटण—कमाना भोगना । रदोइ इ०—ह मित्त । न तो रदा हाना जोर न वसूला । करीना (जारे) के समान देने जोर सेन (त्याग जोर भोग) दोना म सम्पन्न रूप से चित्त रखने वाता हेना । धुर—धुरी पर । पडा इ०—पहियो क डस । गला—माग । पण—पन वचन । पत—प्रतिष्ठा । सत—सत्य । पणघट जाता ण०—पनघट जाने से पन घटता है इमीलिअ मव उसे पनघट कहत है पर कहिय जब पन पहले हा घटा हुआ है ता वह फिर कस घटगा । घट—गरीर म । नाकहाळा—नाकवान । घट—नागू हा मकता है ।

मे पण है उण री पत भूठी लोकलाग री लीका-हू घटै नही भूठी मान मरजाद, भूठी लोकलाज, बूडा अधविस्त्रासा-म पत रो वासो नही पत रो वास घट ही मे है लीक-अलीक रो याव घट ही म होवै घट घट जातम राम है साई-याव करै

पण इण घट-नै, इण अत करण-न देख्यो कुण ? विजळी री चीराफाडी री मसीन-नू भी डागदरा इण न दरयो नही, तो म्हू विश्वास कइमा करा ? ठीक है तरकेगुरजी ! धार तरक रो अजीरण हा रयो है सीधी सी, मोटी सी, वात किया रुचै ? धारा सारा ज्ञान बीजगणित र आधार पर है थ बीजगणित म अमुक चाज बराबर है 'क क्यू मानो हो ? यो क कठ-सू आयो ? रमागणित मे बिंदु रो नाप नही लवाई मोटाई नाव री ही नही केर भी बिंदु री सत्ता क्यू मानो ? कहानी म अके राजा हो जर अके राणी बिना पत ठिकाण इण राजा राणा न हुकारा क्यू साभळो ? अ सगळी चीजा उनमान रो है जर आखै ग्यान विग्यान री नीव ही उनमान है इण वास्तै इण घट न भी मानो मानो हा नही माजा मोचो, सवारो भा ! कवि विहारा रा सबदा म-आख जणाव जगत-न जाख न देखी जाय इणी तरिया इण अत करण सू ही सारा चातणो सारो उजास हुव पण ण-न देखणो दारो है मायली ग्यान री आख उघड ता सारो खेल दीवै या ग्यान री जाख उघाडो घट न छाणा जर पिछाणो माटा माटा मडल माळिया चिण्या काई हुवै जे भीतर हिरण म मल रो मळवा दव्या पडयो रथ हिंद महासागर म पटथा काई वण जे कदे हिवड र प्रेम सरोवर रै रस-सू दो घडी भाज्या नही अर हिं गलो फलाग्या काई ज दिला री द्वारा उलाधी नही ? पडोसी दीन कुवी टाबर र चादडल-स मुखड रा आसू पू छ्या बिना चाद नै छवण रो जोम भूठी ठमक है सो खुदाई-नै सभाळण-सू पहल्या खुदी नै सभाळा दुनिया भर-न मने पण पहल्या अपण-आप-न गढो जद ही या मिनख-जमारां सफळ हुसी

लोका हू—नीको मे । बूडा—भूठे । डाकदरा—डाकरा ने । क्या—कम । तरकेगुर—तर्केश्वर बहुत तक करने वाला ।

साभळा—मुक्त हा (?) । उनमान—अनुमान । दोरा—कठिन । भायत्री—भीतर की । छाणा—छाना जावा । भाळिया—मकान क ऊपर का काठरी, अटारी । चिण्या—चुनन मे तामीर करन से । भोज्या—भोग । हिमाळो—हिमाचल । फलागणा—छलाग मारना पार करना । पूछ्या—पाछे । सुनाई—स्वरता । खुदी को—अपन आप का । मना—मजाआ । गना—गदा बनाओ ।

## रतनकुवरी

( रेडियात्रेकाकी )

[ दानट्याल जोभा ]

[ श्री दानदयाद जोभा का जन्म बीजानेर म स० १९८६ म हुआ । आपका परिवार मूनत जसलमेर का निवासी है । हिन्दी और राजस्थानी म इहोने समान रूप स निम्ना है । राजस्थानी लोक-साहित्य एव लोक-संस्कृति के ये अच्छे ज्ञेयता एव पाठ्याता हैं । राजस्थान के जनपदीय सतो एव राजस्थानी कवयित्रियों पर किया गया इनका शोध काय महत्वपूर्ण है । राजस्थानी म इहोने कई कथिनाएँ, कहानियाँ निबन्ध एव एकाकी लिखे हैं । राजस्थान के कहानीकार भाग २ इनके द्वारा सम्पादित ग्रन्थ है जिसमे आधुनिक राजस्थानी कहानियाँ संग्रहित हैं ।

‘रतनकुवरी एक ऐतिहासिक रेडियो रूपक है । इसम जसलमेर के राजसूय रतनसिंह और अनाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफूर के बीच हुए युद्ध एव सवि प्रस्ताव की गृहभूमि म रावल रतनसिंह की सुपुत्री रतनकुवरी के वीरतापूर्ण त्यागमय चरितत्व की भाँकी प्रस्तुत की गयी है । ]

( १ )

( रण रा बाजा बाज है )

रतनकुवरी—(हठ विश्वास भरय स्वर म) दाता ! आप कई बात री चिंता ना कराया । जद ताई इण दुग रो अंक अंक पत्थर पत्थर-मू जुड़ियोडो है । जद ताई इण दुग रो अंक-अंक वीर बाकी है । जद ताई इण दुग री रिच्छा में करू ला दाता ! म करू ला अनाउद्दीन भले ई आप री सगळी सेना रो बळ अजमाय ल, हमनो कर ल पण रणवका भाटी राजपूत कदेई पाछा पग नो देखला दाता ! नी देखला ! आप निघडक हुय बरिया न भगावा । दुग री रिच्छा हूँ कर लेमू

रतनसिंह—(वीर-जोगी गभीरता र बोल सू) सावास बटी । सावास ! मन प्यार म् आ-ई आसा ही । हूँ जाणू हूँ तू सगळो सरदार र साग इण दुग री रिच्छा घणी चोखी तर कर सकला पण ध्यान राखजे तू लडावू ई नही, घणा घूत भी है बला ! घणा घूत !

रतनकुवरी—(हरलता र स्वर म हसर) दाता ! आप कोई बात री चिंता

ना कराया म्हे मगळी मॅभाळ लेमा आप ता इण मतवाळा मळच्छा-नै अक वार वताय दो कॅ 'उत्तर भड विगाट भाटी वत्राप्रणिया अँ राजपूत अर वा रा अ दुग इण तरै कवज म नही आय सक दाता ! आप पघारा विजयथ्री आप र साग है

[घणकरी सेना र माग रतनसिंघ विल-म ऊतर नगारा री आस्राज आत्रै ]

( २ )

रतनसिंघ—(वीरता र भाव-मू ) आ राजकुमारी कोनी गुमानसिंघत्री ! म्हारो राजकुवर है देखो विण तर रो जास है इण म !

(गुमानसिंघ वीच म बोल र कवै)

गुमानसिंघ—क्यू नी अनदाता ! क्यू नी ? आप राजकुमारी रो पाळण पामण कुवर-मू ई वसी कराया आप तीग तरदारा अर घुडमचारी रो जम्हास कराया वा आज सगळा ई काम आय रया है

रतनसिंघ—(गरब भरय सबदा म) क्यू नही गुमानसिंघजी ! क्यू नही, हू जाणू हू मगळ सरदारा रँ माग रतना चोखी तर दुग री रिच्छा कर सकला काइ मजाल कँ गनु रण र जीवत दुग री वार ई साडी कर मक ?

गुमानसिंघ—(अचरज भरय स्वर मे) काल गी ईज ता वात है अनदाता ! उण बुज-माथ माचों लेय र राजकुमारी जिण भात मलिककाफूर रा दात सट्टा किया हा हू तो दखना ई रयग्यो माच कँरू अमनाता ! राजपूत जात-नै इण तर री राजकुमारिया माथ धणो गरब है घणा अभमान है

रतनसिंघ—राजपूत री पारण्या रण म हुब देखोला जाज गणवका भाटी राजपूत आप रां भाम सारू विण तर वरिया रा माथा तरदारा री धारा उतार अर विजय पाव (मक र) देखो ! दुसमणा री सेना वधती थकी आय रयी है

( ३ )

रतनकुवरी—(अचरज भरय स्वर मे) पन्मा ! देख ! जो काई आय रयो है ? बळवत ! माचों सभाळ ल भाव कोई हुव वच र जीवता नही जात्रणा चाहीज बळवत ! दाता रो सदेस चार दिन सू नही है ? काई हाल है कोई पना नी

बळवत—(सशय भरय स्वर मे) बाईसा ! जन्नदाता रो ईज जादमी हुवला !

रतनकुवरी—(अक तीर चलाव तीग र गिरण री आवाज आवै वीरना भरय स्वर-म) कुण मानत्री है ? रक जा !

अजनबी—(हरयोडी बोली-म) अ नदाना रो सत्तम नायो हू बाईसा ।

रतनकुवरी—(अचरज भरय स्वर म) सत्तम ! (शोध भरय बान-मू) मदम लापो है ? यान दे बठ मू काई सत्तम है ?

अजनबी—(घाड साहम भरय स्वर म) गुपत सदम है बाईसा । सगळा न सुणाक्षण रा बानी

रतनकुवरी—(शोध भरय स्वर-म) धूत । (तीर चनावण जर भीगी वजाक्षण री आवाज)

मिपाही—हाजर हू बाईसा ।

रतनकुवरी—(पत्कार र स्वर म) पक्क नी इण धूत न म्हार-मू छळ करणिय इण यन्न न बताय दा क इण दुग रो अक अक पत्थर जाग है छळ करणिय-न काई षड मिल इण दुग म जमन्नत । बताय दा इण छळिय-न ।

(राजकुवरी अर दूज सनिवा री आग वधण री पग धुनी)

( ४ )

हारपाळ—गम्मा । बार्मा । अक अरज है ।

रतनकुवरी—(हत्ता अर प्रससा र स्वर-म) जाग रया हो आप । आप माय ईज तो दुग रो भार है आप राजी तो हा ? बार् वात है ?

हारपाळ—(धीर धीर वात करण री चष्टा) जाज जाधीरात-न यन्न सेनापति मलिकवापूर इणी रास्त-मू दुग म आत्रा मातीमहन र आगआळी साकडी नाळ र दोया बानी मारचो लय र सगळा न पक्क सन्नण रा खरा इतजाम कराय दीजा बाईसा । (हसर) सोनो देवण रो वायणे करग्यो है कितोच खरो उतरला देखणो है

रतनकुवरी—(वारता भरय स्वर-म) सावाम । सगळो प्रवध हुय जामी वाबासा । आप आज महमाग न भेज दिराया भाटा सरदार घणी षडी मिजमानी देमी दुगमणा-न

(आग वधण री पग धुनी)

( ५ )

पत्मा—पूरा सात दिन वातग्या बाईसा । आप आख ई भेळी नी करायी आप नीद करवो । सगळा सरदार दुग री रिच्छा कर लेसी ? अब ता निन रा ई उगाळा है बाईसा ।

रतनकुवरी—(विस्त्राम र स्वर म) पत्मा । तू नी जाण जीवण-मरण र इण भणा म नीद नी आय सक पदमा । समरभाम म जक-अक भूल रा कितो मोल चुकाणो पड पदमा । तन नी भालम । जद ताई सगळी यवन-सेना न

खाड़े री धार नी उतारू जद ताई इण आख्या म नीद नी आवला, पदमा !  
नी आवला नीद तो सगळी यत्न-सना-नै सुताय र ईज आमी

[धीमी धीमी पग धुनी अर वाना री अवाज ]

( ६ )

सेनापति—मावास द्वारपाळ ! राजपूत वायद रा घणा साचा हुव चाली  
अब आगै रा रस्तो वताय दो काद नेर है ?

द्वारपाळ—(विस्वास भरय स्वर म) बाकी सानो कठ सेनापति !

सनापति—(विस्वास-सू कर्नै) मिल जामी द्वारपाळ ! सगळो सानो ई नी  
पद अर इनाम भी मिलमी पण म्हारै सागै चाल र रस्ता ता वताय दा देखो  
कोई आय नी जात्रै ?

[थली निकाळण री आवाज रै साथ आग वधण री पग धुनी सुणीज है  
अचाणचक पगा री आवाज बद हुव अर वूदण री आवाज आत्र सागै ई  
घणाकरा आदमिया र भेळा हुवण री पग धुनी ]

सनापति—(अचरज भरय स्वर मे) हरक चान न नाकाम करणिया अ  
राजपूत रण-सूरमा हावण र सागै-साग हरेक छळ सू पूरी तरै वाकफ है इणा  
न जीतणो घणो मुसकल है माहमद ! घणो मुसकल !

माहमद—(निरासा रै स्वर म) खुदाबद ! अब ता आपा सगळा इण  
दुग म कः हा सगळी वात माथ पाणी फिरग्यो खुदाबद !

( ७ )

रतनकुवरी—(वीरता भरय स्वर म) साबास जसब्रत ! साबास सेना  
पति ! समर भाम म राजपूता-सू सामना करता थावग्या अब छळ रो रस्तो  
अपणाया धाखो दणा चाया ! सनापति ! जिवा राजपूत जुध म कटना जाणै,  
व सोन र लाभ म आप रा अर आप र देस रो नास ना करालला छळ अर  
बळ-सू ना जीत सकौला सेनापति ! नी जीत सकौला ! जिण राजपूता आप री  
जान-मान अर भातभोम साह मरणो विचार राख्या है वै इण तर जीत्या नी  
जाय सक सनापति ! वाला काई खातरी करू ? जसवत ! सगळा र हाया  
नागोरी घणा पराय दा

[हयकडिया री आवाज सगळा र हाया म हयकडिया पड है ]

जसब्रत—सिपाही ! सेनापति न ऊगूण बुरज म अर दूजा-न बाच-आळ उल  
राद बुरज म बद करैर चाबी लाय दो देखो किणा तर री तक्तीफ नही हुव !

[सगळा र चालण री पग धुनी रै माग माग हयकडिया री आवाज ]

रतनकुवरी—(नम्रता र स्वर म) जसब्रत ! सगळी सना-माह रमद रो



प्रबध तो पूरो है ? कोई कमी तो नहीं आय रयी है ? मगळ बढिया-न रसद मिल रया है ?

जसव्रत—(धोडा रुक र) ठीक ई प्रबध है पण

रतनकुशरी—पण बाई ? जे कमी हूमी तो अँक बखत भोजन करसा मगळ बढिया-न बराबर खुराक मिलणी चाहीज ! जसव्रत ध्यान राखजे !

(धोडा र टापा री असाज)

( ८ )

गुमानमिध—(विजय र स्त्रर म) लम्मा बाईया ! अनदाता री विजय-सार आप-न बधाई है शाही सना-न अनदाता खदेड र माळ्ळें तक पाचाय दी है आप जिण वीरता-सू दुग री रिच्छा करी अनदाता धणी धणी बधाई भेजी है

[वात न बीच म काठ र रतनकुशरी आप रो हार उतार हार उतारण री अत्राज आस ]

रतनकुशरी—(घण हरख-सू) गुमानमिध ! जो लथो बधाई म म्हार गळ रो हार आप मगळ भाती सरदारा-ऊपर धरती-न घणो घमड है आ दुसमणा री सेना आप रो मगळो छळ अर बळ जजमाय लियो पण बाई मजाल क दुग री कार ई खाडी हुय जास ? (विजय र नगरा री अत्राज आव है)

गुमानमिध—(प्रसन्नता र स्त्रर म) बाई-मा ! दयात्री ! अनदाता मगळ सरदारा-साग विजय घजा फरावता पधार है

[अचाणचक अँक अजमबी रा आत्रणो ]

( ९ )

अजमबी—(नम्रता र वचना म) मलाम महाराबळ साहब ! जहापनाह बादशाह-का दन्तात्रज पेम हा !

रतनसिध—(शोध भरय भाव-सू) पदमसिध ! देखा ! यवनसाह री फेर काइ मना है ?

पदमसिध—(हस र) सिध-पद है अनदाता ! सनापति मलिकवाफूर-न छोड र मधि करण रो बालसाह सदेस भिजनाया है अनदाता !

रतनमिध—(राज्याचित्त गभीरता-सू) पदमसिध ! यवन-सेनापति-न म्हारें सामन हाजर करा (पदमसिध र जावण री पग धुनी)

( १० )

मलिकवाफूर—(गभीरता-सू) मलाम महाराबळ साहब !

रतनसिध—(स्नेह भाव-सू) सनापति ! युद्ध री वेळा-म काई पतो नहा लाग

सक कै किण री खातरी किण भात की जाय सकै रतना सू जाप री खातरी  
 म जरूर भूल हुई हुवैला वाई तकलीफ हुई हुवै ता ध्यान ना दिराया, अब  
 आप म्हारा महमान हो सेनापति ।

मलिककापूर—(घणै हरख-सू) महाराज साहब । राजकुमारी वीर  
 छत्राणी ५ नी देवी है देवी । जाप अके बखत भाजन कर भूखी रैय सगळी सेना  
 न अर राजबदिया नै पूरी तर रसद दी प्राणा रा वाजी लगाय दुग री रिच्छा  
 करी जद ताई इण प्रकार रा रणवका राजपूत अर छत्राणिया धरती-माथ  
 जीवै साब कवू महाराज साहब । कोई दुसमण इण भोम-माथ इघकार  
 करणो ता दूर, आख उठाय र ई नही देख सक महाराज साहब । मै जलम  
 भर राजकुमारी रो जहसान नही भूल सकूला

रतनसिंघ—(प्रेम भरय बोला म) सेनापति । यो लस्रो प्रमोपहार (दाना  
 कानी सू रण वाजा री अवाज )



बोदिया—उण मू भी को डरू नी जीवण रो माघो निचीड है—मत्यु, पण  
य कुण हो ? नीरथ जात्री तो बानी

ना स्वामीजी ! हू ता अक लेखक हू अठ फिरनो फिरता आयग्यो  
घणो चाखी अर गान जागा है यात्रिक नगरा र भी भडक्क जर थावन मू  
अठ जा र मन किनो बेमो मुख मताप पाव है जो अठ सू जावणो ही नहीं  
चात्र

फर घणो दाता हुआ आगर स्वामीजी म्हारा मितर वणग्या म्ह हमस  
मिनण लागिया

( २ )

अक त्तिन म्हें मनसा दवी र दरमणा साहू टुरिया म्हार माघ म्हारा  
भायला मररीशकर हा मनसा दवी डूगर भाध विराज है रस्ता घणा  
दारा छिन छिन म मत्यु री आशका मिदर पर पूगिया जद विचारा क ओजू  
जठ ननी जावा किस्ती दारी जाना है ।

म्हें माम खावण लागिया उण बखत म्हारी निजर स्वामीजी माय पडी  
तुरत बन जावन म्हा तोगा वमम्कार कियो व मुळक न वादिया—फरमावा  
नेयकजो ! किया झा ?

बोयी तरिया हू स्वामीजी ! जा मनसा नी मन री रळिया पूरता ज  
पूरता पण मारग म मरण रा भात्र ता घणा सूधा हुयग्या हा किस्ती दारा  
मारग है ।

स्वामीजी म्हा न अक खुण भ नेयग्या उठ व म्हा र मान बम ग्या गहरी  
मून भावन हृदिदर री जात्री-बाकी डूगरिया न गगा री आनी नेनी धारा दीग

मुळकिया—मुमकुराप । पगरा—फता । जाजू—फिर । अगानी—आग ।  
आय ग्या झा—जा गय है वन आय है । मट देमी—तुरत । चमकिया—  
चौक । निचाड—मार । बानी—नहीं । चाखी—अच्छी मन्तर । जागा—जगह  
स्थान । वाकना—धकावट । दमी—धनी विनेप अधिन ।

२ टुरिया—वन रवाना हुअे । साग—माघ । भायला—मित्र । डूगर  
मात्र—पहाड पर । दारा—वर्तिन शुभम । छिन—क्षण । पूगिया—पठने ।  
जाजू—फिर रळिया—रोदिया आनर व मनारथ । पूरता—पूरी वग्या ।  
सूधा—मन्त । गुणा—बाना । धम ग्या—उठ गय । मून—घोन (का स्थिति) ।  
डगरी—पत्थरी ।

आनीनेनी—रामना । राम ग्या न—जिय रही था । जाभ पागा—

रपी ही आभे पासो निजर 'हाल-न स्वामीजी कत्रण लाग्ग—तू लयक' है, तने  
 अेक कहाणी सुणाऊ—साची कहाणी तू जाणतो हुय्या क' इण अनास्था रै  
 जुग मे जद नास्तिकता रो जार है भिनस अेक कूडी खुशी र लारै पलो हो  
 रया है, घोषो भागवानी कर है आप रै लोगा र बीच म रय-न खुन नै  
 पिछाण कोनी, अणजाण वणै, त्रिलाकी र नाथ-नै खुली गाळिया बाढ, उणा  
 रो मरियोड ताई रो टाका कर दियो अडी वखत माय म्हारो अनुभव है,  
 इण मूनवाड रै तप रो निचाड है क अेक अजाणी अदीठा हस्ती है जका आपा  
 लाग्ग रो हस्ती री खिलाफत-म है, जको आपण लीक माथ चालत जीवण माय  
 कुचमादा कर है आडी पसरै है वा सगती कुण-सी है ? घणा दिना री घाटाई  
 मथाई र पछै हूँ समभियो हूँ वा सगती है ईश्वर—उण न भता-ही कुदरत  
 कवा, भला ही आत्म शक्ति पण हूँ उण-नै ईश्वर-हीज कर्हला—जको आपा  
 री बाया रै पीजर माय विराज है जका चेतन है उण म विराज है, अर  
 उण रो जमोघ अस्त्र है मत्यु

स्वामीजी गमीर हुय्या आग वालिया—आपान अठ जकी सुख सोख तो  
 दीस है जका फुठरापो दीस है जका चोखा चोखा मन न मात्रणिया चित्राम  
 दास है व सगळा कौरा चिलकारा है छिन म अनीठ हुवणवाळा है हिय री  
 आगिया मू जात्रो, था न रिद रोही ही रिद रोही नीमैला इण सुख माय कागे

आकाश की ओर (अध्र पादक) । साची—सच्ची (सत्य, सच्च) । जाणतो  
 हुयला—ज्ञानता होगा । अनास्था—अथद्धा थद्धा हीनता । कूडी—भूठी ।  
 लार—पीछे । गैलो—दावला (ग्रहिल) । घोषी—निस्सार । भागवानी—मप नता  
 भाग्यशालिता, उपन को भाग्यगाली समझकर तदनुकूल व्यवहार । रय नै—  
 रहकर । पिछाण—पहचानता है । अणजाण—अनजान । मरियोड इ०—मरने  
 तक ना । टाको—मृत्युभोज मरणोत्तर क्रिया । अडी—असी । मूनवाड—  
 गूयता निजनता । अजाणी—अनात । अदीठी—अदृष्ट । हस्ती—(१) सत्ता,  
 शक्ति, (२) अस्तित्व । खिलाफत—विरोध । लीक माथ चानत—साध  
 चलते । कुचमादा—गरारतें । आडी इ०—सामने जाती है सामना करती है  
 आगे बढन नहीं पती । सगती—शक्ति । घाटाई-मथाई—माथापच्ची भाव-  
 विचार । कुदरत—प्रवृत्ति । भला ही—चाहे । जको इ०—जो कुछ भी चेतन  
 है उम सब म । अमाघ—अचूक । मुख-मोवता—सुख गाति । मुख—स्वस्थता ।  
 दीस है—दिखायी पटनी है । फुठरापो—सुन्दरता अच्छापन । मोत्रणिया—  
 माहन वाल । चित्राम—चित्र । सगळा—सारे (सकल) । चिनकारा—चमक ।  
 अनीठ इ—अदृश्य होने वाले हैं । जात्रो—खलो । रिद रोही—घोर अरण्य ।

दुख ही-दुख है आणद म पीडा है आ पीडा-ही इसी चीज है जका कदई नही मरै—अमर है अजर है इन गी आठ पौर चौमठ घडी गी अनुभूति-हीज माणसा न बतावना क जीवण अकारय है वृथा है वा र दह मिदर रो ईस्जर जागला जद वा न जीवण रै निचोड रो ग्यान हुत्रला क मत्यु मगळा सू वमी पौंचत्राळी है इण मत्तु रो ग्यान हीज जीवण रा सत्य है

स्त्रामीजी सट सू थम ग्या फेर घोडोक हसर कदण लागा—उपपेण दवण रा सभाव पडग्या है—हू तन अक कहाणी मुणात्रता हो भिनख न र्दव्वर किया नाच नचात्र है उण री कहाणी ता मुण कहाणी मुण

---

कोरो—खालिम । अजर—वृद्ध नही होने वाली । आठ पौर चौमठ घडी—दिनरात । शमला—जागेया । निचाड—सार, रहस्य । वेमी—अधिक । पौंच—पहूच, मामथ्य । खटसू—भेवाअक । थम गया—ठहर गये । घोडोक—थाडा मा ।

## लालजी 'र हीरजी-की कहाणी

( लाव-कथा )

[ सग्रहकार—मैकालिस्टर ]

[ लालजी 'र हीरजी की कहाणी एक लाव-कथा है। इसमें रूप परिवर्तन, वेग-परिवर्तन दबो-मयोग आदि कथानक ऋद्धिया का सहारा लिया गया है। ठगा की वस्ती और उनके लोक व्यवहारों का चित्र यथाथ बन पडा है। राजस्थानी लोक-संस्कृति की कई विशेषताएँ इस कथा द्वारा सूचित होती हैं। इसकी भाषा जयपुरी है। यह श्री मैकालिस्टर द्वारा सग्रह की गयी थी और उनका जयपुर राज्य की बालिया क नमूने नामक पुस्तक से संकलित है। ]

( १ )

बेक गूजर छो जी-की लुगाई करकसा छो चौकी दिया पाछे गोवर-पीळी र जातो जी-न वा चूला-का जाळघा मे भेळा कर देती अइया छ म्हैना ताइ भेळा करघा गयी फेर या जब दिन पीर चली गयी जर दो रोटी कर र ल गयी गला म अक भूकी व्यावर वंठी-वंठी रोत्र छो वा अक राटी ऊन दे दयी अर आप अक खायी

ऊ-का पाठा सू त्रो गोवर पीळी जो द्वा भेळा कर छो त्रो सिड गयो गूजर-न जिद द की वुरी सडाद आयी वो सारा घर-न हेरयो अस भाई । या कर्क की वाम आक छे हरता हैरता जब ऊ का हात चूला-का जाळघा म पड गयो अर ऊ गोवर न फेंकधा नाग्यो तो ऊ गोवर मे अक लाल लाधी लाल ले र वो आप क मामर लुगाई कने गयो

जिद ऊड सासरस गत्तार ई-गत्तार छा ई त्रा न दिखायी जिद र सब गूजर-न क छ—र वावा । या ता कोई लाल वाकरो छ इ न काई दिखावा लाग्या ? जिद जा र अक वाण्या न दिखायी वाण्यु क ह—म्हान काई परख तू ता कोई

१ जी की—जिमकी । पीळी—पीली मिट्टी । र जाता—पीछ रह जाता बच जाता । जाळघा—ताक । भंठा—इषटठा । अइया—जस । पार—पाहर । व्यावर—गभिणी । वा—वह=उसन । ऊन—उमना । जिद=जद जब तब । हेरयो—देखा । जम=कि । जद—जब=तब । लुगाई—पलना । ऊड—वहा । छा ई—ये ही । क छ—कहत हैं । वाण्यो—बनिया यापी

सराफ-नै लजार ऊ-नै दिखा गूजर ऊन सराफ-क ल गयो जिद अक-न दिखायी दूसरा-न दिखायी, तीमरा-न दिखायी अस ऊको तो बाई ई मराफ सू मोल कोन हुयो जिद पेर वो ऊ लाल-नै पेर जौरी-वाजार म सेठ सऊकारा म गयो सब सेठ-सऊकार भेडा है गया अन ऊ-को मोल तो कोई-सू ई कोन हुयो पण वा मे-सू अेक लख पती मऊकार छो जी-न कोई बेटा-बटो कोन छो वो बोल्यो क छ—भाई ! इ को क्यू मोल सू तो बाध न पर तू-सू जितरो धन चाल उतरो ई छकडा जुपा'र ल जा अर या लाल म्हान दे जा, म्हा-क तो या ई बेटा छै

सो सऊकार गूजर न जित्तो ऊ-सू धन चाल्यो उतरो धन देर वा लाल ल लानी अर आपका भैद म पालणू घला र ऊ पालणा मे ऊ लाल-न बठाण दीनी अर सठ र सठाणी दायू आता र जाता ऊ क भोगा द सो वा तान छ भैना ता गूजर-क रही छी अर तीन म्हैना अब सऊकार-क रही मो अइया पूरा नो म्हैना म ऊ लाल को तो पुतर व्है गयो अर ऊ-को नाव लालजा पडघा सऊकार सब बडा-बडा पिडता न अर जोस्या न बुला र या पूछी अस इ लान को पुतर कया हैगा सब पिडत अर जोसा बोल्या-यो तो कोई बडा पु न को परताब छ जिद सऊकार दलीस मै तो बाई ई अस्यो पुन वान करघो भेर गूजर-क ठीक पडायो जिद गूजरी लया—और ता मै बाई ई पु न कोन करघो पण मै पीर गयी छी जिद जेक भूकी यावर न गला म जक राटी तो दीनी छी जिद फेर या सुण र पिडन अर जोमी बो-या—ई पुन का परताब सू इ यो लाल का बेटो है गया छ

( २ )

वो अब घडा वधता पलका वध्या अक दूसरा मऊकार क छा अेक बाई जी-वा नाव हीरजी छो जद हीरजी अर लानजी दो या क सगार है गयो

ऊ—ऊम । जौरी—जौहरी । वान—नहीं । आर ई न—है हा नही । जुपा र—जुनवाकर । अस—सा पादपूर्ति क लिजे प्रयुक्त निरर्थक गत् ।

पालणू—भूना । घला र—डलवाकर । बठाण—बिठा । भाटा—भून को हिलान वाला घबका । म्हैना—महीन । पुतर द०—पुत्र हो गया । जोस्या—जाशियो (ज्योतिषा जाइमी) । कइया—कस हा गया । परताब—प्रताप फल । अम्पा—असा । ठीक पडायो—पना लगनाया । भूकी=भूखी ।

२ घडा वधता २०—घडी म बड उतना पन म बटा । छा—धी ।

पण पणमसर की जमी मरजी हुई अम लालजी का बाप मरग्यो सठजी का मरवा-सू वा-का घर मा आ गयी नानारी अस लालजी अर ता की मा दायू मीनत मजूरी कर र आप रो पेट भर सगाई करघा घणा दिन चहै गया जिद हीरजी-की मा जाणीम भाई । जब सेठजी सू ता मर ई गया अर वा-क अब बयू आथ-नै-माथ अस भै हीरजी की सगाई दूसरी जगा कर दीनी कोई सजोग-सू लालजा ऊ इ जोसी की साळ पढवा जाय छा जड हीरजी पढै छा पण हीरजी बयूक लालजी की सुरत पिछाण लीनी वा लालजी-न सब हाल-हवाल पूछ्या अर मन म जाण गयीस या-ता म्हागे वीद छ जिद सा लालजा-नै क छै—थ इ मोदी-का सू था दो-यू मा-बटा-क ताई खावा-न ले-जाबो करा अर थे रोजीना पढवा आबो करो

थाडा दिना पाछै हीरजी-को व्यास रूप गा ऊ दिन तोरण मारना पाछै हीरजी मर लालजी दो-यू मरदाना लत्ता पैर र घोड्या माल चड घोड्यो नचावा लाग्या जिद जान-का तो जाण—भाई । भाडा-का छै अर भाडा का जाण—भाई । जान-काछ बै ता दो-यू नाचता-नाचता कोसा निकळ गया दिन ऊगता ई वा का हेरो माच्यो नोग-भाग हेरबा नै निकळ्या सो वा को ता कोसा ताई पता ई कोन लाग्यो जिद जान-का तो जनवास चल्या गया अर भाडा वा भाड चल्या गया

( ३ )

वै जाता-जाता अक ठगा-का गात्र मे-पोचकर हात मूढो घोवा को विचार करयो ठग तो कोड सूटवानै गया छा अर ठगा की सुगाया घान-दख'र वाली-हाय-हाय । आज कोड चल्या गया ? या बात हीरजी सुण लीनी जिद नै

बाई—बहन यह पुत्री । नादारी—दरिद्रता । मीनत—महनत । करघा—किय । घणा—बहुत । जिद—तब । आथ न साथ—धन न बन ।

जगा—जगह । ऊई—उसी । साळ—शाला, पाठशाला । जाय छा—जाते थे । जड—जहा । पढ छा—पढते थे (आदराथ बहुवचन और नरजाति) । बयूक—कुछ-अक । पिछाण—पहचान । वीद—डूहा । थे—जाप । इ—इस । मोदी-का-सू—मोदी के यह स । ने-जाबो करो—ले जात रहा । राजीना—रोजाना । जाबो करो—आते रहो । रूप गो—स्थापित हो गया । तोरण मारघा—तोरण मारन के (तोरण मारना विवाह की अक रस्म है) । लत्ता—कपडे । माल—ऊपर । जान-का—बरात के (लाग) । भाडा-का—क्या-पक्ष के (मडप) । हेरो माच्यो—खोज हुई । जनवासो—बरात गृह ।



ऊडा सू आगा न चल्या गया ठगा न धरे जाता इ वा-की जुगाया वा-नै या-क पाछे विनाया हीरजी-मालजी वा न आता देख र बोल्या—तीर उठातो ठगा म-सू तीन तो हीरजी-का तीर सू मरया अर तीन लालजी का सू मरया जेक बाकी बच्यो सो वा-का घोडा ले र आप-का गात्र म आ र घा-न बाध र आप अेक घोडो न'र वा-के पाछ-को-पाछ गयो

हीरजी अर लालजी चाल्या चाल्या अक वडा सर-नै फलस पोच्या जर उठै जाप-का घोडा भी बाध दिया जर आप भी उतर पड्या वी ऊड ई रमाई करी हीरजी ता रसाइ करवा लाग्या अर लालजी ऊ सर म चीज वस्त लवा न गया आ ठग आ र वा-के घाडा की लीद वीणवा लाग गयो अर हीरजी ऊ-नै के छै—रे तू क्यू म्हा का उठा र ले जायला काई ? जिद वा क छ—ना महाराज ! मैं ता इ न बच र खावा को मलीको करूला सो हीरजी ऊ-न गरीय जाण र आप-क राख लीनू जब लालजी वजार जा र दाणा हाळा-न ता दाणा को साई दियाया जर फेर तमाळी-क बीडा लवा न गया सा तमानण वा-न माडा कर र बठा लीना हीरजी रसाई छाड र लालजी न हरवा आया जिद देख काई क लालजी तो भीडो हुत्रा तमानण-क ब'या छ देख र उळटा ई चल्या गया

ऊ सैर को राजा नार-की मिकार खेनवा-न रोजाना जाय अर हीरजा भी रोजीना देखवा न जाय जेर दिन नळा-म जख्यो भारघो नार आ गया सा कोई-सू ई का मरघो न जिद हीरजी जाप-का घोडा-माळा-सू तीर-की द र

३ वाड—वहा । ऊडामू—वहा स । गिनाया—भेज । मरघा—मरे मारे गये ।

बच्यो—बचा । चाल्या-चाल्या—चन चल चनने-चनते । फलम—प्रवण द्वार पर । ऊ—वही । वस्त—वस्तु । वीणवा—चुगन अेकत्र करन । क्यू—कुद्ध । म्हाको—ट्भाग । जायलो—जावेगा । काई—कसा । गावा-को—भोजन वा । मनीका—प्रबध व्यवस्था उपाय । आप-क—अपन पाम । णाणा हाळा—दान वात अनभिज्ञता । माइ—पत्नी वानचान पक्की करन के लिए आरभ म निया जान वाला अल्प धन या वस्तु । नियाया—राय । मीने—मडा । तमानण—तबातन । उळटा ई—वापिस हा । नार-वा—गिट वा । नळा—आमसम की भूमि म नाब वह भूमि जा प्राय वर्षा के पानी के बहन म दूर तक लबीर के रूप म बट गया हो । भारघा—भारी । काई सू—किसा म भी । घाण ३०—घाणे पर स तार की मारकर ।

ऊ नारन मार नाख्या जिद राजा हीरजी न बुना र क छै—रे भाई जुवान ।  
 आ तू म्हाकी माघ रवा कर राजा र हीरजी जाय छा जिद राजा न तिम  
 लागी राजा क छ—'वार पाणी चायज जिद हीरजी सीमा म म अक पाणी  
 का सीमा बाढ र राजा नै पाणी पा दिया कर राजा क छ—भाई । अब ता क्यू  
 लावा नै भी चायजै जि हौरजी सीमा म-मू बाढ र दा लाडू ता राजा नै  
 दीना अर नो आप लाया राजा राजी व्हे र हीरजी न क छ—भाई जुवान ।  
 तू न चायजै गा ई मा । जद हारजी क छ—और ता काइ भी नै साना-वा  
 मौ टका राजीना चायजै छ मा राजा माना रा सौ टका तो राजीना कर  
 दीना अर ऊ न आप-वा बंटी परणा दीनी अर हीरजी का नाव लखटकिया  
 जुवान पट गया अर राजा का भी सब काम हा ई करवा लाग गया

पर वा सब जिनाबरा-को उडाई करायी बदे घाडा-वा कटै काइ-की  
 कद काइ-की अर पाछै ई-माछ भीडा-की जिद सब मर-वा भीडा आया अर  
 तमानण-वा भीडा भी आयो हीरजी ऊ भीडा-को डाने ताड र लालजी कर  
 तीना फेर जाप-नै दम जावा नै राजा-मू सोम भागी राजा वा-नै नरा घन-  
 दीसन देय र सोख देय र विदा कर दीना

हारजी र तालजी अर वा राजा-की वाइ तीयू चाल्या घोडी-मी दूर  
 चाल्या र अक नदी आगी ऊ नदी-का तीर माळै डरा कर नीनू फेर राजा-की  
 बंटी न ता डरा-की चौकस बठा गया अर हीरजी अर लालजी आप का चाकर  
 न ले र नदी मे हावा-न गया चाकर-न ता कपडा खोल र वा-की चौकस  
 बठा दीनू अर आप दायू हावा-नै नदी म घस्या अर हीरजी ता लानजी  
 न कटै—देवा थे क चुभक्या म निकळा अर लालजी घाल्या—दवा हीरजा ।  
 थे वे चुभक्या म निकळा मा हीरजी तो चुभकी मारी अर थो ठग लालजी  
 -की नाड काट र घड पाणी म रवा दियो अर मूडी-न कूचा म फेंक'र सब

---

नाख्या—डाना । रवा कर—रहता रह रहा कर । तिम—प्यास (तपा) ।  
 चायज—चाहिये । वार—अवार अभी । सीसा—खलीता घला । सीसा—  
 पात्र । पा दियो—पिला दिया । का र—निकाल कर । काई भा न—कुछ भी  
 नहा । टका—स्पय । परणा दीनी—विवाह दी । क २०—कभी कि-ही  
 की कभी कि-ही की । मर—गहर । सोख—विदा । नरा—बहुत । विदा कर  
 दीना—खाना कर दिये । वाई—बंटी । नदी—नदी । आ गो—आ गयी । माळ—  
 ऊपर । चौकस—चौकसी चौकीदारी मे । बठा—बिठा । दवा—देखें । चुभकी—  
 डुबकी । नाड—गदन गला । मूडी—माघा । कूचा—अक पौधा ।

माल मता लय र भाग गयो हीरजी निकळ र देख तो चाकर भी कोन अर सान जी भी कान निकळया सानजी है ता निकळ । मो हीरजी अर राजा-की बाई दा यू गन्न जर विलाप कर अतरा ई म महादेवजी अर पारवतीजी मिरतलोक म आया सा महादेवजी ता क स ई गन चालो अर पारवतीजी क ई गल चालो फर महादेवजी अर पारवतीजी ऊ नदी-वन आया जिद पारवतीजी हठ करया अक अ लुगाया कयो रा । छ ? यान काई दुख छ ? या का दुख दूर कर र मैं तो आगा-न सरकू ला महादेवजी क छ—पारवतीजी ! य बाब्रळा हुया छो अउ तो सवी दुखी छ कुण-कुण क दुख-ताई हठ करोला अर कुण कुण-को दुख दूर करोला पण पारवतीजी ता जेक मानी न अर बोल्या—महाराज या का धणी-न सरजावत कर र या-का दुख मेटोला जिद टी मैं तो अगाडी पण धरू ली जिद महादेवजी घड तो पाणी म-सू काढयो अर माथो वूचा म-सू सेय र आगळी-का छाटा दीनू दताई लालजी सरजीवत है र बठ गया फर महादेवजी अर पारवतीजी तो चल्या गया

( ४ )

जर हीरजी र राजा की बाई लालजी-नै ले र डग आ गया ऊड जा र हाया घोया अर रसोर्क जाम र बठया वाता कर छा अतराई म रात पड गयो जिद बाल्या ता क छ—अब रात रात तो अड ई रस्या अर दिन ऊगता ई चल्या चालाला अर ऊ राजा की बाई न हीरजी आप-को भद खोल दीनू जर वही—भाई ! मैं भी थारी नाऊ लुगाई ई छू अर य आपणा दो-या का घर घणी छ—सो दस चाल र आपा दो यू ई मा-सू व्यात्र कर लस्या वा राजा की बाई क छ आछया न ती-यू ऊडा-सू चाल्या चाल्या अक उजाट भगान वन मे पोच्या ऊडा-सू चालना चानता ऊ टगा-का गात्र-कै पठस आया ऊड लक्ष्मी

मान मता—घन शीत । वान—नही (है) । ह थ तो—हा तो । अतरा ई म—इतन म हा । मिरतलोक—मत्यु नाक मत्यु-लोक । क म—कहत हैं कि । अक—कि । आगा-न—आप को । सरकू ली—सरकू गी चलगी । बाब्रळा—बाबले (आदराय बहुवचन और नरजाति) । माना न—नही मानी । मरजीवत—मजीवित, जीवित । जगाडा—जागे । छाटा—छीग । ह्व र—हाकर ।

४ अर—और । रात रात—रात भर । अड ई—यही । नाऊ—नाई समान । य—ये । घर घणी—घर क मालिक, पति । देस—स्वदेग । आच्छयो—अच्छा । बेगान—निजन ।

विणजारा-को टाडो पड यो छो लकखी विणजारो त्रा नै देख र कै छ—भाई मानवीओ ! अड तो थान मार नाखसी यता ठगा-का गात्र छ अर अड अक ठग की बटी छ जो सकड यान मार मार र त्रा का धन खास लीनू छै हीरजी अर राजा-की बाई या बात सुण र डरप्या लालजी-नै कै छ—म्हाराज ! अडा-सू वेगा चाना पण लालजी कै जिद आ गयी कै छ—म्हे तो ऊ ठग-की बटी-नै देखस्याँ अक वा कसीक छ लालजी हीरजी-न अर ऊ राजा की बाई-न क छ—ये मरदानू भेस कर र आगँ चाल र फलाणा गाव म उतरो मै वी आऊ छू सो हीरजी अर राजा की बाई दो यू मरदाना साग कर'र घोडा माळै चन र ऊ गात्र-न चाल्या जी की वई लालजी कही छा अर लालजी ऊ डै ई र गया

अब गात्र मे ऊ ठग की बटी-न ठीक पडयो सो ऊ को बाप भाई लालजी कनै विणजारा का टाडा म आया आ र कै छ—बाबा सा व ! ये तो म्हा-की बाई-न परण र ई छोड गया अब तो घरा चाला जर मिजमानी जीमो सो लालजी जाबा लाग्या जिद विणजारो वान दो-तीन तो विणजारा माथ दीना अर त्रा न मिग्वा दीना अब थे रात-न म्हैल पधारो 'र ढोलणी-माळ चडा जिद पैली ढालणी-को पल्ला हुघाड र पाछ बठज्या लालजी गया र जीम्या चूटधा ठग-कै घर जवार्ई न गीत गाळ गाया पाछै दिन आध्यो जिद म्हैला पधारधा ठग-की बटी ढालणी विछायी र कही—बठो लालजी जा र ढोलणी उपर चढबा लाग्या जिद अक कूट उठार बठधा जिद दख तो नीचा न अक खाडा म कौयला भगभगाव छ ठग-की बटी जाणी अब ई-न तो ठीक पड गयो दूसरी ढोलणी विछा र मो गया दिन ऊगता ई लालजी तो उठ र विणजारा का टाडा

ऊ डा-सू—बहा से । फळस—प्रवेग द्वार पर । लकखी विणजारा—लकखी बजारा । टाडो—बला का समूह । मानवीओ—मानवा । अडै—यहा । नाखसी—डालगे । सकड यानै—सकडा(लोगो) का । खोम लीनू—छीन लिया । डरप्या—डरपे, डरे । अक—कि । कसीक—क सी अक कसी । मरदान—मरदाना । भेस—धेप । माग—रूप परिवर्तन वेग धारण । माळ—उपर । ठीक पड या—पता लगा । वन—पास । परण र—चाह कर । घरा—घर म । मिजमानी जीमो—महमानी के (भोज) जाम । म्हैल—महना म । पधारो—जावें (पद धारण से) । ढोलणी—पलग(डी) । परला—पल्ला । हुघाड=उघाड कर खालकर उठाकर । पाछ—बाद म । जीम्या चूटधा—जीमे जूठे (भाजन समाप्त किया) । जाय्या—अस्त हुआ ।

म आ गया हात मूडो धोरा-न गया अर टग आप-की बग न क छ—काल न ता आज महा

( ५ )

दूमर तिन लानजी फेर टग-क घर जाग लाग्या जिद विणजारी क छ—भाई ! आज थारा प्राण जानी लालजी क छ—देसो मैं वो ऊ प्राण लवा-हाली न ले जाऊ तो-ता म्हारो नाम लालजी सो लानजी टग-क घर गया अर रमाई जीम चूठ र रात पढा र म्हैन पधारघा अर चौपड-पासा खेलवा लाग्या जिद लालजी टग की बटी-न क छ—भली आदमण ! त न अक वात पूढ़ू छ जक जा य अतरा मिनल विणास्या छै या का पाप पुण-न नाग छ या वात तू थारा बाप न पूढ़ज या क छ—आच्छधा ! जिद रात-न ता व सो गया अर तिन ऊगता ई लानजा सो हात मूडा धावा-न उठ'र विणजारा का टाडा मे चल्या गया

ऊ ड रमाई त्यार हुई रमाई ह बनी बगत टग की बेटो आप का बाप-न क छ—दादाजा ! मैं थान अक वात पूछू जस जो मैं अतरा मिनल विणामू छू या को पाप पुण न लाग छ बाप क छ—बनौ ! कर जान ई लाग छ तू या वात आज कइया पूछी ? बटी क छ—ना दादाजा ! मैं तो या इ पूछी छ रमाई जीम र दिन आध्यो जिद लालजी फेर म्हैन पधारघा व ई जा र चौपड-पासा खेलवा लाग्या अर लालजी पूछी क छ—भली आदमण ! काल म तू न वात पूढ़ी जी को थारा बाप सोई उत्तर दीनू या क छ—म्हारो बाप कही स—बेटो ! कर जा न ई लाग छ जिद लानजी ऊ-न क छ—बावली ! तू क्या जतरा पाप कर छ ? देख थारा पाप कोई-बी बटात्र न य थारा बाप भाई पाप ता थार बन करात्र छ अर भाल जाप उडाव छ मान तो सब क वाट आ जाय अर पाप तू-न अकनी न ई लाग मो तू राम का घर म आगा न कोई जुवाव दली ? देख यागे सगो बाप ई

कू—काना । काई इ०—क्या देखत हैं कि । खाडा—खड्डे । भगभगत—जल रह हैं । ठीक पड गयो—पना लग गया । मूडो—मूह । त तो—तही तो ।

५ ऊ—उम । लवाहालो—वनवादा । चौपड—चौमर का खेल । आदमण—आदमी की नारीजाति । भली आदमण—भला मानूस । अतरा—इतने । मिनल मनुष्य । विणास्या—मारे (विनाग स) । हूती इ०—होते वक्त । कइया—कम । याई—यो हा अस हा । जी-न ई—जिसका ही—उसी को । जिद—जब तब । वात्र—हिंस्र म । अकनी—अकेली । आगा न—जागे बाद म जावर । जुवाव—

तून या क दीनी अर धारो सगी कोन हूयो सा तू तो आपणै देम चली चाल,  
ऊड मतखण्या म्हैला-म तो रबो कर, खूब धन-दौलत भोग विलास अर चन कर

ठग-की बेटी कै छ—या ता साची छै, चालो, बार ई चल्या चालो सो ठग-की  
बेटी आप-का बाप का ताळा-ग्राळा तोड र खूब धन-दौलत काडर गाठ-शाठ बाध र  
त्यार बहै गयी अर बाप-का नारा म जाण अक ऊटडी ले र, मब ऊ-क माळै  
साद र, जाप अर लालजी दोयू बठ र आधी-का ई चाल दिया

दिन ऊया नरो दिन चढ गयो जिण ठग बोत्यो क छै—जाज बेटी जवाई कोन  
ऊठथा ? जा र देखे तो ऊ ड ता कोई बेटी न जवाई जिण ठग क छ—वेगे आछू या  
दगो दियो अर ठग बेटा न हलो पाड'र कै छ—देवा, वेगा-मो ऊठ'र दर—जे  
ऊटडी कसी छ अर कसी कान ऊ ठग-क दो ऊटडथा छी जक तो सारा दिन-म  
साठ कोम चाल छी अर अक डोड सँ कोस चाल छी जिद बटा क छै ऊटडी ता साठ  
कास हाळी गयी छ, डोड सँ कोस हाळी तो बधी छ कोड जधेरा म ऊ-क भोळ वा  
लगा मा मुण र बाप कै छ—ता बग ! क्या-की फिकर नै बार चाल ल्या छा सा  
ब्र कूची कर र बाप-बेटा दोयू चाल्या लालजी-की अर ठग की बेटी की ऊटडी  
थोडी इ दूर रही अर ठग-की बेटी लालजी नै क छ—या ल्यो ! म्हारो तो बाप  
आ गयो वा देखो म्हा की बडी ऊटडी अरडाव छ जिद लालजी बाल्या—तो अब  
काइ करा ? वा कै छ—ये ता ई बड-का डाळा-क नटक जावो जर मै हाय घोडो  
बन छू अस म्हारो बाप र भाई तो थान पकवा न चडैला, म भट ऊ डोड  
स कास-की ऊटडी माळ सब चीज वस्त मल र चढ जाऊ ली अर थे लटका जी  
डाळा-क नीच लीयाऊ ली, सा थ ऊ क-माळ पुदथाज्यो अस आपा तो लवा  
हाला फेरस वा-क बन साठ कोस की ऊटडी र जायती सो जापा हात आना

जबाब । दला—दगी । सगी—साथी । सतखण्या—सात खडा बाने । रबो—कर-  
रहती रह सदा रहना । बार ई—अभी । ताळा वाळा—ताले बाल । नोरा  
म—बाड़े म । आधी का ई—आधी रात का ही । नरो—बहुत । कोई इ०—  
न कोई बेटी न कोई जवाई । ऊठ'र—उठकर । कसी—कौनसी । हाळी—  
वाली । कोड—कही । भाळ—धोखे म । क्यो वी—कुछ भी । 'बार इ०—अभी  
चलकर (पकड) लेत हैं । कूची कर र या ल्यो—यह ला । न्ना—बह । अरडावणा—  
ऊट का बौनना । डाळा—बडा डाली । हाय घाडा—रोना चिल्लाना, हाय  
हाय करना । जस—कि । ऊ—उस । लीयाऊ नी—न आऊ गी । लवा  
ह घाला—सबे हागे चल देंगे । फेरस—फिर तो । लूम गया—नटक गये ।

कोनै मा लालजी तो बड-का डाला-क लूम गया जर ठग की बटी चिल्लायी  
 क छ—दादा जी ! बगा भात्रो मू न बाळघो लीया जाय छ या सुण र ठग क छ  
 —बेटी ! आया ठग जर ऊ-को बेटा जा र लालजी-न पकडवा-न बड माळ  
 चडघा अतरा म वा स सब चीज वस्त ऊ डोढ स कोस-की ऊ टडी माळ मेन र  
 आप ऊ माळ चर ऊ टडी-नै उठा र लालजी न ऊ टडी माय बूदा र नायू  
 चालना बण्या ठग अर ऊ का बटो राता ई र गया

( ६ )

थोडी सी दूर जा'र वान हीरजी अर राजा की घाई भी मिल गया पाछ  
 व क्यारू जणा आप-क देस चल्या गया ऊड जा र लालजी, हीरजा राजा-की  
 बाई अर ठग-की बेटी तीयू यात्र कर लीनू जर तीया-क ताई सतबण्या म्हैल  
 बणा दीना

---

मूने—मुझे । बाळघो—जनाया हुआ (गाला) । वा स—वह ता । मन र—  
 रागकर । कुटा र—बुदनाकर ।

६ ताई—लिजे । सतबण्या—सतबडे, सतमजिन ।

## सूरज भगवान-री घात

( व्रत-कथा )

[ सग्रह-कर्त्री—लक्ष्मी कमल ]

[ लाव-कथाओ का अेक भेद व्रत कथा है । यह कहानी अेक व्रत कथा है । स्त्रिया रविवार को सूर्य का व्रत करती हैं तब कई-अेक कहानिया कहती सुनती हैं । यह कहानी भी उनमे से अेक है । इसमें एक ग्वाल की निलोभता, निरीहता सचाई और ईमानदारी का सुन्दर परिचय दिया गया है । इसे लक्ष्मी कमल ने जोधपुर से प्राप्त कर लिपिवद्ध किया है । ]

( १ )

अेक गवाळिया बो गाव री गाया नै चरावतो गाया र भेळा अक सूरज भगवान री साडियो ई चरण नै जावतो गवाळियै न उण री मा राजीन करै—तू भगळा रा चर्गा रा पइसा ता नियात्र पण इण साडियावाळा रै घर सू तो वदेई विरत रा पर्मा नही लाव जणै गवाळियो आप री मानै करै—हू तो इण साडिय रा घरसाळा-न जाणू नही पर्मा लाऊ कठै-स ? जद अेक दिन मा कहथो—काले जण ओ साडियो आप रै घर जात्रै जण तू इण र नारै-लार जायीज जणै आप-ही ठा पड ज्यासी क आ साडिया किण रा है

दूज दिन वा गवाळियो मा कह्या ज्यू साडिय र लार-लार गया साडियो सूरज भगवान र घर जाय ऊभा रह्यो जण गवाळिय घरसाळा नै हलो पाडियो जण सूरज भगवान री मा वारै आयी नै पूछियो कै काई वात है ? जणै गवाळियै कही—इण साडियै-नै चरावता मन इतरा दिन हुया पण थे मनै कद इ काइ नही नियो जद सूरज भगवान री मा कहथो—तू वदे ई मागण मो जायो नही तो हू किया देनी ? से अबै ले ज्या

१ गवाळिया—ग्वाला । भेळो—माथ । साडियो—बछडा । करै—कहती है । चराई—चरान की मजदूरी । पइसा—पस । लियात्र—ले आता है । वदेई—कभा । विरत—वृत्ति । जण—जब, तब । कठै-सू—कहा स । काले—कल । लार २०—पीछे-पीछे जाय । आप-ही—अपने आप ही । मा कहथो २०—मा ने कहा वम । ऊभा—तब । हेनो इ०—जावाज की । वार—बाहर । काई—कुछ । किया—कमे ।



जद घाळी भर सान रा जत्र उण-न घान दिया गत्रानिय मसल में जत्र ले  
 निया और उठ मू घालिया अहडा जत्र गत्राळिय क्हे ई देखिया नही हा  
 उठ-मू लेय-न घालिया ता मारग म विचार करण लाग्ता—अहडा करडा-करडा  
 खाला हुव जिग्ग जत्र घालिया म्हा री मा ता वूढी है, वा इण-न विया  
 पीसला ? आ विचार-न उण वी जत्र मारग म ही फेंक निया जीर घरे पाछी  
 आय म्यो घर जाय न आप रो मसतो घटटी मार्ये मन दियो दो च्यार दाणा  
 जत्रा रा खमल र नागियाण खय्या हा जका खेमतो मलता हेठ जा पडिया

त्विग गत्राळिय री मां पूस धारण नागी जत्र व जत्र रा दाणा उण र  
 हाथ आया जण मा गत्राळिय-न पूछियो न काल तू माडियाताळा र घर पर्दमा  
 लाक्षण गया हो सो काद लाधो ? जद गत्राळिय सगळी वात माड न आप री  
 मा न वही जद मा उण-न व जत्र बताय-न वट्टया—ज ता सान रा जत्र हा जव  
 तू फेंक आयो अबार रो-अबार उण भाग म पाछो जा और व जत्र उठा ता

जद वा गत्राळिया दौड-न उण जाग्या गया पण उठ उण-न व जत्र नही  
 साभा जणा बो पाधरा सूरज भगवान र घर गया जाय-न कट्टी क काल था  
 जत्र निया जके ता में मारग म फेंक दिया अब थ मन और काई दो जण  
 सूरज भगवान उठ बठा हा उणा कट्टयो—धार भाग म निगियाडा नहा हा  
 अब म्हे काई करा ? जद गत्राळिय कही—मोट ठिकाण-मू काई निरास नही  
 जात्र मन की तो दिरानो, खाली हाथ पाछो हूँ किया जाऊ ? जद सूरज  
 भगवान कही—था री मनस्या हुत्र सो माग ल गत्राळिय विचार कर न  
 कळो—म्हा री मा वूढी हुयगी है घर रा काम काज रसोई और रो उण-मू  
 हुव नहां जको मन ती काई दमी चीज देतो जिण-मू वणी-वणायी रसाई त्यार

जव—जौ जनाज । खेमतो—ओत्ने का वस्त्र विशप । अहडा—  
 अस । करडा—क । खीला—कीने । वण—वूढी । घट्टी—चक्की ।  
 मेल दिया—रख दिया । लागियाण इ०—जग हुजे रह गये थ । जका—  
 जो—व । हठ—नीचे । त्विग—दिन उगने पर नबरे । धारण—  
 बुहारन । मां-न—आरभ मे अत तक या विस्तार स । बताय-न—बताकर  
 दियाकर । अबार इ०—अभी का अभी । जाग्या—जगह । नाभा—मिल  
 (ल-व) । पाधरो—मीधा । था—आपन । उठ—वहा । अब—अब । मा  
 ठिकाण मू—बडे घर स । की तो—कुछ ता । निरासा—निराशो—दो (आदराथ  
 प्रेरणापक प्रयाग) । मनस्या—मशा इच्छा । रसाई जीर रो—रसाई जादि का ।  
 जका—जा—इमनिए । वणी-वणायी—वनी-वनायी । त्यार—तय्यार । कुइछी—

मिन ज्यात्र जण सूरज भगवान उण-न अेक कुडछी और अेक कडालिया देय नै  
 कह्या—तू हाय घोय न इणा २ वन-सू थारी इच्छा हुव ज्यू माग लीज तू  
 मागला ज्यू ही तन मिल जात्रला

कुडछी-कडालिया लेय नै गत्राळिया आप र घर पाछा आयो, और जाप री  
 मान सगळी वात कही मा घणी राजी हुयी जवै मा-बेटा दोन वखत मन चाया  
 भोजन जीम

(२)

अेक दिन गत्राळिय र मन म आयी क सगळै गाव-न जीमाया चाहीज  
 जणै वो सगळै गाव म सिगरी नूतो द आया लाग कवण लागिया—काले ता  
 ओ गाया चारतो और भुया मरता हा आज अ वन इत्ती मता कठ-सू आयी  
 क सगळ गाव न नूतो दिया है तमासो देवण र काड-सू सारा गात्राळा  
 जीमण-न जाया गवाळिय सारा-न तरा तरा री मिठाइया और दूजा भाजन  
 जिमाया जीम जीम-न स अचूभा करता घर गया

अेक पाडासी-न आ वात नही भायी वो मीधो राजदरवार-म गया उठ  
 राजा र आग जाय-न चुगली खायी क फलाण गाव रा फनाणा गवाळियो काल  
 ताई सा भुखा मरता हो और आज उण पूरो गाव जिमाया आर जामण  
 अहडा किया क आज ताणी कद ई नही हुयो

जद राजा उण गत्राळिय न दरवार म बुलाया जीर कह्यो—इतरो धन  
 थार वन कठ सू आयो जको त मगळ गाव-न जिमाया जण गत्राळिय कह्या—  
 म्हार वन धन कठ ? हू तो अेक गरीव गत्राळिया हू और गाया चराऊ हू  
 सूरज भगवान रो माडियो म्हारी गाया मे चरतो उणा र घर सू वित्त-म  
 मन कुडछी-कडालियो मिनिया, जिण सू मैं गाव-न जिमाया गजा पूछिया—  
 कुडछी-कडालिय-सू जीमण किण भात वण ? गवाळिय सारी वात साफ कर-न

कलछी । कडालियो—बहुन छाटी कडाही (स० कटाह) । वन सू—पाम स स ।  
 मागला—मागगा । मनचाया—मनचाह अभीष्ट ।

२ जीमायो चाहीज—भोजन कराना चाहिअे भोज देना चाहिअे ।  
 सगळ इ०—सारे गाव (क लागो) को । सिगरी—सगृह घर के सब नागो का  
 दिया जान वाना । नूतो—निमत्रण । कवण लागिया—कहने लग । चारतो—  
 चराना । इत्ती मता—इतना धन । काड—कौतुक कौतूहल । तरा-तरा री—  
 तरह-तरह की । अचूभो—अचभा । भायी—अच्छी लगी । फनाणै—अमुक ।  
 जको—जो । कठ—कहा । वण—बनता है । साफ करन—स्पष्ट करवे ।

वतायी राजा कुडछी कडालियो दोनु दरबार म मगनाया और कही—अहडा कुडछी कडालिया गन्नाळिय र घर म क्या ? अ तो राजा र घर मे छाज आ कय-न कुडछी कडालियो गन्नाळिय कन-सू खाग-न ले लिया और महल म भेजाय दिया गन्नाळियो कळाप करतो आप र घर गयो

दूज दिन राजमहन म राजा गन्नाळिय रै वताय मुजब हाय घाय-न कुडछी-कडालिया लय न बठो पण वाई भोजा री चीज नही बणी केर उण-सू आग री लपटा उठी और ब्याह कानी पमरण लागी लपटा बुभावन रा घणा ही उपाय किया पण लपटा नही जुमी स गहा बुमी और आख महर म पसरण लागी जण राजा गन्नाळिय-न केर पकड-नै मगनायो गन्नाळियो बोनिया—हू ता मूरख गन्नाळियो हूँ हूँ ता इण वान म की नही समझूँ अँ तो मनै मूरज भगवान दिया हा जको उठ-ही चानो

जण सगळा लाग गन्नाळिय र लार नार मूरज भगवान र घर आया और मूरज भगवान-न हाय जाड न कनी क भगवान ! म्हा-न किया ई वचावो जद मूरज भगवान बोनिया—म्हे ता अ कुडछी कडालिया इण गरीब भूवै-नै दिया हा या र काई कमी ही जको तन इणा रो लाभ आया अब तो आग बुभण रा जेक-हीज उपाय है क तू था री वेतो रा घ्याव इण गन्नाळिय मू कर द और आधो राज उण-न द द

मूरज भगवान री बात मान-नै राजा आप री वेती गन्नाळिय-न परणाय दी और आप रा आधो राज ई उण न द निया उण गन्नाळिय-न राजा रो दियोडो सहर अवार ताई गन्नाळियर नाम-सू मसहूर है

छाज—शोभा देते हैं । कय न—कहकर । कळाप—विलाप करना । वताय मुजब—वताय अनुसार । ब्याह कानी—चारा ओर । पमरण—पलने । नही बुमी इ०—नहा बुमी सा नहा ही बुमी । आर्ष—सार (वक्षत) । उठ ही—वहा, मूय भगवान क पास । चालो—चलो । कियाई—कसे भी किसा प्रकार । वचावो—वचावो । यात्र—ब्याह । परणाय दी—ब्याह दी । राज ई—राय भी । दियोडा—दिया हुआ । जार ताई—अभी तक ।

